विजापुरना शा मूळचंदभाइ सरुपचंदना पुण्यार्थे

मुनि महाराज श्री [illegible]मुनिजी कृत

आत्मज्ञान ग्रंथमाला

भाग १ लो.

छपावी प्रसिद्ध करनार

शा. सुरचंदभाइ स्वरुपचंद

विजापुरनिवासी

आवृत्ति २ जी नकल ५००

संवत १९६७ सने १९१०

अमदावाद

श्री 'सत्यविजय' [illegible]

शा. सांकळचंद हरीलाल [illegible]

किंमत फ्री

(वाचन अने मनन हित अर्थे करो)

आत्मज्ञान ग्रंथमालानी प्रस्तावना.

जगतना दरेक मनुष्योने पोते कोण छे ते जाणवानी जीज्ञासा रहेली होय छे आर्य क्षेत्रमा उत्पन्न थएला तिर्थंकरोए आ जीज्ञासानो, केवलज्ञानथी उत्तर आप्यो छे के, दरेक प्राणीओना शरीरनी अदर व्यापी रहेलो आत्मा तेज खरु तत्व छे अद्वैतवादीओ (वेदान्तने माननार) सर्वनो मळीने एक आत्मा ब्रह्म तरीके स्वीकारे छे. रामानादि मतवाला–प्रत्येक शरीरे भीन्न भीन्न आत्मा स्वीकारे छे, त्यारे श्री महावीर स्वामीजीये प्रत्येक शरीरे भीन्न भीन्न आत्मा स्वीकार्यो छे, अने आत्मा तेज परमात्मा थाय छे एम कहे छे, श्रीमहावीर स्वामीजीकथीत आत्म सिद्धांत सत्य ठरे छे, महावीर स्वामी तेमना गणधरो अने परपराये थनार आचार्योए, आत्म ज्ञानना सिद्धातो जाळवी राख्या छे श्री उमास्वाति वाचक तथा हरीभद्र सुरि तथा हेमचद्र आचार्ये तथा श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्याय तथा श्रीमद् आनदघनजी तथा श्रीमद् चिदानदजी महाराजे आत्मज्ञाननु अद्भूत स्वरूप बताव्यु छे

वीसमा सैकानी अंदर थनार श्रीमद् हुकुम मुनि महाराज एक श्वेतावर साधु हता, तेमनो विहार काठीआवाड, गुजरात, सुरत जील्ला वीगेरेमा विशेप थतो हतो, तेमनु वलण अध्यात्मज्ञान तरफ बाल्यावस्थाथी वीशेप हतु तेमनु आत्म जीवन केवु हतु ते आ ग्रथ वांचनार दरेक पोताना मनमा जाणी शकशे, तेथी वीशेप कइ लखता नथी तेमना ग्रथोनु किंचित् अत्रे सिंहावलोकन करवामा आवे छे

१ मनोरथ भावना–आ ग्रथ संवत १९०५ नी सालमां

बनाववामां आव्यो छे, अने आ ग्रथमा श्रावकनो मुख्य आधिकार छे, श्रावकना मनोरथनु वर्णन करवामा आव्यु छे, तेमां साधु थवानी पुष्टि करवामां आवी छे अने पत्र सातमामा ज्ञान अने क्रियाथी मुक्ति मळे एम सिद्ध कर्यु छे अने पत्र आठमामा व्यव हार तथा निश्चयथी चारित्र पाळवानी पुष्टि करी छे तेथी आ मुनिनी चारित्र उपर केवी प्रिती छे ते सहज वाचको जाणी शकशे पत्र दशमामां तपश्चर्या करवानी बतावी छे, मुनिश्री पोते आकरो तप करता हता, तेथी तेओ आवी धर्म क्रिया बीजाने बतावे ते बनवा जोग छे मुनिश्रीए, मास मासना उपवास करेला छे ने वगडामां तपश्चर्याओ करेली छे, जुवानीना समयमां तेओ विन्ध्याचलना डुगरोमां रहेता हता, माटे तपश्चर्यानो गुण सर्वेने आदरवो जोइए:

(२) ध्यानविलास आ ग्रथ सवत १९२२ नी सालमा ब नाववामा आव्यो छे, तेमा ध्यानना विचारो छे, चार ध्याननु वर्णन कर्यु छे पत्र अढारमामा मुनिने ब्रह्मचर्यनी गुप्तिओ पाळवानो सारो उपदेश आप्यो छे पत्र ओगणीसमामा जैन दर्शनमा कहेलु ध्यान प्रमाण छे एम बताव्यु छे पत्र अठ्ठावीसमामां मुनिनी भक्ति अने मुनिनु बहुमान करवु बताव्यु छे, तेथी सुज्ञोए आ बाबतपर बहु विचार करवो जोइए पाना त्रीसमामां अध्यात्म सार (यशोवि जयजी उपाध्यायना बनावेला) नी शाख आपी छे तेथी सिद्ध थाय छे के तेमने श्वेतांबर जैनाचार्यना ग्रथो उपर विश्वास हतो

(३) आत्मचिंतामणी पान ४८ थी आत्मचिंतामणी ग्रथ शरू थाय छे, ते सवत १९२३ नी सालमां रचवामा आव्यो छे ले- खकनु प्रयोजन छे के जे विषय लीधो होय तेनी पुष्टि करवी ने बाकीनी व्यवहार क्रियाओ गौण रहे एम बनवा योग्य छे ने प्रमाणे

आ ग्रथमां आत्मज्ञान ध्याननी वीशेष व्याख्या करवामां आवी छे.

(४) अनुभव प्रकाश, आ ग्रथ सवत १९३३ नी सालमां रचवामा आव्यो छे, कर्ता पुरुषने आत्मज्ञाननो जे जे अनुभव थएलो छे ते ते अने बताव्यो छे

(५) श्री सम्यक्त्वद्वार आ ग्रथ पाना १२७ थी शरु थाय छे सवत १९०५ नी सालमा आ ग्रथ लखवामा आव्यो छे, आ ग्रथ मा व्यवहार धर्मनी व्याख्या विशेष छे, व्यवहार नयथी देवगुरु अने धर्मनु स्वरुप सारी रीतनु बताव्यु छे, पाना १२३ मामां व्यवहारथी साधुनु स्वरूप बताव्यु छे अने तेज गुरु कहेवाय एम स्पष्ट दर्शाव्यु छे पाना १२४ मामा व्यवहार धर्म न मानवामां आवे तो तीर्थनो उच्छेद थाय एम श्री आवश्यक निर्युक्तिनी साख आपी छे, तेथी श्रोता जनो विचारशे के आ मुनिश्री व्यवहार नयने सारी पुष्टि आपे छे केटलाक अभण दुराग्रही अक्षर शत्रुओ एम कहे छे के हुकम मुनिश्री व्यवहारने नथी मानता, आ तेमनु कहेवु केटलु जुठु छे ते आ ग्रथ वाचनार जाणी शकशे पाना १२५ मामां तो व्यवहारनी एटली बधी बलवत्तरता बताववामां आवी छे के तेमना प्रति पक्षिओ पण चुप थइ जाय केवल ज्ञानी शीष्ये पण छद्मस्थ गुरुनो विनय करवो, आ लखाणथी सिद्ध थाय छे के तेओ व्यवहारना ग्रथो बनावता त्यारे व्यवहारनी पुष्टि करता अने निश्चयना ग्रथो बनावता त्यारे निश्चयनी पुष्टि करता. पाना १२८ माथी सात-निह्नवनी व्याख्या लखी छे पाना १३९ मामा टीका निर्युक्ति वीगेरे आचारागादि वीगेरे सुत्रोथी पहेला लखाइ छे एम सिद्ध कर्यु छे पाना १९८ मामा दश प्रकारनो विनय बतावी व्यवहारनी पुष्टि करी छे, पाना १६० मामा पण सिद्धांतना आधारे सिद्ध कर्यु छे के ग्रहस्थावासमा रहेला तिर्थकरने साधुओ व्यवहारथी नमे

नहीं आ दाखलाथी हालमा जीवोए विचारवु जोइए के ज्यारे तिर्थं करो ग्रहस्थावासमा होय त्यारे साधुओ तेमन नमस्कार करे नहीं, ज्या कोइ ग्रहस्थी गुरु होय तेने साधुओ पगे लग ते जीननी आज्ञा बहार छे तथा ग्रहस्थी गुरुने साधुओनी पठ वदन करवु त पण जीनाज्ञा बहार छे पाना १६१ मामा देरासर करावना तथा साधुनी साथे जवु वीगेरे व्यवहारनी सारी पुष्टिकरी छे पाना १६२ मामां आठे प्रभावक मानवाना बतावी तेनी पुष्टि करी छे पाना १७२ मामा पीस्तालीस आगम हाल छे तेने मानवानु सिद्ध करी बताव्यु छे अने तेना नाम दर्शा या छे पाना १७० मामां क्रिया करवानी रुचिने मान्य बतावी छे पाना १७९ मामां तिर्थोनी यात्रा, दिक्षा, उपधान विगेरे व्यवहार कृत्योथी जैन शासननो भक्ति करवी, एम सिद्ध करी बताव्यु छे पाना १८० मामा प्रतिमानी पूजानी मान्यता सिद्ध करी छे वितराग अने वितरागनी प्रतिमानो भेद देखाड्यो छे, वीगेरे प्रतिमानी पुष्टि कारक वचनो बहु लखायां छे, पाना १८४ मामा प्रतिमानी आगळ देववदन करवानी रीत बतावी छे पाना १८८ मामा दीगंबराओना आचारनी प्रतिमा न मानवी अने श्वेतांबरनी प्रतिमा मानवी एम सिद्ध कर्युं छे, तमज यतिए भरावेली प्रतिमा वदाय नहीं एम सिद्ध कयु छे पाना १९१ मामां अष्ट प्रकारी पुजा सूत्रना आधारे सिद्ध करी बतावी छे ने सत्तर भेदी पुजा पण सिद्ध करी बतावी छे पाना २०० मामा पासत्था नो त्याग करवो बताव्यो छे पाना २०२ मा साधुए हाथ पग धोवा नहीं एम सिद्ध कर्युं छे पाना २०५ मामां मुहपत्तिनी चर्चा करी छे अने तेमां ढुंढक साधुओ मुखे मुहपत्ति बांधी राखे छे ते सूत्राधारे नथी एम सिद्ध कर्युं छे साधुए मुहपत्ति हाथमां राखवी एम सिद्ध कर्युं छे, तथा साधु वस्त्र राखे तेनी सिद्धि करी छे, पाना

२०८ मामा प्रतिमाना अवर्णवाद बोल्नार समकीतनी वीराधना करे छे, एम कह्यु छे पत्र २१३ मामा साधु दोष रहीत आहार ले एम सीद्ध करी वताव्यु छे, पत्र २२८ मामा व्यवहार निश्चयथी पोषन करवानु वताव्यु छे. पत्र २२९ मामा सघ काढवार्थी धर्मनी उन्नत्ति थाय छे एम जणाव्यु छे, पत्र २३२ मामा प्रतिमानो स्था पना निक्षेपो मानवो जोइए एम सिद्ध करी वताव्यु छे

(६) चार अभाव प्रकरण आ ग्रथ सवत १९१२ नी सालमा लखायो छे पाना २४७ माथी ते शरु थाय छे पाना २५१ मामां ग्रहस्थ श्रावक, सूत्र भणी शके नही अने श्रावक थइने जे उपदेश करे ते सूत्रना उत्थापक छे अने ग्रहस्थ थइने जे देशना दे ते सर्व थकी निह्नव छे सभा भर्रा देशना देवी ते साधुनो अधिकार वताव्यो छे, तथा निशिथ सूत्रमा कह्यु छे के जे साधु ग्रहस्थ श्रावकने भणावे तथा ग्रहस्थने घणो वखाणे तेने चोमासी, प्रायश्चित आवे एम जणाव्यु छे. आ ऊपरथी सिद्ध थाय छे के हुकममुनि महाराज ग्रहस्थोने सूत्रो भणवानो निषेध करता हता, ते छतां जे श्रावक एम कहे के मने हुकम मुनि महाराजे सूत्रो वांचवानी छुट आपी छे एम कहे ते उक्त मुनिश्रीना लेखथी मिथ्या वादी ठरे छे. पाना २५२ मां खरी स्वामी भक्ति वतावी छे पाना २५६ मा नव प्रकारनां पुन्य साधु आश्री कह्या छे

(७) पत्र २६१ थी मिथ्यात्व विध्वसण ग्रथ आ ग्रथ सवत १९१९ नी सालमा वनाववामा आव्यो छे, तेमां मिथ्यात्वना भेद अने तेनो त्याग वताववामा आव्यो छे. द्रव्य मिथ्यात्व अने भाव मिथ्यात्वनु स्वरूप सारी रीते वताव्यु छे

(८) पत्र २९० मित्र परिक्षा ग्रथ आ ग्रथ सवत १९३७ नी सालमा वनाववामा आव्यो छे व्यवहार मित्र अने निश्चय मित्रनु

स्वरूप तेमा सारी रीते वर्णव्यु छे खरो मित्र कयो छे ते आ ग्रंथ वांची सुज्ञ जाणी शकशे

(९) पत्र १०४ सिद्धांत सारो द्धार आ ग्रंथ सवत १९१९ नी सालमां बनाववामा आव्यो छे आ ग्रंथमा निश्चयनी वात विशेष छे, निश्चयनी पुष्टि करतां व्यवहार क्रियानी केटलीक, हीन ता बतावावामा आवी छे, पण सुज्ञो जाणशे के निश्चयनयनी अपे क्षाए व्यवहारनयनी केटली गौणता थाय ते जनवा योग्य छे

(१०) पत्र १२३ तत्व सारो द्धार आ ग्रंथ सवत १९१९ नी सालमां बनाववामा आव्यो छे आ ग्रंथमा नवतत्वनु विस्तारथी विवेचन करेतु छे. प्रसंगोपात अप्रमत्त दशावालाने आश्री निश्चय मार्ग मुख्य बताव्यो छे अने तेवी दशामां व्यवहारीक क्रियानु अनावलम्बन जणायु छे चारगति अने जीवोना भेद तेमा सारी रीते बतावेला छे, तेमां आत्म सवर तथा भाव सवर तथा द्रव्य सवरनु सारी रीते विवेचन कर्यु छे, पाच समिती तथा त्रण गुप्तिनु पण सारी रीते विवेचन करेलु छे, सवरना सत्तावन भेदमाथी केटलाक व्यवहारना तथा केटलाक निश्चयना पण बताव्या छे, व्यवहार सवरना जे भेदो पोते एकाते आत्माने ज्ञान विना हितकारी नथी अने तेवा व्यवहार भेदोने तो अज्ञानी अभवी मीथ्यात्वी जीवो पण आदरे छे, पण तेमनु कल्याण थतु नथी, एकान्ते अपेक्षा विना बावीस परीसह विगेरेमां जे धर्म माने छे ते निश्चयनयनी अपेक्षाए असत्य छे, एम मुनिश्रीना लखाणनो आशय छे तेथी व्यवहारनय माननाराओए एकान्ते सवरना व्यवहार भेदोनु खडन कर्यु छे, एम मानी लेवु नही, तेमांथी सार ए खचवानो छे के ज्ञान ध्याननी मुख्यताए जेओ मोक्ष मार्गने आराधे छे अने गुप्तिनाम जे तपी छे तेओने व्यवहार सवरना भेदो-उपकार करनार छे, बाकीनाने

के जे अज्ञानी मिथ्यात्वी अभवी छे तेमने व्यवहार संबधना भेदो मोक्षनी प्राप्ति माटे थता नथी, एम सत्य सार नीकले छे पांच समिति ने त्रण गुप्ति पण निश्चयनी मुख्यताए पालवामां आवे तो मुक्तिने आपनारी थाय छे ते विना एकांते मुक्ति आपनारी थती नथी एम लेखकनो आशय निकले छे निश्चयनयथी व्यवहारनी क्रिया तथा मुनि वेशने अप्रमाण ठरावे तो तेनयनी अपेक्षाए सत्य छे, अने निश्चयनयनी अपेक्षाए व्यवहारमां मुक्ति नथी एम कहेवामां आवे तो ते सत्य छे, पण तेथी व्यवहारनयनो लोप थतो नथी, व्यवहारनय व्यवहारनी अपेक्षाए सत्य छे एम मुनिश्रीना लखाणनो आशय नीकले छे पाना ४१२ मां गर्भनो अधिकार तदुल वियाली पयन्नाना आधारे बताव्यो छे पाना ४३३ मामा [illegible] तर्कना आधारे गितार्थ तथा गीतार्थनी आज्ञा प्रमाणे चाले [illegible] साधु कह्या छे, पाना. ४६० मां भाव तप विना एकला [illegible] तपथी कर्मनो नाश थाय नही एम जणाव्यु छे, अने तेनी [illegible] पुष्टि करी छे तेनु कारण ए छे के ते काळमां वेशधारी [illegible] तथा श्रावको बाह्य तप, जप, क्रिया विगेरेमां [illegible] मानता तेथी तेमनुं खडन करवा तथा भावना [illegible] न्यता करवा आ लेख लख्यो छे. भाव तप सहित [illegible] करे तो तेनु खडन नथी एवो तेमना लेखनो आ[illegible]

आ प्रमाणे दश ग्रथो आत्मज्ञान ग्रथ [illegible] शोधन करवामां आव्यु छे. जैन श्वेतांबर [illegible] व्यवहार निश्चय नयथी बताव्यो छे उक्त मु[illegible] आत्मध्यानी हता तेथी तेओए आत्मज्ञान [illegible] ताना ग्रथो रची भव्यजीवो उपर उप[illegible] वृद्धावस्थामां पण आत्मज्ञान तथा [illegible]

जोके तेमनी केटलीक बाह्य क्रियानी शीथीलता जणानी ते वखते तोपण तेओ अतरनु भावचारित्र दृढपालता हता द्रव्यानुयोगना अगाध ज्ञानमा तेओ सदाकाळ रमण करता हता श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्यायना वचन प्रमाणे बाह्य क्रियानी हीनता छता अतरभावनी ज्ञान ध्यान क्रियाथी महा योगी गणाय, तेम सापेक्ष बुद्धिथी, वय, काळ, वृद्धावस्था, असह्यता विगेरनो विचार करीए तो यथा योग्य जणासे अने प्रति पक्षिओना निंदक वाक्योनी नि.सारता ज णाशे पीस्तालीश आगम सुविहील आचार्योना करेला ग्रथो, श्वेतां बरीय आध्यात्मिक ग्रथो, प्रकरणो विगेरना आधार आ ग्रथमाला लखवामा आवी छे व्यवहारमा व्यवहारनी अपेक्षा अने निश्चयमां निश्चयनी अपेक्षाने अनुसरी आ ग्रथ लखवामां आव्यो छे तेमा जे कइ छद्मस्थ दृष्टिथी आगम थकी विरुद्ध लखायु होय तो ते पडित पुरुषो ग्रथ कर्तार्थी सात नयोनी अपेक्षा विना जे कइ जीनाज्ञा विरुद्ध लखायु होय ते सर्वथी मिथ्या दुष्कृत देछे अने पडित पुरुषोने भलामण करे छे के आ ग्रथोमा जे जे विषयो जे जे नयोनी अपेक्षाए लखवामा आव्या छे तेथी कइक विरुद्ध लखायु होय तो तेनो ते ते नयोनी अपेक्षाए, व्यवहारीक तथा नैश्चयिक सिद्धांतोना परिपूर्ण ज्ञाता पडितोए सुधारो करवो सज्जनो ! आ ग्रथ वांची हसवत् सार भाग ग्रहण करो, वाचके पोताना क्षयोपशम दृष्टि प्रमाणे सत्य जणाय ते ग्रहण करवु कृष्ण महाराजनी पेठ समकित दृष्टि राखी सार खेंचवो को-इनी निंदा करवी नही, सद्गुणोने लेवा, दोषोने त्यागवा, ज्ञानिनां वचनो समजवानी योग्यता प्राप्त करवी, मुक्तिनी आराधना करवी

आ ग्रथना विषयो घटला गहन छे के तेथी बाल जीवोने लाभ थवानो संभव ओछो छे तेथी ज्ञाता पुरुषोए गुरुगमथी वां

चवा वीचारवाथी विशेष लाभदायक थशे.

आ ग्रंथ प्रथम संवत १९४३ मा छपायेल पण तेनी मतो खपी जवाथी हालमा ते मली शकति नथी जेथी अमारा सद्‌गत बंधु मुळचंदभाइ स्वरुपचंदना पाछळ सन्मार्गे योजापळी रकममांथी रु १३००) अंके तेरसो तेमना विलना ट्रष्टीयोये मली आ ग्रंथो आदि छपाववाना खरचमा आपी आ ग्रंथो छपाव्या छे

अमदावाद. } लीं० विजापुर निवासी
शा० सुरचंदभाइ सरुपचंद

आ आत्मज्ञान ग्रंथमाळा भाग १ नामनो चोपडो निचेना ठेकाणाथी मली सकसे

श्री वीजापुर शा सुरचंदभाइ स्वरुपचंद

श्री अमदावाद शा नेमचंदभाइ नगीनदास
ठे झवेरीवाडा मंधे वाघण पोळ

श्री कावीठा शा रतनचंद लाधाजी तथा

शा झवेरभाइ भगवानदास प्रगणे पेटलाद

श्री पादरा वकील मोहनलाल हीमचंद जीह्ले वडोदरा

श्री पाळेज शा. अमरचंद कचराभाइ तथा

शा दाद्याभाइ पीतांबरदास परगणे श्री भरुच बंदर

श्री सुरत बंदर शा ताराचंद हीमचंद ठे गोपीपुरा मधे कायच महेल्लामा.

शुभ मनोवृत्तिवडे अचरतवाइनी कुक्षियी विक्रम संवत् १८७० मां, पचपरमेष्ठिमा जेतु स्मरण निर्माण करेलु छे, एवा उत्तम पुरुषनो ज म थयो. ए महात्माना नाम कर्मनो शुभ उदय तुरत जणावा लाग्यो, क जेनी सुदर आकृतिए, अने भव्य कांतिए जोनारनां मन मग्न कीधां शरीरनो पुष्ट बांधो, शोभनिक उंचाइ, अने स्फुट चक्षु, इत्यादि भभकदार अवयवोए करी राजकुमार सदृश दीसवा लाग्या; जेना दर्शनथी माता पिता सज्जन सहोदरादिकने घणो हर्ष थयो

माता पिताए हुकमचदजी नाम निर्धार्यु. कहेवत छे के-" पुत्रना लक्षण पालणामाथी. " तेज प्रमाणे केटलाक उत्तम गुणो नानपणथीज जणावा लाग्या पाच वरसनी उम्मरे पहाचतां पहेलां बालचेष्टामा पण मनोहर वचनोवड माता पिताने खुश करता, अने कोइ कोइ वातोमा तो तेओश्रीनी जाणवानी जिज्ञासा तथा तर्कशक्ति विगेरे उत्कृष्ट गुणो जोइ वृद्ध माणसो पण आश्चर्य पामता, जेथी माता पितादि सर्वेना मनमा एवी आशाए वास कर्यो के आ बालक एक महा पुरुष थशे

माता पिताना अपूर्व स्नेह वडे लालन पालननु सुखसागर भोगवता पांच वर्षना थया, एटलामा सासारिक दु खनु बादल तेओनी उपर चढी आव्यु पिताना स्नेहनी हद आवी पहोंची, तेमनो आयु संबध पूरो थयो, जेथी पितानो वियोग थयो. सांसारिक सुखमा सर्वोत्कृष्ट पितानु सुख ते पांच वर्षनी उम्मरे विच्छेद थयु परतु अचरतबाइ पोते घणा धैर्यवान, स्वभावे शांत अने समजु हतां तेआथी न गभराता ` ंशीआरीथी पुत्रनु पालन करवा स्यत गमतमा ` पुत्रनी पामे

अनुक्रमे वृद्धि पामता सात वर्षनी उम्मरे अध्यापक पासे वि-द्याभ्यास करवा मूक्या, विद्याभ्यासमा पोतानी कालजी, उद्यम, स्मरण शक्ति, तर्कज्ञान, इत्यादि शक्तिओवडे थोडी मुदतमां पोते समयोचित विद्या प्राप्त करी ए दरम्यान पोताना मलतावडापणाथी तथा परोपकारबुद्धिए विद्यामा मदद करवाथी सर्वे विद्यार्थीओना स्नेहनु पात्र थया विनयादि गुणोथी अध्यापकवडे प्रशसनीय थया, अने सेवा भक्तियुक्त मधुर अने कालाकाला वचनोवडे माताना हृदयसतोषक थया.

पुत्रनी आवी तीव्र बुद्धिवडे माताने अभिनव आनद प्रगट थयो पतिवियोगनु दु ख विसारे पडयु. अने नवाज सुखनो झरो वहेवा लाग्यो

पूर्वना पुण्यानुबधी पुण्यना उदये बालवयथीज धर्म तरफ लक्ष दोडयु, हरेक ठेकाणे धर्म सबधी वात थती होय, तो त्या पोते निश्चल चित्तथी साभलता स्वधर्मी पुरुषोनी अगीकार करेली क्रिया करवा तरफ मन थतु, जेथी पोतानी यथाशक्ति क्रिया करवा चूकता नहि अने बीजी बाजु दरेक ससारी धधा रिवाजमा पोतानी तीव्र बुद्धिना योगे झट माहिती मेळवता

अनुक्रमे तेर वर्षनी उम्मरे माताए पोतानी शक्ति माफक सा-रा आडबरे सारा कुळवान घरनी कन्या नामे लेरसीबाइ साथे लग्न करी पाणी ग्रहण कराव्यु

पोतानी पुरतवये पोताना सदाचार, चपळता, माहिति, विनय, वाक्पटुता तथा समयानुसार वर्तणूक इत्यादि सद्गुणोवडे आखा शहेरमा मख्यात थया. सरकारी कामकाजमा पण उत्तम बुद्धिवडे प्रावीणता मेळवी राज्य तरफनु मान पाम्या एवी रीते गृहस्थावास-मा एक उत्तम पुरुष गणाया

आवा समयमा पोते ससारी कामकाजमा उद्यमवत छता चित्त-वृत्ति धर्मना तत्त्व ज्ञाननी खोजमाज ठरती व्याख्यान सांभळवा दररोज उपाश्रये जता, परतु यथास्थित शुद्ध प्ररपक विना जिनराज भाषित स्याद्वाद वचन समजवामा चित्त मुझातु पोते घेर पण फुरसदना वखतमा जैनधर्मना ग्रथो वाचवानो अभ्यास राखता, तेमा श्री देवचद्रजीमहाराजकृत चोवीशी, आगमसार, नयचक्र वाचवामा आव्या, पोतानी तीक्ष्ण बुद्धिना योगे सहजसाज गुरुगम थता सपूर्ण समजाया पछी बीजा पण यशोविजयजी उपाध्यायकृत द्रव्यगुणपर्यायनो रास विगेरे घणा ग्रथो वांचवामा आव्या, तेथी दिनप्रतिदिन ज्ञाननी घणीज वृद्धि थवा मांडी, अने पोतानु मन द्रव्यानुयोगमा लीन थयु तत्वज्ञानरूप समुद्रना मोजाव्रडे पोतानु चित्त ससारमांथी डोलवा लाग्यु, जेने जिनराज भाषित स्याद्वाद मार्गनु ज्ञान थाय तेनु चित्त असार ससारमा केम ठरे ? परतु पांच समवाय कारण मल्या विना हरेक कार्य थतु नथी, तेमज दीक्षा लेवानो अवसर थता सुधी ससारमा रहेवु पडयु, पण चित्त तो वैराग्यमाज परोवाएलु रहेतु

गृहस्थावासमा पोताने पत्नीनु सुख उत्तम मलेलु हतु रूप तथा सद्गुणनु पात्र, अने पतिव्रता धर्मे परिपूर्ण हतां, स्वामीना सुखे सुखी अने स्वामीना दु खे दु खी थता, मीठा वाक्य अने नम्रतावडे स्वामीने खुश करता एवी रीते ससार सुख भोगवता अनुक्रमे रतनचद अने साकरचद नामे वे पुत्र उत्पन्न थया, जे घणा बुद्धिशाली अने सद्गुणी नीवडया तेमाना वडील पुत्र रतनचद तो पिताना दीक्षा ग्रहण पछी दीक्षा ग्रहण करी धर्म साधन करवा लाग्या अने अनेक सद्गुणोवडे अमदावादमा पन्यास पद पाम्या, तेमनो देहोत्सर्ग थया छता पण हालमा रत्न मुनिना नामथी वख

णाय छे एवा सद्गुणना भंडार पुत्र रत्नो दिनप्रतिदिन वृद्धि पामता हता

दीक्षा ग्रहण.

एक दिवसना समायोगे संवत् १९०३ नी सालमा कइक व्यापारना कारणसर वहार गाम गया, अने कठाडा गामे पोताना मित्रने त्यां केटलाक दिवस रह्या, ते वखतमां कोइएक ग्रंथ वांचता वैराग्य रसथी भरपूर विषय वांचवामां आव्यो पोताना चित्तने विषे तो वैराग्य वसी रहेलो हतोज, तेमां दैवयोगे विशेष वधारो थवाथी संपूर्णता थइ. वैराग्यना तरंगोए चित्तने व्याकुल कीधु, आ संसार अस्थिर छे, अने सर्वे दु खनु मूल एज छे, कोइपण प्र कारनु सुख संसार विषे रहलु नथी, अने जे दुःखने सुख मानी लीधेलु छे, ते मानी लीधेलु काल्पित सुख पण क्यां सुधी भोगवी-शु ? तेनो निश्चय नथी कारणके जे संपत्ति छे ते चंचल छे, ए संपत्ति फीटी विपत्ति पडता वार लागती नथी, कदाचित् पुण्यना योगे संपत्ति वर्त्तमाने कायम रही तोपण ए संपत्ति केटलो वखत भोगवीशु तेनो कइ नियम नथी रोगादिकनी उत्पत्ति, अ-गर आयुष्यादिना पूर्ण थता सबंधवडे ए संपत्ति भोगववानी एक पलमां रही जाय छे, अने दुःख आवी पडे छे माटे ए काल्पित, अ-निश्चित, अने क्षणिक सुख भोगववामा लुब्ध थइ अनंतकाल सुधी भोगववानु अक्षय सुख गुमावनु ! एना जेवी रीजी भूल कइ छे ? आयुष्य समये समये घटतु जाय छे, काल ग्रहण करवाने बाहु प्र सारी रह्यो छे, तेमा संपूर्ण सुख पामवानो रस्तो कयो छे ? एम जाणवा छतां प्रमाद करी दु खमां फसी रहेवु तेना जेवी बीजी अ ज्ञानता कइ छे ? पर्वना पुण्योदये मनुष्य जन्मादि घणा उत्तम कारण

मळेलां छे, वली वीतराग भावित स्याद्वाद मैत्रीरुप जैनधर्म यथा स्थित भासन थया छता मिथ्या सुखने सुख मानवु तेना जेवी बीजी मूर्खता कइ ? हवे आ संसारने वलगी रहेवु मने घटे नहि संसार छोडवाथी सुख छे संसारमां धर्म साधन करवो महा दुष्कर छे, सर्वथा प्रकारे ज्ञानदर्शन अने चारित्रमां रमण करवु एज धर्म छे. ए धर्म आत्माविषेज रहेलो छे. उपाधिरुप अज्ञान दूर थवाथी ए धर्म प्रत्यक्ष सिद्ध छे तो द्रव्य उपाधिनो त्याग कर्याविना भाव उपाधि छूटवानी नथी अने भाव उपाधि छूटयाविना कार्य सिद्धि नथी. तो हवे संसार छोडवामा विलंब केम करवो ? संसारमां रही पारमार्थिक सुखनो नाश शामाटे करवो ? एवा अनेक द्रव्य भाव तरंगोवडे शरीर रोमाञ्चित थयु, गृहस्थावास अग्निज्वाला समान लाग्यो, चित्त छिद्रिद्र थयु एवामा कोइ देवाशी पुरुष आवी कह्यु के " मनमा जे धार्यु छे ते करो एज आपने हितकारी छे " एम कही ते पुरुष विदाय थयो

पौद्गलिक संपदाने अस्थिर अने परतंत्र जाणी निरुपचरित शुद्धात्मिक स्वतंत्र सुखना परमाभिलाषी थएला ते महात्माश्रीए पोताना मित्रने बोलावी कह्यु के "आजे मारो दिक्षा लेवानो विचार छे" आ वात सांभळी ते गभरायो कारणके अणधारेली वात, अने कोइने पूछयाविना दीक्षा ग्रहण करवानो विचार सांभळी आश्चर्यचकित थयो परंतु ते घणो समजु हतो तेथी पोतानी बुद्धि प्रमाणे तेओश्रीने शांत पाडवानो उपाय योज्यो तेणे हूकमचंदजीने कह्यु के "आप एकदम बेहराफला थइ आप संसार छोडी दो छो ते योग्य नथी धर्मसाधन करवो होय तो शु गृहस्थावासमा नथी थतो ? माटे संसारमां रही श्रावक धर्म पाली धर्मसाधन करो, जे उभयलोके हितकारी थशे " आ वचन सांभळी जेओने

ज्ञानगर्भित वैराग्य उत्पन्न थएलो छे, एवाश्री हूकमचदजीए कह्यु के " जेनु वीर्य ससार छोडी देवाने समर्थ नथी ते श्रावकधर्म अगीकार करे, परतु सर्वथा धर्म तो चारित्रपणामाज रहेलो छे, गृहस्थावासने विषे तो घणोज अल्प छे, सरसव अने मेरुपर्वत जेटलु अतर श्रावक अने साधुधर्मने विषे रहेलु छे आ ससार मने अग्निनी ज्वाला समान लागे छे, अग्निनी ज्वाला सहन करी शीतलता मानवी ए काम हवे हु एक घडीभर पण योग्य धारतो नथी. "

आवो निश्चय विचार जोइ मित्रे फरीथी कह्यु के " आपश्रीए घेर जइ माता तथा स्त्री आदिनी रजा लइ चारित्र ग्रहण करवु जोइए परतु आम एकदम स्नेहनो त्याग करवो उचित नथी. "

वैराग्यरसमां लीन थएला हूकमचदजीए जवाब दीधो के ससारी कामकाजमा पण विघ्न करवो हानिकारक छे, तो चारित्र-धर्म जेवा श्रेष्ट कर्तव्यमा विलब करी हानि पहोंचाडवी ए घणु मूर्खाइ भरेलु कार्य छे, कारण के कल्याणिक कामने विषे घणा विघ्नो आवी पडे छे, वली चारित्रधर्म अगीकार करवामा ज्ञानना भडार मोटा महात्माओ गौतमस्वामी, आर्द्रकुमार, सनत्कुमार इत्यादि असख्य पुरुषोए पोताना कुटुबनी रजा लीधा सिवाय पोताना परमार्थनु साधन करेलु छे तो माहरे रजा लेवा माटे शा सारु घेर जवु जोइए ? वली तमे जे स्नेहनो त्याग न करवा माटे कहोछो, पण जे स्नेह तेज शोकनु कारण छे, अने दु खनु मूल छे. ए स्नेहनो त्याग करवाथीज परमसुख प्राप्त थाय छे स्नेहना बध-नथी महोटा पुरुषोने पण महादु ख वेठवु पडयु छे, माटे हवे हु तो जलदीथी चारित्र धर्म अगीकार करीश एम कही मित्रनी रजा लेइ चाली नीकल्या

आ वखत ˋ ˋनाना डुडर तरफ नजर करीशु

तो पोताना मायाळु वृद्धमाता अचरतबाइ, सुशीलवती स्त्री लेरसी बाइ, तथा गुणज्ञ बे पुत्रो नामे रतनचद बार वरसना अने साकर चद सात वरसना हता ते सर्वनो स्नेह तजीने पोतानी तेतरीश वरसनी वये चारित्र धर्म अगीकार करी पचमहाव्रत उचर्या, अने ससारनी मोहजालथी मुक्त थया

विहार

सवत् १९०३ मा सर्वविरति धर्म अगीकार करी निवृत्तिथी रात्रि दिवस आत्म तत्वना विचार सहित ज्ञानाभ्यास करवामा काल निर्गमन करवा मडया, अने साधुपणाने शोभावे एवी निर्दंभ क्रिया घणा यत्नथी करवा माडी, जेथी ज्ञाननी दिन प्रतिदिन वृद्धि थवा लागी

अनुक्रमे ग्रामानुगाम विचरता जे तीर्थे अनत प्राणी सिद्ध पद वर्या छे, जे तीर्थने घणा तीर्थकरो स्पर्श्या छे, जे तीर्थनी घणा उद्धारे करी अनेक रचनाओ थइ गइ छे, युगादि जिनवर तीर्थपति छे अने जेना वखाण एके अवाजे सर्व तीर्थकरो, गणधरो, आचार्यो अने साधु आदि करता आव्या छे, जे गिरिवर अनेक यथार्थ नामे सुशोभित छे, एवा शत्रुजय गिरिए गया जेना चित्तने विषे ए तीर्थयात्राना द्रव्यभाव स्वरुपनो विचार रमी रहेलो छे, एवा ए मुनिए पोताना चित्तनु स्वास्थ्य मेळववा माटे प्रथम चोमासु शत्रुजय गिरिएज कर्यु चातुर्मास पोते पोताना ज्ञान ध्यानमा साबध रही काल निर्गमन कर्यो

चोमासु पूरु थया पछी काठीयावाडना केटलाक शहेरो तरफ विहार कर्यो पोते छ सात वरस सुधी काठीयावाडना लीमडी, वढवाण, ध्रागधरा, मोरवी विगेरे जुदा जुदा शहेरोमा चोमासा कर्या

महाराजना साधुपणाना उत्कृष्ट गुणो जोइ सर्व कोइ प्रीतिमय थइ जता; ज्यां ज्यां विहार करता त्या त्याना लोको पोते पोताना आडवर सहित घोडा, पालखी, शिग्राम आदि लेइने वार्जींत्रना आनदकारी नाद थते सामैयु लेइ सामा आवता; मोटी मोटी प्रभावनाओ करता अने एक चित्ते ज्ञान साभळता सभाने विषे मोटा मोटा राजवशीओ पण नम्रताथी वादवा आवता, सर्व कोइ अमृतमय देशना साभळी पोतपोताना पुण्योदय प्रमाणे लाभ मेळवता. पोते पण साधुपणाना दुष्कर परिसहो समताभावे सहन करता, यथोचित विचरता पोताना ज्ञान ध्याननी वृद्धि करता हता. अने भव्य जनोने हितकारी जैनदर्शनननी स्याद्वादशैलीवडे आत्मोपयोगने स्थिर करनारी देशना सभाजनोने देता हता

सवत् १९११-१२ मा गुजरातना मध्य विभागमां अमदावाद विगेरे शेहेरोने विषे तथा सवत् १९१३-१४-१५ मा पादरा, सिनोर, वेजलपुर, भरुच, सुरत विगेरे स्थळोए विहार करी घणा भव्य जनोने प्रतिबोध आप्यो

सवत् १९१५ नी सालमां विंध्याचल पर्वतउपर रही भारे तपश्चर्या करी. ते जग्या घणीज भयकर, अने त्या केवल वाघ वरु आदि जगली घातकी प्राणीओनोज वास हतो कोइ माणस भूले चूके ज त्या जवा पामतु, धैर्यवान माणसनु शरीर पण मोटी मोटी वाघनी गुफाओ जोइ कपायमान थतु, हिंसक प्राणीओना शब्दोवडे तेनु हृदय छिन्दिद थतु, विस्तीर्ण गगनगामी वृक्षोना सयोगवडे सदाए अधकार रहेतो, जेथी शनैः शनैः पोताना जीवितव्यनो सशय पडतो. एवा भयकर वनमा महुडीना वृक्षनी छाया निचे एक गुफामा ध्यानारुढ थइ निडरपणे रहेता कोइ कोइ दिवस छेटेना गामे जइ एकज पात्रमा आहार पाणी करी गुफाए जइ

पोताना कर्तव्यमा स्थिर थता हता आवा वखतमा अलौकिक ज्ञाननो अनुभव करता तपना प्रभाववडे कोइ पण वाघ, वरु आदि प्राणी महाराजने तो उपद्रव करी शकतुज नहि, परतु त्यां जवल्ले कोइ महा धैर्यवान माणस महाराजना दर्शन करवा जतो तो ते पण तेओश्रीना तपना अतिशयवडे निर्विघ्ने पाछो फरतो ए वात एक महा आश्चर्यकारक हती जे महुडीना वृक्षनीचे पोते तप कर्यो हतो ते महुडीनु नाम आजे पण बावानी महुडी कहेवाय छे. हालमा ते जग्याएथी घणुखर वन कपाइ गयुं छे, व्याघ्रादिनो भय घणोज कमी थइ गयो छे, तो पण काचा हृदयना माणसथी त्यां जइ शकातु नथी एवा भयकर वनमा रही ध्यान करवु ए धर्मनी दृढता सूचवे छे. धर्मने विषे पकी दृढताविना एवे स्थले ध्यान थइ शके नहि

सवत् १९१६-१७ नी सालमा वडोदरा, मियागाम, सिनोर, आमोद, जबुसर, अने भरुच विगेरे शेहेरोमा भव्यजनोने प्रतिबोध आपी सुरत पधार्या.

आ वखते अमदावादथी सुरत सुधीना प्रदेशमां तो जैन दर्शननी घणीज न्यूनता थएली हती कारण के आगला जुलमी राज्याधिकारीओना जुलमोवडे लोको धर्मथी चूकी पोतानी माल मिल्कतोना रक्षणमां तथा पोताना भरणपोषणमाज मच्या रहेता तेथी केटलाक डाह्या पुरुषो धर्मना कारणनेज धर्म मानी बेठेला, अने केटलाक डाह्यामां गणाता अज्ञानी जनो आचारनेज धर्म मानी बेठेला, वली केटलाक तो जैन नाम धरावता छता पण धर्मथी तदन अजाण अने हीनाचारी हता तेवाओने सत्य धर्मनी श्रद्धा करावबी ए काम कइ सहेल नहोतु परतु जेना हृदयमां परोपकार बुद्धि रमी रही छे, एवा दुकम मुनिजी महाराजे महा कष्ट सहन करी विहार-

सारा ग्रंथो बनाव्या " ज्ञानविलास, ध्यानविलास, तत्वसारोद्वार, मिथ्यात्वविध्वंसन, अध्यात्मसारोद्वार अने बोधदिनकर विगेरे

संवत् १९२६ नी साल्मा गोधरा वेजलपुर तरफना डुंगरमां रही तपस्या करी. वेजलपुर अने पावागढ वच्चे घुस्सर आगळ गप्पेसर नामना पाहाडमा महिना सुधी एकांते रही ध्यान साधन करता ते जग्या पण घणा झाडो तथा खीणोथी भरपूर छे, ज्यां व्याघ्रादिक घातकी पशुओनी गर्जनावडे आखु वन गाजी रहेतु, आसपास हमेशां सवारमां वाघना पगलां पण देखातां, एवा भयकर वनमा रही पोते आहारनो त्याग करी ध्यानारुढ थता आवा निर्जन जंगलमां उत्कृष्ट ज्ञानानुभव करवा महा कष्ट वेठता, अने ते कष्टनेज परम सुख मानता त्या महाराजना दर्शनना अभिलाषी पुरुषो वनवासी जनोनी सहाय लेइ दर्शन करवा जता, ते लोकोने व्याघ्रादिकनो भय लागतो नहि कारण के कदाच वाघ सामे मळे तोपण ते काइ अडचण करतो नहिं, एवु अतिशयवंतु बळ हतु पोते कदाचित् पासेना गामडामां जइ आहार लावता, परंतु ते एकज पात्रमा अने घणे दिवसे आहार करता, त्यारबाद वेजलपुरनी पासे झारिया नामना वड हेठे मुकाम राखी आजुबाजु एकांत स्थलोमां जइ ध्यान साधन करता सवारना आठथी चार वाग्या सुधी एकांत जंगलमां जइ ध्यान करता. त्यारबाद वड नीचे आवता, ते वखते श्रावको, ब्राह्मणो, मुसलमानो विगेरे महाराजसमीप आवी जिनेश्वरनी दिव्य वाणी सांभळी अत्यंत आह्लादित थता ते ठेकाणे श्रावको करता पण कोळी लोकोनी घणी संख्या आवती, महाराजनी देशना सांभळी ते कोळी लोकोमांथी केटलाके दारु मासादिना पच्चखाण कर्या हतां आवा

तपो घणीवार करेला, परतु सवत् १९१९ तथा १९२६, आ वे वर्षमां तो घणी मुदत जगलमा गाळी

आ वरसमा सघना आग्रहे वेजलपुरमांज चोमासु रह्या त्यां पण पोताना स्वाभाविक गुणे ज्ञानोपदश करता, अनेक भव्यजनोने प्रतिबोधता, ज्ञान दर्शन अने चारित्रवडे कर्म क्षय करता, अने परोक्ष देशना आपवा माटे ग्रथो रचता हता अनुक्रमे चोमासु वि त्या पछी सवत १९२७ मा गोधरा आदि नगरे विहार करता सुरत पधार्या अने चोमासु पण त्यांज रह्या हवे पोतानी वृद्धावस्था थवाथी जघाबल कमी थयु, ते कारणथी प्रसंगोपात बीजे स्थळे जता परतु घणु खरु सुरत चोमासु करता

सवत् १९३२ नी सालमा घणा जनोनी प्रार्थनाथी भव्यजनोने उपकारार्थे भरुच विगेरे शहेरोमा तथा घणाक गामडांमा पधारी उपदेशरुपी अमृतजळनु सिंचन कर्यु पोतानी वृद्धावस्थाने लीधे विहारमां घणो परिसह वेठवो पडतो, परंतु ए परिसहने न गणकारता भव्य जनोनी जिज्ञासाने लीधे उपदेशार्थे शीघ्र विहार करता

सवत १९३४ नी सालमा साढली, सिनोर, आमोद, जबुसर, भरुच विगेरे स्थले ते ते लोकोनी प्रार्थनाथी पधारी अपूर्व लाभ आपी चोमासु सुरत कर्यु

सवत १९३६ नी सालमा सिनोरना सघना आग्रहथी श्री-वासुपूज्य स्वामीनी प्रतिष्ठा वखते सिनोर पधार्या. ए वखते पण पोतानु उपदेशरुपी दान अखडित हतु; लेनारनी योग्यता मुजब आपवा चूक्या नथी

पोतानी आखी उमर परोपकारार्थे (उपदेश देवामा तथा ग्रथो रचवामां) अने धर्म साधनमा गाळी. उपदेश आपती वखते सर्व सभासदो तरफ [illegible] लक्ष देता, कोइने जे विषय वरो-

वर न समजायो होय ते विषय तेने घणी तरेहथी समजावता, अने वारवार पूछता के तमने बरोबर समज पडी ? ज्यां सुधी तेना मनमां बरोबर रीते न ठस्यु होय त्यां सुधी तेने घणा दाखला दलीलो आपी समज पाडे, घणो वखत जवा छता अने घणो परिश्रम पडवा छता पण कटाळे नहि. तेना मनमां बरोबर ठसे त्यारेज पोताने जप वळे

जैनधर्मना स्याद्वाद मार्गनी कुंची घणी विषम छे, ते यथास्थित समजवीज मुश्केल छे, तो समजाववी मुश्केल होय तेमां नवाइ शी ? हरेक वातमां पोताना ज्ञान प्रमाणे मथन करवा चूकता नहि आवी रीते खुलासा सहित समज पडवाना कारणथी घणा घणा माणसो पोताना सदेहनो खुलासो करवा प्रश्नो करता, तेनो सतोषकारक जवाब मळवाथी तेओना सशय नाश पामता जैनदर्शन सिवायना बीजा अन्य दर्शनीओना पण मोटा पडितो अने सद्गृहस्थो वारवार महाराजना मुकामपर आवता अने पोताना सदेहो प्रमाणे प्रश्नो करता, ते लोकोने पण घणी सारी रीते तत्वज्ञाननी श्रद्धा करावता जैनदर्शनना अद्भुत ज्ञान साथे बीजा दर्शननु पण ज्ञान घणी सारी रीते होवाथी अन्य दर्शनना माणसोनी पण प्रीति घणीज मेळवी हती अन्य दर्शनीओमाथी केटलाक तो वादविवाद करवा सारु आवता, ए वादविवादमां ए महात्मानु ज्ञान, दाखला दलीलो आपवानी अपूर्व शक्ति अने स्वपक्ष मडनता तथा परपक्ष खडनतानु बळ वळी स्वपक्षनु सिद्धपणु ए प्रतिपक्षीना मनमां उतारवानी अद्भुत शक्ति इत्यादिथी सभाजनो सानदाश्चर्य पामता तेमां प्रथम तेने अगीकार करेला धर्मनु एज धर्मना प्रमाणोवडे विरुद्धता दर्शावी खडन करता अने पछी जैनधर्मना तत्वज्ञाननी श्रद्धा करावता जे प्रतिवादीओ निष्कपटपण कबूल करता

स्थिरवास

पोतानी सडसठ वरसनी वय थता सुधीमा मोटी तपस्याओ करी तथा उग्र विहार कर्यो परतु त्यारपछी जघाबळ घणु क्षीण थवाथी घणा श्रमथी श्रमित थएला, घणा उपसर्गोसहन करेला, एवा मुनिने अपवादे स्थिरवास मेववो पड्यो

सवत १९३७ थी सुरतमा गोपीपराने उपाश्रयेज रह्या. आ वखते जघाबळ तो क्षीण थयु हतु, परंतु तेमना मुखकमळनी कांति अने उपदेशदान क्षीण थया नहोता हमेश व्याख्यान वे वखत वाचता, परतु आखो दिवस अने रात्रीना दशवागता सुधी ज्ञानचर्चा चाल्या करती देश परदेशना सरूयाबंध लोको स्वधर्मी तथा परधर्मीओ महाराजनी पासे उपदेशदान लेवा आवता, तेमने पोते उदार चित्तथी धर्मलाभ देता " धर्मलाभ " शब्द मोढेथी कहीने बध रहेता एम नहि, परतु ए शब्दना तात्पर्य अर्थ प्रमाणे धर्मनो लाभ तेने उपदेशद्वारा थयो के नहि तेनी बारीकीथी तपास करता, अने पोताथी बनता प्रयत्ने ते लाभ खरेखर करवा चूकता नहि

केटलाक परदेशी महाराजना आश्रित श्रावको महाराजनी समीपे महाराजना मुखथी उपदेश साभळता, अने पोते घेर जता त्या गुरुनी जोगवाइ न होवाथी पूर्वाचार्योक्त ग्रंथो वाचता, त्यां जे जे स्थळे समज न पडे तेवा वाक्योनु लिष्ट उतारी मूकता अने फुरसदना वखते महाराजना समीपे दशपदर दिवस रही तेना बरोबर खुलासा मेळवता एवा परदेशी लोकोने महाराज वधारे विवेचन साथे समजावता ते लोकोनी बरदास सुरत शहेरना भाविक गृहस्थो घणी सारी रीते करता

धनवान अने निर्धन सर्वने समान भावथी जोता, अने उप-

महाराजना वचन लाभथी निरोगी थइ घेर गएला परतु एवा वचन क्वचितज निकलता इत्यादि महाराजनु यशनाम कर्म पण उत्कृष्ट मालम पडतु हतु

शरीरनो मजबूत बाधो, साधारण मध्यम कदनु उचपण, सुवर्णने मलतो शरीरनो वर्ण, पहोलु कपाल, कपालमा वहाणनु चिन्ह, विस्तीर्ण चक्षु इत्यादि सुदर देखाव वडेज पुण्यशाली पुरुष छे, एम कल्पना थती हती. शत्रुभाव राखवानी इच्छावाला पुरुषने पण साधु जोतां शत्रुभाव विसरी जतो एवी महाराजनी तेजोमय आकृति हती

कोइ कोइ वखते महाराजश्रीनी समीप वहु चमत्कारी वनावो वनता के जे वनावो देव सहायमा होय तोज वनी शके एवा हता वली केटलाक जणनु कहेवु पण एमज छे के महाराजनी सहायमा केटलाक देवो हता

श्री हूकममुनि महाराजकृत ग्रंथो

पोते सूत्रसिद्धांतमांथी तत्व दोहन करी वालजीवोने समज पडे तेवी सरल भाषामां ज्ञानना भडाररूप घणा ग्रथो रचेला छे जेने विषे स्याद्वाद शैलीथी निश्चय व्यवहारद्वारा जैनसिद्धांतोनु रहस्य दर्शाव्यु छे अने अध्यात्मज्ञानथी हद वाली छे तेमांथी केटलाक ग्रथोना नाम तथा टूक हकीकत निचे प्रमाणे छे

(१) सम्यक्त्वसारोद्धार ए ग्रथमां सात द्वार छे (१) द्वारमा व्यवहारनी वलिष्टता देखाडी छे (२) द्वारमा पाच मिथ्यात्वनु तथा सात निन्हवनु स्वरुप, जीवनी चौद खाण विगेरे अनेक वातो दर्शावी छे (३) द्वारमा समकितना अनेक भेद सरलताथी देखाडया छे तथा समकितनां लिंग, विनय, शुद्धि, लक्षण,

यतना, आगार, भावना, स्थानक, रुचि विगेरे घणो उपदेश आवेलो छे, (४) द्वारमा देवतत्वनी ओलखाण, प्रतिमा तथा पूजाविधि, दशत्रिक, अभिगम, आशातना, देव वाद्वानी विधि विगेरे घणी वात छे (५) द्वारमा गुरुतत्वनी ओलखाण, तेमा गुरुना गुण, तथा आचार विगेरे अनेक विचारथी भरपूर छे (६) द्वारमा धर्म तत्वनी ओलखाण, तेमा जीव तथा अजीवना भेद, तथा तीर्थयात्रा विगेरे अनेक वार्ता दर्शावी छे. (७) द्वारमा ए तत्वनी सद्दहणानु फल तथा आर्तरौद्र ध्यान विगेरेनु स्वरुप बताव्यु छे. अने वैराग्यनुं स्वरुप पण कह्यु छे. ए विगेरे अनेक बाबतोथी भरपूर ए ग्रथ छे ए ग्रथनी श्लोकसख्या सुमारे २५०० छे.

(२) ज्ञानविलास—ए ग्रथ पद्यबध छे, एने विषे, षड्द्रव्यनी वार्ता, तथा दरेक द्रव्यने नय, निक्षेप, पक्ष, प्रमाण, कारक, सप्तभगी, चौभगी विगेरे लागु करी विस्तारे स्वरुप बताव्यु छे. तथा षड्दर्शननी चर्चा विगेरे अनेक रीते द्रव्यनु स्वरुप ओळखाव्यु छे वळी भव्य, अभव्य, भव्याभव्यनु स्वरुप, तथा नयना भेद सारी रीते देखाडया छे. श्लोकसंख्या सुमारे २००० छे

(३) तत्वसारोद्धार—ए ग्रथने विषे तत्वना घणा भेद देखाडया छे तेनारुपी अरुपी विभाग कर्या छे अजीव तत्वमा ए तत्वना ५६० भेद विगेरे बाबतो छे आस्रवतत्वमां मिथ्यात्वना भेद, तथा अव्रतना भेद, २५ कषायनु स्वरुप, सत्तावन भेदे आस्रवनु स्वरुप, विगेरे घणी सारी रीते बताव्यु छे पुण्य तथा पाप तत्वमा एकसोवीश प्रकृति, तथा वीश स्थानकनी वात, विगेरे घणु स्वरुप छे बध तत्वने विषे पण घणी हकीकत छे जीवतत्वमा तेना अनेक भेद, तेने उपजवाना ठेकाणा, आउखु विगेरे घणी बाबतोनो समावेश छे सवर तत्वना जूदा जूदा बोल विगत साथे जणाव्या छे

महाराजना वचन लाभथी निरोगी थइ घेर गएला परतु एवा वचन क्वचितज निकलतां इत्यादि महाराजनु यशनाम कर्म पण उत्कृष्ट मालम पडतु हतु

शरीरनो मजबूत बांधो, साधारण मध्यम कदनु उचपण, सुव र्णने मलतो शरीरनो वर्ण, पहोलु कपाल, कपालमां वहाणनु चि ह, विस्तीर्ण चक्षु इत्यादि सुदर देखाव वडेज पुण्यशाली पुरुष छे, एम कल्पना थती हती. शत्रुभाव राखवानी इच्छावाला पुरुषने पण सामु जोतां शत्रुभाव विसरी जतो एवी महाराजनी तेजोमय आकृति हती

कोइ कोइ वखते महाराजश्रीनी समीप वहु चमत्कारी बनावो बनता के जे बनावो देव सहायमा होय तोज बनी शके एवा हता वली केटलाक जणनु कहेवु पण एमज छे के महाराजनी सहायमा केटलाक देवो हता

श्री हूकममुनि महाराजकृत ग्रंथो

पोते सूत्रसिद्धांतमांथी तत्व दोहन करी बालजीवोने समज पडे तेवी सरल भाषामां ज्ञानना भडाररुप घणा ग्रथो रचेला छे जेने विषे स्याद्वाद शैलीथी निश्चय व्यवहारद्वारा जैनसिद्धांतोनु रहस्य दर्शाव्यु छे अने अध्यात्मज्ञानथी हद वाली छे तेमांथी केटलाक ग्रथोना नाम तथा टूक हकीकत निचे प्रमाणे छे

(१) सम्यक्त्वसारोद्धार ए ग्रथमां सात द्वार छे. (१) द्वारमा व्यवहारनी गलिष्ठता देखाडी छे (२) द्वारमा पाच मिथ्या त्वनु तथा सात निन्हवनु स्वरुप, जीवनी चौद खाण विगेरे अनेक वातो दर्शावी छे (३) द्वारमा समकितना अनेक भेद सरलताथी देखाड्या छे तथा समकितनां लिंग, विनय, शुद्धि, लक्षण,

ए ग्रथमां छे, श्लोकसख्या शुमारे १००० छे

(८) पदसग्रह—ए ग्रथ पद्यबंध छे, एमां विविध पद तथा गुहलीयो विगेरे छे, श्लोक सख्या शुमारे ८०० छे

(९) ध्यानविलास-एने विषे आर्तरौद्र आदि चार ध्याननु स्वरुप, पदस्थ प्रमुख वीजा चार ध्यान, अने चार भावना विगेरे घणा विस्तारथी समजाव्यु छे.

(१०) मिथ्यात्व विध्वसन-द्रव्यभाव, निश्चय व्यवहारथी तथा नास्तिकना विवादमां जीवनु स्थापन कर्यु छे जीवना आठ स्वभाव, नयना अठावीश भेद, विगेरे घणी सारी रीते दर्शाव्यु छे

(११) अभाव प्रकरण-चार अभावनु स्वरुप विगेरे दर्शाव्यु छे

(१२) अनुभवप्रकाश-एमा शुद्ध स्वभाव बताव्यो छे

(१३) अध्यात्म सारोद्धार-निश्चयनय रीते आत्मस्वरुप पामवानो बोध कर्यो छे

(१४) बोध दिनकर-एमा सप्तभगीनु स्वरुप, तथा यशोविजय महाराजकृत अध्यात्मसारग्रथमध्येना योगाधिकारमांथी बेतालीस श्लोकनी टीका विगेरे छे

(१५) चिदानद बत्रीशी-एमां चेतनने अनेक रीते शिखामण दीधी छे, ते विविधरागना पद बत्रीशमां छे

(१६) रागमाळा-जूदा जूदा रागमा गवातां सुडतालीश पद छे. एमां देवचद्रजीकृत नयचक्र जे जैनधर्मनु स्याद्वाद रहस्य समजवानी एक कुचीरुप छे, तेमांना द्रव्यानुयोगनी घणीखरी व्याख्या ए पदोमां करेली छे

(१७) सिद्धनो पदर ढाल-सिद्धना पदर भेद विगतथी बतावी स्त्री मोक्षे जवा सबधी चर्चा करी छे

संयमना भेद, तथा बार भावनाओ घणी लखाणथी समजावी छे, जे घणीज असरकारक छे निर्जरा तत्वमां बाह्य तथा अभ्यंतर तप विगतवार बता या छे तथा घणा प्रकारना तपनी रीति बतावी छे मोक्षतत्वने विषे घणी चर्चा छे, एवी रीते घणी बाबतोथी भरपूर ए ग्रंथ छे श्लोकसंख्या शुमारे ३७०० छे

(४) ज्ञानभूषण—ए ग्रंथ पोतानुज रचेलु एकवीश गाथानु ज्ञाननु स्तवन तेनी टीका करीने बनाव्यो छे जेने विषे ज्ञानना अनेक तरंगोनो समावेश करेलो छे. एना विभाग तथा वर्णन थइ शके तेम नथी ए ग्रंथनी श्लोकसंख्या शुमारे ५००० छे.

(५) हुकमविलास—ए ग्रंथ पद्यबंध छे, जेने विषे (१) अध्यात्मचोविशी, (२) ज्ञानविचारसारग्रंथ, (३) पंच कल्याणकनी पूजा, (४) मृगापुत्रनी सज्जाय, तथा घणांक चैत्य वंदनो, स्तवनो, थोयो, गुहुलीओ, लावणीयो, पद, फाग, होलीओ, रागना पदो, विगेरे रसिक अने अध्यात्म ज्ञानमद विषयो छे ए ग्रंथ घणोज ज्ञानमय छे अने ते स्पष्ट मालूम पडे छे के ए ग्रंथ मध्येनु एक ज्ञाननु स्तवन जे एकवीशज गाथानु छे, ते उपर टीका करी पोते पांच हजार श्लोक संख्यानो ग्रंथ बनाव्यो छे एवा गूढ भावार्थो वालो ए ग्रंथ छे ए पद्यबंध ग्रंथनी श्लोकसंख्या शुमारे १७०० छे

(६) आत्मचिंतामणि—शुद्ध अने अशुद्ध स्वरुपनी ओलखाण करावीने शुद्धने ग्रहण करवानो उपदेश छे, तथा नयना बावन भेद विगेरे घणी हकीकतो बतावी छे, श्लोकसंख्या शुमारे १३०० छे

(७) प्रकृतिप्रकाश—ए ग्रंथने विषे परिणतिनो विचार घणो छे रागद्वेषथीज कर्म बंधाय छे, विगेरे घणी अदभूत बाबतो

मनमा उत्पन्न थएला प्रश्ननो खुलासो मेळवी यथायोग्य धर्म उपदेश साभळी शात चित्ते घेर जता, एवी रीतनो खुलासो हवे बीजे क्या मलशे ? एवी रीते घणा जनोना घणीज दीलगीरी उत्पन्न करे एवा अगणित पोकारो चारे दिशाथी थवा माडया.

आ वखते घोर अधारीरात्रि काल जेवी भयकर लागती हती सूर्य चद्रे पण आ मर्मच्छिद बनाव जोवो न पडे एम धारी अन्य स्थले वास कर्यो होय एम जणातु हतु सर्व कोइने उघवानो वखत हतो परतु महाराजना वियोगरुप शोके आकुल व्याकुल कीधा, जेथी सर्वे जनोए उघनो तिरस्कार कर्यो आखा सुरत शहेरमा, का जैनधर्मीओ के का अन्यदर्शनीओ सर्वे कोइ महाराजना स्वर्गवासना शोकथी लीन थया परतु कोइ प्रकारनी रडकूट या उचे स्वरे रुदन संभळातुं नहि शोके ग्रहित हृदय द्रवित थइ शात रीते चक्षु गळतां

एज समयने विषे केटलाक सुज्ञ जनोना चित्त गुरुभक्तिने विषे तत्पर थया. सारा होंशिआर घणा सुतारने बोलावी सारा सुगधीदार काष्टनां पाटीआं लावी सिंहासनरुपे शिबिका तैयार कराववा माडी, कापडीआनी दुकानेथी घणा मूल्यवान खरा जरीना कापड खरीद करी चतुर दरजीओने बोलावी शिबिकानी माफक शिववातु काम शरु कराव्यु सोनाना तथा रुपानां फुल तैयार करवा सोनीने सूचना करी विगेरे पोत पोताने अनुकूल कार्य करवा मडी पडया. केटलाक जणे ए महात्माना पवित्र देहने पवित्र जले स्नान करावी केशर, चदन, बरास, अत्तर, कस्तुरी विगेरे सुगधीदार द्रव्यवडे लेप कर्यो पछी काश्मीरी शालजोटादि मूल्यवान वस्त्रोवडे शरीरनी विभूषा करी.

बुधवारे बपोरना अगीयार वागता चतुर कारीगरोए तैयार करेली,

स्व तो केवली गम्य परतु मरण पर्यंत पाळणु कर्यु नहि, ए वात तो नक्कीज छे.

अमो महाराज पासे आव्या त्यारपछी एक जणे मुखनी शीतळताने माटे साकरनु पाणी मुखमां रेडवानो विचार कर्यो, परतु ते वात पोताना जाणवामां आव्याथी इशारत करी ना कही इत्यादि पोतानु शारीरिक तथा मानसिक ज्ञान अतसुधी जेवु ने तेवुज अखडित रह्यु हतु वारतक वदी दशम भोमनी रातना नव वागतां श्वासनो उपाड विशेष जणावा लाग्यो, अने अतकाळना चिन्होए सपूर्ण देखाव दीधो आ वखते उपाश्रयमां घणा माणसो भेगा थया हता श्री मोती मुनिए पण पोतानु कर्तव्य समजी यथाशक्ति ज्ञानोपदेश कर्यो त्यारपछी दश वागतां श्री श्री हुकममुनिजी महाराजना ज्ञानी आत्माए ७९ वरसनी वये तेत्रीश वरस गृहस्थावासनां सुख भोगवी, छेतालीश वरस दीक्षा पर्याय पाळी, आ वृद्ध देहनो त्याग कर्यो

आ त्रासदायक समाचार वायुवेगे आखा शहेरमां प्रसर्यो श्रोताजनोनां हृदय थरथरवा लाग्यां, अन्त करण छिन्द्रिद थयां खबर सांभळतावारमां सर्वे उपाश्रयतरफ दोडयां केटलाके काळने ओळभो देवा मांडयो, अरे दुष्टकाळ तें आ शु कर्यु ! अमारा प्राणनो आधार, भव्यजनोने सुखनो दातार, धर्मनो धोरी स्थम, स्याद्वादशैलीनो जाण, शुद्ध प्ररुपक, नीडरवीर, तें क्यां गुप्त कर्यो बीजो बोल्यो के आपणने पुत्र समान गणी धर्म देशना दे, वारवार पूछवाथी पण कटाळे नहि, घणो श्रम थवा छतां पण देशनामा न थाके, एवा वीर पुरुषनु वीरत्व क्षणमां क्यां गयु ? परदेशीओमांथी केटलाक बोल्या के आपणे ज्ञानोपदेश सामळवा हरसाल सुरत आवता, केटलाक दिवस रही

जयनय भद्राना मन्दें करी आकाश गाजी रह्यु अन्य दर्शनीओ पण आ भक्तिभाव जोइ सानदाश्चर्य पाम्या आ वरघोडारूपे शोक स्वारी पुरवासी जनोने आनद तथा शोकमा गरक करती शहेर बहार विसामा स्थले आवी विश्राम कर्या. आ विश्राम स्थले कोइ पण साधु या बीजा कोइनी पण शिबिकाना लपेट कपडाने घणा लोको मळी चुरेचूरा करी हरण कर्याविना रह्या नथी. परतु केट-लाक घणा दानवाला श्रावकोनी लावण्य तथा शरमवडे कोइ पण उचो हाथ करी शक्या नहि जेथी ते घणा मूल्यवान जरकशीना कपडानु उपजेलु द्रव्य पाजरापोळमा परोपकारार्थे अपायु अनुक्रमे अश्वनीकुमार गया, ज्या चदनादि सुवासित काष्टनी चिता तैयार करी मूकेली हती, त्या जइ अग्निसस्कार कर्यो अहिंया सर्वे जणने शोकनी सीमा रही नहि पछी गळते लोचने सर्वेजण पोतपोताने घेर गया आ माठा समाचार देशातरमा फेलाता घणा गाम तथा शेहेरो तरफथी अफसोसना तार तथा दिलासापत्रो आव्या. ज्या ज्या खबर थइ त्या त्या दिलगीरीनी सीमा रही नहि

आवी रीते सर्वत्र शोक फेलायो अने मरणक्रिया पाछळ श हेरना भाविक श्रावकोए घणोज खर्च उदार दीलथी कर्यो एनु कारण ए के ए महात्माना सद्गुणे अने परोपकारी प्रेमे सर्वे सज्जनोना अत करणने विषे उडा उतरी वास कर्या हतो बीजु कइ नहोतु ए निःस्वार्थ प्रेम अद्यापि पण लोकोना अत करण विषेथी खसवा पाम्यो नथी अने खसशे पण नहिज.

आ ससारनो सबध एवोज छे के जे जनम्यु ते आयुष्य पूरु करी मरवानुज छे कोइ थोडा वरस जीवशे अन कोइ घणा वरस जीवशे. तेम छता आ ससारमा कोइ अमर रह्या नथी अने रहेशे पण न हि, तो गइ वस्तुनो शोक शामाटे करवो ? जेणे घणा

अति-उत्तम ग्वरा जरीना कपडे लपेटवरेली, विद्युत् माफक चलकती, कन्शोए करी सपूर्ण शोभनीक, अने मेमवानी गादीए करी सहित शि-विकाने विषे महाराजने पधराव्या. ते जगोए महाराजना सद्गुणोए करी आकर्षित थएला छे चित्त जेना तेवा हजारो माणसोनी भारे ठठ शेठ साहुकार ब्राह्मण क्षत्री कारीगर अने राज्याधिकारीओ विगेरे अढारे वरणना लोकोनी मळी हती. एवी रीते आ शोक-स्वारी बजार मध्ये नीकलो उपाश्रयेथी ते शहेर बहार जता सुधी बन्ने बाजुए माणसो अरड हारवध उभेलां मालुम पडता हतां तेओ अक्षत पुष्पादिवडे वधावता प्रणाम करता शोक जणावता हता. भाविक श्रावकोना पडावेला सोना रुपानां फुलो तथा पा-वलीओ, बेआनीओ, विगेरे रुपा नाणावडे तो वधाववानु चालुज हतु अने पैसा बदामोना तो शुमारज नहोतो पडयाडे केटलाक गाडा अनाजना भरलां अने केटलाक गाडा चणा ममराना तथा लाडु बरफीवाळा हता ए सर्वे दीन दु खी लोकोने छुटथी दान देता हता

केटलाक जण गाडामां भरेली चादरो विगेरे वस्त्रो दुःखी लोकोने आपता हता अने केटलाक गाडामा घास भरेली ते ढो-रोने नाखवामा केटलाक जण रोकायला हता. एवी रीते दान देती आ शोकस्वारी बजारमा चाली शिबिका उपाडनार बंधे डगलां पण रुकवे लेवा पामता नहि कारण के गुरुभक्ति विषे सर्वे को इना चित्त हतो

शिबिकामा विराजमान थएला महात्मानी तेजोमय मूर्ति जाणे मौन धारण करी स्वात्म अनुभव करता परने पण सूचना करती हाय के मौन धारण करी आत्म अनुभववडेज सर्वथा सिद्धि छे, एवा उपदेश करी सहित दीसवा लागी अनुक्रमे जयजयनंदा,

माटे बीजाने धर्म पमाडवो ए गुण सर्वोत्कृष्ट छे एवा उत्कृष्ट गुणवाळा पंचमपद प्रभुताना अधिकारी महात्मानी पडेली खोट केम विसरे ? परंतु गइ वस्तुनो शोक करवो मूकी दइ तेना तत्त्वज्ञाननो खप करशे ते सुखी थशे

ए महात्माना स्वर्गवास थया पछी थोडी मुद्दते एज उपाश्रयने विषे एक आरसपाहाणनी देहरी चणावी महाराजश्रीना पगलां पधराव्यां छे तेनो खरच श्री अमदावादवाळा शाह हठीसिंग रायचंदभाइए आप्यो छे जेथी श्रद्धावंत श्रावक श्राविकाओने गुरुभक्ति तथा स्मरणनो लाभ थशे तथास्तु

दोहरा.

बिंदु ज्यम सागरथकी, चरित्रमांथी तेम;
अल्पबुद्धिथी में लखी, अल्प वात धरी प्रेम १
लघु घणु खरु जोइने, दृष्टिए साक्षात् ;
वळी वृद्धमुखथी सुणी, यथातथ्य जे वात २
प्रत्यक्ष ज्ञानीविण नहि, जाणे मननी वात;
तेह अनुमाने लखी, विवेकथी मुज भ्रात ३
सत्यज लखवा आ विषे, राख्यो छे में स्नेह,
तेम छतां रहे दोष मम, मिथ्या दुष्कृत तेह. ४
केवलीभाषित ज्ञानविण, सर्वांगे नहि शुद्ध;
तो मुज दूषण सर्वथा, माफ करो जन बुद्ध ५
हरगोविंदनी प्रेरणा, धर्मचंद चित जेह,
पारखेतमांहे रही, लख्यु चित्त धरी नेह ६
संवत् ओगणीशत वळी, एकावननी साल;
चैतर शुद द्वादश शनि, पूर्ण कर्यु धरी व्हाल. ७

संपूर्णम्

संकट वेठी तत्वज्ञान पामी घणा जणने बोध करेलो अने जनो हमेश भव्यजनोने धर्मने विषे स्थिर करवानो उत्तम जारीज हतो. वळी सुलभपणे बोध पामे, तत्वज्ञान जाणे, ज्ञानमां स्थिर थाय, तेवा उपर जणावेला ग्रंथो रची जेणे आपणा उपर अनहद उपकार करेलो, पण एक उमदा उपदेशकरत्न गुम थाय ए कइ थोडु शोकजनक ?

ग्रंथो रचवा, उपदेश देवो, बीजाओने धर्ममां जोडवा ए प्र यत्न कइ सहेल नथी, संपूर्ण दयाभाव विना ए कार्य बनतु नथी दया ए प्रेमनो सर्वोत्कृष्ट भेद छे जे स्वार्थ प्रेम एज दया छे, पोताना स्वार्थनो भाग आपी परने सुख करवु ए दयाथीज थाय छे प्रभुताना सर्वोत्कृष्ट गुणोमां दया मुख्य छ. वीरप्रभुमां ए दयानो अंश न होत तो, आपणने ज्ञान कोण आपत, आपणे शु करत ? अने आपणु शु थात ? ए कही शकातु नथी आपणे जे पंचपरमेष्ठिने सर्वोत्कृष्ट गणी वारंवार नमस्कार करीए छीए सारा प्रेमथी पूजीए छीए ए बधु महात्म्य दया सहित प्रभुतानुज छे कारणके आपणे तेमने उपदेशक तरिके दयानीधि जाणीनेज पूजीए छीए आपणी उपर तेमणे उपदेशक तरिके दया न बतावी होत तो हाल आपणे तेमने शाकारणथी पूजत ? कोइने उपदेश आपीने धर्ममा जोडवो ए गुण महा उत्कृष्ट छे, श्री यशोविजयजी महाराजे धर्मना पांच आशय देखा डया छे, तेमा पण विनियोगगुण मुख्य कह्यो छे अने ए गुणविना धर्मनी परंपरा न थाय एम बताव्यु छे श्रीसीमंधर जिनना ३५० गाथाना स्तवन मध्ये दशमी ढाळनी अगीयारमी गाथामां कह्यु छे के,

" विण विनियोग न संभवे रे, परने धर्म योगरे,
तेह विना जन्मांतरे रे, नहि संतति सयोगरे " ॥

व्याख्या पण आवी गइ छे १२६
३ त्रीजा अधिकारमा उपशम समकितादि समकितना छ भेदो आदिवर्णव्या छे १४७
४ चोथा अधिकारमा देवतत्व जीन पडिमा आदि वर्णव्या छे १७१
५ पाचमा अधिकारमा गुरुतत्व वर्णव्यो छे १९५
६ छठा अधिकारमा धर्मतत्व विस्तारे वर्णव्यो छे २१७
७ सातमा अधिकारमा देवगुरु अने धर्म ए त्रण तत्वनी सद्दहणानु फळ मुक्ति देखाडयु छे २२४
६ छठो ग्रथ अभाव प्रकरण तेमा चार अधिकारनी व्याख्या छे
१ पेहेलो प्रागभाव कह्यो छे २४७
२ बीजो प्रध्वंसा भाव कह्यो छे २५०
३ त्रीजो अन्योना भाव कह्यो छे २५४
४ चोथो अत्यंता भाव कह्या छे २५४
७ सातमो ग्रथ मिथ्यात्व विद्वसण तेमा द्रव्य-मिथ्यात्व अने भाव मिथ्यात्व आदि घणा भेदो वर्णव्या छे २६१
८ आठमो ग्रथ मित्र परीक्षा तेमा खरो मित्र कयो छे ते बताव्यु छे. २९०
९ नवमो ग्रथ सिद्धात सारोद्धार तेमा निश्चय नयनी व्याख्या विशेषे छे. ३०४
१० दशमो ग्रथ तत्वसारोद्धार तेमा नवतत्वनी व्याख्या छे ३२३
१ प्रथम अजीव तत्वना रुपी अरुपी मळी पाच द्रव्य भेद गवेख्या छे ३२४
२ बीजो आश्रव तत्व तेना चार हेतु मिथ्यात्वादि वर्णव्या छे ३३०

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	पृष्ट
१	प्रथम मनोरथ भावना—आ ग्रथमा श्रावकनी शो करणी छे तेनो विचार करे के हु आश्रवथी, क्यारे छुटीश अने सर्व विरति चारित्र ग्रहण करीश, वळी समाधि सथारानी गवे पणा करे ते भाव वर्णव्या छे	१
२	बीजो ध्यानविलास—आ ग्रथमा कहेला अधिकार	११
	१ आर्त्तध्यानना चार पायानो विचार	१२
	२ रौद्र ध्यानना चार पायानो विचार	१५
	३ धर्मध्यानना चार पायानो विचार	१७
	४ कर्मजनित समुद्र विस्तार बुद्धिये वर्णव्यो छे	२२
	५ पदस्थादि चार ध्याननु स्वरुप गवेरयु छे	२६
	६ मैत्र्यादि चार भावना वर्णवी छे	२७
	७ शुक्ल ध्यानना चार पायानु स्वरुप गवेखाने ग्रथनी पूर्णता करी छे	३०
३	त्रीजो आत्मचिंतामणी ग्रथमा आत्मानु स्वरुप निश्चय नयनी अपेक्षाय विशेष गवेर्यु छे	४३
४	चोथो ग्रथ अनुभव प्रकाश तेमां अनुभवनी व्याख्या सारी करी छे	१०८
५	पांचमो ग्रथ सम्यक्त्वद्वार तमा सात अधिकार छे	१२२
	१ प्रथम व्यवहारनो पुष्ट अधिकार छे.	१२१
	२ बीजा अधिकारमां मिथ्यात्वना भेद अभिग्रहिक आदि वर्णव्या छे वळी तेमां सात निन्हव थया तनी	

मुनिराज श्री हुकमचन्दजी कृत.

आत्मज्ञान ग्रंथमाळा.

॥ अथ श्री मनोरथभावना. ॥

॥ दुहा ॥

समरि सरस्वति भगवति, प्रणमी पास जिणद ॥
भविक जीवनां हित भणि, करशुं शुद्ध प्रबंध ॥१॥
श्रावक नित ध्यावे सदा, तीन मनोरथसार ॥
संक्षेपे ते वर्णवुं, भविक जीव हितकार ॥ २ ॥
भाषामां करुं ग्रथ हुं, ज्यां निश्चय व्यवहार ॥
अल्प जीव समजी तुरत, पामे शिव सुखकार ॥३॥

॥ अत्र भाषा लिख्यते ॥

प्रभाते रात्री घडी च्यार लेइनें श्रावक उठे, उठीने शीकरणी करे ते वारे मनने विषे त्रण मनोरथ विचारे ते किया तेनी वि-गत प्रथम आश्रव थकी मुकावानो विचार करे १ ॥ बिजो के दिन सर्व विरति चारित्र पामिशु ॥ २ ॥ त्रिजो समाधि सथारो विचारे ॥ ३ ॥ हवे जे आश्रवथी निरवरतवु ते आश्रव केवो छे ते आश्रवना भाव थकी अनतो काल ससारमा परिभ्रमण करे जे समारने विषे सर्व जीव आश्रवने वश्यरह्या थका धर्म पामी शकता

३ त्रीजो पुन्यतत्व अने चोथो पापतत्व बेउ तत्वनी
भेगी व्याख्या करी छे ३४०
४ पाचमो बधतत्व चारे भेदे वर्णव्यो छे ३४७
५ छट्ठा अधिकारे जीवतत्वनी व्याख्या छे
१ अशुद्ध व्यवहार नयना पक्षथी जीवना पाचसेत्रेसठ
भेद गवेरया छे
२ ससारी जीवना आयुष्यनो अधिकार छे ३६६
६ सातमो सवर तत्व सत्तावन भेदे विस्तारे वर्णव्यो छे ३७०
१ अष्ट प्रवचन मातानो अधिकार छे ३७१
२ बावीस परिसहनो अधिकार छे ३७३
३ दस भेदे यति धर्म वर्णव्यो छे
४ बार भावना विस्तारे वर्णवी छे ३९५
५ पांच चारित्रनो अधिकार छे ४४१
७ आठमो निर्जरा तत्वनो अधिकार ४४९
१ बाह्य तपना छ भेद गवेरूया छे ४४९
२ अभ्यतर तपना छ भेद गवेरूया छे ४६४
८ नवमो मोक्ष तत्वनो अधिकार तेमा सिद्धना पदर
भेदनो अधिकार वर्णवीने ग्रथनी पूर्णता करी छे ४९०

गलुं रेहेतुं रखे मारा उपयोग थकी चूकीने अव्रत भेगो भऊं शामाटे जे आगे अव्रत भेगो हुं अनतो काल रह्यो ते थकी अनता दुख मे भोगव्या छे ते दुःखनो विस्तार पछाडी थकी कहीशु ॥२॥ हवे त्रिजो कषाय तेना सोळनो कषाय नवनो कषाय एम पचविश भेद थाय ते थकी पण अनत कर्मनु आगवु थाय छे ते कषाय प्रसिद्ध वात्त्य छे माटे अहिंया विवरो कर्यो नथी ॥ ३ ॥ हवे चोथो जोग तेना पदर भेद ते म ये मनना चार वचनना चार कायाना सात एव पदर भेद थाय ए योग थकी अनता कर्म वधाय छे ॥ ४ ॥ एव मूल हेतुचार उत्तर हेतु सत्तावन ते थकी जीव ससारमा अनता काल परिभ्रमण करे तथा ते थकी केटलाक कर्म-दल समये समये आवे छे के ससारनी माहेली कोर अभव्यजीव अनता छे. ते अभव्यथकी अनतागुण तथा सिद्धने अनतमे भागे समये समये जीवने एटला कर्म वधाय छे माटे एवु जाणीने मूल हेतुचार थकी हे चेतन! वेगलो रहे. शा माटे जे कर्म बाधता तो सुलभ छे भोगवता एना विपाक घणा आकरा छे तेनो वेवरो सक्षेप मात्र लखीए छीए जे तिर्यचनी गातिने विषे पाच स्थावर त्रण विगलेंद्रीतिर्यच पचेन्द्रिसमुर्छिमगर्भज समुच्चय लखीए छीए अर्थ सर्व सर्वनो विचारी लेवो हे चेतन ' तु देखे छे प्रत्यक्षपणे ए जीव विचारा अनाथ छे. एने कोइनु शरण छे नहि अहोनिश भयमाने भयमा रहे छे छेदन भेदन घणा सहे छे एक एकना प्राणनो त्याग करावे छे. ते विचारा रांकनी पेरे टलवले छे तेनी कोइ सार सभाल करतु नथी तेने केटली जातनो भय छे प्रथम तो तेने तेनी जातिना हणे छे. तथा परजातिना तिर्यच ते पण हणे छे तथा पारधी लोक मासाहारी ते पण प्राण रहित करे छे तथा टाढ तडको पण अहोनिश खमे केमके ओढवा पाथरवानु काइ छे नहि रहेवानी जगो छे नहि,

नथी ते आश्रव शाथकी आवे छे तेना मूल हेतु चार छे उत्तर हेतु सत्तावन छे ते मूल हेतुनो वेवरो कहिए छीए प्रथम मिथ्यात्व १॥ बिजु अव्रत २ ॥ त्रिजु कषाय ३ ॥ चोथु जोग ४ ॥ हवे मिथ्यात्व थकी मुकावु ते घणु मुस्केल छे ज्यां सुधी मिथ्यात्व मांहि थकी गयु नथी, त्यां सुधी कोइ जीव समकित पामि शके नहि समकित विना कोइ जीवनु कारज थाय नहि ते माटे प्रथम मिथ्यात्वने तजवु ते मिथ्यात्वनाजघन्यथी पांच भेद छे उतकृष्टादश भेद छे एपांच भेदमांहि अभिग्रहि मिथ्यात्व ते केवु के ग्रे ये लीधी हट छोडे नहि केनि गोडेके गर्दभ पुच्छवत् १ ॥ बिजु अणअभिग्रहित मिथ्यात्व ते केवु छे सवने देवगुरु जाणे छे, पण कोइनी परीक्षा जाणतो नथी भला बुरानी खबर नथी २ ॥ त्रिजु अभिनवेशीक मिथ्यात्व ते केवु छे, खोटु जाणे पण छोडे नहि वीतरागनो मार्ग साचो जाणे पण आदरे नहि केनी गोडे जेम श्री पार्श्वनाथजीनां सतानीया चारित्र थकी भ्रष्ट थइने गोशाला पासे रह्या तद्वत् ३॥ चोथु संशय मिथ्यात्व जे वीतरागना वचनमां समय समय संशय पडे जे केम ए वचन साचु छे के जुठु छे अथवा ए वात हशे के किंवा नहि होय एम डोलातु थकु मन रहे ४ ॥ पाचमु अणाभोग मिथ्यात्व कहेता जे अजाणपणु तेने कशी धर्म कर्मनी खबर छे नहि ते सर्व थकी अजाण नवलो छे शास्त्रते जे जाण अजाणना भाग आठ आठनी आदिनो विस्तार घणो छे. पण ग्रंथ गौरव थाय माटे लख्यो नथी तथा दश भेद मिथ्यात्वना कीधा ते श्री ठाणांगजीमां छे ते रीत जाणजो एवी रीते मिथ्यात्वने भजतो थको जीव ससारमां अनतो काल परिभ्रमण करे ॥ १ ॥ तथा अव्रतना चार भेद छे तेनो विस्तार कर्यो नथी अव्रतने सेवतो जीव अनत कर्म उपारजे. माटे ए अव्रत थकी सदाए काल मने वे

गलु रेहेतुं रखे मारा उपयोग थकी चूकीने अव्रत भेगो भळु
शामाटे जे आगे अव्रत भेगो हु अनतो काळ रह्यो ते थकी
अनता दुख में भोगव्या छे ते दुःखनो विस्तार पछाडी थकी
कहीशु ॥२॥ हवे त्रिजो कषाय तेना सोळनो कषाय नवनो कषाय
एम पचविश भेद थाय ते थकी पण अनत कर्मनु आवयु थाय छे
ते कषाय प्रसिद्ध वाक्य छे माटे अहिंया विवरो कर्यो नथी ॥ ३ ॥
हवे चोथो जोग तेना पदर भेद ते मध्ये मनना चार वचनना चार
कायाना सात एव पदर भेद थाय ए योग थकी अनता कर्म वधाय
छे ॥ ४ ॥ एवं मूल हेतुचार उत्तर हेतु सत्तावन ते थकी जीव
ससारमां अनता काळ परिभ्रमण करे तथा ते थकी केटलाक कर्म-
दल समये समये आवे छे के ससारनी माहेली कोर अभव्यजीव अ-
नता छे. ते अभव्यथकी अनंतागुण तथा सिद्धने अनतमे भागे समये
समये जीवने एटला कर्म वधाय छे माटे एनु जाणीने मूल हेतुचार
थकी हे चेतन! वेगळो रहे. शा माटे जे कर्म वाधता तो सुलभ छे भोग-
वता एना विपाक घणा आकरा छे तेनो वेवरो सक्षेप मात्र लखीए
छिए जे तिर्यचनी गतिने विषे पाच स्थावर त्रण विगलिंद्रीतिर्यच
पचेंद्रिसमुछिमगर्भज समुचय लखीए छीए अर्थ सर्व सर्वनो विचा-
री लेवो हे चेतन ! तु देखे छे प्रत्यक्षपणे ए जीव बिचारा अनाथ
छे. एने कोइनु शरण छे नहि अहोनिश भयमाने भयमा रहे छे
छेदन भेदन घणा सहे छे एक एकना प्राणनो त्याग करावे छे. ते
बिचारा रांकनी पेरे टलवले छे तेनी कोट सार सभाल करतु नथी
तेने केटली जातनो भय छे प्रथम तो तेने तेनी जातिना हणे छे.
तथा परजातिना तिर्यच ते पण हणे छे तथा पारधी लोक मासा
हारी तेपण प्राण रहित करे छे तथा टाढ तडको पण अहोनिश
खमे केमके ओढवा पाथरवानु काइ छे नहि रहेवानी जगो छे नहि,

तथा रोगादिक उपन्याथी महावेदना भोगवे शरीरने विषे वेंद्रि
यादि जीव पडे कोइ काढनारछे नहि तेनु प्रत्यक्षपणे चेतन देखे
छे ने तु पण अनतिवार एने विषे गयो छे वली ए थकी पण ना
रकीने विशे दु.ख अनत घणु आधिक छे ते माटे हे चेतन ! ते
वारे ते पण तु अनति वार भोगवी आव्योछु तेना छेदन भेदन
महा आकरा छे सिद्धात सुणता सर्व खबर पडशे. अनत दु ख ते
माटे हे चेतन ! हवे थकी जो आश्रवनी सगत करीश तो एवां दु.ख
महा आकरां छे ते भोगववा पडशे अने आहिंया तो अल्प सुख छे
आयुष्य अल्प छे ऋद्धि अल्प छे ते अल्प सुखने वास्ते अनताका
ल सुधी अनतादु.ख भोगववा पडशे ते सर्वे सक्षेप थकी देखाडीए
छिए जे क्रोधमान माया लोभ तथा पांच इद्रिना त्रेविश विषय
तथा स्त्रि आदिकना रुप शब्दादिक तेने विषे तु मगन थाय छे पण
ते तो घणा काल सुधी तने दुखदाइ छे अने पुत्र कलत्र स्वजन
सबधी ने तो स्वार्थनु सगु छे ते कोइ तारु नथी ज्यां सुधी स्वार्थ
पूरो थशे त्या सुधी तने सारो सारो कहेशे स्वार्थ पूरो नहि
थाय तो एहिज भवने विषे निंदा करवा लागशे ते माटे तु जे
मारु मारु करे छे ने पापकर्म बाधे छे तेना विपाक घणा आक
रातने आगळ भोगववा पडशे माटे हे चेतन एवो जे आश्रवने तु
दूर कर ॥ इतिद्रव्य आश्रव ॥

तथा रागद्वेष निश्चयथी भाव आश्रव छे तेने छाडीने निज
स्वरूपने विषे रमणकर अने चारित्रनी खपकर ए चारत्रने
विषे अल्प दु ख छे अनतु सुख छे शामाटे जे तद्भव मोक्षे
जाय तो अनतोकाल सदाय सुखमा रहे, फरिथकी ससारिमां
आववु न रहे कदापि देवलोक जायतो सागरोपमतलक देवसबधी
यां सुखभोगवे ते देवलोकना सुख केवा छे जे मृत्युलोकना चक्रव

तिनी आदिदेदनुं सर्वसुख भेगुकरीए तोपण एक देवलोकना सामान्य देवताना सुखना तोले न आवे माटे चारित्र धर्म एवो छे जे अनतु सुख अल्पदुःख ते माटे एवु जाणीने आश्रववेगलो करवो ॥ इतिप्रथमोमनोरथ संपूर्ण १ ॥

हवे बीजे मनोरथे समणोपासक एवु चिंतवे जे कया दहाडे हु आगार धर्म छोडीने अणगार धर्म अगीकार करीश ? ते दिन धन्यकरी मानीश ? ते अणगार धर्म केवो छे जेने विषे पाच महाव्रत रह्या छे पाच सुमति छे. त्रणगुप्ति छे पाच आश्रव गया छे पाच इंद्रिसवरी छे. च्यारकषाय टाल्या छे. च्यारविकथा छोडी छे च्यारसंज्ञा जेनी पातली पडी छे त्रणगर्वे करीने रहित छे त्रणदंडे करीने विरमित छे त्रण विराधना जेणे तजी छे त्रण आराधना जेणे अगीकार करीने छकायना प्रतिपालक छे सातभय निवर्त्या छे आठमद जीत्या छे आठ प्रवचनमाताना धारक छे नवविध ब्रह्मचर्यनो पालक छे. दशविधयतिधर्म अगीकार कर्यो छे तथा निश्चयचारित्र हेचेतन ! प्रगट थयेथके कल्याण थाय शामाटे जे व्यवहार चारित्रतो अभव्यने पण होय. आजीव अनतिवार आदर्यो चूक्यो पण काइ काम आव्यु नहि वास्ते हे चेतन ! तु तारा स्वभाव थकी निश्चयचारित्रने प्रगटकर जेहथकी मोक्षरूपिणी स्त्रीमले ते निश्चयचारित्रशु कहीए ? निश्चयचारित्र नाम आत्मानु छे ते श्रीभगवतीजीमां कह्यु छे 'आयासमाइय'॥इतिवचनात् ॥ तथा श्रीउत्तराध्ययने उक्तंच, वथ्थुसहावोधम्मो, ॥ इतिवचनात् ॥

माटे धर्म तथा चारित्रनाम आत्मा छे ते माटे आत्माने ओलख्याविना जे क्रिया करे ते लेखे आवे नहि वास्ते हे चेतन तुतारा ओलखाणनी चेतनाकर, जे आत्माना घरनु ज्ञानदर्शन

छे तेने विषे जे स्थिरपरिणामे रहेवु ते निश्चयचारित्र कहीए माटे हे चेतन ! तु प्रथम तुताराज्ञानदर्शननी शुद्धिकर प्रथम दर्शननी शुद्धिकर प्रथम दर्शननी शुद्धि जोइ ते दर्शन समकितने कहीए अ हिंया कोइ तर्क करशे जे चारित्रना भावने विषे समकितनो भाव कह्यो जे चारित्र शुद्धि सातमे गुणठाणेछे अने समकितशुद्धिचोथेगुण ठाणे छे तो निचला गुणठाणामां केम कह्यो छो तेने कहीए जे ए तर्क तमे ठीक कर्यो पण चोथे गुणठाणे करता सातमे गुणठाणे समकित शुद्धि विशेके होय शामाटे जेमणीप्रकृति नोक्षय उपसम होय तेटलो आत्मानिर्मल विशेषे होय ते माटे अहिंया समकितनी भावना भाववी ॥ ने श्री आचारागजीमां कह्यु छे जे मुनि समकितनी भावना भाव ते माटे ते जग्याए दोष- छे नहि हवे समकितनी शुद्धि बतावे छे व्यवहार समकित देव अरिहत, गुरु, सुसाधु, केवलीभाषितधर्म सत्य करी माने तेनी स दहणा राखे तेने व्यवहार समकित कहीए तथा निश्चय समकित जे सात प्रकृति उप समावे तेने उपशम समकित कहीए तथा बीजे भेदे काइक उपसमावे [काइक क्षय करे] तेने क्षयोपशम समकित कहीए ते धर्मीने सदहणा केरी होय निश्चय देव मारो आत्मा सर्व गुणे करीने सहित छे ने सर्व दोषे करीने रहित छे निश्चय गुरु मारो आ- त्मा निश्चय धर्म मारा आत्मानो स्वभाविक एम सद्दहे, अहिंया विचा- रणा घणी छे पण ग्रथ गौरव थाय माटे लखी नथी तेने निश्चय समकित कहीए हवे ज्ञाननी शुद्धि सक्षेपथी कहीए छिए पाच ज्ञान- ना भेद जाणे तथा खट द्रव्यने जाणे तथा खट द्रव्यना गुण पर्याय जाणे तेने सात नय करी तथा द्रव्यार्थिकना दश भेदे करी तथा पर्यायार्थिकना छ भेदे करी तथा आठ पक्ष खट कारकादिक भेदे करीने जाणपणु तेने ज्ञान शुद्धि कहीए तेने विषे जे स्थिर परिणाम

तेने निश्चय चारित्र कहीए निश्चय चारित्रने विषे रह्योथको जीव एवी करणी विचारे हे चेतन ! तु तारा आत्मानी घात करीश नहि. शा माट जो तु तारा आत्मानु रखोपु नहि करे तो तने अनंताभव जन्म मरण करवु पडशे माटे प्रथम पोताना आत्माना गुणनु रखोपु करवु ते आत्माना गुण कहेवाय छे, अहो चेतन ! तु एक छे बिजा अनेक छे जे पुद्गल छे ते पुद्गल तु नहि ए पुद्गलनो तो स्वभाव सडणपडण विध्वसण छे अने तारो स्वभाव अक्षय छे तु तो अरुपी छे पुद्गल तो रुपी छे तु तो अचल छे पुद्गल तो चल छे तु अकल छे पुद्गल तो कल छे तु वेदि छे तु अछेदि छे तु अक्षय छे तु अजर छे तु अमर छे. तु अटल छे तु अनत ज्ञानमय छे तु अनत दर्शन मय छे तु अनत चारित्रमय छे तु अनतवीर्यमय छे तु अनत उपयोगमय छे तु अनत सुखमय छे एम निश्चयथी निज आत्मा-भावतो थको वरजे–पाच द्रव्य पुद्गलादिक तेनो जे परिहार कर तो थको भव्य थकी पाच महाव्रत इत्यादिक विचारे शा माटे जे ज्ञान छे ते मोटी वस्तु छे श्री भगवतीजीमा पण एवु कह्यु छे जे ज्ञानी सर्व थकी आराधक छे माटे ज्ञान छे ते मोटो पदार्थ छे ने क्रिया छे ते सामान्य पक्षी छे केमजे श्री भगवतीजीमा कह्यु छे जे ज्ञानी एक श्वासोश्वासमा नारकी करोड वर्ष जेटलु छेदनभेदन खमी कर्म खपावे माटे ज्ञान छे ते मोटो पदार्थ छे एवु साभळी कोइ अज्ञाण पुरुष कहेसे जे अमे तो ज्ञान करीशु क्रियानु शु काम छे तेने किजे जे क्रिया विना एकला ज्ञाने कार्य सिद्धि थाय नहि ते श्री आचारगजीमा कह्यु छे जे क्रियानय विशेष छे अने ज्ञाननय सामान्य छे माटे आत्मार्थीने बे पक्ष विचारवा जोइए आत्मार्थीने ए वातोमा सदेह राखवो नहि 'ज्ञानक्रियाभ्या मोक्ष' ज्ञान क्रियाथी मोक्ष छे इति वचनात्

हे चेतन एवु चारित्र निश्चयथकी ने व्यवहारथकी ये दहाडे प्र गट थशे अने आत्मा कर्मरूप थकी के दहाडे मुकाशे अने आश्रव थकी के दहाडे वेगला थइशु ? जे दहाडे वीतरागनी आणा प्रमाणे चारित्र धर्म अंगिकार करीशु ने निव्याबाध सुख वरीशु ते दिन लेखा करी मानीशु धन्य छे ते पुरुषोने जे वीतरागनी आणा प्रमाणे चाले छे म्हारे एवो दिन के दहाडे आवश ने आ मोहजाळ थकी क्यारे हु छुटीश हे चेतन ! ए ताहरु कोइ नथी एतो सहूना स्वार्थनु सगु छे तु जेमा मारु मारु करीने दुखी थाय छे कर्म बंध करीश ते तारे एकलाने भोगववा पडशे माटे कोइ भाग लेशे नहि माटे हे चेतन ! तु चेत आ जोगवाइ फरि फरिने मलवी घणी दुर्लभ छे आर्यक्षेत्र श्रावकनु कुळ सद्गुरुनी संगत वीतरागना वचननु सांभळवु, निरोगी काया, पाच इंद्रीनु संपूर्णपणु आवी जोगवाइ मळे छता जो नहि चेते तो तने शु काम आवशे ? माटे चेत हे जीव ! संसारथकी विरम, संसार रुप समुद्रमां शा वास्ते तणाय छे साक्षात् धर्म जहाज हाथ आव्युं छे तो उपर चढीबेस जेम संसाररुप समुद्रनो पार पामे ते थकी आत्मा अनंत सुखनो भोगदारी थशे मोक्षरुपिणी स्त्री मळशे रोग शोक इ त्यादिक दुःख छे ते टळशे जन्म जरा मरणना फेरा टळशे एवो चा रित्र धर्म छे ते तु अंगिकार कर विजे मनोरथे समणोपासक श्रा वक एवा भाव भावे ॥ इति द्वितीया भावना संपूर्णा ॥ २ ॥

हवे त्रिजो मनोरथ कहे छे हवे त्रिजा मनोरथे श्रावक समाधि संथारो चिंतवे समाधि संथाराना बे भेद छे एक व्यवहार एक निश्चय प्रथम व्यवहार थकी देखाडे छे, के पोतानु शरीर शिथिल थयु जाणे आयुष्यकाळ पण नजिक आव्यो जाणे त्यारे संथारानो मनोरथ करे ,पछे संथारानी जमी पडीलेहिने परठारजे पछे लघु नित्य वडी नित्यनी भोमि पडिलेहिने परठारजीने ठाम संथारो करे करिने

ते सथारा उपर बेशीने प्रथम सिद्धने नमोथ्थुण करे पछी अरिहतने करे अथवा धर्माचार्यजीने करे नमोथ्थुण करीने पछे अढार पाप स्थानक द्रव्यथकी ने भावथकी आलोचे त्या संथाराना बे भेद छे एक पादोपगमनसथारो ते जेम वृक्षनो डाल कापी होय ते हाले चाले नहि तेवी रीते सथाराथी हाले चाले नहि ॥ १ ॥ बिजो सथारो ते चार आहार पचख्खे एवी रीते सथारामा रह्यो थको लाग्या पापने आलोवताथका पडिकमतोथको तथा धर्माचार्यादिकने नमस्कार करतो थको तपसजमथी आत्माने भावतोथको कालमासेकाल करे तेने समाधिसथारो कहीए निश्चयथकी सथारो जे पोताना आत्माने लाग्याकर्म तेनीवर्गणानो विचार धर्मध्याने प्रवर्ततो थको करे तथा द्रव्यगुण पर्यायने विचारतो कालमासे काल करे तेने समाधिमरण कहिए अहिंया विचार घणो छे पण ग्रथगौरव थाय माटे लख्यो नथी, एणी रीते निश्चय व्यवहार सथारो कहीए. अणइच्छाएशमदम परिणाम सहित निज आत्माने भावतो थको अनियाणे नियाणे रहित एवो सथारो समाधि मरण सहित जे पहित साधे छे तेने धन्य ! तथा जे एवा सथारे वर्तमानकाले वर्ते छे तेने धन्य ! हु पण एवो सथारो क्यारे पामीश ? ते दिन लेखे करीने जाणीश ? एवी रीते श्रावकानित्य त्रण मनोरथ धारे. एम श्रमणोपासक त्रण मनोरथ करतो थको अनता कर्मने निर्जरे ते पछी विचारे हे चेतन ! आज तारे शु तप करवु ? शामाटे ? अनतो काल थयो चार प्रकारना आहार करता पण तने कांइ तृप्ति वळी नहि तने तप करवु श्रेय छे केमके जो तप नहि करे तो च्यारप्रकारनो आहार करवाथी अतिप्रमादने सेवीश, काम कदर्प घणो वधारीश, एथकी अनेक माठी गतिने प्राप्त थइश अने जे आहार करीश, ते थकीतो पुद्गल पोपाशे पण कांइ आत्मानु कल्याण थशे नहि अने पुद्गल छे ते तो अते काइ रहेवानु नथी अने

कर्मबंधन नारे भोगववा पडशे वास्ते हे चेतन ! तु तप कर आज तने छमासिक तप करवु श्रेय छे वळी विचारे जे मुजथकी छमासिक तप नहि बनी आवे तो पांच मासिक तप करीश एम अनुक्रमे विचारतो थको यावत् पोतानी शक्ति सार नमुक्कारसहिय पोरिसी आदि जेटली शक्ति होय एटला तपनो निश्चय करे एम भावना भावतो थका श्रावक (श्रमणोपासक) चिंतवे.

॥ दुहा ॥

एम मनोरथ विधि कही, श्रावकने हित काज ।
भणेगणे ने साभले, ते पामे सुख साज ॥ १ ॥
जबलगे रवि शशिरहे, तब लग रहो एग्रथ ।
मेरु परे अचल रह्यो प्रसरो पृथ्वीसथ ॥ २ ॥
निश्चय व्यवहार रचना करि, ग्रथ एह गुणज्ञान ।
नामे ते मनोरथभावना, रत्नतणी छे ए खाण ॥३॥
वडीआर देशवणोद गाम, कीधो श्रावक काज ।
सवत ओगणीस पांचमा, चइतरे चदराज ॥ ४ ॥
चर्तुदशी भ्रगुवार सहि, कीधो ग्रथ विज्ञाण ।
वांचे पढे निशादिन सही, तस घर कोड कल्याण ५
अल्पबोध रचना करी, शोधजो चतुरसुजाण ।
मुनि हुकम कहे पढतां थकां, सहेजे शिव वधुमाण ६

इतिश्री मुनीश्वरहुकममुनिजी कृत मनोरथ नामे तृतीयभावना सपूर्णा ॥

॥ इति मनोरथभावना समाप्ता ॥

श्रीध्यानविलास.

श्रीगुरुभ्योनमः

॥ दुहा ॥

धुर नमु परमातमा, चिदानद भगवंत ।
तासपसाय रचना करुं, देखीरीझेसंत ॥ १ ॥
मुक्ति मारगने साधवा, कहीश ध्यान विचार ।
शुभाशुभने त्यागवु, आदरवुं शुद्ध अनुसार ॥ २ ॥
मुक्तिमार्ग साधन तणा, दीसे मार्ग अनेक ।
पण मुक्ति छे ध्यानमां, भाखु छु ते छेक ॥ ३ ॥
तप जप क्रिया अनेक विध, व्यवहारे कहेवाय ।
पण मुक्ति तेमां नही, पुन्य प्रकृती थाय ॥ ४ ॥
मुक्ति रहि एक ध्यानमां, ज्ञाने करो ते शुद्ध ।
मूर्ख अर्थ पामे नही, पामे पंडित बुद्ध ॥ ५ ॥
ते कारण इहां भाखशुं ध्यानतणो विचार ।
भेद घणा इहां दाखसु, शास्त्र तणे अनुसार ॥ ६ ॥
ध्यानविलास ते जाणिये, नाम ग्रथनु एह ।
ज्ञानीजन होशे सुखी, वांची गुणनो गेह ॥ ७ ॥

अत्र भाषा लिख्यते.

हवे ध्यान ते शाने कहीए? जे चेतनना चपलपणाने स्थिर करवु चेतनना अध्यवसाय स्थिरभाव राखीने ध्यावे तेने ध्यान योग कशो तेना त्रण प्रकारे छे एक भावना ॥ १ ॥ अनुप्रेक्षा ॥ २ चिंत ध्यान ॥ ३ ॥ ए त्रण प्रकारे ध्याने करीने चित्तने स्थिर करवु तेने ध्यान कहीए हवे अंतर्मुहूर्त एकाग्र चित्तनो उपयोग, स्थिर रहेवु तेने ध्यान कहीए एटले एक अर्थने विषेज विचार करवो त्यां घणा अर्थ पडखेथी संक्रमण थाय त्यां स्थिर पणे रेहेवु, तथा त्यां ध्यान दीर्घपणे ध्याननी परंपरा थइज जाय छे, त्यां कोइ अंतर्मुहूर्तनो नियमछे नहि एटले छद्मस्थने एवी रीते ध्यान प्रवर्ते, अने केवलीने योगनु रोकवु तेज ध्यान कहीये ॥

॥ उक्तंच

अंतोमुहुत्तमित्त चित्तावत्था मेगवत्थुम्मि
छउमथ्थाणजोगनीरोहोजिणाणतु ॥ १ ॥

हवे ते ध्यानना चार भेद छे आर्त्तध्यान ॥ १ ॥ रौद्रध्यान ॥ ॥ २ ॥ धर्मध्यान ॥ ३ ॥ शुक्लध्यान ॥ ४ ॥ ते मध्ये प्रथमना बे ध्यान ते अशुभ छे ते थकी अशुभ कर्म बधाय अशुभ गति प्राप्त थाय पाछि बे ध्यान रह्या ते मुक्तिना कारणवाच्य छे, ए उत्तम जीवनेज प्राप्त थाय हवे त्यां प्रथम जे आर्त्तध्यान छे तेनु स्वरूप कहिये छिये, तेना चार पाया छे, प्रथम इष्टवियोगनो विचार करवो के रखे मने से वस्तुनो वियोग थाय एटले इष्ट कहेतां जे पोताना मनने गमे एवा वल्लभ पदार्थ मळ्या तेमां मग्न थइने रहे ते कीया कीया जे मातापिता भाइ मित्र पुत्र कलत्र धन धान्य स्वजन कुटुंब मेडी मेहेल वाडी आराम प्रमुखनो रखे मने वियोग थाय एम करतां

कदी वियोग थयो तो महाचिंतामा पडे, मोटो शोक करे, महा विलाप करे, ते अभिलापरुप एकत्वपणे जे परिणाम ते इष्टवियोग आर्त्तध्याननो पेहेलो पायो काहिए ॥ १ ॥ हवे बीजा अनिष्ट सयोग केहेता जे अनिष्ट वस्तुनी प्राप्ति थइ एटले मनने न गमे तेवा शब्दादिक पदार्थनुं मळवुं थयु छे, तेनो वियोग थवानो चिंतवे एटले अनिष्ट जे भूडां दुखना कारण जे आ शत्रु अहीथी क्यारे जाय अथवा आ दारिद्र अवस्था म्हारी क्यारे जशे ?, अथवा आ कुमाणसनो समागम थयो ते केम टले ? अथवा ए थकी आपणो छुटको क्यारे थशे ? इत्यादिक विचारवु ते अनिष्टसयोग बीजो पायो कहिये

हवे त्रीजो पायो रोग चिंता आर्त्तध्यान कहेता शरीरमा वायु, गरमी, पीत, ज्वर, इत्यादिक उपजे त्यारे दुःख घणु करे घणी चितामा प्रवर्ते, एना औषध उपचार करवानी चिंतामा रहे ते रोग चिंता आर्त्तध्यान त्रीजो पायो कहीए ए ध्यानने विषे माय' त्रण लेश्या होय कृष्णलेश्या ॥ १ ॥ नीललेश्या ॥ २ ॥ कापोतलेश्या ए त्रणलेश्या सभवे छे

हवे चोथो पायो अग्रशोच केहेता जे मनमा आगलना कालनो शोक करे, जे एणे वर्षे ए काम करीशु अथवा आवते वर्षे आवी रीते काम करीशु एम चिंतवे तथा दान शियल तपनु फल मागे जेमा एणे भव आ तप, प्रमुख कीधा तेनु मने अमुक फल होजो एटले हु आवते भवे इद्र तथा देव तथा चक्रवर्ती तथा वासुदेव बलदेव, शेठ, साहुकार, पुत्र, कलत्र, धन, धान्यादिक हरकोइ मागे. ए आगलना भवनी वांछना, एटले अग्रशोचना परिणाम उपजे अथवानी आशानु करवु ते पण ए अग्रशोच मध्ये छे ॥

॥ उक्तञ्च ॥

निदान चिंतन पाप ॥

एटले ए आर्त्त ध्याननो चोथोपायो अग्रशोचनामा कह्यो ॥

हवे ए ध्याननु लक्षण कहीएछीए ए जे आर्त्त ध्यान छे तेने विषे अतिशय सक्लिष्टभाव नथी एटले क्रूर परिणामदुर्जयतित्र न लाधे अहीं ए कर्मनी परिणति एवीज दीसे छे, हवे अहीं शु लक्षण लाधे छे ते कहीए छीए हाहा हु शु करीश इत्यादिक आक्रंद करे, उचे स्वरे करीने रुदन करे, घणो शोचकरे, नाम देइने रुवे, अथवा नाम देइदेवने परचारीने कहेजे तें म्हार आशु कर्युं ? वळी छाती मस्तकनी ताडना तर्जनाकरे, केशमाथानातोडे इत्यादिक एसर्व लक्षण आर्त्त ध्यानना छे अथवा अमे मादाछीए, हवे अमे शु करीए इत्यादिक पोताना आत्मानीनिंदा करे इत्यादिक लक्षण ए सर्वे आर्तध्याननां जाणवां अथवा साधु थइने दुर्जननी रीतराखे तेनां लक्षण कहिए छीए अरे भाइओ अमे शु पाळीए, आज पाचमो आरो विषमकाल छे ने मुक्ति मार्ग तो महा मोटो छे पण आ काळे पाळवु घणु कठण छे पडते काळे कोइक जेवळो लाधे, वळी पोते प्रमादी छे ने विषयमां लयलीन छे व्रत नियम तप जप थकी उपराठा धर्ममार्गथकी चूकया जिनवाणीने गोपवे एटले यथार्थ उपदेश करे नहीं अने लोको पासे याचनाओ करता फरे जे धणी आर्त ध्यानमाज प्रवर्ते तेने दुर्जन कहिए

॥ उक्तञ्च ॥ प्रमक्तश्चैत दुर्जना ॥

ए ध्यान छठागुणठाणासुधी होय ते माटे जे आत्मार्थी मुनी श्वर होय तेने ए प्रमादनु स्वरूप जाणीने अवश्य तजवु अने ए

ध्यानवालानी गतिमाय तिर्यंच सुधी होय एवुं जाणीने अव-श्य छाडवु ॥

हवे रौद्रध्यान कहिये छिये रौद्रकेहेता महाकठोर निर्दय दुष्टपरि-णाममां प्रवर्ते एवु जे माठु चिंतवन होय तेने रौद्र कहिये, ते रौद्र-ध्या-नना चार पाया कह्या छे हिंसानुबंधी १ मृषानुबंधी २ स्तेयानु-बंधी ३ परिग्रह रक्षणानुबंधी ४ ए च्यार पायाना नाम जाणवा हवे हिंसानुबंधी रौद्रध्यान कहियेछिये. जे जीवहिंसा करवानु चित-वे अथवा जीवहिंसा करता हर्षसंतोष पामे तथा हिंसा करता देखिने खुशी थाय, तथा ज्या संग्रामनी वार्ताओ थती होय, अथवा एवा शास्त्र वाचवानो घणो उमेदराखे अथवा एवा शूरवीर पुरुषोना घणा वखाण करे अथवा ए वातनी अनुमोदना करे ए सर्वे हिंसानु-बंधी रौद्रध्यान पेहेलो पायो जाणवो ॥१॥ हवे मृषानुबंधी कहेता जे जुठु बोले, मनमा हर्ष पामे जे हु केवु जुठु बोल्यो छु ने मारा जु-ठानी कोइने खबर पडती नथी अथवा आवी रीते जुठु बोलीने अमुकने समजाविशु अथवा परनी चाडी करे अथवा अन्योअन्य खोटा विवाद चलावे अथवा मिथ्यात्वना वचन उच्चारणकरे, अथवा कपट सहितविचार करे एसर्वे मृषानुबंधी रौद्रध्याननो बीजो पायोजाणवो २ हवे त्रीजो स्तेयानुबंधी कहेता जेचोरी करवी अथवा ठगाइ करवी, अ-थवा गांठ छोडी लेवी, इत्यादिक कार्य करी मनमा खुशी थवु, अ थवा इत्यादिक काम करवानु मनमा चिंतववु, अथवा मनमा एवी मोटाइनो हर्ष चिंतववो, जे हु केवो जोरावर छु? जे हु पारको माल खाउछु, मुज सरीखो कोण छे? एवा परिणाम ते स्तेयानुबंधी रौद्रध्याननो त्रीजो पायो जाणवो ॥ ३ ॥

॥ हवे परिग्रहरक्षण कहेता ॥ नव प्रकारनो जे परिग्रह धन धान्य, पुत्र, कलत्र, जानवर, वाहन, जमीन जायगा, प्रमुख वधारवानो

घणी इच्छा रहे ते, परिग्रहने मेळववानी इच्छाए अनेक पापारंभ करे, अथवा परिग्रह घणो मळ्यो होय तो अभिमाने करी मग्न थाय वळी ते परिग्रह भूमि मध्ये डाटे अथवा बीजा कोइ अनेक स्थानके तेने गोपवे वळी मनमा शंका रहे के रखे कोइए महारु मुकेलु दीठु तो नथी! अथवा ए परिग्रह साचववा वास्ते चाकर नफर शिर धर्यो राखे, इत्यादिक महापाठा परिणाम प्रवर्ते ए परिग्रह रक्षण रौद्रध्यान चोथो पायो जाणवो ॥ ४ ॥ ए रौद्रध्यानना चारे पाया एवी रीते करवे करावे अथवा तेनी अनुमोदना एमा विषे स्थिर परिणाम तेने रौद्रध्यान जाणवु ते महादुखनु कारण छे ते महा अशुभ छे, ए ध्यान पांचमा गुणठाणा सुधी होय अथवा कोइक जीवने छठागुणठाणासुधी पण होय, एम केटलाएक आचार्य नोमतछे, हवे ध्यानवालाने लेश्या त्रण होय कृष्ण लेश्या ॥ १ ॥ नील लेश्या ॥ २ ॥ कापोत लेश्या ॥ ३ ॥ ए त्रण माय' समवे छे, ए लेश्यावाळाना परिणाम अतिसंक्लिष्ट होय केहेतां महाक्रूर दुष्टपरिणामी होय ए कर्मनी प्रकृति एम जणाय छे ए लेश्या घणा दोषनु कारण छे नाना प्रकारना जीवने मरणने दोषे करी हिंसादिकनी प्रवृत्तिए करी पापे करीने खुशकरनीपणु (निर्दयपणु) होय पश्चाताप होय नहि. परना अपवाद थयाथी राजीपणु माने, महाविषयने विषे प्रवर्तनपणु धारे, ए लक्षण सर्वे रौद्रध्यानना जाणवा ए ध्यानवालानी गतिप्राय नरकनी होय माटे एने अवश्य छांडवु ए आर्त्तध्यान तथा रुद्रध्यान बे अशुभ छे ते बने महानवळां छे. अने जेम जेम घनो परिचय विशेष राखे तेम तेम एनो रस महाकडवो थाय अने एनो विपाक महा कटु प्रगटे माटे आत्मार्थी मुनीश्वर अथवा सर्वभव्य जीवोने कहवु के ए थकी सदा वेगळु रेहेवु ए ध्यान न करवु अने जे थकी आत्मा निर्मल

थाय ने पोतानु मूल स्वरूप प्रगट थाय एवु ध्यान करवु, सपूर्ण निर्मल ध्यान न आवे तो पण द्रव्य क्षेत्र काल भाव जोइने शुभ भावना भाववी. पण आत्मा निर्मल करवानी रुचि होय तो पोतानी सत्ताने आलंबन लेइने ध्यान करवु ने तेथकी निरपक्षपणे प्रवर्त्तवु ते शुभ लेश्यानु लक्षण छे ॥

॥ हवे धर्मध्यान कहिये छिये ॥ धर्म व्यवहार क्रियारूप ते निमित्तकारण वहारनु छे पण धर्म जे श्रुतज्ञान तथा चारित्र धर्म ते उपादान कारण छे तेनु साधन धर्म तथा रत्नत्रयी भेद पणे उपादान धर्म छे तेने शुद्ध व्यवहार उत्सर्गानुयायी छे अथवा अपवाद धर्म तथाअभेद रत्नत्रयी ते ध्यान शुद्ध कहिए निश्चयनये ते उत्सर्ग धर्म छे जे वस्तुनु सत्तागत शुद्ध परिणाम स्वगुण प्रवृत्ति कर्त्तादिक अनंतानदरुप सिद्ध अवस्थाए रह्यो ते एवंभूत उत्सर्ग उपादान शुद्ध धर्म छे ते धर्मनु भापण रमण एक स्थिरतापणे चेतन तन्मय पणानो उपयोग एकत्वनु चिंतवनु ते धर्मध्यान कहिये. हवे ते धर्म ध्यान एवु जाणीने पछी चार भावनाने ध्याइये ज्ञान भावना ॥ १ ॥ दर्शनभावना ॥ २ ॥ चारित्रभावना ॥ ३॥ वैराग्यभावना ॥ ४ ॥ हवे ए चारना लक्षण कहिए छिए ज्ञानभावनाथकी निश्चलपणु थाय एटले परवस्तु साची भासे नहि पोताना स्वभावमा स्थिरतापणु आवे ने दर्शनभावनाथकी मुझाय नहि एटले मंत्र तंत्र देव देवीना चमत्कार प्रमुख देखी साचु माने नहि जाणे के ए सर्व परभाव छे कृत्रिम वस्तु छे ते सर्वे असत् छे ने अकृत्रिम वस्तु जे आत्मस्वरुप प्रमुख सर्व सत् छे चारित्रभावनाथकी पूर्वकृत कर्म नीर्जरे नवा कर्म न उपार्जे वैराग्यभावनाथकी स्त्री आदीनो सग तथा पुद्गलीकनो सग एटले ए पर वस्तुनो सग मुके तजवु थाय सशय मान तेने न होय ए चारे भावनानु फल अनुक्रमे फ-

ईने देखाड्यु हवे एवी रीतनी जे भावना भावे अथवा एवी भाव नामा जेनु चित्त स्थिर थयु होय ते धणी ध्यान करवामा स्थिरपणुं पामे माटे तेवा प्राणी जे छे ते ध्यान करवाने योग्य छे बीजा बा की रह्या ते धानने अयोग्य छे शा माटे के मन छे ते अतिशय चचल छे ते चपलताने लीधे करीने जीताय नहि शत्रुनु सैन्य लाखो होय तो तेने जीतवाने पुरुष समर्थ थाय छे पण तेवो पुरुष मननो निग्रह करवा समर्थ न थइ शके शा माटे के मन तो पवननी गोडे हाथमा आवे नहि तेथी मन जीतवु घणुज दुर्घट छे, ए वातमां कोइ सशय नहि पण आत्मार्थीए तो अवश्य एवा चपल मनने पण जीतवु जोइए ते शी रीते जीताय ते निरतर एना अभ्यास राखे शब्दादिक कोइनो काने न पडे एवो वास्तिमां एकांत ध्यान करे, ने वैरागे करीने मन वश करे एम करतां करता मन वश्य थाय, अने जे धणीने मन वश्य नथी थयु ते पुरुष कइ ध्यान करवा समर्थ न थाय, अने जे वारे ध्यानदशा न आवे ते वारे मुक्ति क्यां छे एतो ध्याने करीने छे. माटे मनने वश्य करवानो उद्यम करतां थकां अभ्यासे करीने ध्यान दशा पामवी सुलभ थाशे जे जे पदार्थ देख-वामा आवे ते ते सर्व बाह्य पदार्थ करीए तेनो विश्वास न राखे ने तृष्णा सर्वनी छोडे ते धणी अभ्यास करी शके ते शुद्ध भा-व वालाने वस्ति केवी जोइए ते कहिएछिए के वस्ति केहेतां उ-पाश्रराने विष स्रीनो रेहेवास न जोइए पशु केहेतां ढोर न जोइए क्लीव केहेता नपुसक न जाइए बीजा माठा आचारना कोइ न जोइए एवी वस्तिमां मुनिने रेहेवु ध्यान वेला ए विशेषे करीने एवी वस्ति जोइए एवु आगममा परमात्माए कह्यु छे हवे जेनु चित्त स्थिर थेलुछे, मन वचन कायाना जोग वश्य छे तेवा आत्माना धणीने गाममां रह्या तोपण

ठीकज छे वनमां रह्या तोपण ठीकज छे, एटले तेने काइ वननोने घरनो बाध एकेनो छे नही तेवा मुनीश्वरने तो ज्या पोताना चित्तने समाधान रहे ने पोताना उपयोगथी न चूके तेवे ठेकाणे रेहेवु ने ध्यान करवु जे जे स्थानकने विषे योग स्थिर रहे छे तेज काल पण रुडो जाणवो एटलो दिवस रात्री पहोर मुहूर्त घडी पल जे ध्यानमा जाय ते वेला धन्य करीने मानवानी छे तेने काइ कशी वेलानु नियम छे नहि, वळी मुनिने ते अवस्थाए जे शोचा शोचपणु कंई विचारवानु छे नहि तेमा सर्व स्थानकने विषे शुभाशुभ काई जोवु नहि ज्या पोताना ध्यानो व्याघात थाय ते तजवा योग बाकी सर्व स्थानकने विषे जे मुनीश्वस्थिर चित्तवाला छे ते बेठा अथवा सुता ध्यान करे जे द्रव्य क्षेत्रकाल भावना अवस्थानने विषे रह्या जे मुनि तेने कशी ए वातनो नियम छे नहि जे नित्यपणे योगने विषे स्थिर रह्या त्यारे तेने करणी शी रही के वाचना पृच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा एचार ॥ ४॥ धर्मना आलबन छे अने तेवा पुरुषने अवश्य एज करणी छे एवी खरी वस्तुनु जेने आलबन होय ते प्राणी कठणमा कठण स्थानक होय त्या पण चडे तेम तेवा आलबनवाळा प्राणी ध्यानरुपी मेडीए रुडी रीते चडे शामाटे के आलबन ग्रहवाना आदर थकी प्रगट थयो जे गुण ते थकी विघ्न मात्रनो क्षय थयो तेना योग थकी करीने ध्यान रुपी पर्वत उपर सुखे सुखे चडता योगीश्वरने कोइ रीतनु भ्रष्टपणु न थाय अने केवली परमात्माने तो योगनो रोध करवो तेज ध्यान कह्यु छे, जिनमतनु तो एज प्रमाण छे, अने अन्य दर्शनवाला तो जेने जेनी नजरमा आवे तेम समाधान करे छे ते उपर काइ प्रतीति थाय नहि एवी रीते ध्याननु स्वरुप जाणीने ओळखे ते ध्यान करवा योग्य होय. ते धर्म ध्यानना चारपाया छे

आज्ञा विचय ॥ १ ॥ अपाय विचय ॥ २ ॥ विपाक विचय ॥३॥ संस्थान विचय ॥ ४ ॥ ते मध्ये प्रथम आज्ञा विचय कहिए छीए जे वीतरागदेवनी आज्ञा तहत्ति करिमाने सद्दहे एटले भगवते षट् द्रव्यनु स्वरूप देखाडयु ते साते नये करी चार प्रमाणे करी चार निक्षेपे करी इत्यादिक जे भाख्यु छे ते मध्ये पाच द्रव्य अजीव जाणीने त्यजवा कह्या छे एक आत्मद्रव्य शुद्ध आदरवा योग्य छे ते आत्मस्वरुपनी ओलखाणने वास्ते स्याद्वाद स्वरुप नित्यानित्य पक्ष निश्चय व्यवहार प्रमुखे करि तेनु स्वरुप विचारे विचारीने निः-संदेह पोताना स्वरुपनु ध्यान करे ए परमात्मानी आज्ञा प्रमाणे यथार्थ उपयोग भासन थए थके तेहने हर्ष उपजे ते उपयोग म ध्ये निर्धार भासन थयु तेनु रमण करवु ते अनुभवीने एक तन्मय थाय ते आज्ञा विचय धर्म ध्यान कहिए ॥ १ ॥

हवे बीजो पायो अपायविचय कहिएछीए अनेक संसारी जीव कर्मने [illegible] थाय छे शाथकीके अज्ञान राग द्वेष कषाय [illegible] तेने वश [illegible] छे पण हे चेतननु तो हवे [illegible] वस्तु [illegible] माटे ए वस्तु त्हारी नाहि [illegible] तारु शु छे ? ने तु केवो छे ? [illegible] चारित्र, अनतवीर्य [illegible] अज छे, अनादि [illegible] अचल छे अकल [illegible] छे, अनु [illegible] छे, अभेदी [illegible] छे, अ[illegible] छे, अ[illegible] अयोनी छे,

अससारी छे, अमल छे, अपरपार छे, अव्यापी छे, अनाश्रित छे, अकंप छे, अविरुद्ध छे, अनाश्रव छे, अलख छे, अशोकि छे, अभंगी छे, अनाकार छे, अमूर्ति छे, लोकालोक ज्ञायक छे एवो शुद्ध चिदानंद मारो आत्मा छे अेवु जे अेकाग्रतारुप तन्मयपणेरमण तेने ध्यान कहिअे अ अपायविचय धर्म ध्याननो बीजो पायो जाणवो ॥ २ ॥

हवे विपाकविचय त्रीजो पायो कहियेछीये आपणो आत्मावीतराग परमात्मा सरीखो सिद्धनो सार्धर्मि छे ने आससारमा केम खुत्यो छे ते स्वरुप विचारता एम भासन थयु जे परायो सगकीधो तेमा राचीमाची रह्यो तेथी कर्मने वशपड्यो दुःखी थाउ छु ते कर्मनो विचार करे जे कारण ज्ञानगुण ते ज्ञानावरणी कर्मदाब्यो छे यावत वीर्यगुण अतरायकर्मे दाब्यो छे एम आठकर्मथी जीवना आठगुण दवाणा छे, तेथी आससारने विषे जीवने जन्म मरण अनंता करवा पडे छे ने सुखदुःख पोतेपोताना कीधेला कर्मना छे ते सुख उपर राचवु नहि ए शुभ कर्मना उदयथकी छे दुःख उपन्ये शोच करवो नहि ए अशुभकर्मना उदयथी छे ए बने पौद्गलीकभाव छे एमा आत्मिकभाव छे नहि वलीए कर्मनुस्वरुप विचारवु ते कहियेछिये प्रकृतिबंध १ स्थितिबध २ रसबध ३ प्रदेशबध ४ ए च्यारबधना स्थानक विचारवा तथा उदय उदीरणा सत्ता तेना स्वरूपनु चिंतवन करवु ते एकाग्रता परिणामे वर्ते ते विपाक विचय धर्म ध्याननो त्रीजो पायो जाणवो हवे सस्थान विचय चोथो पायो कहिये छिये त्या उत्पात व्यय, ध्रुव, काल, भावादि विचारे, पर्याय लक्षणे करी जुदा जुदा भेदे नाम स्थापना द्रव्य भाव भेदे करीने चउद राज लोक केवा छे उचपणे चउद राज छे ते मध्ये सात राज नीचो छे तेने अधोलोक कहिये अने वच

ले अढारसें योजन मनुष्य लोक छे तेने तिर्यग लोक कहिये
ते उपरे कइक उणो सातराज उर्ध्वलोक छे ते मध्ये देवता
वैमानिक ते उपर सिद्धशिला, सिद्धक्षेत्र सिद्धजीववर्ते छे. एम
लोकनुमान छे, ए लोक स्थानानु चिंतन विशेष छे, आ माटे के
अनंता कालमा आपणे जीवे ससारमा भमतां सर्व लोकमा जन्म
मरण करी फरश्यो छे, एवु जे लोक स्वरुप तथा लोकने विषे पचा-
स्तिकायनु अवस्थान, तथा परिमित द्रव्यगुण पर्यायनु अवस्थान,
त्या पोताना कर्मनो कर्त्ताभोक्ता आत्मा छे, पण ते आत्मा केवो
छे, अरुपी अविनाशी, उपयोग लक्षणे करी युक्त, एवो मारो आत्मा
छे, एवी रीते एकाग्रतापणे, विचारवु, तन्मयपणे, परिणमवु, ते ध्यान
संस्थान विचय धर्म ध्याननो चोथो पायो जाणवो ॥ ४ ॥ हवे स-
क्षेप थकी धर्म ध्याननु लक्षण कहिये छिये हवे कर्मजनित समुद्र
वखाणीए छिये एटले कर्मे करी प्राप्त थयो एवो जे समुद्र जन्म
जरा मरणरुप जले करी सपूर्ण भरेलो छे ने मोहरुप मोटा भमरा
पडी रह्या छे ने कामरुप वडवानल नाम अग्नि रहे छे अनेकपा
यरुपी चार पाताल कलसा छे, ते मध्ये आशारुपी मोटो वायु तेणे
करीने भरेलो छे, माठा विकल्परुपी कल्लोल मोटा उछली रह्या छे,
एवो महा मोहरुप उद्धत भव समुद्र कह्या छे हवे मनमा विश्रांत
केहेता हर्ष शोकनु स्थानु ते रुपणी वेल ते माहे पडयो तेमायी नि
फलनु घणु कठण जाणवु वली त्या याचनारुप शेवालनो समूह
घणो छे अने दुखे करीने पूर्ण थाय एवो जे विषय सुख ते समुद्रनो
मध्य भाग छे अज्ञानरुपी वादलानो अधकार घणो व्यापी रह्यो छे
आपदा रुपिणी विजली पडवानो भय घणो छे कदाग्रहरुप पवन
अदभूत वाइ रह्यो छे वली त्या विविध जातना रोग तेनो जे समूह
ते रुपी मच्छ कच्छादिक जल जीव घणा उछली रह्या छे वली

त्या समुद्रमा जे पर्वत छे ते कहीए छीए चचलतारुप, शून्यपणा रुप, गर्वपणारुप जे जे दोष ते ते पर्वत मोटा जेमा छे एवो भव समुद्र तेने विचारवो हवे तेओ जे भव समुद्र तेने तरीने पार पामवानो उपाय काहिए छीए. ज्या समकितरुप दृढ वधन वाधेलु अढार हजार शिलाग ते रुपी पाटीया ज्या जडेला छे त्या ज्ञानरुपी निर्यामक ए जहाजना चलावनारा छे सवररुपी कीच कहेता तेले करीने पाटीयाना आश्रवरुप छीद्रने पूरया छे जेना मनोगुप्तिरूप गुप्तसुकान तेणे समु चाले आचाररुप मडपे करी दीपतु ने उत्सर्गने अपवाद ए वे मार्ग छे जे एने एवु जे वहाण तेने विषे सुभटनु सैन्य चढ्यु ते कोण जे शुद्ध अध्यवसाय रुपी घणा बलवंत सुभट छे वली ते वहाणनो कुवो भला जोगरूप स्थभ छे ते स्थभ उपर स्थापेलो एवो जे शढ वहाणने चलावे एवो वेगे भव समुद्रने पार पमाडे एवो उज्वल निर्मल अध्यात्मरूपी शढ ज्या चडावेलो छे हवे ए शढरुप अध्यात्मथकी मगन थयो जे तपरुप पवन अनुकूल वातो थको चालवाने वेगे करीने सवेगरुप तेणे करीने चाल्तु थकु वहाण वैराग मार्गमा एवु जे चारित्ररुपी जहाज महावेगे करीने चाल्यु जाय छे तेनी माहेलीकोरे महामुनिराज बेठा छे महा ऋद्धिना धणी छे तेमनी अनित्यादिक जे भली भावनाओ ते रूपणी पेटी पोतानी ते म ये ज्ञानरुपी रत्न भरेलां छे ते पोतानी पासे राखेली छे एवी रीते जे मुनीश्वर प्रवर्ते छे ते घणी निर्विघ्नपणे मुक्तिरूपी नगरनु राज सुखे सुखे पामे हवे एवी रीते मोक्षरुप नगरे जाता थका एक ससारनी माहेलीकोरे मोटो एक पल्लीपति छे तेनु नाम मोह राजा कहेवाय छे ते सर्व क्रोधादिक भील तेमनो ए राजा छे ते महाजोरावर छे इद्र चद्रनागेद्र ते पण एने जीतवा समर्थ नथी एवो जोरावर तेने खबर पडी जे आ चारित्र रुपी

जहाजमा ज्ञानरूप ध्यानथी भरेला मुनिमाहे बेठेला छे ते मोक्ष नगरे जाय छे तेवी खबर साभळी घणो उदास थयो वि चारवा लाग्यो के आपणा ससाररूपी नाटकनो उच्छेद थाय छे अने आपणी ऋद्धिनो नाश थाय छे एम घणो शोकातुर थइने बेठो चिंतारुपी कोठारमा पेठो त्या एवो विचार उत्पन्न थयो जे कगाल थइने बेशी रहेतो कइ काम बनशे नहि माटे उद्यमकर अने जइने युद्ध करीने एऋद्धि छे ते वधीए लेइ आवु अने ए जीवने लेइ आवीने पाछो ससारमा कबजे करु एम विचारी पोतानो दुर्ध्याननामप्रधानजेनोजे टडेल तेने तेडावीने कह्यु के आपणु दुर्बुद्धि नाम वहाण सग्रामने विषे बेशीने लेइ जवानु छे ते तैयार करो बीजा दुष्टाचार प्रमुख जहाज छे ते सर्वे तैयार करो त्यार पछी पोताना जे योद्धा राग द्वेष प्रमुखने कह्यु के आप आपणी सेना लेइने तैयार थाओ त्यारे ते सब पोत पोताना सुभट सेनाओ सज्ज करी वहाणमा बेठा भव समुद्रमां ते वहाण चलवीने लडाइ उपर पोहोच्या तेवा समाने विषे धर्म राजाना सुभटो चारित्ररुपी जहाजने विषे स्थिरता रुपी मडपने विषे बेठा हता तेणे मोहराजानु सैन्य आवतु दोडु देखीने तुरत उठी सज्ज थइने रणमडप भूमिमा आवता हुवा तत्वचिता प्रमुख जे वहाण ते लेइने सवे सज्ज थया पछी मोहराजा साथे माहो माहे युद्ध करवा लाग्या त्यारे सम्यक्दर्शन प्रधाने मिथ्यात्व प्रधानने अतदशाए पोहोचाडयो. केवो म हाजोरावर हतो मोहराजानो मोटो सुभट महाविषम कामनो करनारो तेवा प्रधानने सहजमा एक लीलाए करीने हण्यो हवे जे मोह राजानो जे रणस्थभ नेन जइनेरोकी लीधो अवो जे उपसमनाम सुभट तेणे रुपायादिक चोरटाओ सर्वने वश्य कर्या नेशील सुभटे कदर्प चोरने जीत्यो अने वेराग्य सुभटे हास्यादिकपदने

जीत्या हवे श्रुतज्ञान योगादिक सुभट तेणे निद्रादिक सुभटोने हण्या धर्मध्यान शुक्लध्यान वे सुभटे आर्त्त रौद्र ए बे सुभटोने हण्या. इंद्रियनिग्रहसुभटे असयमचोरने हण्यो क्षयोपशमयोद्धाए दर्शनावरणीय चोरोने हण्या, वलीअशातारुप सेन्य मोहराजानु घणुं हतु ते सर्वे पुण्य उदययोद्धाना पराक्रमथकीनाठु हवे जे द्रव्य स्वरुप हाथीउपर वेठो रागरुप सिंहेकरीने सहित एवो जे मोहराजा पोताना रागकेशरी पुत्रने लइने लडाइ उपर चडे आव्यो त्यारे धर्मराजा श्रद्धारुप अष्टापद वाहन उपर वेशीने साथे ज्ञानरूपपुत्र भारडपक्षीरुप लइने पोते चडयो त्या मोहराजाने हण्यो तथा सर्व मोहराजाना सैन्यनोक्षय करी निकदन कर्यु तेवारे मुनिराज महा आनदने प्राप्त थया, धर्मराजाना पसायथकी पोतानु इच्छितकार्य थयु तेवारे ते साधु महा व्यवहारीथया चारे देशनो वेपार करवा लाग्या तेमने कोइ रीतनो हवे भय रह्यो नहिं एवी रीते पोताना मननी माहेलीकोर बने से न्यनु स्वरूप विचारवु, अहिं वहारनो कोइ चोर नथी तेम राजा पण कोइ नथी, पोताना स्वरुपनी माहेलीकोरे विचारीने जुवे तो भास थाय. केमके स्वरुपानुयायीपणे प्रवर्तता धर्मराजाना पक्षनी जीत समजवी ने परानुयायीपणे प्रवर्त तो मोह राजाना पक्षनी जीत जाणवी एम पोताने अतरमां बन्ने स्वरूप विचारवाना छे परअनुयायीए प्रवर्त्तवु ते वध छे स्वअनुयायीए प्रवर्तवु तेथी मुक्ति छे, माटे मुक्तिने वध सर्वे पोताना अतरमा छे एवी रीते धर्मध्यानमां पेसवानु ए लक्षणथकी पामे एवा वीजापण आगमने विषे पदार्थना समूह कहेला छे ते पोताने विचारी लेवा जे मुनि इद्रियोने तथा मनने जीतिने निर्विकार वुद्धिवालो थाय, ते धर्म ध्यान ध्यावावालो छे अने तेनेज धर्म ध्यान ध्याताकहिए, वलि शान्तदान्तपण तेनेज कहिए ज्ञाननु लक्षण एमज छे, स्थिरभाव ग्रहे तेने सर्व घटे, सतोपी थइने आ-

त्मामां स्थिरभाव ग्रहे तेनेप्रशावत कहिए तेनेज ध्यानी कहिए ए धर्मध्याननु लक्षण कह्यु ए धर्मध्यान छट्ठा गुणठाणाथी ते आठमा गुणठाणा सुधी होय वलि केटलाक आचार्यो कहे छे के चोथागुण ठाणाथी ते आठमा गुणठाणा सुधी होय केटलाक आचार्य कहे छे के चोथा गुणठाणाथी ते सातमा गुणठाणा सुधी होय, पछी तत्वतो केवली गम्य छे पण चोथे गुणठाणे जो धर्मध्यान न होय तो समकित रहे नहि, माटे एम समज्यामां आवे छे के चोथा गुणठाणाथी ज धर्मध्यान छे, ते सातमा गुणठाणा सुधी छे ने आठमे गुणठाणे तो शुक्लध्यान आवे, एनु भासनमा आवे छे पछी तो केवली जाणे ते खरु छे एटले ए धर्मध्यान कह्यु हवे ए ठेकाणे बीजां पण चार ध्यान कहेलां छे ते कहिए छिये पदस्थ ॥ १ ॥ पिंडस्थ ॥ २ ॥ रूपस्थ ॥ ३ ॥ रूपातीत ॥ ४ ॥ हवे ए पदस्थध्यान कहेता जे अरिहंतादिक पांच पद तेना जे गुण ते विचारी पोताना आत्मस्वरुपमा मेलवी लेवा ते गुण सर्वे पोताना आत्मामां लावे ते गुणनु ध्यान करवु शा माटे के अरिहंतादिक पदमां ने मारा आत्मामां कश्यो भेद छे नहि माटे तेनु ध्यान करवु तेने पदस्थध्यान कहिऐ हवे बीजु पिंडस्थ ध्यान कहिए छीए पिंड कहेता जे शरीरनी मध्ये असंख्यात प्रदेशे निर्मल आपणो आत्मा अनंत गुणे करी व्यापी रह्यो छे. ते सिद्ध परमात्मा सरखोज छे इत्यादिक विचारवु अथवा सिद्धनी बरोबर गुणने मेलववा एपिंडस्थ ध्यान कहिए हवे रूपस्थध्यान कहिए छिए, रुप कहेता जे आ शरीरादिकमा रह्यो छे एवो महाचेतन पण पोते स्वभावे अरूपी छे, अनंतगुणी छे, वली रुप शब्द एवो जे केहेता वस्तुनु जे मूल स्वरूप सत्ताए छे एनु तेने पण रूपी कहिए, हवे ए आत्मस्वरूप अवलंबीने ध्यान करवु एटले आ-

स्मानुं रूप एकत्वपणे जे ध्यान करवु एटले मूल स्वरूपमाज र-
मणता रहे एटले परभावनुं त्यागीपणु स्वभावनु भोगीपणु एवी
रीते एकत्वतापणे (तन्मयपणे) जे रमवु ते त्रणे ध्यान धर्म ध्या-
नमां उवेरुयां छे ए मुक्तिदाता नथी मुक्तिना कारणीक छे ए धर्म
ध्यान मायः देव लोकनी गति आपे हवे जे चोथु ध्यान रुपातीत
नाम छे, ते शुक्ल ध्यानना घरनु छे पण अहिं समुदाय भेगु आव्यु
छे, तेथी धर्मध्यान मलतु कहियेछिये पण ए ध्यानने शुक्लध्यान
भेगु समजवु हवे ते रूपातीत ध्यान कहिये छिये ,रुपातीत कहेतां
जे रूप थकी अतीत एटले पुद्गलादिक रूप थकी रहितपणु स्वस्वभा-
वीक आत्मा कर्मरूप रजे करीने रहित निर्मल संकल्प विकल्प र-
हित अभेद एक शुद्ध सत्तारुप निर्मल चिदानद तत्वामृत, असग
अखड, अनत गुणपर्यायरूप आत्मस्वरूपनु ध्यान ते रुपातीत
ध्यान जाणवु इहा मार्गणा गुणठाणा नयप्रमाण पक्ष मति आदिक
ज्ञान क्षयोपशमभाव ए सर्वे छांडवा योग थया ते ए ठेकाणे
खपमा आवे नहि अहिं तो गुणनु कर्त्ता जे ध्यान ते लेवा योग्य छे,
सिद्ध परमात्माना मूलगुण ते रूप आत्मस्वरूपने ध्यावे अहिं पर-
पक्ष फशो न लाधे मुक्ति पामवानु कारण तेज ध्यान छे, माटे जेवु
मुक्तिमा स्वरूप छे तेवुज आत्मानु स्वरूप ध्यावबु एटले ए रूपातीत
ध्यान जाणवु हवे ए धर्म ध्याननी भावनाओ च्यार छे ते कहिए
छिए मैत्री भावना १ प्रमोद भावना २ माध्यस्थभावना ३ करुणा
भावना ४ हवे ते मध्ये प्रथम मैत्री भावना कहिए छिए मैत्री कहेता
सर्व जीव साथे मित्राइपणाना भावनी चितवना करवी जेम पोताना
मित्रनु भलु चाहे छे अने तेने रडु करवाने तेने खुशी घणी
रहे छे तेम सर्वे जीवनु कल्याण थवानी चाहना करवी कोइ जीवनु
भुडु चिंतववु नहि ए सर्व जीवनु हित थाय एवी चिंतवना करवी

एटले सर्व जीव उपर हितबुद्धि जे सर्वे जीव सुखी थाय सर्वे जीवनु कल्याण थाय ने मुक्तिमा जाय अथवा सर्व जीव धर्म पामे तो सारु एम सर्वे जीवना मित्र भावे करीने कल्याण चिंतववु पण कोइनु अकल्याण चिंतववु नाहि एवी रीतनी चितवना होय त्यारे मैत्रीभावना जाणवी १ हवे बीजी प्रमोद भावना कहिये छि ए, प्रमोद कहेता महा हर्षनु स्थानक पामवु ते शाथकी जे गुणवतने देखीने अथवा ज्ञानादिक गुण उपर घणो राग रहे हवे जे गुणवत कहेता जे पोताना धर्माचार्य अथवा बीजा पण ज्ञान योगीश्वर महामुनि तेवाना मेलापथी महा आनंद प्रगटे अहो महारां धन्यभाग्य जे आज महने मारा धर्माचार्य अथवा ज्ञानी पुरुषोनो समागम थयो, आज मने तेमना दर्शन थया अहो हु तेमनी सेवा भक्ति करीश, महारा सर्व पाप गया, आज मारे मोटो पुन्यनो उदय थयो, वली ते गुरु केवो छे के अनंत गुणना धणी छे मोक्षना सुखना दातार छे, मोक्ष मार्गनु कारण एज छे वली ते गुरु केवा छे तत्वभोगी छे, तत्वविलासी छे, तत्वाश्रयी छे स्वपरना जाण छे, परभाव त्यागी छे एवा जे कोइ महारा जे धर्माचार्य साक्षात्आकाले परमात्मारूप छे अहो एमनु उपकारीपणु केजे अज्ञानजीव अजाणतेवाने बहुरीतथी उपदेश करीने धर्म पमाडे मार्गमा लावी मोक्ष पोचाडे दूरगतिथी पडता वारे, एवा जे गुरुजीनो महा मोटो उपकार, ए उपकार बीजा थकी निपजे नहीं एवा उपकारीना गुण ओशींगण थवानु, कोइ रीतथी दिसतु नथी, कोटिकोटि भव सुधी सर्व रीते करीने सेवा भक्ति आदि देइने करे तोपण गुण ओशींगण न थाय माटे एवा गुरुनो मने समागम मल्यो छे धन्य छे महारां भाग्य धन्य आजनो दहाडो धन्य घडी धन्य वेला अथवा स्याद्वाद धर्मनो योग मल्यो ज्यां आत्मस्वरुपनी चर्चा वार्ता थइ रहि

छे अेवा समागम ज्या मले त्या पण घणो आनद माने एम गुरु आदिकना मलवाथकी एवु मनमा विचारे जे आज मने चिंतामणि रत्न क्रोटानकोटि मल्या आज मारा मनना मनोरथ सर्वे फल्या एम घणो आनद पामे वली मनमा एवु विचारे जे आवा कारण मुजने मलेला छे तेनो विरह पडे नहि, मारे अहोनिश एवा कारण नो समागम रहेतो घणु सारु, एम आनदमय चिंतवतो वर्ते तेने प्रमोद भावना कहिये २ हवे त्रीजी माध्यस्थ भावना कहिये छिये एटले मध्यस्थ केहता सम परिणाम एटले धर्मवत पुरुष अथवा ज्ञानि पुरुष अथवा सरखी श्रद्धावाला एवा जीवोने देखीने ते उपर राग उपजे तथा मिथ्यादृष्टि कुमार्गी हिंसक पुरुषो उपर पण दया उपजे पण तेना उपर द्वेष न उपजे एवो मनम विचार थाय जे ए विचारा अज्ञान छे तो हु एने उपदेश दइने हेतु युक्तिये करीने मार्गमां लावु ए धर्म पामे तो घणु सारु हु तेने मार्गमा लावी शकु तो बहुज सारु थाय नहि तो ए विचारा अनाथ जीव नरकादिक चारगतिमा रखडशे एवी रीते विचारी तेने उपदेश समुख देवो एम उपदेश देता कदापि मार्गमा न आवे तो पण ए जीव उपर द्वेष करवो नहि एम चिंतवबु के ए बीचारा अजाण छे ने ससार बोहोलो बाकी जणाय छे, माठा कर्मना उदये करीने धर्म पामी शकता नथी एम सम परिणाम राखवा एवी रीतनी चितवना ने माध्यस्थ भावना कहिये ॥ ३ ॥ हवे चोथी करुणा भावना कहियेछिये, करुणा कहेता सर्व जीव उपर दया राखवी सर्वे जीव आपणा सरखा जाणवा पण कोइ जीवने हणवो नहि तथा कोइ जीव दुखी होय तो तेना उपर पण करुणा करवी जीवनु दु ख टालवानी जो पोतामां सामर्थ्यता होय तो तेनु दुख टालवु पण बीजा जीवने बाधा पीडा न थाय तथा धर्महीन होय तो तेनी पण करुणा करवी जे अहो आ

बीचारा धर्म पाम्या नहि ए संसारमा रखडशे ने महा दुखी थशे इत्यादिक चिंतवना तेने करुणा भावना कहिये एटले ए चार भावना धर्म ध्याननी धरनी कहि ते जाणवी

हवे शुक्लध्यान कहियेछिये, शुक्ल कहेता निर्मळ शुद्धपरआलंवन विना आत्मस्वरूपने ओलखीने तन्मयपणे ध्यावे एवु ध्यान ते शुक्लध्यान कहिये, शामाटे जे शान्त दान्त होय ते पोताना आत्म स्वरूपमा रमे तेज शुक्लध्यानयोग छे केमके सिद्धनो पण एज स्वभाव छे तो साधकनो पण स्वभाव एज जोइये बीजे स्वभावे ए वस्तु मळे नहि हवे ते शुक्लध्यानना चार पाया छे ते कहियेछिये प्रथक्त्ववितर्कसप्रविचार ॥१॥ एकत्ववितर्कअप्रविचार ॥ २ ॥सुक्ष्म क्रियाअप्रतिपाति ॥३॥ उच्छिन्न क्रियानिवृत्ति ॥४॥ ए चार भेदमां प्रथम प्रथक्त्व वितर्कसप्रविचार कहिये छीए पण त्या प्रथमना जे बे पाया छे ते अप्रमत्त भावे ध्यान थाय अने पाछलना बे पाया केवळिने ध्यावाना छे, हवे धर्मध्यानने विषे लेश्या त्रण होय प्रथम तेजो लेश्या बीजी पद्म लेश्या त्रीजि शुक्ल लेश्या ए ध्यानने विषे वर्ततो जीव भेदनो भजनार थाय तेनु चिन्ह ए छे के आगमनी श्रद्धा करे ए ध्यानथकी उत्तमधर्म प्रगटे, ए थकी स्वर्गना सुखनी प्राप्ति थाय मोटु पुण्यानुबंधी पुण्य उपार्जे पण ए थकी मुक्ति न थाय हवे मुक्ति थवारूप शुक्लध्यान ते कहिये छिये त्या प्रथम सम परिणाम थाय कपट रहितपणे जीवने मुक्तपणु धारण करतो शुक्लध्याननें ध्यावे छद्मस्थपणे आत्मामां मन धरीने रहे त्यारे रागद्वेषने जीते ते धणीनी मुक्ति थाय हवे ते पायानो विचार कहियेछिये हवे प्रथक्त्व वितर्कसप्रविचार नामे पहेलो पायो कहियेछिये एटले जीवथी अजीव जुदा करवा, स्वभावथी विभाव जुदो करवो, पृथक्त्व कहेता भिन्न भिन्न जुदा वेंहेची नाखवा, स्वरूप नेविषे तथा द्रव्य त

था पर्यायने विषे प्रथक्त्व पृथक्त्वपणे ध्यान करवु पर्यायते गुणने विषे संक्रमण करवा, गुणने पर्यायमा सक्रमण करवा एवी रीते स्व- धर्ममां धर्मांतर भेद ते पृथक्त्व कहिये तेनो जे वितर्क केहेतां श्रुतज्ञा- नादिकउपयोग एटले त्या नाना प्रकारना नय निक्षेपा प्रमुख भगे करी विचारवु एटले ए विचार रूप श्रुत ज्ञान ध्यावु थयु त्या अर्थ अक्षर योग इत्यादिकनो जे विचार तेनु माहोमांहे सक्रमण करवु, अथवा भिन्न जुदु करवु अथवा ७ द्रव्यना गुण पर्याय तेमा जेनी गति कहेतां रमणता थइ छे,एवी रीते प्रथक् प्रथक् नोखो नोखो सप्रविचार केहेता आत्मद्रव्य भिन्न काढी परद्रव्य पाच अप्रविचार जाणी दूर करे ते सविकल्प एटले पोतानो उपयोग एटले एक विचारथा पछी बीजो विचार थाय एवी रीते पृथक कहेता जे भिन्न वितर्क कहेतां जे विचार स्वपरनो करवो एवी रीते एकाग्रतापणे जे ध्यान ते पृथक्त्व वि- तर्क सप्रविचार नामे शुक्लध्याननो पहेलो पायो जाणवो, एवी रीते पोतानी सत्ता स्वरूपमा यावे, परभावनो त्याग करे ए पक्ष सर्वे शुद्ध व्यवहार नयनो छे, ज्ञान थी भेदज्ञान कहिये ध्यान थी शुक्ल ध्याननो पहेलो पायो कहिये ए पायावालो स्वर्ग गतिपामे, ए पायो आठमाथी ते अगिआरमा गुणठाणा सुधी होय, ए पायावा- लाने त्रणे योग उतकृष्टपणे साधन थाय ए प्रथम पायो जाणवो हवे बीजो पायो एकत्व वितर्क अप्रविचार कहेता, ते ठेकाणे पहोच्यो थको जीव जे वर्जे पाचद्रव्य धर्मास्तिकायादिक तेना गुण पर्याय ते कांइ अत्र ध्यानमा आवे नहि, तथा अनता जीव रह्या तेनो पण विचार लावे नहि, त्या एक पोताना आत्माने गुण पर्याय सहित एकत्वपणे ध्यावे, आत्मद्रव्य ज्ञानादिक गुण पर्याय ए सर्व मलीने एक आत्मा थाय छे माटे मारो आत्मा गुण पर्याये करिने एकरूप छे, जेम सिद्धपरमात्मानु रूप छे तद्वत् माहारु स्वरूप छे

एवु ध्यान ते एकत्वपणे स्वरूप तन्मय पणे आत्मधर्म अनतानु
एकत्वपणे ध्यान छे, पण अत्र वितर्क कहेता श्रुत ज्ञानावलंबीपणे
अने अप्रविचार कहेतां विकल्परहित दर्शन ज्ञानना समयांतरे का
रणता विना रत्नत्रयीनु एक समयी कारण कार्यतापणे जे ध्यानते
वीर्य उपयोगनि शक्ति छे तेथी एकाग्रतापणे यावे शामाटे जे ए ध्या
नक्ने विषे त्रण योग शुद्ध होय अने वितर्क कहेतां विचार ते पण
थोडो होय एटले मननु चचलपणु थोडु होय जेम समुद्र पवन र-
हित स्थिर थाय तेम मनस्थिर थाय, अत्र विचार सूक्ष्म छे
अवधिज्ञान मनपर्यवज्ञाननो उपयोग देता ए ध्यान वनी
शके नहि, शामाटे के अवधि मन• पर्यव ज्ञान छे ते परा
नुयायी छे एना विषय रुपी द्रव्यने जाणवानो छे अने आ ध्यान छे
ते स्वअनुयायी छे अने एनो विषय अरुपीद्रव्यने जाणवानो छे
माटे ए वेनो उपयोग अन्योन्य प्रतिपक्षी छे माटे ए ध्यान ते
श्रुतज्ञानवडेज नीपजे, ए ध्यानथी निर्मल केवलज्ञान पामे पण
ए ध्यानथकी मुक्ति कोइ पामे नहि. शामाटे के ए पण योगा
दिक ग्राहिक छे ते कारण माटे एवी रीते एकाग्रपणे ए ध्यानने
विषे प्रवर्ते तेने एकत्ववितर्क अप्रविचार नामे बीजो पायो जा-
णवो स्थिरपरिणामी ए ध्यान छे, दीपक जेम पवन रहित स्थिर
शिखावाळो रहे तेम सकल्प विकल्प रहित मन ए ध्यानमा रहे छे
ए ध्यान पर्यायरूप छे, बारमागुणठाणाना अत सुधी ए ध्यान छे,
हवे सूक्ष्मक्रिया अप्रतिपाति त्रीजोपायो कहियेछिये एटले बीजा
पायाना अते केवल ज्ञान पामी तेरमा गुणठाणामावर्ते त्या तो ध्या-
नान्तरीपणु होय ते वार पछी तेरमाने अते चउदमे जतां त्रीजो पायो
शुक्लध्यानो आवे, एक काययोग बादरथकी रुधेलो छे तथा मन-
योग वचनयोग समस्त रुधेला छे तथा केटलाक आचार्य कहे छे के

बादरज रोकेला छे एवी रीते बादरयोग रोकीने तथा वचनकायाना सूक्ष्मयोग पण रोकीने अयोगी थयो त्या अप्रतिपाति निर्मळवीर्य अचलतारूप परिणाम ते सूक्ष्मक्रिया अप्रतिपातिध्यान जाणवु अत्र सत्ताये पच्यासि प्रकृति हती ते म ये बोतेर प्रकृतिखपावानी ने बाकीनी तेर रहि एत्रीजो पायो जाणवो. हवे चोथो उछिन्न क्रिया-निवृत्ति नामे कहिये छिये जे योगकायानो सूक्ष्म रह्यो हतो ते पण रोक्यो एटले सर्वे योग रुध्या ने सर्वे क्रियानो अत्र उच्छेद थइ गयो. अने अत्र शैलेशिकरण करे एटलेशैल केहेता जे पर्वत जेम कोइ पवनथकी कपे नहि तेम अयोगी मुनीश्वर शैलेशिकरण पोन्या थका निष्कंपपणे रहे तेरप्रकृति जे रही हती तेनो पण त्या क्षय करीने अकर्मा थाय सर्व क्रिया रहित थइने स्वस्वरुप प्रगट करे ए ध्याननु नाम समुछिन्न क्रिया शुक्लध्यान त्रिजुपण नाम छे हवे ए ध्याननो चोथो पायो यावतांथका शरीर, अवगाहना, आयुष्य, सर्वथकी अलगोथइ ने मोक्षमां जाय एटले ए शुक्लध्याननो चोथो पायो कह्यो हवे ए शुक्लध्यानना चार पायानु फल कहिये छिये ते प्रथमना जे बे पाया छे ते ध्यावनार देवलोक जाय ने उपरना ने पायामा पहेलो जे पायो छे तेमा मरण छे नहि अने चोथा पाया-वालो मोक्षे जाय, नेत्रिजामा मरण छे नहि पण चोथे पाये थ-इने सिद्धिवरे ए कइ पाछा पडवाना छे नहि माटे ए त्रणे पाया अवश्य मोक्षगतिप्रद छे हवे ए शुक्लध्यानवालो यथार्थ पदार्थ देखे. आश्रवनो नाश देखे ने ससार स्वरूप ए भवनी परपरानु कारण देखे अन्यपदार्थ सर्व आत्माथकी विपरितपणे जाणे ए शुक्लध्यानना विसामामां एवी रीते जाणे देखे तथा शुक्लध्यानना त्रणे पायामा परम उत्कृष्टि शुक्ललेश्या जाणवी ने चोथो पायो जे छे ते तो लेश्याथे करीने रहित कह्यो छे एटले तेने विषे लेश्या होय नहि ने शुक्लध्या

नवालाना जोग पण सर्वे शुद्ध होय हवे ए शुक्लध्याननुं लक्षण कहिये छिये अहिंसक होय, मोह रहित होय, विवेकी होय, त्यागबुद्धि होय, वली असध थयो ते माटे उपसर्ग परीसहथी कंपे नहि, निर्भयपणे वर्ते, सूक्ष्म अर्थ ने विषे पण मुझाय नहि, शिशक पणे रहे मोह मायाना लक्षण थकी तथा सर्वे संयोग थकी जुदो रहे. ए सर्व विवेकना लक्षण जाणवा देह तथा उपकरणत्याग बुद्धिये असग अनुष्टाने वर्ते एटले उपसर्ग अनुष्टानरूप लक्षणे करी वर्ते एवी रीते जे मुनिए लक्षण ध्यानादिकने विषे प्रवर्ते ते ज्ञानिपणु पामे ए रीते ध्याननो जे अनुक्रमतेने शुद्ध रीते जाणीने एज परमात्मानी आज्ञा छे एवी रीते ते आज्ञानो अभ्यास करशे ते सपूर्ण अ यात्मज्ञानी थशे हवे ए ध्याननो महिमा कहियेछियेके एवु परिपक उत्कृष्ट ध्यान पामे थके ईद चद्रनागेंद्रनी पदवी ते मुनीश्वर तणखला बरोबर गणे छे शा माटे के आत्मानो प्रकाश सुखे सुखे करे एवु ज्ञान प्रगटे ने वली भवनो नाश करे एवु ते माटे एज ध्याननें सेवो, अने जे कामातुर होय ते पण कामदशाने छोडे शा माटे के जड स्वभाव जाणीने विषय सुखनो त्याग करे पण रागदशा छांडवी तो घणी दुष्कर छे, अने जे ध्यानवत मुनिश्वर छे ते तो परमात्मारुपज साक्षात् दरसे छे ते ध्यानमा तृप्ति पामीने फरीने ते रागादिक न वाच्छे, अने बीजा जे जीवो रह्या तेने रात्री सर्व निंद्रामा जाय छे, अने ध्यान दशा वाळाने रात्रि तो ओछव महोछव ए सर्वे सरखा आनदमाज जाय छे, अने जे ससारिजीव विषयमां लुब्ध थका जे वेलाए जागे छे ते वेला ध्यानी पुरुषोने शयन करवानु छे, जेम अवड कुवानु पाणि डहोलायेलु बगडेलु होय तेम ध्यान विनानु मन एवु जाणवु अने जे सर्व थकी सिद्ध फलनी इच्छा राखे

तो ज्यारे ध्यानरुपी घटमा मनरुपी जल भरे तो ते निर्मल थाय जेम स्वच्छ कुवानु जल घटमा भर्युं निर्मल थाय तदुवत् जाणवुं. सर्वे क्रियानु फल ते ध्यानबीज छे, अने ध्यान ते परम अर्थनु साधन छे कदापि कोइनु मन विषय कषायने विषे प्रवर्तेनु होय तो पण ध्यानथी चेतनने कर्म बंधाय नहि वली अतिशय अनिष्ट विषयपणुं होय ने घणे प्रकारे ते उदयना कष्टमां पड्यो थको पण निश्चलपणु नछोडे ते आत्माने विषे लीन कहिये. हवे प्रगट दीठुं मोक्ष सुखरूप जे ध्यान मोक्ष सुख थकी पण ते अपेक्षाए ज्ञान मोटु छे वली जे शास्त्रना विचार थकी जे नास्तिकभाव अतिशय हण्यो नथी, एटले नास्तिक भाव रहित ज्ञान मोटु छे. ज्यां सूर्यनुं तेज चद्रमा ग्रहनक्षत्र तारा तेमना तेजने विषे दीपकनुं तेज जेम छे तेम ध्याने करीने भेदाणु छे जेनु अज्ञानरुपी अंधकार, ते ध्या- निने महा आनदरप आत्मानु तेज ते पण आत्मामा [illegible] वलि प्राणीने घणा कालनो जे समता रतिरुपणी स्त्री [illegible] हतो ते एक क्षणमांही स्त्रीनो वियोग भाग्यो, ने [illegible] एवो ध्यानरुपी परममित्र अमारे परमहेतु छे ने [illegible] छे, एम ध्यानी पुरुष कहे छे अने ससारमा [illegible] थाय ? हवे ध्याननु घर वखाणीये छिये एटले ध्यान [illegible] ज्या कामरुपी ताप तो छेज नहि, ने शीयलरूप [illegible] बेठको छे, ज्या वलि मोटी समतारुप तलाइ [illegible] तकिया ज्यां ते बेठो छे, एटले ध्यान मदिरमा आत्मा [illegible] सुख पामे छे वली शीयलरुप सिंहासन ज्यां [illegible] छे, समतारुपी पोळीया खडा छे [illegible] नामा स्त्रीये तेडयो थको आत्माए [illegible] ध्यान कर्युं एटले आत्माने विषे अने [illegible] विषे [illegible]

हतो ते अतर भाग्यो अने ए स्थानकने विषे पंडित लोकोना विवाद झघडा घणा हता, ते ध्यान रुपि संधिपाले सर्वना विवाद झघडा तोडी नाखिने शिघ्रपणे परमात्माने ने आत्माने अभेदपणे करि दिधा छे अमृतरस देखाडिये छिये एटले अजाण लोक अमृतरस घणे ठेकाणे माने छे ने ग्यानी लोक तो एक ध्यानने विषेज माने छे ते कहिये छिये,

॥ उक्तंच अध्यात्मसार ॥

कामृतं विषभृते फणि लोके ॥
क्षयिण्यपिविधौत्रिदिवेवा ॥
काप्सरोरतिमतांत्रिदशाना ॥
ध्यानमेवतदिदंबुधसेव्य ॥ १ ॥
गोस्तनेषु न सिक्तासु सुधायां ॥
नापिनापिवनिताधरबिंबे ॥
तरसकमपिवेत्ति मनस्वी॥
ध्यान संभववृतोप्रथतेयः ॥ २ ॥

अर्थ हवे जे नाग लोक छे, त्यां अमृत क्यां थकी होय ए तो बिचारा विषमां रगाइ गयेला छे, अथवा कोइ कहेशे चंद्रमामां अमृत छे तो ते पण वात भासमान थती नथी शामाटे के दिनदिन प्रति क्षिण थतो जाय छे तो अमृतरस ज्यां होय त्यां क्षिणपणुं केम लाधे ? कदापि कोइ कहेशेके देव लोकने विषे अमृत छे ते पण थाइ संभवतु नथी शामाटे के देवलोकना देव पण अपछरायोना रंगमां रगाएला छे, माटे त्यां पण अमृतरस नथी माटे एक ध्यान

मांज अमृतरस छे ते कारण माटे हे पंडितो! ए ध्याननुंज सेवन करो, ए पहेला श्लोकनो अर्थ, हवे बीजा श्लोकनो अर्थ कहिये छिये हवे अहियां केटलाक जीव गायना स्तन कहेता दुधमा अमृत माने छे केटलाएक साकरमा माने छे तेमा तो रस छेज नहि केटलाक स्त्रीना अधरने विषे अमृतरस माने छे पण ते रस तो कोइ स्थानके छेज नहि. ए अमृतरस छे ए तो अपूर्व छे ते कोट पंडित पुरुष जाणे, अने एरसतो ध्यान थकीज प्रगट थाय ए बीजा थकी न होय. एवो जे अमृतरस तेनो स्वाद ध्यानी पुरुष चाखे ते संतोषनु सुख तेनेज छे, एटले ए बीजा श्लोकनो अर्थ कह्यो, एवी रीते जेनु प्रवर्तन होय अने जे ए शुक्लध्यान ध्याव ते धणी मुक्तिना सुख पामे एटले ए शुक्लध्यान कह्यु तथा ए चार ध्यान कह्यां ए चार ध्यान मध्येथी प्रथम जे बे ध्यान आर्त्तध्यान तथा रौद्र ध्यान छे, ते अवश्य छाडवा जोग छे अने धर्म ध्यान जे छे ते आदरवा योग्य छे पण ए थकी मुक्तिनी प्राप्ति नथी पण स्वर्गना सुख मले, अने शुक्ल ध्यान छे, तेमध्येने पाया छे, ते तो स्वर्ग सुखना दाता छे ते कोइक जीव आश्रयीने छे, पण घणा जीवने तो ए मुक्तिनुज कारण छे शामाटे जे पहेलो पायो आठमाथी ते दशमा गुणठाणा सुधी छे एटले ए त्रण गुणठाणाने विषे तो कइ मरण छे नहि अहिंया जे स्वर्गादिक गति कहेवी ते उपरना गुणठाणाने अथवा निचला गुणठाणाने आश्रयीने केहेवानु छे, शामाटे के जे मृत्यु पामवु होय तो पाछा पडे ने छट्टे सातमे आवीने मृत्यु पामे अथवा चडे तो अगिआरमे गुणठाणे जइने मरे तो सर्वार्थ सिद्धे जाय अथवा अगिआरमे नज जाय ने पाधरो बारमे जाय तो केवल ज्ञान उपार्जी अतकृत् केवलि थइ चउदमाने अंते काल करी मोक्ष जाय. पण शुक्ल ध्यानना पहेला पायामां तो कइ जीव काल

हतो ते अतर भाग्यो अने ए स्थानकने विषे पडित लोकोना विवाद झघडा घणा हता, ते ध्यान रवि सधिपाले सर्वना विवाद झघडा तोडी नाखिने शिघ्रपणे परमात्माने ने आत्माने अभेदपणे करि दिधा हवे अमृतरस देखाडिये छिये एटले अजाण लोक अमृतरस घणे ठेकाणे माने छे ने ज्ञानी लोक तो एक ध्यानने विषेज माने छे ते कहिये छिये,

॥ उक्तंच अध्यात्मसार ॥

कामृत विषभृते फणि लोके ॥
कक्षयिण्यपिनिधौत्रिदिवेवा ॥
काप्सरोरतिमतात्रिदशाना ॥
ध्यानमेवतादिदबुधसेव्य ॥ १ ॥
गोस्तनेषु न सिक्तासु सुधायां ॥
नापिनापिवनिताधरबिंबे ॥
तरसकमपिवेत्ति मनस्वी॥
ध्यान सभवधृतौप्रथतेय ॥ २ ॥

अर्थ हवे जे नाग लोक छे, त्यां अमृत क्या थकी होय ए तो बिचारा विषमा रगाइ गयेला छे, अथवा कोइ कहेशे चद्रमामां अमृत छे तो ते पण वात भासमान थती नथी शामाटे के दिनदिन प्रति क्षिण थतो जाय छे तो अमृतरस ज्या होय त्यां क्षिणपणु केम लाधे ? कदापि कोइ कहेशेके देव लोकने विषे अमृत छे ते पण काइ सभवतु नथी शामाटे के देवलोकना देव पण अपछरायोना रगमा रगायला छे. माटे त्यां पण अमृतरस नथी माटे एक ध्यान

चारित्र धर्म तथा समकित धर्म बन्नेनो नाश कर्त्ता छे, तथा वीर्य-
गुण अंतराय कर्मे दाब्यो छे, एटले ए च्यारे कर्म आत्माना
जे च्यारे गुण मोटा छे तेने ए हणता छे, माटे एने घाती कर्म क-
हिये ने बाकीना जे चार कर्म छे, ते आत्माना गुणने हणता नथी
ते तो शुभाशुभ फलना देखाडनारा छे माटे एवा जे चार घाती
कर्म ए बीजा पायाना ध्यान थकी हणाय ते धणी केवल ज्ञान पामे
पण अहिं मुक्ति पामे नहि शामाटे के बारमु तेरमु गुणठाणु पण अ-
मरज छे पण मुक्तिनु कारण तादृश्य छे. हवे त्रिजो पायो छे ते पण
अयोगीपणाने आपे पण मुक्ति न थाय पण ए मुक्तिनु कारण छे
पण प्रकृति बोतेर सत्ता ए बाकि छे ते खपावे आत्माने हलको करे
अने चोथो पायो भावता थकी सर्व कर्मनो नाश करे ए पायाने
अंते मुक्ति पामे एटले ए ध्यान मोक्षनुज कारण छे. एज
मुक्तिरुप जाणवु मुक्तिरुपि महेल उपर जावु तेने ए शुक्ल
ध्यानरुप निसरणी जोइये ते शुक्लध्यानरुप निसरणीने चार पग
थिया छे, ते पगथीये पगथीये चडीने चोथा पगथीयाने अंते
मुक्तिरुप मेहेलमा जवाय अहिं कोइ ए चारे पगथियाविना त्रि-
जां पगथिया मुक्ति जवानां कहे छे. अथवा पोते पण चडवा चाहे
छे अथवा बिजाने पण एवां पगथीया बतावे छे ते सर्वे मिथ्या छे,
ते मार्ग अज्ञानीनो जाणवो, ए बिचारा उलटा संसारमा चार
गति रखडवु वधारे छे जन्म मरणना फेरा तेना टले नहि ते धणी
मोक्ष कोइ काले जाय नहि, जे दहाडे आ शुक्लध्यानरुप निसर-
णिये चडशे ते दहाडेज मुक्तिनी आशा राखवी तो अहिं कोइ कहेशे
के धर्म ध्यानपण विणखपनु थयु तेनो उत्तर के धर्मध्यान छे ते
शुक्लध्याननु कारण छे माटे ते अकारण न थाय मुक्तितो ज्ञानध्या-
नथीज छे माटे ज्ञानध्यानविना अपर जे रह्यु ते अकारण छे. हवे

धर्म पामे नहि अहि कोई कहेशे के जो काल गति नथी पामता तो स्वर्गगति कहेवानी शी जरुर छे ? तेनो उत्तर के ए ध्याने वर्ते छे जे आत्मा तेनो उपयोग सर्व कर्म नाश करवा जेवो नथी एटले जेटलि एना उपयोगनी रमणतानो सुमार जोइने स्वर्गगति कहिये छिये पण अत्र मरण पामे नाहिज. हवे बिजा पायाने जे स्वर्गगति कहि तेनो विचार कहुछु जे ए पण कोइक जीव आश्री छे पण काइ सर्व जीव आश्रयी नथी शा माटे जे उपशम श्रेणी जे जीव आदरे ते जीव अगिआरमे गुणठाणे आव्यो थको मरण पामे तो सर्वारथ सिद्धे जाय ने पाछो पडे तो दशमे गुणठाणे जाय तेनी तो कइ गति कहेवानि जरुर छे नहि शामाटे जे एम करता फरिथी चडे तो मोक्ष पण जाय अथवा छट्ठे सातमे गुणठाणे जतो रहे तो स्वर्ग पण जाय तेथी पण घणो निचो उतरि जाय तो नर्कादिक गतिने विषे पण जाय माटे पडतानो तो कइ नियम छे नहि हवे जे जीव उपशमश्रेणिए न चडे ने क्षपकश्रेणिए चडे ते जीव दशमा गुणठाणाने अंते मोहनीकर्मनो क्षय करे अहीं सुधी पहेलो पायो जाणवो हवे त्या थकी दशमानो उठयो बारमे गुणठाणे जाय पण ते अगिआरमे सर्वथा नज जाय त्या तो उपशमश्रेणिवालो होय तेज जाय हवे जे बारमे गुणठाणे गएलो जीव क्षपकश्रेणी वालो त्यां शुक्ल ध्याननो बीजो पायो ध्याय ते ए पायाना ध्यानने विषे वर्तते थके त्रण कर्मनो नाश करे ज्ञानावरणीय ॥ १ ॥ दर्शनावरणीय ॥ २ ॥ अतराय ॥ ३ ॥ अने एक मोहनी कर्मनो नाश प्रथम दशमे गुणठाणे करेलो हतो एटले ए चारे कर्मनो क्षय थयो ते कर्मने घातीकर्म कहिये एटले घाती कहेतां आत्माना गुणनी घात कर्त्ता छे ते कहिये छिये ज्ञानावरणि कर्म छे, ते ज्ञान गुणने हणे छे दर्शनावरणि कर्म छे ते दर्शन गुणने हणे छे मोहनी कर्म छे ते

ध्रुवपेरे अविचल रहो, एह ग्रथ सुखकार।
अर्क तेज जेम विस्तरे, तेम विस्तरो उदार ॥ ९ ॥
पडितने मुख मुखवसे आत्मार्थीतेमजोय।
ए ग्रंथ सम अवर नहि, जगमां दीसे कोय ॥ १० ॥
मुक्ति दायक ग्रथ छे, एहिज मुक्ति स्वरूप।
समजे ज्ञानी होय ते, भाख्युं आत्म स्वरूप॥ ११ ॥
ग्रथरुप वृक्ष ज भलो, पत्रो समतारूप।
कुसुम तेहनां जाणिये, नर स्वर्गति स्वरूप ॥ १२ ॥
फल एनु अविचल सदा, सुख पण अविचल एह।
स्थीति पण अविचल भलि, शिववधुवर गेह॥ १३ ॥
जिनवर मुनि वृन्दज तणो, हुकम जे माथे चडाय।
पामे सुख ते शाश्वतां, वेगे पोचे ध्याय॥ १४ ॥
ओगणी शतसंवत्सरे, उपर बाविस जाण।
वैशाख शुदि पंचमिदिने, वार गुरु प्रमाण। १५ ॥
आमोद गामे ए रच्यो, निज आनद प्रमाण।
संघतणे आनद घणो, ध्यानरसे गुण खाण॥ १६ ॥
एह ग्रंथपूरण थयो, पूरण आत्मिक सुख,
हुकम कहे ए ध्यावशे, तेने नहि भवदु'ख ॥ १७॥
भवनांदुःख सहेजे मटे, 'यानरसे सुखकार,
क्रिया कष्ट न जोइए, फोगट आलपंपाल॥१८॥

जे ध्यान कह्यां ते सर्वनुसार संक्षेपथी देखाड्युं छे, परभावनो त्याग करवो, मननीचलाचल सर्वटालवी अने स्वभावमां स्थिर थइ जवु, एटले सर्वे ध्यान थइ चुक्यां अहिंज मुक्ति थइ चूकी तेने जीव ता पण मुक्ति छे ने मुवा पछी पण मोक्षे जाय.

दुहा

एह ग्रंथ पूरण हुवो, बहु शास्त्र अनुमान ।
ध्यान भेद एम भाखिया, तेह सुणजो ज्ञान ॥ १ ॥
आर्त्त रौद्रव ध्यान ए, पाया आठशु जोय ।
तजवा भाख्या ज्ञानिये, ते भाख्या ए सोय ॥ २ ॥
धर्म ध्यान चार भेदथी, भाख्यो तास विचार ।
पदस्थ पिंडस्थ एम जाणिये, रुपस्थ कह्यो निर्धार ॥३॥
भावना चार कहि तेहनी, भाखी ग्रंथ मोझार ।
लक्षणादि स्वरुप ते, ज्ञानि मन सुख सार ॥ ४ ॥
शुक्ल ध्यान तेम भाखीयु, पाया चार समेत ।
तेम रुपातीत भाखीयु, ए मुक्तिनु खेत ॥ ५ ॥
इत्यादिक बहुवारता, भाखी ग्रंथ मोझार ।
वांचो आणद पामशे, पंडित जन निरधार ॥ ६ ॥
ए ग्रंथ भणता थका, तुटे कर्मनीजाल ।
पामे सुख ते शाश्वतां, मुक्ति तणां तत्काल ॥ ७ ॥
एह ग्रंथ हृदये धरि, ध्यान करे वलि जेह ।
ते भव अटवि नवभमे, पामे शिववधु गेह ॥ ८ ॥

अथश्रीआत्मचिंतामणि.

श्रीगुरुभ्योनम

॥ दुहा ॥

हुवदुर्नीज आत्मा पूर्णानंद स्वामी ।
अनुभव जोगे ते ग्रहो, निज अंतरजामी ॥ १ ॥

अत्र भाषा लिख्यते

हवे ए आत्म चिंतामणि नामे ग्रथ केवो छे के साक्षात् मुक्तिनो मार्ग एज छे अने एनेज मुक्ति कहिये छीये एटले जेने आत्मज्ञान प्रगट थयु छे एनो रस जेणे जाण्यो छे तेने महा संतोष रुपी मोक्ष सुख प्राप्त थयु एवा पुरुषो कइ राजाने पण लेखामां गणता नथी पण हवे ए आत्म शास्त्रनो जे रस तेनु दृष्टान्त कहि समजावु छु एटले स्त्रीना अधर बिंबनो जे रस तेनो जे स्वाद जुवान पुरुषने प्रगट थाय ते रस तो बिंदु मात्र पण नथी एवो आ आत्म ज्ञानरुपी शास्त्रनो जे स्वाद ते तो समुद्र रुप छे हवे जे प्राणी अध्यात्मशास्त्रने विषे अथवा निश्चयनी वार्ताने विषे नथी समजता, तेमा परावर्तन नथी ने पंडिताइनो गर्व धरे छे जे अमे पंडित छीये ते पुरुष केवु करे के जेम कोइ पागलो पुरुष कल्प वृक्षनु फल लेवाने हाथ उचो करे तेने कल्प वृक्षनु फल हाथमा आवे? अपितुनज आवे तेम ए पंडिताइनो अभिमान फोगट राखे छे हवे ए आत्मज्ञान छे ते तो कर्मरुपी वनने बालीने चुनो करे ने तुरत सिद्धि पद आपे एटले वेद तथा बीजा शास्त्र अध्यात्म शास्त्र वि-

खटपट सहु दूरे करो, स्थीरकरो निजचित्त,
आत्मगुण प्रगट होशे, प्रगटे बोहोलुवित्त ॥ १९ ॥
ए ग्रंथ जे वाचे भणे, ते थाय सतरूप,
रागद्वेष तेहना टले, प्रगटे आत्मस्वरूप ॥ २० ॥
मुनि हुकम कहे आत्मीक जेहने प्रगटेहाल,
शिववहुना सुख भोगवे होवे मगल माल ॥ २१ ॥

इतिश्री मुनिराज हुकम मुनिजि
कृत ज्ञान ग्रंथमालायां समाप्तोय
ध्यानविलास

॥ उक्तंच (गाथा) ॥

इद्र चद्र पद रोग जाणो,
जेणे निजशुद्ध सत्ताधन पछांणो ।
न अंन आपे न अन चोरे,
कोण जगदीन कोण जगजोरे ॥ १ ॥

एवु ए ग्रंथनु महात्मजाणीने ए ग्रंथनो अभ्यास करवो

हवे ग्रथनो मारभ करीये छिये अहो भव्य जिवो ! सर्व कार्य छोडीने एक आत्मज्ञानने विषे उद्यम करो ए आत्मज्ञान छे ते आत्मिक सुखनो दातार छे, ने बीजाकारण छे ते पुद्गलीक सुखनां दातार छे ते थकी काइ मुक्ति थाय नहि ने आ थकी जन्म मरण ना फेरा टले अने वीतरागना मार्गने विषे पट् द्रव्य भाखेला छे ते मध्ये पाच द्रव्य छांडवा एक आत्मद्रव्य आदरवा जोग कह्यो छे तो अहिया बीजु वहारनु जाणपणु छे अथवा आदरनु छे ए सर्वे पुद्गलीक भाव छे माटे ए अवश्य छांडवा जोग छे अहिया कोइ क हशे के पगथीये पगथीये चडाय कांइ एके हारे मेडी उपर जवाय नहि माटे शुभाशुभ कार्यने विषे उद्यम राखगो तथा द्वीप समुद्र देवलोकादिकनु जाणपणु भगवते शा वास्ते कह्यु माटे ते जाणे तेने पंडित कहिये तेने ज्ञानी पण कहिये-तेनो उत्तर

हव जे पावडीये पावडीये तमे चडवु कह्यु ते खरु पण मुक्ति ना पावडिया तो ज्ञान ध्यान छे अने शुभाशुभ पावडिया ते तो पुद्गलीक छे ने पावडिये चडता उतरता तो अनतो काल आगे पण वहि गयो ते थकी काइ आपणा आत्मानु कल्याण थयु नहि, ने हजि एना एज पावडियाने झालीने वेशी रहशु त्यारे आपणी

नाना, ते तो बधाये आत्माने क्लेश करवाना छे ने आत्म ज्ञान विना जेटला शास्त्र भणो वाचो अथवा तेनु जाणपणु करो ते सर्व फोक छे जेम विधवा स्त्रीनु तरणपणु फोक छे तेम शुद्ध जाणनु जेणे आत्मज्ञानना शास्त्र जोया, अने तेनु जाणपणु थयु ते सर्व लेखे छे अने ज्ञाननो रस तो आत्मानु जाणपणु करे तेने लेखे छे ते विना अनेक शास्त्रनो अभ्यास करे तेथी कइ एने ज्ञानना रसनी प्राप्ति न थाय जेम खर उपर बावना चदन भर्यु तेथी कइ ए खरने बावनाचदननो स्वाद नथी एतो भारवही जाणे छे एनो रस स्वाद तो जे भाग्यवान पुरुष होय ते भोगवे छे माटे आत्मज्ञाननो अभ्यास करवो बीजी सर्व आलपपाल खटपटो छे ते टालवी जेथकी आपणा जन्म मरण न छुटे ते काम न आदरवु हवे आ जे ग्रथ करीये छीये ते बाल जीवना हीतने अर्थ करीये छीये एटले आत्मज्ञान रहीत तेने बाल कहीय तेना उपकारने अर्थ करु छु तथा योगेश्वर पुरुष तथा आत्मज्ञानी पुरुषोने आ ग्रथ घणो प्रीतिनु कारण थाशे केमके एने विषे अनुभव ज्ञाननो रस तेने स्वादे करी महाप्रीतिनु स्थानक थशे जेम भोगी पुरुषोने स्त्री ना गीत वल्लभ छे अथवा जेम सांगित वध नाटक वल्लभ छे तेम आ ग्रथ वल्लभ लागे हवे ए ग्रथ जे जाणपुरुषो छे तेने वल्लभ छे एटले लोभी नरने जेम चिंतामणि रत्न पारस पाषाणकार णकुभसुवर्णपुरुष प्रमुख जेम तेने वल्लभ छे अने तेमा तो गुण ए वडो छे नही तेतो पुद्गलीक वस्तु छे एक भवनो सखाइछे वली कइ ए थकी जन्मजरा मरणना फेरा टले नाहि व्याधि शरीरनी मटे नहि अने परभव माठी गति आपे अने आजे ग्रथ छे तेतो आ भवने विषे सतोष सुख मोटु आपे, ने सतोष सुखमा सर्व सुख समाइ गया एना मोंढा आगल इद्र चद्र नागेंद्र कोइ गणतीमा नथी

छोडी एक आत्मद्रव्यने आदरवो तेथकीज मुक्ति थाय माटे प्रथम आत्मस्वरुपनी ओळखाण करवी ने पछी ते स्वरुपने विषे चिंतवना करवी तेनु नाम आत्मचिंतामणि कहिये तेने ध्यान पण कहिये, तेने ज्ञानपण कहिये, तेथकी कर्मरहितआत्मा थाय माटे आत्मानु ध्यान छे ए मोक्षस्वरुप छे

॥ उक्तन्त्र ॥

आत्मध्यान फलंज्ञान, मात्मज्ञानच मुक्तिदं ।
आत्मज्ञानायतन्नित्य, यत्न कार्यो महात्मना ॥ १ ॥

अर्थ—हवे आत्मध्यान ते आत्मानु ध्यान तेनु फल पण ते ज्ञानज छे ने आत्मज्ञान होय त्यारे मुक्ति मळे माटे ज्ञान एज जगत्मां महोटु छे ते माटे महोटा पुरुषो पंडित ज्ञानी होय तेने तो आत्मज्ञाननो उद्यम करवो एज युक्त छे

श्लोक

ज्ञातेह्यात्मनिनो भूयो । ज्ञातव्यमवशिष्यते ॥
अज्ञान पुनरेतस्मिन् । ज्ञानमन्यन्निरर्थक ॥ २ ॥

अर्थ—जेणे पोतानो आत्मा जाण्यो ने पोताना स्वरुपनी ओळखाण करी ते धणीने बीजु कांइ जाणवानी फरीथी जरुर छे ज नहि 'एगजाणइसे सव्वजाणइ, इति वचनात्' माटे जेणे एक आत्मा जाण्यो तेणे सर्वे जाण्यु छे अने जेने पोताना आत्मानु जाणपणु नथी थयु ने बीजा अनेक शास्त्रनी रीत्यो जाणे छे ते सर्वे निष्फल छे फोगट कायक्लेश करे छे. एमा कांइ एना आत्माने गुण थयो नहि माटे जे आत्मा तेज परमात्मा छे अहिया बीजो कोइ परमात्मा छे नहि एनुज ध्यान करवु एथीज मुक्ति थाय

मुक्ति के दहाडे थशानो ! अने एवा पावडियाने विषे राग राखी रह्या छे ते जीवने मुक्ति घणी दूर थाय छे, अने जेने पा- वडिया चडवानी खप होय ने माल उपर जवु होय ते धणी तो पावडिया छोडतो जाय ने उपरले पावडिये चडतो जाय ते धणी तो माल उपर सुखे पोचे, पण प्रथम पगथियेज अटकीने बेठो अने महोंडथी घणु कहेशे जे भाइ पगथिये पगथिये चडाने ने उपरने पगथिये तो चडतो छे नहि ते कांइ मेडी उपर जाय नहि तेम अहिया जे जन्मपर्यत थकीज शुभाशुभ पगथियु झालीने बेठो ते मुवासुधी धर्मने पगथिये चडतो छे नहि अने महोंडेथी कहे छे के पगथिये पगथिये चडाशे ते धणीनी काइ मुक्ति थाय नहि ए तो एक वचन गोलवानु ओठु पकडयु छे ए था मतुमनो रागी शुभाशुभमा रच्यो पच्यो बालजीवने रीझवे पण एथी काइ पोताना आत्मानु कल्याण थाय नहि माटे हे भव्य जीवो ! ए पगथीयु अनादि कालनु झालेलु ए थकी अनंता जन्म मरण करया ए थकी ससारनो पार आव्यो नहि माटे जो आत्मानु हित इच्छो तो ए पगथियाने छोडो ने ज्ञान ध्यान रूपी पगथिये चडो शुभभावरूप दोरडु झालो अध्यवसायरूप वेगे करीने चडवा मांडो तो मोक्षरूप मेडीमा जइने बेसाय तथा ए जाणपणु छे, तेमा काइ निश्चय छे नहि ए तो व्यवहारथकी जाण वानु छे तेमा काइ आत्मानु कल्याण छे नहि ए जाणवाथकी मुक्ति पामिये एवा अक्षर तो काइ शास्त्रमांदिसता नथी तथा ए वस्तु कोइ ध्यानमा लावला नथी एम करता कदापि स्वस्थान विचय धर्मध्यानमा गणीये तो ते पण पुद्गलिक सुखनो दातार छे ते थकी काइ मुक्ति थाय नहि ए सर्वे व्यवहार अनुयोगमागणेला छे निश्चय अनुयोग तो एक द्रव्यानुयोग छे ते मध्येपण पांच द्रव्यने

नवानामपितत्वाना कहेता जे ए नव तत्व कह्या छे तेना नाम जीवतत्व १ अजीवतत्व २ पुन्यतत्व ३ पापतत्व ४ आश्रव तत्व ५ सवरतत्व ६ निर्जरातत्व ७ बंध तत्व ८ मोक्ष तत्व ९ ए नव तत्व छे ते मध्ये एक जीवतत्व ते तत्व छे बाकी सर्वे अतत्व छे केमके सवर निर्जरा ने मोक्ष ए तो आत्माना गुण छे अजीव, पुन्य, पाप, आश्रव, बंध ए सर्वे अजीव छे ते आत्माना जाणवामां आवे ज्ञानमात्मप्रसिद्धये कहेतां जे ज्ञान रूप आत्मा तेज मोटो छे ते विना सर्वे काचु छे शामाटे के अजीवादिक भाव जे रह्या ते सर्वे आत्मज्ञानमां समाय छे आत्म ज्ञानने विषे जे आदरवा योग्य होय ते आदरे छांडवा योग्य होय ते छांडे अने जाणवा योग्य होय ते जाणे

॥ उक्तंच गाथा ॥

नय भंग पमाणेहिं, जो अप्पासाअवाअभावेण ।
जाणई मोरुख सरूव, समदिठीयो सोनेओ ॥ २ ॥

अर्थ—नय भग पमाणेहि कहेता नये करीने भांगे करीने प्रमाणे करीने आपणा आत्माने एटले नये करीने जाणवो तथा सप्तभंगी चोभंगी आदे देइ भांगे करीने जाणवो अथवा प्रत्यक्षादिक प्रमाणे करीने जाणवो इत्यादिक स्याद्‌वादमार्गे करीने जेने आत्मानु जाण पणु थयु छे, तथा मोक्षनु स्वरूप जेणे जाण्यु छे, तेने समद्रष्टि कहिये तेने समकित ज्ञान पण कहिये तेनीज मुक्ति थाय पण ते विना जे क्रिया आचार उतकृष्ट पाले छजीवनी दया पाले तेथी कांइ तेना आत्मानु कल्याण थाय नहि

उक्तच (गाथा)

एहिज अप्पासोपरमप्पा ।
कम विशेप इजायो जप्पा ॥
इसमे देव जुसो परमप्पा ।
जाव हुतुमे अपोअप्पा ॥ १ ॥

अर्थ—अहोभव्यजीवो ' तमो समजो तमने् पद्दा हितकारी छे एहिज अप्पासो परमप्पा, कहेता आपणो आ मा जे आ शरीरने विप रह्यो छे तेहिज साक्षात परमात्मा छे निश्चय थकी शुद्ध परिब्रह्म एनेज जाणवो ए पूर्व अनादि कर्मना सजोग थकी शुभाशुभ क्रियाने विपे पड्यो थको जन्म मरण करे छे पण ए शरीरमां रह्यो जे चेतन एहिज देव छे ने एहिज परमेश्वर छे माटे शुभाशुभ शुभाशुभ क्रियानो त्याग करीने पोताना' आत्मानु ध्यान करो ने तमे एनु ज स्मरण करो साक्षात् तरण तारण जहाज ए पोत पोतानो आत्मा ज छे माटे एनु पोताना आत्मानु स्वरूप तेनी भूलिपरनी जेवा आदरो छो ने परनी आशा राखो छो ने जाणोछो के कोइक अमने तारशे ए तमारु मोटु अज्ञानपणु छे ए अज्ञान छोडीने पोताना स्वरूपनु ध्यान करो एथी तमारु कार्य थशे अने कार्य जे सर्व रह्यु ते ज्ञानने विषे छे ने ज्ञान छे ते आत्मा छे माटे पोताना आत्मानु ज स्मरण करवु

श्लोक

नवानाम पितत्वाना । ज्ञानमात्मप्रसिद्धये ॥
येनाजीवा दयोभावा । स्वभेदप्रतियोगिन

हवे कार्य सिद्धि थवानु कारण कहीये छीये के जेने स्व कहेता पोताना आत्म स्वरूप अने पर कहेता जे पुद्गलादिक पाच द्रव्य ते बनेनो जे भेद पडेलो छे, अने भेद स्वरूप जेना समज्यामा आव्यु ने पर जे पुद्गलादिक पाच द्रव्यने नोखा पाडी पोताना आत्म स्वरूपनो अनुभव करे एनेज विषे रमण करे ए कोइक जीवने पोताने सहज स्वभाव प्रगट थाय कोइक जीवने गुरुना उपदेश थकी थाय एवी रीते भेद जाणी आत्माने जुदो करीने अनुभव करे ते वारे एकत्व वितर्क बीजो पायो प्राप्त थाय, कोइक जगाये पृथक्त्व वितर्क प्रगट थाय ते पायाने विषे आत्मज्ञान हितकारी थाय अन्यथा जे वांचवां भणवां जाणवां ते सर्वे फोगट जाणवा ते मिथ्या दृष्टिरूप रह्यो तेने विटंबनारूपी कष्ट छे त्या तो एकज आत्मस्वभावपणे रह्यो छे त्यां तो आत्मज्ञान दर्शन चारित्ररूप कह्यु छे ते काइ आत्मा थकी जुदु जाणवु नही तेतो लीलाभूत थइने रहेलु छे ते उपर दृष्टांत कहीये छीये जेम रत्ननी मालाने रत्ननी कांति ए बेनी शक्ति कंइ जुदी नथी तेम ए ज्ञानदर्शन चारित्र ते लक्षण कइ आत्माथी जुदु जाणवु नही आत्माने अने आत्मानु लक्षण ज्ञानादिक जे भेद कहेवो ते व्यवहारनये छे ए छठी विभक्तिने न्याये करी मानीये पण निश्चयथी तो अहींआ कशोये भेद नथी ए उपर दृष्टात कहीये छीये जेम घट अने घटनु जे रूपादिक जे वर्ण ते घट थकी भिन्न मानीये ते कल्पना छे पण कंइ घटने घटनु रूप जुदु नथी घट विना वर्ण शाने आधारे रह्यो अने घट पण रूपादि विना दृष्टि गोचरमा शानो आवे ए भिन्न मानवो ते व्यवहार नयनी कल्पना छे निश्चयथी तो एकज छे तेम आत्माने आत्माना गुणादिक ते पण कइ जुदो नथी परमार्थ विचारीने जोइये तो एकज छे एवो जे शुद्ध नये करी आत्मस्वरूप छे ते निश्चय करीने अनुभववामा आवे

॥ उक्तंच गाथा ॥

विरया सावज्जाओ, कषायहिणामहव्वयधरावि ।
समदिठि विहूणा, कयाविमुख्ख न पावंति ॥ १ ॥

अर्थ–विरया सावज्जाओ कहेतां जे जीव विरमा सावद्य थकी कहेतां जे प्राणातिपात जीव हिंसानो त्याग करो तथा सर्व थकी मृषावादनो त्याग करी तथा सर्व थकी अदत्तादाननो त्याग करी तथा सर्व थकी स्त्री आदिकनो त्याग करो तथा सर्व थकी परिग्रहनो त्याग करी एटले ए पांचे आश्रवनो त्याग करो तथा पांचे इंद्रियो वश करो तथा मनादिक गुप्तिने पाले, ए काया थकी तथा वचन थकी तथा मन थकी सर्व सावद्य कर्मनो त्याग करो कपायहिणामहव्वियधरावि कहेता कषाय कहेतां जे क्रोध मान माया लोभ रागद्वेष इत्यादिक कषायनो नाश थयो जो आमां सम परिणाम आवे अथवा कोइक पच महाव्रत धारण करी जन कल्पी तुल व्रत पाले अथवा सुधर्मास्वामी सरखु चारित्रपाले तोपण शु काइ ए जीवनी मुक्ति थाय अपितु कोइ काले न ज थाय, शामाटे के ए जीवनी समद्रष्टि थइ नहि एटले समद्रष्टि कहेतां जे परभाव उपर राग नथी तेम द्वेष नथी ने पोताना स्वरूपने विषे स्थिरभावे रह्या छे एवा भाव माहि प्राप्त थयो नहि तेथी मुक्ति न पामे केमके मुक्ति तो आत्म दशामां छे ते भाव एने आव्यो नहि, ने परभाव मांहिथी गयो नहि तेथी ते जीवनु कल्याण काइ थाय नहि ए चार गति संसारमा परिभ्रमण करेज पण कार्य सिद्धि थाय नहि

॥ श्लोक ॥

श्रुतोह्यात्मपराभेदो,ऽनुभूत संस्तुतोपिच ॥
नि सर्गादुपदेशाद्वा, वेत्तिभेदतुकश्चन ॥ ४ ॥

छे अथवा अन्य कर्म सात माहेली हरकोइनी प्रकृतिना स्वभावथी थाय ते पण काइ ते आत्माना स्वभावथी थतु नथी आत्मा तो निर्विकल्पी छे, अरूपी छे, एने विषे तो एक जाणवानोज स्वभाव छे बीजी रीते कोइ स्वभाव लाधतो नथी. अने जे जन्म जरादिक परिणति छे तेतो सर्व कर्मने वश छे ते कइ आत्मामा छे नही आत्मा तो अविकारी छे अने कर्मना स्वभाव ते कइ आत्माना स्वभावमां संभवता नथी आहिया तो केवल एक स्वस्वभाव लाधे छे अने जन्म जरादिक एतो कर्म प्रकृतिज छे ने कर्मजनित जे भाव ते आत्माने विषे जे आरोपे छे तेने ज्ञानथकी भ्रष्ट जाणवा ते चारे गति संसाररूप समुद्र महाभयंकर ते मध्ये भमशे एटले जे उपाधिना भेदथकी प्रगट्यो जे भेद तेतो मूर्ख प्राणी होय ते माने जेम स्फटिक रत्ननी मांहेली कोरे अनेक पदार्थना भास थाय तेने स्फटिक करी माने ते मूर्ख जाणवो पण ते एम नथी समजतो के स्फटिक जुदो छे अने ते पदार्थ जुदा छे एवी जेनी सरत न पहोची ते अज्ञान कहीये तेम अहीयां आत्माने विषे पण कृतकर्म भेद ए माने छे पण एम नथी जाणतो के एतो जडनु काम छे एवु न समजे तेने अज्ञानी कहीये अने पोताना जे व्यवहारना पक्षथकी कर्मजनित जे उपाधि ते नथी एवु माने ते आत्मविभ्रमवादि जाणवो के एक क्षेत्रमा रह्यो छे एवो जे आत्मा अने कर्म तोय पण ए संयोग पामतो नथी जेम एक घडनी मांहेली कोरे पुगीफल तथा अन्यमा बीजी दाणा प्रमुख अनेक वस्तु भरी होय तो पण ते वस्तु पुगीफल फीटीने दाणो न थाय, अथवा दाणा फीटी पुगीफल न थाय, तेम अहीयां एवो जे आत्मा ते पोताना जे कोइ गुण ज्ञानादिक अथवा भलो पोतानो जे कंइ अस्तित्व प्रमुख स्वभाव ते कइ छांडीने कर्मजनित थाय नही एवो शुद्ध स्वभावी आत्मा तो छे जेम धर्मास्तिकाय

छे एटले रमण करवामा आवे छे अने व्यवहारनये करी पर जे कायादिक द्रव्य ओळखाय छे ते छांडवा योग्य जाणवामां आवे छे एवी रीते नयपक्ष पण विचारी जोवो तथा वस्तुतानो भाव जोतां तो गुणने गुणीनु अभेद स्वरूप छे अने जो भेद स्वरूप मानीये तो विरोध आवे केमके मृतिकाने मृतिकामां घटादि थवानो गुण अथवा मळवा विखरवानो गुण जुदो मानीये तो मृतिका विना मळे विखरे कोण ? तथा घटादिरूप शानां थाय ? माटे आहिआं भिन्न मानतां मोटो दोष छे तेमज आत्माने आत्माना गुण ते कांइ जुदा छेज नही अने जो जुदा मानवा जइये ते वारे ज्ञानादिक गुण जुदोने आत्मा जुदो एम थाय ते वारे ज्ञान विना तो आत्मा छेज नही ते वारे जड थाय छे तथा ज्ञानादिक गुण ते आत्मा विनाशाने आधारे रहे ? ते वारे ए आत्मा तथा ज्ञानादिक गुण सर्व निष्फळ छे ए कल्पना शशशृंगवत् ठरी माटे अहींयां मोटो विरोध आवे ते कारण माटे आत्माने आत्माना गुण एकत्व भावे सल्प्र रह्या छे अने चेतन एवो जे शब्द ते सामान्यपद छे शा माटे के एमा सर्व आत्मानु एकठापणु थयु निश्चयथी तो कर्मजनित जे वस्तु ते भेदने पामे ते विटंबनारूप छे, पण ते पोतानु स्वरूप तजीने जुदा न जाणवा अने व्यवहार नयवाळो एम जुदा माने छे ते कहीये छीये ते जीवना समुदायनो तरेह तरहथी भेद कल्पे एकेंद्रिय आदिक गति आश्रयीतथा कषायादिक आश्रयीतथा गुण स्थानादिक आश्रयीतथा वय आश्रयीतथा वर्णादिक आश्रयी अनेक प्रकारे भेद कल्पना करे माहोमाहे विचित्रपणु जणाय छे ए सर्वे व्यवहानय जाणवो. अने ए वातो निश्चय नयनी समजवाळो जीव तो मानतो नथी तेना समजवामा तो एवु छे के जे जे जीवनी अवस्था प्राप्त थाय छे शुभ वा अशुभ, तेतो नाम कर्मनी प्रकृतिना स्वभाव थकी

पर्यायादिकमां फरवा थकी काइ आतम स्वरूप पोताना तत्वभाव एक-
त्वपणा मत्ये छांडतो नथी ते उपर द्रष्टांत कहिये छिये. यथा कहेतां
जेम सुवर्ण स्वरूप एक छे हवे ते सुवर्णना उत्पादव्यय विषे अनेक
घाट मवर्ते छे कुडळ कठी बाजु बेढ इत्यादिक पर्यायनु मवर्तनपणु
छे पण कइ सुवर्णपणानु पलटण नथी एघाटने विषे भिन्नभाव छे
तेम आत्मा एकज छे अने नरनरकादिक गति ते भिन्न भाव छे
पण आत्माना स्वभाव तो एकज रूप छे अने जे गति आदिक प-
र्याय ते तो कर्मना पर्याय छे पण शुद्ध स्वरूप साक्षात् निश्चयनये
आत्मपर्यायने विषे कर्मक्रिया स्वभाव छे नहि आत्माने विषे
ए कर्मपर्याय छे नहि आत्मा तो अजस्वभाविक छे अथवा जे क-
र्मना जे परमाणुओ ते काइ स्वर्गादिक सुखरूप भाविक नथी एतो
शुभाशुभ मवर्तनने विषे छे कदापि कोइक परमाणुओ उज्वल शु-
भना योगथी स्वर्गादिक सुख अथवा धनपुत्र कलत्रादिक सुखने
देखीने कोइ ए शुभ पुद्गलने सारा माने छे ते मोटु अज्ञानपणु तेनु
छे केमके ए परमाणुनुं मवर्तन तो नवे तत्वमां रह्यु छे अत्र द्रष्टांत
कहिये छिये के जेम कोइक शुभ द्रव्य रुडोरंग लेइने चित्रामण
कोइये काढ्यु ते भिंतभागने विषे शोभे पण कांइ भिंतनोभार ते न
उपाडे ए पण एक कारमी शोभारूप छे तेने सत्य करीने मानीये,
माटे कांइ ए भिंतनु काम चित्रामण करे नहि ए पण मपच जाणवा
अथवा जेम स्वप्नामांहे दिठु जे राज्य अथवा धन इत्यादिक वस्तु
पण ते जाग्या पछी देखाय नहि ने स्वप्नमा आवे नहि तेम आ
व्यवहार मार्गना अनुसारने विषे स्पष्टपणे दीठामा आवे छे धन पुत्र
कलत्रादिक पण ते निश्चयथी ज्ञान द्रष्टि विचारीने जोइये तो ए
वस्तुये जुदी छे ने आत्मा पण जुदो छे अथवा जन्मांतर पर्यंत
रहेवानो कांइ नियम छे नहि ए पण अस्थिर पदार्थ छे तथा क-

दापि स्वर्गादिक सुख शास्त्र थकी स्पष्ट जणाय छे पण पुनरापि जन्म थयो त्यांतो ते कांइ सुख जणातु नथी ने सांभरतु पण नथी माटे ए सर्व खोटी कल्पना छे शा माटे के ए कारण केवु छे के जेम ग्रिष्मऋतुने विषे म यान्ह समे मृगजळ कहेता खारनी भूमिने विषे जेम खार झगे छे, ते दीठामां एवु आवे के जाणे सर्व पाणी पाणी भरयु छे ते प्रमाणे आ सयोगथी उपज्यो जे स्पष्ट विकार ए ससर्ग जे मल्यो ते सर्वेनो अने नाशज छे, ए वस्तु साची नथी माटे व्यवहारना कर्तव्यमां कशो पण साचो पदार्थ भासतो नथी, तथा जेम गांधर्वना नगरवडे आकाश घणु शोभायमान दीसे पण ते क्षणमा सर्व टेकाणे थइ जाय त्यारे आकाश हतु एवु थइ रहे तेम आ व्यवहार नयना बलथकी स्वर्गादिक सयोग मले तेनो विलास पण कदापि पामे तो पण शु ? ए स्वप्नप्राय छे ते कारण माटे एकज जे शुद्धनये करीने ग्रहेलो जे एकत्व भाव एटले एकटर पणे करीनेज आत्माने विषेज पामवु थाय छे, अने ए वस्तु वीजे कांइ सपूर्ण मळती नथी वीजे जे रहिते अश ग्राहिने सर्वे फरज करे छे जेम कोइ पुरुष एक तांदुलनो दाणो लेइने एवु कहे के मारी पासे पण तांदुल छे पण ते तांदुलथी सामाने पण जमाडी शके नहि अने पोतानी पण भुख भागे नहि तेम ए अशे ग्राहिने कल्पना जे करवी तेथी काइ कार्य सिद्धि थाय नहि जेने सपूर्ण आत्म स्वरूपनु जाणपणु थयु ते पूर्णवादि कहेवाय तेने कांइ अश कल्पनामां रुचि आवती नथी, तथा सूत्र मध्ये पण 'एगे आया' एवो पाठ छे तो तेनो पण आशय एज कह्यो छे ते कारण माटे प्रत्यक्ष एक ज्योतिरूप झलझलाटमान एक आत्मस्वरूप तेज सत्य छे एम शुद्धनय वाक्य पण कहे छे अने जे वचनो सचय करीने जे सकल्प करवो तेतो सर्व दुःखनुज कारण छे एटले ज्यां महा मायारूप

मोटो फंद रह्यो त्या मारु तारु कल्पना घणी रही त्यां कंइ कार्य सिद्धि छे नही प्रगट सिद्धि पोताना आत्म स्वरूपमां हुं पोतेज आत्मा छुं हु पोतेज भगवान् छु, एवी रीते प्रसन्न थयु अने शुद्ध रूप पोतानु प्रकाश करवु. निश्चय नयवाळानो एज मत छे अने व्यवहार नयवालो छे तेनो मत तो फोगट कल्पना रुप जोवामां आवे छे ते कहीये छीये के शरीरमां, ने आत्मामां एकत्वपणु माने छे अथवा कोइक प्रकारे आत्माने रूपीपणे करीने माने छे शामाटे जे शरीरादिकनी आधि व्याधिना कारणने मेलवीने कहेछे, ए सर्व व्यवहारनयनी घेलछाछे निश्चय नयवालो तो ए वस्तुने कबुल नथी करतो जे कारण माटे साक्षात् अरुपी आत्म पदार्थ छे असख्यात प्रदेशे निर्मल, तो तेने अशे करीने पण रुपीपणु केम पामीये ? आपितु नज पामीये जेम कोइ अग्निने कहेशेके शीतल थयो तो ते वात केम मनाय अग्नि शीतल कोइ काले थायज नही. ए तो अग्निना जीव गया पछी जे दल पृथ्वी कायना भागनु रह्यु ते शीतल छे, तेने एटली सरत न पोची तेथी तेणे अग्नि शितल कह्यो अथवा कोइ कहेशेके घृत उष्ण थयु छे पण एम नथी जाणतो के घृत तो शीतल छे एतो अग्निनो सयोग मलवा थकी अग्निना प्रदेश घृतमां पेठा छे ते उष्ण छे पण एक क्षणने अंतरे अग्निना प्रदेश वली जाय ते वारे घृत शीतलज लाधे तेम आ पुद्गल जे रूपी पदार्थ तेना सयोगमां आवीने शरीर जे बधाणुं तेने आत्मा ठरावे छे, अने ते आत्माने रुपी कहे छे ते जीवने मोटी भ्रमणाज पेठेली छे एम समजवु. शामाटे जे रुप रस गध स्पर्श शब्द इत्यादिक वस्तुओ आत्माना घरमां नथी. वहारनुजे करवु करावबु अथवा शब्दादिक जे उचारण करवु इत्यादि देखीने तेने रुपीपणु माने छे पण ते काइ आत्मानी वस्तु नथी आ

त्मा तो केवो छे के ते काइ नजरे देखवामा आवतो नथी मन थकी पण काइ ग्रहण थतो नथी, वचन थकी पण अगोचर छे, अने ए आत्मा बीजी वस्तुने प्रकाश करी शके नही, ए तो पोताना स्वरुपमाज प्रकाश करे छे, तेतु आत्म स्वरूप तेने रूपी केम कहेवाय ? आत्म स्वरुप चिदानद मय सत्य स्वरुप छे तेनु स्वरुप विचारीने जोइये त्यारे सूक्ष्ममां सूक्ष्म छे ने उत् कृष्टमा उत्कृष्ट पण छे एवी अन्य दर्शनने विषे पण पृछा थयेली छे के शु आत्मा मूर्त्तिपणाने फरसेके न फरसे तेनो ए अन्यमतीवा लोये एवो उत्तर आपेलो छे के शरीरने विषे इद्रियो छे ते मोटी छे इद्रियो थकी मन घणु मोटु छे मनथकी बुद्धि घणी मोटी छे ने बुद्धि थकी आत्मा घणो मोटो छे अहीयां एक खेद करीने उत्तर कहेछे जे विकल लोको कहेता जे अज्ञान लोको अमूर्ति आत्मा छे तेमां मूर्तिपणानी भ्रमणा राखी रह्या छे. तेथी जे ज्ञानी पुरुषो छे तेने एक मोटु आश्चर्य मालुम पडे आ लोकोनी शी मूर्खाइ छे जे माटे जीव आत्माने मूर्तिनी मति वेदना प्रगटपणे छे एम जो मानीये तो पुदूगलने पण वेदना थवी जोइये पणअहीया तो जे वेदना छे ते तो आत्माने अशुद्धपणे शक्ति प्रणमेली तेना अनुभव थकी थाय छे केमके जे इद्रिद्वारे करीने जे अज्ञानपणु ते पोतानी मेलेज पोते प्रणमे छे तेना परभाव थकी इष्टपणु वा अनिष्टपणानो विषेश फर्स द्वारे करीने वेदना प्रणमे छे अहीया ए वेदनानो मा लेक आत्म उपयोग पण नथी पण कइ अहीयां पुदूगल दशा मा लेक नथी अहीयां एक अज्ञान दशा एटले आत्मानो अवलो उप योग मालेक छे एटले एविपाकप्कार पांमीने आ वेदना प्रणामने भजे छे एटलो अहीया कल्पना थकी आत्मानो भाग -मालुम पडे छे, ते माटे अहीयां मूर्तिपणु जे मानवु ते निमित्त मात्र थयु, एटले

अन्वय कहेता सहचारीपणे थयुं केनीगोडेके जेम घटने दडचक्रत दृवत् पण अहीया काइ आत्मारुपी थाय नहि केमके आत्मा छे ते तो ज्ञानमय चेतना रुप बोध छे, अने जे जीव कर्मना अधिष्ठितपणाने विषे रक्त छे तेणे करिने ते जीवने ते कर्मफल नामा वेदना छे तेवीपदेशि पाम्यो छे ते कारण माटे जे आत्मा छे, एतो अमूर्तिज छे चेतनपणाने कोइ काले ओलघे नहि ते कारण माटे जे आ शरीरादिक जे पुद्गल मूर्ति स्वाभाविक छे तेनी साथे रह्यो जे आत्मा ते काइ मूर्ति थाय नही शा कारण माटे के देहनी साथे आत्मा काइ एकत्वर्णु पामतो नथी

ए प्रकारे कर्मवर्गणाना तथा मनोवर्गणाना तथा वचनवर्गणाना जे आत्माने समिपे ए पुद्गल मवर्ते छे ते एकत्व सगते मवर्ते छे ते कीया तनधनादिकना जे पुद्गल ते तो दूरज छे तथा मन वचन ना जे पुद्गल ते पण आत्मा थकी जुदाज मानवा शा माटे जे पुद्गलनो गुण ते मुर्त्तिमान् छे, ने आत्मा तो ज्ञान गुणवालो छे, ते कारण माटे पुद्गलथी आत्मद्रव्य सदाय जुदुज छे जेम धर्मास्ति कायनो गुण गति हेतुत्व छे तेम आत्मानो गुण ज्ञानमय छे ते कारण माटे धर्मास्तिकायथकी पण आत्मा जुदो छे एवुज परमेश्वरनु वचन छे तथा अधर्मास्तिकाय द्रव्यनो गुण ते स्थिर साह्यकारी छे ते गुण पण काइ आत्मानो नथी आत्मा तो ज्ञानमयज छे ते कारण माटे ए अधर्मास्तिकाय द्रव्य थकी आत्मद्रव्य भिन्न कह्यु छे. एवु सर्वज्ञये कह्यु छे तथा आकाश द्रव्यनो गुण अवगाहना हेतुत्व छे ते थकी पण आत्मगुण जुदोज छे ते कारण माटे आकाश द्रव्य थकी आत्मद्रव्य भिन्न कह्यु छे एवा तीर्थंकरनां वचन छे ते कारण माटे आत्मा तो ज्ञान गुणे करीनेज सिद्ध छे तथा काल वरतनारूप छे तो ते थकी पण आत्मा जुदोज छे एवी रीते पांचे अजीव

द्रव्य थकी आत्मानु जुदापणु साबित थयुं ए प्रगट भेद करीने जुवे तो समज पडे अने देशथकी अजीवपणु आत्मा वांच्छे छे तेनु कारण कहिये छिये केमके जे प्राणीने शुद्ध स्वभावनी प्राप्ति न थइ शुद्ध ज्ञान पण न जाण्यु अने शुद्ध स्वरूपनी रमणता पण न आवी त्यारे ते शुद्ध कारण थकी छेटे रह्यो ते वारे तेनु सर्व अज्ञान दशारूप थयु एटले तेनु ज्ञान पण मेलु रह्यु तेना अध्यवसाय करत करावतमां रह्या तेने बाह्य पुद्गलनु परावर्तन रह्यु ते जीवने अजीवज कह्या छे, एवी रीते शास्त्रमां छेज अने समजु पुरुषने तो एवी रीते जाणवानु छे के इंद्रियबल, श्वासो, श्वास, ने आयुः, ए चारे छे तेने द्रव्य प्राण कहिये, तो ते आत्मा थकी भिन्न छे अने जे पर्याय रह्या, ते पण पुद्गलने आश्रयीने रहेला छे ते पण आत्म स्वरूप थकी तो जुदाज छे केमके आत्माने काइ ए प्राण पर्यायवडे जीववु नथी, शा माटे के ए पर्याय केवा छे के कांइ ज्ञानरूप नथी तथा थिरजरूप नथी तथा नित्य शाश्वता नथी वली स्थिर भाव नथी एटला कारणथकी तो ए ग्रहीत छे माटे एने विषे शु आत्माने मलतापणु छे ? ने आत्मा सदैव जे थकी जीवे छे ते तो प्रकृतिरूप जे पोतानी शक्ति सदाय सदाय शाश्वती छे ते शक्तिवडे करीने आत्मा सदैव जीवे छे, ए शुद्ध द्रव्यार्थक नयनो पक्ष जाणवो अहियां एक अचरजकारी वारता छे ते कहिये छिये के अहो जे जीव प्राणे करीने जीवतो नथी ने प्राण विना जीवे छे तो ए अचबानिज वारता छे जेम चित्रकारीनु चरीत्र सांभलिकोने हर्ष न आवे अपितु आवेज तेम ए वात शुद्धनयनी कोण न ग्रहे सर्वे ग्रहे छे वलि ते आत्मा केवो छे के पुण्यरूप ते पण आत्मा नहि अने पापरूप ते पण आत्मा नहि पुन्य तथा पाप बेये पुद्गलरूप छे जे बालकाले जे शरीर ते उपादान भावे करीने कल्पे छे एटले

जेम बाललिला कहेता वालक छोकरा वुळनी क्रिडा करे छे तेने सत्य करी माने छे तेम बालजीव ज्ञानरहित पुण्य पापना कामने आदरवु छाडवु सत्य करी माने छे पण पुण्य छे ते शुभ कर्म छे ने पाप छे ते अशुभ कर्म छे त्या कोइक कहेशे के पुण्य छे ते आ-दरवा योग्य छे पाप छे ते छाडवा योग्य छे तेने शिक्षा करे छे के शु कांइ शुभ कर्म छे ते थकी जीव शु ससारमा पडे छे के नथी पडतो माटे ए थकी पण संसारमा रखडवुज पडे एतो केवु छे क एक लोढानी वेडी छे ने एक सोनानी बेडी छे ए बन्ने बेडीयो ध-खिवानां छे बन्नेये परवश छे ने बन्नेये दु खदाइ छे विचारीने जोइये तो फल भेद कांइ जणातो नथी बन्ने वेदनी कर्मरूप छे एक सुखनु फल छे ने एक दुःखनु फल छे ए बन्नेनु फल प्रगट जोइये तो पुण्य पाप मध्ये काइ भेद छे नहि जे कारण माटे पुण्य थकी सुख विलसे ए पुण्य फळ तेनां जे फल ते आगल दु खरूप प्रगटे त्यारे एम समजवु के ए पुण्य फळ थकी पाप प्राप्त थयु त्यारे ए पुण्य ते पापनु दातार ठरयु ने ए पाप कर्मनो जे वारे उदय थयो ते वारे दु खनी प्राप्ति थाय माटे तेमां तो मूर्ख होय ते साता करी माने प्रमाण थकी विचारीने जोइये तो महा तापकारी छे केमके पंडित जन एवु कहे छे जे सस्कार थकी उलटा गुणनो विरोध करता ए पुण्य छे अने वली ते पुण्य थकी निपज्यु जे सुख ते सुखने भोगवतां पाप करीने दू खने पामे छे ते उत्तराध्यायन जिन कथाने विषे एवु कह्यु छे जेम मोटा बोकडाने खानपान सारी पेठे कर्यु ते थकी तेनु शरीर पुष्ट थाय पोते पण मनथी खुश थाय पण घरे प-रोणो आवे ते वखत एनो वध करे ते वारे दुःखी थाय तेमज ए राजा तथा इद्रादिक तेंना पण सुखमां शरीर पुष्ट थाय छे ते बोक-डावत् जाणवु, परिणामे जोतां ए पुण्य छे ते दु.खनु कारणज छे

अथवा जेमजलो छे ते लोहि पिता थका घणु सुखमाने छे पण तेने दोहिने लोहि काढीले ते वारे महा दु खनी प्राप्ति थाय छे तेम ए पुण्यना उदयथकी पाम्यो जे सुख ते भोगवता घणी खुशी माने छे पण ते सुख भोगवता उपार्ज्युं जे पाप कर्म तेथी महा दु खनी प्राप्ति थाय, माटे ए पुण्य पाप बन्ने तजवा लायक छे ज्ञानि पुरुष तो एके आदरवा योग्य कहेता नथी आदरवा योग्य तो एक आत्मस्वरूप ज छे अने विषय भोगनिज तृष्णा ते तो प्राणिने अते पण माठि दशाने पमाडे जेम अग्निनु बलवल तु पाणि पिधे जलनी तृषा क्यां थकी छिपे तेम जे ठेकाणें इंद्रियोनि उत्कठा घणी रहेतो ए सदाय मनने विषे नहि रहेलोछे त्या सुख क्या थकी होय तथा ज्यां द्वेष घणो रहे तेतो थको घरमा सुखे बेठो होय तोय पण ते सुखना अनुभवना कालनें विषे द्वेषरूप तापे करीने मनमांदु'ख वेदे केमके एक खभा उपरथी बिजे खभे भार आरोपण करिये ते विचारीने जोतां कांइ भार उतर्यो नहि तमज इद्रीयोना आनदथकी कांइ आत्माने सुख प्रगट्यु नहि अने दु खनु दु ख रह्यु एटले सुख दुखने मोह ए त्रणे गुण वृत्तिरूप छे पण आत्माने तो विरोधीजछे पण पोतपोताना गुणमा गुणनी वृत्ति छे एटले दुखरुपी जे वन तेने तो ओलखी शके नहि अने आ ससारनु जे सुख अथवा दुख ते कोना जेवु छे के जेम मोटो नाग महा क्रोधी होय अने तेणे पोतानो फणाटोप विस्तार्यो होय ते सरखो ए ससारनो विलास छे माटे विवेकी पुरुषने तो ए महा भ्रमनोज हेतु छे एवी रीते फलनी अपेक्षा विचारीने जोतां पुण्य पापनु एकत्वपणुज ठरे छे जे मूर्खनमाने तेने अज्ञान दशा ठरी ते घणु ससार भ्रमण करशे अने ठे ए वस्तु एवी रिते समजीने अगीकार करे ते घणी भव समुद्र [illegible] संदेह छे नही एट

दु खरू [illegible] आत्मा

थकी भिन्न छे अने आत्मगुणना विरोधी छे. माटे अवश्य तजवा योग्य छे शुद्ध निश्चयथकी विचारीने जोतां शुद्ध आत्मासदा सत्य-रूप चिदानदमय छे एतो चोथी दशा जाणवा योग्य छे तेवग रूप विश्र एवु आचरण विषेपे शोभे छे जेम वर्षाकाले मेघवरसी रह्या पछी जेम वादलानो नाश थाय त्यारपछी सूर्यनी जे शोभा काति दीसे तेम ए आत्मानी सोभादिसे जेम जगत्ना जीवने इद्रियोनी वृत्तिनु सुख नाना प्रकारनु थाय छे अने सामान्य प्रकारे जे चिदा-नदरूप छे तेतो सर्वदशा माहे सरखू सुख देखे छे तेने कांइ वधतुं ओछु छेज नही जेम तणखे करीने अग्नि दीपे नही अथवा ए थकी कांइ ताप पण लागे नहि तेम जे अनुभव सहित आत्मा छे तेने पराभव थकी कशुये थतु नथी जे परवशताये जेम सुखरूपनो सा-क्षि आत्मा नथी तेने अभिमान अहकार पण नथी ते विनाज सु-खनु भान थाय छे शामाटे के विवेक दशा जेने प्रगटपणे थइ छे ने शुद्ध भान थयु छे, तेने तो सर्व स्थानकने विषे सुखज दिठामां आवे छे ते कारण माटे शुद्ध निश्चय थकि ए चिदानद भावनो आत्मा भोक्ता छे अशुद्ध निश्चय नय थकी करर्या जे कर्म शुभाशुभ ते थकि उपन्यु जे सुख तेनो भोक्ता आत्मा छे, जे कर्मना फलनो भोगदारि सर्गनी आदे देइने छे ते व्यवहार थकी प्रवर्तन छे ए सर्वे निगमादिक नयनी अवस्था एवी रीतनीज भावना छे शुद्ध भावनो कर्ता जे आत्मा ते तो शुद्ध नयथकीज पामिये ए सामर्थाइ विजी जगाये नथी जे समे शुद्ध परिणाम वर्ते छे ते समे सामर्थ्य विर्यनी वृत्तिने आश्रयीने शुद्ध भावनो कर्ताज ए नयवालो माने छे उपद्रव्य अतरायादि-क रहित सामर्थ्य पणु तेने विषे दुष्ट भावनो नाश थये थके शु-द्ध स्वभाव प्रगट करवाने आत्मा प्रवर्ते अने ज्यां राग द्वेष क्लेश करिने चित्त वासीतु जेनु छे ते जीवतो ससारिज कहेवा-

य अने जे राग द्वेष मोह थकी मूकाणा छे तेनो तो मोक्षज कहिये जे मननो परिणाम संक्लिष्ट छे राग द्वेष व्यापेलो छे तेने आत्मा न कहिये आत्मानु रूप तो अन्यवड नथी पोताना सत्वार्थपणे ज अविकारीज छे हवे अहियां शब्द नयवालो श्रुत ज्ञानना उपयोग वतने आत्मा कहेछे ए नयनो विचार छे, माटे अहियां न्याय ग्रथ महोटा ते थकि नयनो विचार थोडोक कहि शु त्यां नयो बे छे एक द्रव्यार्थक बीजो पर्यायार्थक ते मध्ये द्रव्यार्थककोने कहिये बीजा नय थकी भिन्न न पडे एवो विषय जेनो तेने द्रव्यार्थक कहिये तेना चार भेद छे निगम १ सग्रह २ व्यवहार ३ ऋजुसूत्र ४ ए भेद छे तथा पर्यायार्थकना त्रण भेद छे शब्द १ समभिरूढ २ एव भूत ३ ए भेद छे तथा विकल्पे करीने ऋजुसूत्र नय पण पर्यायार्थमां कह्यो छे ए विकल्परूप नय छे हवे निगम नयना त्रण भेद छे आरोप १ अंश २ सकल्प ३ ए भेद भाख्या छे. तथा अहियां चोथो भेद उपचार पण कहे छे ते शुं के नथी एक गयो अभिप्राय कहेछे एटले निगम नय कहेवाय अनेक आश्रिये छे ते निगमना चार भेद ते मध्ये आरोपनिगमना चार भेदछे द्रव्यारोप १गुणारोप२कालारोप३ कारणादि आरोप, ४थो गुणादिकने विषे द्रव्यपणु मानवु ते द्रव्यारोप जेमवर्तमाना परिणाम ते पचास्तिकायने विषे प्रणमनधर्म छे तेने कालद्रव्य कहि बोलवो, एभिन्न द्रव्यरूप पड छे नहि पण द्रव्य कहेवो ते आरोप धर्म कह्यो छो अथवा द्रव्यने विषे गुणनो आरोप करवो जेम ज्ञान गुण छे, इत्यादिक आत्माना गुण कहेवा तो ए ज्ञान तेज आत्मा कह्यो छे इत्यादिक गुणनो आरोप कह्यो छे २ तथा काल आरोप जेम श्री वीर निर्वाण थया घणो काल वित्यो पण आज दिवालीने वीरनु निर्वाण छे इत्यादिक वचन बोलवु एव-र्तमानमा अतीतनो आरोप कर्यो अथवा आज श्री पद्मनाथ

प्रभुनुं निर्वाण छे ए वर्तमानने विषे अनागतनु आरोप छे एम अ तितने विषे पण त्रे भेद थाय तथा अनागतने विषे पण त्रे भेद थाय एवि रीते कालारोपने विषे छ भेद जाणवा १ हवे कारणने विषे कार्यनो आरोप करवो त्या कारणारोप कहिये ते कारणना चार भेद छे ते कहिये छिये उपादान कारण १ निमित्त कारण २ असाधारण कारण ३ अपेक्षा कारण ४ ए चार कारण छे ते मध्ये जे उपादान कारण प्रथम वस्तु ते आत्माना ज्ञानादिक गुणनु आराधन स्वभाव ग्राहि विभावत्यागि स्वसत्ता अवलंबन इत्यादिक पोताना स्वभावने विषे स्थिरभावे रमणता करवी ते उपादान कारण कहिये १ हवे बीजु निमित्त कारण तेना बे भेद शुद्ध १ अशुद्ध २ जे गुरु शुद्ध मार्गना देखाडनारा आत्मस्वरूपनी ओलखाण करावे पर भावनो त्याग करावे तेज गुरु मोक्षना दाता कहिये परम उपकारी स्वपरनी ओलखाणना बतावनार तरण तारण झहाज समान तेनी जे सेवा भक्ति करवी ए शुद्ध निमित्त कहिये तथा अशुद्ध निमित्त जे बाह्य कष्ट क्रिया तपादिक करे ते द्रव्य थकी साध्य साधन सापेक्ष छे ते बाह्य जीवने धर्म निमित्त कारण छे तेने व्यवहार थकी धर्म कहिये पण कारणने विषे कर्त्ता पणानो आरोप थयो २ एम आरोपना अनेक प्रकार कह्या छे अशनीगमतो व्यवहारादिक कारणने विषे सर्व ठेकाणे व्यापीनेज रह्यो छे तथा संकल्प नीगमना बे भेद छे एक स्वप्रमाण रुप जे वीर्य चेतनानो नवो नवो क्षयोपसम थाय ते लेवो अथवा कार्यांतरे नवो नवो कार्यनो उपयोग थाय ए बे भेद छे हवे जे अशनीगम पूर्वे कह्यो तेना बे भेद संक्षेप थकी कहु छु एक भिन्नाश १ बीजो अभिन्नाश २ ते भिन्नाश कहेतां जे पुद्गलना स्कंध जुदा जुदा कल्पाय छे ने छे पण जुदा जुदा शामाटे के एनामा मलवा वीखरवानो धर्म रह्यो छे तथा अभिन्नाशी

कहेतां जे आत्माना प्रदेश तथा गुण अभिन्न छे, ए कोइ काले जुदा थाय नही, तेमज धर्मास्तिकाय तथा अधर्मास्तिकाय तथा आकास्तिकाय पण जाणवा एटले निगमनय कह्यो १ हवे सग्रहय कहिये छिये, सामान्यपणे मूल द्रव्य व्याक जेनी तत्वादिक सत्तापणे रह्या जे धर्म तेने सग्रह करे ते सग्रहनय कहिये, ते सग्रहनयना वे भेद छे सामान्य सग्रह १ विशेष सग्रह २ त्यां सामान्य सग्रहना वे भेद छे एक मूल सामान्य सग्रह १ तथा उत्तर सामान्य सग्रह २ मूल सामान्य सग्रहना ७ भेद छे ते आगल अस्तितत्वादि स्वभाव कहि शु त्या कहेवाशे तथा उत्तर सामान्यना वे भेद छे एक जाति सामान्य १ बीजो समुदाय सामान्य २ जाति सामान्य कहेतां मनुष्यजाति तथा तिर्यंच जाति तथा देव जाति ए जाति सामान्य छे तथा समुदाय सामान्य जेम आंबाना समूहने विषे अथवा आंबाना वनने विषे एटले सर्वे आंबा ग्रहण थया ए समुदाय वचन छे, अथवा मनुष समुदायने विषे मनुष सर्वे ग्रहण थाय, ए सर्वे समुदाय सामान्य जाणवु, एटले ए उत्तर सामान्य ज छ, ते चक्षु दर्शन तथा अचक्षुदर्शन ग्राही छे अने मूल सामान्य जे छे, ते तो अवधी दर्शनथीज ग्रहेवाय छ शावास्ते के इहा मूल वस्तुनु जाणवु छे ते प्रत्यक्ष ज्ञान दर्शन विना ग्रहण थाय नहि, अने जे परोक्षवाला जाणे छे, ते सद्गुरुना कहेण थकीज जाणे छे अथवा बीजे प्रकारे ए सग्रह नयना वे भेद छ सामान्य सग्रह १ विशेष सग्रह २ त्यां द्रव्य एवा शब्द कहेवो ते सामान्य सग्रह छे शामाटे के द्र प कहेता छये द्रव्य आवी गया माटे एने सामान्य सग्रह कहिये, तथा विशेष सग्रह कहेतां जीव द्रव्य अजीव द्रव्य एम जीवथी अजीव जुदा पाडवा एम रूपीथी अरुपी जुदा पाडवा ए विशेष थयो एक एक द्रव्यने बीजा द्रव्य थकी जुदो पाडी एक द्रव्य पोतानी जातिनो सग्रह करी

बोले तेने विशेषसंग्रहनय कहिये तथा ए विशेष सग्रह नयनो वि-
स्तार घणा छे, तथा विशेषावश्यक ग्रथने विषे ए सग्रह नयना
चार भेद कह्या छे ते गाथानो अभिप्राय सामान्य थकी देखाडु छु
सग्रहण कहेता एकठो एक वचन मध्ये एक अध्यवसाय उपयोगमां
समकाले ग्रहेवो सामान्य रुप पणे सर्व वस्तुनो आकरो मन ग्रहण
करवो ते सग्रह कहिये अथवा सर्व भेद सामान्यपणे ग्रहिये जेणे
तेणे ते सग्रह कहिये अथवा सग्रहित पंडित समुदाय अर्थ ग्रहेवाय
जेणे वचने ते सग्रहे वचन कहिये तेना चार भेद सग्रहीत सग्रह १
पडित सग्रह २ अनुगम सग्रह ३ व्यतिरेक सग्रह ४सामान्यपणे वहे-
चण विना जे गृहण थाय एवो जे उपयोग अथवा वचन अथवा
एवो जे धर्म कोइ वस्तुने विषे ते सगृह कहिये १ अने एक जाते हिये
माटे एकपणु मानीये एक मध्ये सर्वगृहण थाय ते पडित सगृह क
जेम एगे आया एगे पुगला इत्यादि वस्तु अनति छे पणजाति एक छे
माटे एक वचनमा गृहण थाय छे तेने पडित सग्रह बीजो भेद कह्यो
२ तथा सर्व वक्ति जे अनेक जीवरुप अने वक्ता छे ते सर्वमां पा-
मिये तेने अनुगत सगृह कहिये सत चीतमयोआत्मा एटले सर्व
जीव तथा सर्व प्रदेश तथा सर्व गुण ते जीवना चेतना लक्षण क-
हिये एने अनुगम सगृह कहिये ३ तथा जेनेता केहेवे तथी इतरनो
सर्व संगृहपणे ज्ञान थाय एवी व्यतिरेक सग्रह कहिये जेम जीव छे त्यारे
जीव नही इते अजीव कहिये एटले कोइ जीव छे एवु ठर्यु एवी व्यतिरे-
क वचने अथवा उपयोग जीवनो ग्रहण थाय छे तेने व्यतिरेक सग्रह
कहिये ४ अथवा बे भेद संगृह कहेवाय छे, एक तो महा सत्तारुप
१ बीजो आन्तर सत्तारुप २ ए रीते सगृहनु स्वरूप कह्यु एटले त्रण
भुवनमा एवी वस्तु कोइ छे नही जे सग्रह नयना ग्रहणमा आवे
नही अर्थात् सर्व वस्तु सग्रह नयना ग्रहणमा आवे छे

॥ उक्तच ॥

सदितिभणीएणजम्हा । सव्व’थाणुपव्वत्तएबुद्धि ॥
तोसव्वमत्तमत । नथ्थितदतरकिंचि ॥ १ ॥
इतिसगृहनय कह्यो २

हवे व्यवहारनय कहिये छिये जे पूर्वे सग्रहनये जे वस्तु गृहण करी तेने भेदतर करीने वेंहेंचवु तेने व्यवहारनय कहिये जेम द्रव्य कह्यो ते सामान्य कह्यो ते मध्ये व्हेंचण करिये त्यारे द्रव्यना बे भेद थाय एकरूपी १ बीजो अरूपी २ अरूपीना बे भेद एक चेतन १ बीजो अचेतन २ इत्यादिक जे भेद व्हेंचवा ते सर्वे व्यवहारनयनो पक्ष जाणवो, अथवा व्यवहार कहता प्रवर्तन तेने व्यवहारनय कहिये छिये तेना बे भेद शुद्ध व्यवहार १ अशुद्ध व्यवहार २ ते शुद्ध व्यवहारना बे भेद वस्तुगत व्यवहार कहेता जे सर्व द्रव्यनो स्वरूप रूप शुद्ध प्रवर्ति होय जेम धर्मास्तिकायनी चलण सहायता अधर्मास्ति कायनी स्थिर सहायता, जीवनी ज्ञायकता इत्यादिक वस्तुगत व्यवहार छे तेना त्रण भेद छे द्रव्य व्यवहार १ गुण व्यवहार २ स्व भाव व्यवहार ३ बीजो साधन व्यवहारना बे भेद उत्सर्ग साधन १ अपवाद साधन २ जे उत्सर्ग साधन ते द्रव्यनु उत्सर्ग नीपजावया माटे रत्नत्रयीनी शुद्धता करवी ते गुण स्थाने श्रेणिक आरोहणरूप थाय हवे जे अशुद्ध व्यवहारना बे भेद जे क्षत्र अवस्थाने अभेद रह्या जे गुण ज्ञानादिक भेद कहेवा असद्भूत व्यवहार कहेतां अमुको क्रोधी मानी निपषा इत्यादिक अथवा देवता मनुष इत्यादिक अथवा देवतापणु ने हेतुपणे परिणमे ग्राहा जे देवगती वीपाकी कर्म तेने अहोरूप स्मार छे पण यथार्थ ज्ञान विना भेद ज्ञान शुन्य

जीव एक करी माने छे ते अशुद्ध व्यवहार कहीये ते वली अशुद्ध व्यवहारना वे भेद, एक सश्लेपित अशुद्ध व्यवहार ते मारु शरीर हु शरीर इत्यादिक श्लेपित असद्भूत व्यवहार, तथा असश्लेपीत कहेता पुत्र धनादिक महारु एम कहेवु ते असश्लेपीत ए अशुद्ध व्यवहारना वे भेद महा भाष्यमा कह्या छे हवे जे व्यवहारना बे भेद मूल छे एक व्हेंचणरुप व्यवहार १ बीजो प्रवृत्तिरूप व्यवहार तथा प्रवृत्ति एक वस्तु प्रवर्तन १ साधन प्रवृत्ति २ लौकिक प्रवृत्ति हवे साधन प्रवृत्तिना वे भेद छे, एक लोकोत्तर साधन प्रवृत्ति जे अरिहतनी आज्ञाये शुद्ध साधन मार्गे इह लोकससार पुद्गलभोगाशसायश आशसादिरहित जे रत्नत्रयीनी परिणति परभाव त्याग सहितने साधन प्रवृत्ति तथा जे स्याद्वाद विना मिथ्याभिमान सहित कुप्रवचन कुसाधन प्रवृत्ति अथवा लोक व्यवहार परोवाये वचने जे लोकनो स्वस्वदेश अनुकुल प्रवर्ते ते लोक व्यवहार कहीये एटले आप आपणे स्वार्थनो मार्ग चलववो अथवा आप आपणा स्वार्थनो उपदेश ते मार्गमां जे प्रवर्ते अथवा प्रवर्तावे ते सर्वे लोक व्यवहारना भेद जाणवा तथा द्वादशारनयचक्र मध्ये एक एकनयना सो सो भेद कह्या छे, ते शास्त्र रहस्यना जाण जीव होय तेने ए ग्रथथकी जाणवा. ए विचार धारवाथी खुलासो घणो थशे ए व्यवहारनय कह्यो ३ हवे रुजुसूत्रनय कहीये छीये रुजु सरल जे श्रुत कहेतां बोधते रुजुसूत्र कहीये, रुजु शब्दे अवक्रपणु ते सरल श्रुतने रुजु सूत्र कहे छे रुजु अवक्रपणे वस्तु पदार्थने सत्य करी जाणे तेने रुजुसूत्र कहीये, वस्तुनु वक्रपणु केम जणाय ते कहीये छीये, वर्तमानपणे उपन्यो वर्तमान काल वस्तु ते रुजु कहीये अने जे अतीत अनागत ते रुजसूत्रनी अपेक्षाये अछतो छे एटले अतीत तो वणशी गयो, .. [illegible] उपन्यो नथी, ते त्यारे अतीत अनागत ए बे

ते अवस्तु छे अने जे वर्त्तमान पर्याय वर्ते ते वस्तुपणु सत्य छे. पूर्वे काल पश्चातकाल लेइ वस्तु कहेवी ते नैगमनये आरोपणरूप छे त्यां कोइ पुछशे के ससारी जीव कर्म सहितने सिद्धसमान कहे छे ते अनागतकाले सिद्ध थाशे ते माटे कहे छे तेने तमे अनागतने अव स्तु केम कहोछो तेनो उत्तर.

ह भव्य ! ए अनागतभावी माट कहेता नथी एतो वर्तमान सर्व गुणनी छतिपर्याय आत्मप्रदेशे छे, जो छतिपर्यायन होय तो साम र्थ्यपर्याय क्या थकी थाय, माटे ए वर्तमानमा वस्तु छेज, पण आ वर्ण करीने ढकाइ गयो छे, तेथी प्रवर्तन नथी ते माटे तिरोभावपणा माटे सग्रहनय कहिये, पण वस्तुमा ते सर्वे सकल ज्ञानादिक गुण छता वर्ते छे, ते माटे सिद्ध कहिये छिये, अने जे वस्तु ते नामादि कपर्याय सहित वत छे माटे नामादिक निक्षेपाते सर्वे रुजुसूत्रना भेद छे एटले नामादिक त्रण निक्षेपा द्रव्य अने भाव ए बे व्याख्या कारण कार्य भावनी वेहचण करे ते माटे छे पण वस्तुमां सहज चार निक्षेपा ते भाव धर्मज छे तथा पोतपोतानु कार्य करताज छे ए रुजुसूत्र तथा बीजो स्थुल रजुसूत्र ए क्षण वर्तमान कालनो, एक समय तेने सूक्ष्म रुजुसूत्र कहिये, अने बहु कालीन रजुसूत्र ए पण कालापेक्षा भावे छे, तथा ए भावनये छे, तथा एने जोगा विलंबीपणे ते वेहाज छे ते द्रव्य मध्ये गणे छे, ए रजुसूत्रनय कह्यो ४ हवे शब्दनयनु स्वरूप कहिये छिये, समति कहेता बोलावे, तेने शब्द कहिये, अथवा सपीपे बोलाविये, वस्तुपणे ते शब्द कहिये, ते शब्द ते वाच्य अर्थ तेने ग्रहे ते प्रधानपणे, जे नये ते पण शब्द कहिये, जेम करतकर्ने जे कर्यो तेनो हेतु जे धर्म वस्तुमा होय ते बो लाविये एटले शब्दनु कारण तो वस्तुनो धर्म थयो, जलाहरण धर्म छे तेने घट कहिये छिये, एम अहिया पण शब्द वाच्य अर्थ ग्रह

ते नये पण शब्द कहेवाय, जेम रुजुसूत्रनयने वर्तमान कालनो धर्म इष्ट छे तेम शब्दादिकनय ते पण वर्तमाननेजइष्ट छे जे कारणे पेटे एथु पहोलो बुन्न गोल सकोचीत उदरकलित युक्त जलाहरण क्रिया सामर्थ प्रसिद्ध घटरुप भाव घटमाज घटे छे पण शेषनाम स्थापना द्रव्यरुप त्रण घटनये घट न माने, घट शब्दना अर्थने ते संकेतनेज घट कहे घट धातु ते चेष्टा वाची छे, ते कारण माटे शब्दनय ते चेष्टा करतानेज घटकहे एटले रुजुसूत्रनयचार निक्षेपा सयुक्तने पण घट माने अने शब्दनय ते भाव घटने घट माने, एटलु विशेषपणुं छे. शब्दना अर्थनी ज्यां उत्पत्ति होय तेने ते वस्तु कहे, एटले ऋजु सूत्रनय सामान्य घट गवेस्यो, अने शब्दनयसदूभाव जे अस्तिधर्म असदूभाव जेनास्ति धर्म ते संयुक्त वस्तुने वस्तुपणु कहे. एटले वस्तुने शब्द बोलावतां सातभागे बोलाववी एटले ए सप्तभगी जेटला ते शब्दनयनाभेद जाणे ते सप्तभगीनु स्वरूप बोधदिनकरथकी जाणवु ए शब्दादिकनय वस्तुना पर्यायने अवलंबीने वस्तुनाभाव धर्मना ग्राहक छे ते माटे भावनिक्षेपे ए नयमुख्य छे, अने आद्यना चार नयमांना मादिक त्रण निक्षेपा मुख्य छे एम ए शब्दनयनु स्वरूप कह्यु ५ हवे समभिरूढनयनी व्याख्या कहिये छिये, पूर्वे जे शब्दनय कह्या तेने मते इंद्र शक्रपुरदर इत्यादि सर्वेनाम भेद छे एकपर्यायवतने देखि इंद्र सर्व नाम कहे.

उक्तच विशेषावश्यके

एकस्मिन्नपि इन्द्रादिके वस्तुनि ।

इंदनसकनपुरणदाय अर्थावटतेतद्वशेसनसक्रादि ॥

बहुपर्यायमपि तद्वस्तु शब्दनयोमन्यते ॥
साभिरूढस्तु वस्तुन मन्यते इत्यनयोभेद ॥

एक पर्याय प्रगट पणे शेष पर्यायने अण प्रगटवे तेटलां सर्वनाम बोलावे पण समभिरूढ ते न बोलावे एटलो शब्द नय तथा समभिरूढ नयनो भेद छे तें माटे हवे समभिरूढ नय कहे छे जे संज्ञाघट कुंभादिका मध्ये जे संज्ञानो वाच्य अर्थदींसेतेज संज्ञा कहे संज्ञांतर अर्थने विषे प्रमुख छे ते समभिरूढ नय कहिये जो एक संज्ञा मध्ये जे सर्व मन्नमानिये तो सर्व संकर थाय त्यारे पर्यायनु भेदपणु रहे नहि अने जे संज्ञा अंतर होवे तेतो भेदपणुजहोय ते माटे संज्ञा अंतरनु भेदपणुज रह्यु छे ते माटे लिंगादिभेदने सापक्षपण वस्तुने भेद पणेजमानवा ए समभिरूढनय वखाण्यो ए नयपण भेदज्ञाननी मुख्यता छ एटल समभिरूढ नयकह्यो ६ हवे एवंभूतनय कहिये छिये जेम घट ए शब्द चेष्टावाचि इत्यादिक रूपे शब्दनो अर्थ कह्यो छे ए रीतेज प्रवर्त ते घटादिक अर्थ तें ए महिजवर्ते विद्यमानपणे जे शब्दना अर्थने लाधिनेवर्ते तेशब्दनो वाच्यनथी अने शब्दार्थपणु जेमां न पांमिये ते वस्तु ते रूप नहि शब्दार्थमांहेथी एक पर्यायपण ओछो होय तो एवंभूतनय तेन कहे ए माटे शब्द नयथी तथा समभिरूढ नयथी एव भूत विशेषांतर छे ए एव भूतनय स्त्रिने माथे चडयो पाणी आणवानी क्रियानानिमितमागे आवता पणेनी चेष्टा करतो घटमाने पण घरने खुणे रह्यो तेने घटनमाने केमके चेष्टाने अणकरवा माटे जे क्रियावंतयको होय तेने वस्तु कहे विजाने न कहे ते अर्थ कह्यो जे लक्षण कह्यां ते रूपे विशेषथी ए जे चेष्टा घट शब्द वाचे प्रसिद्ध छे योषितस्त्रिने माथे पाणी लावतो ते घट तथा स्थानके रह्यो अथवा अण क्रिया करतां ने ते एवंभूतनय घट न कहे

ए शब्दे अर्थ तथा अर्थे शब्दने वांपे छे अहिया तो रहस्य एज छे जे स्त्रिने माथे चडयो चेष्टावत अर्थ ते घट शब्दे बोलावे ते थकी अन्यथा तेने न बोलावे जेम सामान्य केवलीने समभिरूढनये अरिहत कहे. जेज्ञानादिकगुण सामान्य छे पण एवभूतनये समोव सरणादि आतिशय सपदा सहित केवलि इद्रादिक पूजता युक्तनेज अरिहत कहे वाच्यवाचक नी पूर्णताने कहे ए स्वरूपेएवभूतनय जाणवो ए सातेनयना विशेषावश्यकने अनुसारे भेद कह्या ते भेद पुर छे तेनो विवरो, निगमना १० सग्रहना १२ व्यवहारना १४ ऋजुसूत्रना ६ शब्दनयना ७ समभिरुढनयना २ एवभूत नयना १ भेद एव सर्व मलीने ५२ भेद कह्या वली नयचक्र मध्ये सातसें भेद पण कह्या छे ते पण जाणवा तथा अठ्ठावीस भेद पण केटलेक ठकाणे कहेला छे तथा स्याद्वादरत्नाकरमां नयनु स्वरूप कह्यु छे ते रीते अहिंया कहिने देखाडिये छिये नय ते कहेतां श्रुत ज्ञान रूप प्रमाणे पमाडे जेणे विषय कीधो जे पदार्थनो अश तेथी इतर कहेतां बीजो अश तेथी उदासिनपणे तेनेजपडीवजवावालाना अभिप्राय विशेष ते नय कहिये एटले वस्तुना अशने ग्रहे अने बाकी पदार्थथी उदासिनपणु ते नय कहिये अने एक अशने मुख्यपणे करी बीजा अशने उथापे तेने नयाभास कहिये ते नयना बे भेद छे एक द्रव्यार्थिक बीजो पर्यायार्थिक त्या द्रव्यार्थिकना चार भेद नैगम १ सग्रह २ व्यवहार ३ ऋजुसूत्र ४ एचार भेद छे कोइक ऋजुसूत्र नयने भावनय करी ग्रहे छे ते नये द्रव्यार्थिकना त्रण भेद थाय.

हवे निगमनयनु स्वरप केहेछे धर्मनो प्रधान तथा गुणपणे अथवा धर्मने प्रधान अथवा गोणपणे ते धर्मथी ए बेना प्रधान तथा गौणपणे जे गवेरयो एटले धर्मनी प्रधानता ते वारे पर्यायनी प्रधानता थाय तथा धर्मनु प्रधानपणु तेवारे द्रव्यनु अप्रधानपणु तथा गुण

हवे व्यवहार नयनु स्वरूप कहिये छिये जे संग्रहनये ग्रहा सत्वादिक धर्म पदार्थ तेने जे गुण भेदे वहेंचे भिन्न भिन्न गणेचे तथा जे पदार्थ तेनी जे गुण प्रवृत्ति तेन मनुष्यपणे गणेचे ए व्यवहारनय कहिये जेम द्रव्य छ जीव १ पुद्गल २ धर्मास्ति ३ अधर्मास्ति ४ आकाशास्ति ५ काल ६ तथा पर्याय बे प्रकारना क्रमभावी १ स्वभावी २ तथा द्रव्य बे प्रकारना एकरूपी बिजो अरूपी ते अरूपीना बे भेद एक चेतन बिजा अचेतन ते चेतनना बे भेद एक सिद्ध बिजा संसारी ते संसारीना बे भेद एक अयोगी बिजा सयोगी ते सयोगीना बे भेद एक सयोगी केवली तेरमा गुण ठाणाना बिजा सजोगी संसारी ते सयोगी संसारीना बे भेद एक क्षीणमोहि बारमा गुण ठाणाना बिजा उपशांतमोहि ते उपशांत मोहिना बे भेद एक अकषायी बिजा सकषायी अकषायी उपसंत मोहि अगियारमा गुण ठाणाना बिजा सकषायी ते सकषायीना बे भेद एक सूक्ष्मकषायी ते दशमा गुण ठाणाना बिजा बादरकषायी ते बादरकषायीना बे भेद अवेदीने सवेदी अवेदी ते नवमा गुण ठाणाना बिजा सवेदी ते सवेदीना बे भेद एक श्रेणिप्रतिपन ते आठमा गुणठाणाना बिजा श्रेणिरहित ते श्रेणिरहितना बे भेद अप्रमादी ते सातमा गुण ठाणाना बीजा प्रमादी ते प्रमादीना बे भेद सर्व विर्ति ते छठा गुण ठाणाना बिजा देशविर्ति ते देशविर्तिना बे भेद एक देशविर्ति ते श्रावक ते पांचमा गुण ठाणाना बिजा अविरति ते अविर्तिना बे भेद एक समकिति ते चोथा गुण ठाणाना बिजा मिथ्यात्वी ते मिथ्यात्वीना बे भेद एक भव्य बिजा अभव्य ते भव्यना बे भेद एक ग्रथीभेदी बिजा ग्रथी अभेदी इत्यादिकगती प्रमुख चेतनना अनेक भेद थाय, तथा अचेतन अरूपीना चार भेद धर्मास्ति १ अधर्मास्ति २ आकाशास्ति ३ काल ४ तेना पण स्वधादिक

भेदे अनेक भेद थाय, तथारूपी द्रव्य कहेतां पुद्गल तेना बे भेद खंध तथा परमाणु तेना पण खधादिक भेद करतां अनेक भेद थाय इत्यादिक कार्य भेदें तेने भेद माने तेने व्यवहारनय जाणवो हवे कर्मभावी पर्यायना भेद एक क्रियारूप बीजो अक्रियारूप एम वहें चण सामर्थादिक गुण भेद पडे ते सर्व व्यवहारनय जाणवो जे परमार्थ विना द्रव्य पर्यायना विभाग करे ते व्यवहारभास जाणवो जे कल्पनाये करीने भेद वहेंचे ते दुर्नय जाणवो ए चार्वाकमतने व्यवहारनय दुर्नय छे शा माटे जे चार्वाकमतवालानु कहेवु एवु छे के जीवतो लोकमा प्रत्यक्ष द्रष्टिगोचर आवतो नथी, ते माटे जीव जगतमां छे नहि, जे आ जगत्मा सर्वरूप मनुष्यादि छे ते सर्व पचभूतनु पुतलु छे पण काइ जीव छे नहि एवी खोटी कल्पना करीने लोकोने कुमार्गे पाडे छे, पुण्य पाप परलोक सर्व उथापे छे माटे ते मतवालाने व्यवहारनय दुर्नय कहीये, एटले व्यवहारनयनु स्वरूप कह्यु.

हवे ऋजुसूत्रादिक चार नयनु स्वरूप कहिये छिये प्रथम ऋजुसूत्र कहेता सरल अतित अनागतने अणगवेखता वर्तमान समये वर्तता जे पर्याय मात्र प्रधानपणे श्रुत कहेता गवखे ते रुजु सुत्रनय कहीये जे ज्ञानने उपयोगे वर्तताने ज्ञानी कहे दर्शननो उपयोग वर्तताने दर्शनी कहीये कपायनो उपयोग वर्तता जीवने कपायी कहीये समताने उपयोगे वर्तताने समायक कहीये अहींया कोइ पूछशे जे एम करता ऋजुसूत्र तथा शब्दनय ए बन्ने नयो एक थइ जाय छे तेनो उत्तर कहे छे जे विशेपावश्यक ग्रथमा कह्यु छे के कारण ऋजुसूत्र एटले ज्ञानना कारणपणे वर्तता रुजुसुत्र ग्रहे छे अने ज्यारे थाय त्यारे शब्दनय कहीये ए फेर छे वर्तमान काळ ते रुजुसुत्र भास कहीये अने छना भाव

भाव कहे अथवा विपरीत कहे अथवा जीवने अजीव कहे अजीवने जीव कहे इत्यागत कहेता बोध दर्शननो ए मत छे शा माटे जे छतो सदा वर्ततो जीव पदार्थ तेने पर्याय पल्टणनी हारे, द्रव्यनु पलटण करावे छे शा माटे के समे समे पर्यायनो विनाश थाय छे ते थानके ते दर्शन वाळा द्रव्यनो विनाश माने छे माटे ए दर्शन वाळानेन याभाश जाणवा ए रुजुसुन कह्यो हवे शब्दनय कहीये छीये एक पर्यायने प्रगट दीसवे अन्य जे ते शब्द वाचक पर्यायने तिरोभावे अणप्रगटवे पणे ते पर्यायने ग्रहे ते शब्दनय कहीये अथवा कालादि भेदे त्रण काल वचन त्रण लींगने भेदे शब्दने भेद ते पडे ते भेद अर्थने कहे ते शब्दनय कहीये जलाहरणादि सामर्थने घट अने कहेता कुंभादिक वचन पर्याय जेटला छे तेटलानो अर्थ वर्ततो न दीसे पण ते नाम कही बालावे ते कार्य सामर्थवतने ग्रहे ते शब्द नय कहीये पण माटीना पिंडने घट न कहे मग्रह निगमवाळो कहे ते नयवाला सत्ता जोगता अशना ग्राहक छे तथा तत्वार्थ टिका मध्ये शब्द वसथी अर्थ पडी वजवतो शब्दे बोलावतो होय जे अर्थ वस्तुमा रमपणे प्रगट दीसे तने ते वस्तु माने ए नयशब्द अनुयायी अर्थ पण मति जे वस्तुने वस्तु कहे छे काल लिंगादि भेद अर्थनो भेद छे ते भेदने ते धर्म वस्तु माने ते शब्दनय कहीये अने ते अर्थ विना ते वस्तु मध्ये ते पणो वर्ततो दीसतो नथी ते वस्तुपणे सामर्थ्य करे ते शब्दभास कहीये ए शब्दनय कह्यो ५

हवे समभिरूढनय कहीये छीये एक पदार्थने अवलंबीने जेट ला सरखा नाम ते पर्यायनाम जेटला होय तेटला निरुक्ति व्युत्पति भिन्न होय ते अर्थने स कहेता सम्यक् प्रकारे आरोहतो एटले एटलो सर्वे अर्थ सयुक्त जे ते समभिरूढ कहीए जेम इद्रादि धातु परमेश्वरने अर्थे छे ते परमेश्वर्यवनने इद्र कहीए तथा शकन कहेता

नव नवी शक्ति संयुक्तने शक्र कहीए पुरके दइतने दलेके विडारे ते पुर-
दर शचि तेना पति कहेतां स्वामि ते शचिपति कहीए एटला सर्व
धर्म ते इंद्र जे देवलोकनो धणी छे तेने ए नामे बोलाय छे बीजा
नामादिक इद्रने ए नाम न कहे

एटले जेटला पर्यायना नाम छे तेना जे अर्थ थाय ते सर्वने
भिन्न भिन्न अर्थ कहे, पण कार्य अर्थे न जाणे ते समभिरूढाभास
कहिए एटले समभिरूढनय कह्यो

हवे एवभूतनय कहिये जिये शब्दनी प्रवृत्तिनी निमित्तभूत
जे क्रिया ते विशिष्ट सयुक्त जे अर्थ तेनो वाच्य जे धर्म तेने पोचतो
जे एटले ते कारण कार्यधर्म सहित ते एवभूतनय कहिये तथा अ
श्वर्य सहित ते इद्र शक्ररुप सिंहासने बेसे ते शक्रशचिनी सगे बेठो
ते शचिपति एटले जे शब्दना जेटला पर्यायने सर्व तेमा पहोचता
भाव ते नाम कहिने बोलावे जे पर्याय पहोचता भावने ते नाम
कहिने बोलावे जे पर्याय पहोचतो न दीसे ते पर्यायनी ना कहे एक
पर्याय उणा सुधी समभिरूढनय कहिये, सकळ वचन पर्यायने पहो
चे ते वारे एवभूतनय कहिये जे पदार्थ नाम भेदनो भेद देखी
पदार्थनी भिन्नता कहे ते नयाभास कहिये नाम भेदने वस्तुना
भिन्न हाथी, घोडा, हरणी जेम भिन्न छे एम भिन्नपणु माने ते
एवभूतनयनो दुर्नय कहिये घटथी जेम पट भिन्न अर्थ भिन्न माटे
तेम इद्रपणाथी पुरदरपणु भिन्न माने ते दुर्नय जाणवो एटले
घटथी जेम पट भिन्न अर्थ भिन्न माटी छे पण कइ इद्रपणाथी पुर-
दरपणु भिन्न छे नहीं. तेने भिन्न माने ते दुर्नय जाणवो एटले एव-
भूतनय कह्यो ७ एटले सात नयनी व्याख्या कही. अदधारणा
कहेतां [illegible] विशुद्ध छे शा माटे जे पदार्थ जे द्रव्य सामान्य
कहेवानो [illegible] छे. वया एक अर्थ नय एवु नाम छे.

शब्द द्रव्य लेवो तथा शब्दादिक त्रण नय छे ते शुद्धनय छे जे कारणे शब्दना अर्थनी एने मुख्यता छे पुरला चार नय भेदपणे वहेचवाने वांछे ते शब्दादि भेद जे लिंगादिके अभेद वहेंचणे अभेद कहे अने भिन्न वचने भिन्नार्थ कहि माने समभिरुनय भिन्न शब्द ते वस्तु पर्याय माने पण शब्द ना पर्याय माने एव भूतनय भिन्न गोचर पर्याय भिन्न भिन्न माने घटने चेष्टा करतो घट कहे पण खुणे पडयो घट न कहे चित्रामण कर्ता उपयोगवतने चित्रकार कहे तथा सुता जमताने चित्रकार न कहे ते उपयोग रहित छे ते माटे ए नय तो शब्दने तथा अर्थने अभेदपणु माने छे ते अर्थ शुन्य शब्दने प्रमाण नथी शब्दने प्रधान अर्थ द्रव्यने गोपणे वर्तता शब्दादिक कह्या छे ए सात नयने विषे निगम ते सामान्य छे विशेष ने नय माने छे ने सग्रहनय ते सामान्य ते सामान्यने मानि छे व्यवहारनय ते विशेषने माने अने द्रव्यार्थावलम्बी छे ने ऋजुसूत्र विशेष ग्राहक छे ए चार नय पुरला द्रव्यार्थक नयमां छे ने शब्दादिक त्रण नय पर्यायार्थक नयमा छे विशेषालम्बी भाव छे तथा शब्दादिक नय ने त्रण निक्षेपाने अवस्तु माने छे

अत्र निक्षेपानो विचार सक्षेपथी लखीये छीये श्री विशेषावश्यक भाष्यमा लख्यु छे ते कहिये छिये त्तारोवथ्थूपज्जाया ए वचन छे ते माटे स्वपर्याय कहिये शा माट जे वस्तुना सहेजना जे चार निक्षेपा छे ते वस्तुमाज छे ते वस्तुना स्वपर्याय छे तथा श्री अनुयोग द्वार सूत्र मध्ये कह्यु छे

जे ज्यां जे वस्तुना निक्षेपा जेटला जाणीए आपणी बुद्धि शक्ति ज्या सुधी पहोचे त्यां सुधी तेटलाज निक्षेपा करीए कदाचित वधता निक्षेपा भासमां ना आवे अथवा आपणी बुद्धि शक्ति एटली न फेलाय, तोपण चार निक्षेपा अवश्य करवा,

हवे चार निक्षेपाना नाम कहिए छिए नाम निक्षेपो १ स्थापना निक्षेपो २ द्रव्य निक्षेपो ३ भाव निक्षेपो, ४ त्यां नाम निक्षेपाना बे भेद छे एक सहेज नाम, एक संकेतिक नाम सहेज नाम ते चेतन जीव आत्मा इत्यादिक ए नाम कोइना करेलां छे नहीं ए नाम ज्यां जशे त्यां भेगु ने भेगुज छे. ए नामनो नाश कदापि थवानो नथी माटे ए सत् नाम छे बीजु संकेतिक नाम ते देवदत्त प्रमुख एटले लोकनी बांधेली संज्ञा जे एनु नाम देवदत्त अथवा एनु नाम धर्मचंद इत्यादिक ए लोक संज्ञाए नाम पडेला छे. ते असत्य कल्पना छे शामाटे के ते नाम प्रमाणे गुण होय अथवा न होय वळी ते नामकांइ आगळ चाले नहीं तेम आ भवमा पण एनु ए नाम रहे एवो निश्चय नहि ए बीजा भेदे नाम निक्षेपो कह्यो

हवे स्थापना निक्षेपो कहिए छीए. तेना बे भेद छे एक सहज स्थापना १ बीजी आरोपित स्थापना हवे सहज स्थापनाना बे भेद, एक सहज स्वभाविक स्थापना एक सहज विभाविक थापना हवे सहज स्वभाविक थापना ते आत्माना असंख्यात प्रदेशरूप अवगाहना थापना पुद्गलनो परमाणु रूप इत्यादिक स्वरुप अवगाहना ए सहित ते सहज स्वभाविक थापना कहिये ते भागो अनादि अनंत छे हवे बीजो भांगो जे सहज विभाविक थापना कहेता आप आपणा शरीरनी अवगाहना ते विभाविक थापना छे अहियां कोइ प्रश्नकरे शरीर विभाविक तेने तमे सहज पद केम मेळवो छो. तेनो उत्तर जे ए सहज जे जीवनो स्वभाव संसारीपणे वर्ते त्यां सुधी शरीरनो बांधनारो ते छे अश ग्राहीने अमे सहज पद जोडयो छे ए निगम न. [illegible] पण ऋजुसुत्र नये तो ए विभाविक थापना

आहियां सहेज पद लागु थाय नहि पण ए शरीर थापना सादिसत भांगे छे ते शरीर छे ते विभाविक छे ते मांहे चेतन रह्यो ते सहज स्वभाविक छे माटे एने सहज विभाविक भांगो कहिये तेनु काइ दोषण छे नही

हवे जे आरोपित थापना ते चेतन रहित शरीरथकी भिन्न हरकोइ वस्तुने विषे हरकोइ नामनी थापना करवी ते थापना कृत्रिम कहेवाय ए आरोपण थकी थाय छे ते असत् कल्पना छे पण बाळजीवने समजाववा रूप छे तेश्री अनुयोगद्वारमा दशमकारनी थापना कही छे काष्ट कर्म चित्तकर्म इत्यादिक छे ते मध्ये पाच आकार सहित ने पाच आकार रहित छे आकार सहित ते काष्टनो घोडो हाथी प्रमुख अनेक छे ते आकार सहित थापना कहिए अथवा जेम अन्य लोक देव देवीने काष्टना कठो मुके छे ते आकार रहित थापना छे एमोरठ दश प्रसिद्ध छे अथवा जेम सारगराम जेने मीं. माधु कशु नथी–गोळ ल्यावो त्रिखुणो जेवो मळे तेवा थपे छे तेनु नाम आरोपना थापना कहिये ए त्रिजो थापना निक्षेपो कह्यो

हवे द्रव्य निक्षेपो कहिए छीए ते द्रव्य निक्षेपाना बे भेद, आगम द्रव्य निक्षेपो नोआगम द्रव्य निक्षेपो आगम द्रव्य निक्षेपो कहेता जे पुरुषने स्वस्वरूपनु परस्वरूपनु जाणपणु छे पण हमणा तेनो उपयोग नथी हवे नोआगम कहेता जे ते वस्तुमा ते सर्वे गुण छे पणहवडा ते वर्तता नथी तेना त्रण भेद जे पूर्वे शरीर हतु पण हमणा मरण पाम्यु जेम श्री रीखव देव स्वामीनु शरीर जेम जंबुद्वीप पन्नतिमा रूप लक्षण गुण वखाण्या तेम आपणे कहीए छीए वळी भव्य शरीर कहेता हमणा ते गुण मय नथी पण गुण मये थाय जेम पद्मनाम तिर्थंकरनु शरीर वखाणिये तद्वत् तथा

द्रव्यातिरिक्त कहता जेगे गुणे यत छे पण हमणा ते उपयोग वस्तुता नथी जेम रमणी कहेता स्त्री महाचतुर विलक्षण पोताना स्वामी जोडे क्रिडा करवानी वखते रमणी कहेवाय तेवे समे कोइ अपर चिंता उत्पन्न थइ ते वारे रमणी पणानो उपयोग गयो ते वारे ते द्रव्यमणि कहेवाय तद्वत् 'अण उवियोगो दवो' ए अनुयोग द्वारसूत्रनु वचन छे माटे उपयोग रहित तेने द्रव्य निक्षेपो कहिये. ए द्रव्य निक्षेपो कह्यो ३

हवे भाव निक्षेपो कहिए छीए ते भाव निक्षेपाना बे भेद छे एक आगमिक बीजो नोआगमिक हवे आगमिक कहेता जे आगम शास्त्रनो जाण वली तेनाज उपयोगमा प्रवर्ते छे ? हवे नोआगमिक भाव निक्षेपो कहेता जे रूपे आत्मा तद्रूपतज आत्माने उपयोगे प्रवर्ते छे. अथवा ज्ञानी ते ज्ञाननेज उपयोग प्रवर्ते छे दर्शनी ते दर्शनने उपयोगे प्रवर्ते छे एम जे जे गुण ते ते गुण उपयोग सहित प्रवर्ते तद्रूप होय तेने भाव निक्षेपो कहिए एटले अनुयोग द्वारमा कह्यु छे उवओगोभावो, एटले उपयोग तेज भाव छे ए भाव निक्षेपो कह्यो ए जे चार निक्षेपा कह्या ते मध्ये त्रण निक्षेपा पुरना जे छे ते कारण रूप छे, अने भाव निक्षेपो तो कार्य रूप छे एटले कार्य कारण विना निष्फळ छे जेम चक्र दड दोरो कुभकार माटीना पिंड विना घट थाय नही माटे ए कार्य विना निष्फळ जो माटीनो पड होय तो ए कारण खप लागे तेम भाव निक्षेपा विना पुरना त्रणे निक्षेपा निष्फळ छे अने भाव निक्षेपा निपजता प्रथमना त्रणे निक्षेपा प्रमाण छे नहीतर अप्रमाण छे पुरना त्रणे निक्षेपा द्रव्य नयमा छे. एक भाव निक्षेपो ते भाव नयमा छे माटे भवा नय अणनिपजता द्रव्यादि प्रवृत्ति निष्फल छे ते श्री आचारागजीनी टीका मध्ये ... ते लोकविजय नाम अध्ययननी

मध्ये छे ते लखीए छीए

फलमेव गुणफलगुणफल च क्रियाया भवति सम्यग् दर्शन ज्ञान चारित्र क्रियायास्तत्रानिकनाबाधसुख्या रुप सिद्धि गुणो वाप्यते एतदुक्त भवति सम्यक् दर्शनादिके वेक्रिया विद्धि फलगुण न फलवन्यपरानु ससारीक सुख फलाभ्यास एव फलान्यारोपानि फलेत्यर्थ

एटले ज्ञान दर्शन चारित्रनी प्रणमन विना जे क्रिया करवी ते सर्वे फोक छे अथवा जे थकी ससारी सुख प्राप्त थाय एटले देवता इंद्र चक्रवर्ती वासुदेव राजा शेठ शाहुकार पुत्र कलत्रादिक सुख निपजे एवी जे क्रिया त सर्वे निष्फल छे एवी रीते ए पाठ छे एटले भाव निक्षेपाना कारण विना त्रणे निक्षेपा निष्फळ छे एटले सक्षेप मात्र निक्षेपानो विचार कह्यो माटे आद्यिया शब्द नयते त्रणे निक्षेपाने अवस्तुजमाने छे एक भाव निक्षेपानेज वस्तु माने छे तिनहं सदनयाण अवथु ए अनुयोगद्वारनु वचन छे तथा एक एक नयना सो सो भेद थाय छे एम सातनय मलीने सातसे नयना भेद थाय छे ए अनुयोगद्वार थकी अधिकार कह्यो

हवे पूर्व कहेता पुठलानयनो विषय घणो जाणवो अने तेथी उपल्योनयने परिमित विषय छे एटले थोडो विषय छे सत्ता मात्रनो ग्राहक सग्रहनय छे एटले छतो सत्ताने सग्रहाय ग्रहे अने निगमते छताभाव अथवा सकल्पपणु अथवा अछताभाव सर्व ग्रहे अथवा सामान्य विशेष बने ग्रहे एटले ए नयतु कोइ प्रमाण छे नही अने व्यवहार नयशक्ति विशेषनेज ग्रहे ते माटे सग्रह नयथी व्यवहारनयना विषय थोडो छे तथा ऋजु सूत्र नय वर्तमान विशेष धर्मनो ग्राहक छे अने व्यवहार तरकालीक विषयनो ग्राहक छे ते माटे व्यवहार बहु विषय छे अने व्यवहारथी ऋजु सूत्र अल्प वि

पय छे ने ऋजु सूत्रनय वर्तमान काली शब्दनय कालादि वचन लिंगथी वहेंचता अर्थने ग्रहे अने ऋजुसूत्र वचन लिंगने भिन्न पाडतो नथी ते माटे ऋजुसूत्र नयथी शब्दनय अल्प विपय छे अने शब्द नयथी सर्व पर्यायने एक ग्रहे अने समभिरुढते जे धर्मवक्त ते वाचक पर्यायने ग्रहे. ते माटे शब्दनयथी समभिरूढनयनो अल्प विपय छे तथा समभिरुढ ते पर्यायने यथोयेकाल गवेखे छे अने एवंभूतनय प्रतिसमये क्रियाभेदे भिन्नार्थपणे मानतो अल्प विपय छे ते माटे एवंभूत अल्प विपयी जाणवो ए नयवचन छे ते पोताना नयने स्वरूपे आस्तिपणु छे एम सर्व नयनी विधि प्रतिषधे करीने सप्तभंगी उपजे पण नयनी सप्त भंगी न उपजाववी ए पूर्वाचार्यजीओए निपधी छे

तथा रत्नाकरावतारिकाया विकलादेशस्वभावादि नय सप्त भंगीवस्त्वशमात्रप्ररूपकत्वात् सकलादेशस्वभावानुप्रमाणसप्त भंगी सपूर्ण वस्तु स्वरूप प्ररूपकत्वात् ए वचन छे

एटले यथायोग्यपणे नयाधिकार कह्यो हवे पूर्वे उत्तर सामान्य सग्रहना छ भेद कह्या नहोता ते कहिए छीए एटले ए मूल सामान्यना छ भेद ते सर्व द्रव्यमा व्यापकपणे रह्या छे तेना नाम आस्तित्व. १ वस्तुत्व २ द्रव्यत्व ३ प्रमेयत्व ४ सत्व ५ अगुरु लघुत्व ६ एव छ मूळ स्वभाव सर्व द्रव्य मध्ये प्रणामिकपणे प्रणवे छे ए धर्मने कोइनी सहाय नथी ते कहेना सर्व द्रव्यने विपे उत्तर सामान्य स्वभावानि नित्यत्व अनित्वादिक तथा विशेष स्वभाव प्रणामिकत्वादिक तेनो आधार भूतधर्म ते धर्मने सामान्य स्वभाव कहिए अस्तित्वरूप कहे छे. तीर्थकर देवे तथा गणधरे जे गुण पर्याय आधारवत ते वस्तु पणे कहिए.

तेनीज क्रिया यथा धर्मास्तिकायनी चलण

क्रिया, अधर्मास्तिकायनी सहाय क्रिया, आकाश द्रव्यनी अवगाहना क्रिया जीवनी उपयोग लक्षण क्रिया. पुद्गलनी मल्वा विखरवा नी क्रिया ए क्रियानु आकारीपणु अर्थ क्रिया जे पर्यायनी प्रवृत्ति ते अर्थ क्रियानो अधिकारी धर्म ते द्रव्यपणु वस्तु छे तथा वली लक्षणांतर कहे छे उत्पाद पर्यायनो जनक प्रसव शक्ति आविर्भाव लक्षण जे शक्ति तेना व्ययभूत पर्यायनो तिरोभाव थयो अथवा अ भाव थयो रुप जे शक्तिनो आधार भूत धर्म ते द्रव्य कहिए स्वते पोते आत्मपर जे पुद्गलादिक धर्मास्तिकायादिक अन्य तेनेज यथार्थपणे जाणे तेने ज्ञानी कहिए अने ते ज्ञानना पाच भेद छे ते ज्ञान उपयागमा आवे एवी जे शक्ति तेने प्रमेय पणु कहिए ते प्रमेय ए पणु सव द्रव्यनो मूळ धर्म छे ते प्रमाणे मेय जे वस्तु ते प्रमेयपणु कहीए ते सर्व द्रव्य पर्याय प्रमेय छीए अने आ त्मानो ज्ञानगुण तेमा प्रमाणपणु प्रमेय पणु ए बे धर्म छे पातानु प्रमाणपणु पोतेज करे छे दर्शन गुणनो प्रमाण ज्ञानगुण करे छे ए कारणे दर्शन गुण ते अविशेष छे साव्येव छे जे साव्येव होय ते अविशेषज होय जे विशेष ते ज्ञान जाणीए दर्शन गुण ते सामान्य द्रव्यनो ग्राहक छे पण प्रमाणना सव्येव कह्या त्या ज्ञानज ग्रहे छे तेनु कारण जे दर्शन उपयोग वक्त पडतो नथी तेने प्रमाणमां गवे ष्यो नथी

हवे प्रमाणनाभेद लखीए छीए मूळ प्रमाणना बे भेद प्रत्यक्ष १ परो २

स्पष्ट परोक्ष प्रत्यक्ष प्रत्यरत् इतिस्याद्वाद रत्नाकर वाक्यात् एटले उत्पाद कहेतां उपजवु व्यय कहेता विणसवु ध्रु कहेतां नित्यपणु वस्तुमां एक समे त्रणे गुण सहाय साथे प्रणमे छे एवु जे प्रणमन ते सत्यपणु कहीए सत्यपणाना भाव ते सत्यपणु कहीए

हवे षट्गुण हाणी वृद्धि कहिए छीए अनंत भाग हानि १ असंख्यात भाग हानि २ सख्यात भाग हानि ३ संख्यात गुणी हाणी ४ असंख्यात गुणी हाणी ५ अनंत गुणी हाणी ६ ए छ प्रकारनी हाणी

हवे छे प्रकारनी वृद्धि कहीए छिये अनंत भाग वृद्धि असंख्यात भाग वृद्धि २ संख्यात भाग वृद्धि ३ संख्यात गुणी वृद्धि ४ असंख्यात गुणी वृद्धि ५ अनंत गुणी वृद्धि ६ एटले ए हाणी वृद्धि सर्व द्रव्यने सर्व प्रदेशे छे एनु नाम अगुरु लघु स्वभाव कहेवाय ए अगुरु लघु पर्याय प्रणमे ते एक प्रदेशे वा अनेक प्रदेशे कोइ समे अनंत भाग हाणीपणे प्रणमे छे कोइ समे अनंत भाग वृद्धिपणे प्रणमे छे एम बारे प्रकारे प्रणमे छे ते अगुरु लघु पर्यायनी प्रणमन शक्ति ते अगुरु लघुत्व कहीए एटले अगुरु लघुनो भाव जाणवो तत्त्वार्थनी टिकाने विषे पांचमे अध्याये अलोकाकाशनो अधिकार छे त्यां कह्यु छे ए स्वभाव सर्व द्रव्यने विषे प्रणमे छे ए छ द्रव्यनो मूळ स्वभाव छे छ द्रव्य ना प्रदेशनु भिन्नपणु अगुरु लघुने भेदपणे थाय छे ते माटे ए मूळ सामान्य स्वभाव छे ए द्रव्यादिक धर्म छे एनो पणमन ते पर्यास्तिक धर्म छे तथा सामान्य स्वभाव वस्तुमा अनंता रह्या छे तथा अनेकांतजयपताका ग्रंथने विषे सामान्य स्वभाव तेर कह्या छे तथा शास्त्रने विषे विशेषस्वभाव पण अनेक प्रकारना कह्या छे अनेक ग्रंथने विषे कह्या छे तथा वार्तिक समुच्चय ग्रंथ श्री हरिभद्र सूरिकृतमा प्रमाण स्वभाव कह्या छे

जीवने जाणवापणानी शक्ति आवर्णी ते ज्ञान लक्षण जीवनु कहीए ए वचन उत्तरा ध्ययनजीमा छे तथा आवश्यक निर्युक्तिने विषे जीवने ग्राहक शक्ति कही छे एटले कर्त्ता भोक्तापणु पण जीवमा छे उक्तंच॰

मो भाग उपलो रह्यो ते चोवीस भाग मध्ये सिद्ध परमात्मा छे ते अलोकने अडीने रह्या छे शामाटे के चोवीशमा भागे त्रणशे ने तेत्रीश धनुपने बत्रीश आगलनो छे अने पाचसे धनुपनी कायावाळा उभा उभा मोक्ष जाय ते त्रीजा भागनी अवगाहना पेलारना भाग नी घटे त्यारे बे भागनी अवगाहना घन रूप रहे ते अवगाहनाए सिद्धि वरे त्यारे ते बे भागनी अवगाहनाना त्रणसें ने तेत्रीश धनु पने बत्रीश आगल रह ते अवगाहना वालो तेवीश भाग उपरना आकाश प्रदेशने चरण अवगाहना फरसे ने मस्तकनी अवगाहना उपर अलोकने फरसे एटले ए चोवीशमो भाग सर्वे सिद्धि क्षेत्र छे

हव त्या सिद्धि वरे तेना शरिरनु मान कहीए छीए उत्कृष्टो पाचसे धनुपनी कायानो मान वालो सिद्धे जघन्य बे हाथनी काया ना मान वालो सिद्धे मध्यस्थ अवगाहनाना बे हाथथी माडीने पाचसे धनुपथी उणो एक प्रदेश होय त्या सुधी मध्यस्थ अवगाहना कहीए ते अवगाहना वाला सिद्धे तेने मध्यस्थ अवगाहना कहीए

हव ए सिद्ध क्षेत्रमा केवी रीते अवगाहनाओ रहि छे ते कहिए छिए जे अहिआ उभा थका मोक्ष गयो तेनी अवगाहना सिद्धमा पण उभी छे बेठा गयो तेनी बेठी छे सुता गयो तेनी सुती छे कोइ चतो सुतो, तथा कोइ उधो सुता तथा कोइ पासाभेर सुतो तेनी तेवीज अवगाहना छे अथवा कोइ विकटादिक आसने होय अथवा कोइ विपरीत आसने होय तेनी तेवीज अवगाहना त्या होय अ थवा कोइ खोडो पागलो का खोड वालो होय तो तेनी तेवीज अवगाहना होय ते सर्वे उपर अलोकने अडीने रहे उची-नीची- अवगाहना ते नीचला भागमा रहे पण उपरना भागमा न होय अहि कोइ प्रश्न करशे के ज्यारे अवगाहना तमे मानो छो त्यारे रूप पाद सर्वे भावीत थाय छे तेना उत्तर जे त्या कोइ पुद्गल छे नहि.

के रूप घाट थाय ए तो एक आत्माना प्रदेश निरावरणीय जे अ-
हिंना शरीरनी अवगाहना हती ते आत्माना प्रदेश ते प्रमाणे विस्ता-
रे हता पण आ शरीर म ये एक भागनी पोलार छे ते पोलारनो
भाग घटाडीने घन पणे करी तेने अवगाहना कहिए छिए पण अ-
हिं कांइ रूपपणु नथी. ए तो अरुपी अमूर्त्तिज छे ने जो कदापि रूप
कहिए तो मोटो विरोध आवे शामाटे के षट् द्रव्यमा एक रूपी पदा-
र्थ तो पुद्गल छे ने पुद्गलमा तो मलवा विखरवानो स्वभाव र-
ह्योछे. ते स्वभाव पण पाछो सिद्धने विषे लेवो पडे त्यारे मलीने
विखरवु सावीत थयु त्यारे सिद्धपणाथी पाछु ससारमा आववु
थाय त्यारे सिद्धपणु निष्फल थयु माटे मोटो विरोध आवे अ-
थवा ज्या रूप रहे त्या वर्णादिक पर्याय पण होय त्यारे ते पर्या-
यनी तो समये समये हानि थवी जोइए त्यारे तो सिद्धनी पण
समये समये क्षिणता थाय ए पण मोटो विरोध आवे. अहिंआ
कोइ प्रश्न करशे के. सिद्धातमा एवु कह्यु छे

दवठीयाए, सासीयाए पजवठीयाए असासीयाए

माटे पर्याय थकी क्षिण थाय ते पर्याय तो अशाश्वता छे तेमां
काइ दोषणा छे नही तेनो उत्तर–सिद्ध परमात्माने पर्याय थकी
अशाश्वता कहेवा ते अपेक्षा थकी छे पण काइ स्वभावथी नथी
अने जो कदापि स्वभावथी कहिए तो महा विरोध आवे शामाटे जे
सिद्धना ज्ञान दर्शनादि जे पर्याय तेनो शु काइ नाश थाय अथवा
शु कोइ ओछु वधतु थाय कदापि जो नाश कहिए तो आत्म
भावना नाश थाय ने जडभाव थइ जाय त्यारे तो नास्तिकपणु
आवे अथवा ओछु वधतु कहिए तो शु एमने कर्म पाछा वलग्या
केमके आवर्ण विना तो ज्ञानादिक गुण ओछा वधता थाय नहि क-

दापि अहिआ कोइ तर्क करशे के ज्ञानादिक तो गुण छे तेने तमो पर्यायमा केम कहोछो तेनो उत्तर—सिद्धांतमा तो एने पर्याय कह्या छे

ज्ञान पजवाए. दर्शन पजवाए.

इत्यादिक पाठ छे माटे ज्ञानदर्शनादिकने पर्याय कहिने बोलाव्या छे अने द्रव्य गुण पर्याय कहिये छिये ते भेद ज्ञाननी अपेक्षा लइने बाल जी वने समजवा वास्ते छे शामाटे के सिद्धांत तथा सुमति प्रमुख ग्रंथने विषे नयो बे कह्या छे द्रव्यार्थक तथा पर्यायार्थक पण कई गुणार्थक नय कह्यो नथी माटे पदार्थ बेज छे एक द्रव्यने बीजो पर्याय, त्रिजो पदार्थज नथी गुण पदार्थ जो त्रीजो होत तो गुणार्थक नय कहेता पण ए गुण ते तो द्रव्य पर्यायनो ओळखाण कराववा रूप जुदो कहिए छिए पण एनुज नाम पर्याय छे माटे अहियां ज्ञानादिक जे पर्याय तेनी हानी वृद्धि थाय नहि कदापि अहि कोइ कहेशे के षड्गुण हानि वृद्धि लाग छे तेनो उत्तर जे ए पर अपेक्षा चडे छे केमके जे जे ज्ञेय पदार्थ जाणवा देखवामा आवे छे ते ज्ञेय पदार्थनो नाश अथवा उत्पत्ति अथवा हानि वृद्धि थाय तेथी ज्ञानादिक गुणनी हानि वृद्धि नाश कहेवाय छे ते पर अपेक्षाए छे पण कांइ पातानु ज्ञान दर्शन ओछु वधतु थतु नथी जेटलु छे एटलु ने एटलुज रहे माटे जे पर्याय अशाश्वता कह्या ते पर अपेक्षाए जाणवा अने जे वर्णादिक पर्याय ते तो सडणपडण स्वभावना धणी छे तो ते पर्याय कांइ सिद्धमा नथी ते तो ससारीमा रह्या छे माटे अहियां रूपी पर्यु मानता महा विरोध आवे अथवा बीजे प्रकारे पण विरोध आवे छे ते कहु छु

हवे जे सिद्ध छे ते अनादि अनन भागे छे एटले एम सिद्धनी

आदिनथी के फलाणे दहाडे सिद्ध थया तेम अंत पण नथी के फलाणे दिवसे सिद्ध ससारमा आवशे माटे अनादि कहेता आगळ अनता अनत पुद्गल परावर्त्तन वहि गया ने अकेका पु द्गल परावर्त्तनमा अनता काळ चक्र वहि गया एम आगलना काळ नु कोइ रीतनु प्रमाण वधाय नहि ने एक काळ चक्रना बे भेद एक अवसर्पिणि अने उत्सर्पिणि ते अकेका भेदे अकेकी चोविशी गणाय ते एक चोविशीना दश कोडा कोड सागरोपम वर्ष जाय छे तेमा पाच भरत ने पाच अइरवर्ते एक कोडा कोड सागरोपममा मुक्ति वही छे पण पाच महा विदेहमा तो सदा काळ निरतर मुक्ति छे अने आ दश क्षेत्र थइने तो एक महा विदेहनी विजय जेटलु तो नथी अने त्या महा विदेहमा तो सदा मुक्ति चालती छे तो एवी रीते मोक्षे जाता आगळ अनता अनत काळ वहि गयो तेथी अनता अनत जीव मोक्षे गया ने मोक्ष क्षेत्र तो पीस्तालीशलाख योजनमा छे ते केम करीने माय ज्या रूप कहीए त्या तो पुद्गलादिक थयुज त्या तो संकडाश थाय ने ते जीव मुक्तिमा माय नहि माटे ए पण एक मोटो विरोध आवे ए अवगाहना कही ते अरूपी छे कहेवा मात्र छे शामाटे के एक अवगाहना जो शावीत होय त्या बीजी अवगाहना पेशी शके नहि अने अहिंआ ज्या सिद्ध परमात्मानी एक अवगाहना छे त्या अनता सिद्ध भगवाननी अवगाहना छे कोई आडी कोइ उभी कोइ बेठी कोइ सुती इत्यादिक रूपे रही छे ते आकाशवत् छे एक जाणपणारूप लक्षण ते चेतना गुण छे तेथी सिद्ध भगवान कहेवाय छे पण त्या कांइ रूपादिक पदार्थ एमने विषे नथी ए तो अरुपी पदार्थ छे

हवे सिद्धना जे गुण लक्षण छे ते कहीए छीए एटले सिद्ध परमात्मा अरागी छे राग कहेता जे प्रेमदशा तेथी रहीत तेना ने भेद

जाणवु छे ते जाणवानो स्वभाव जोता एकज छे पण पर अपेक्षा-
वडे करीने अनत प्रकारनु जाणवु रह्यु तेथी अनंतुज्ञान कहीए ते
सर्व उपमावाच छे. माटे अनतु ज्ञान कहेवु एटले सिद्ध परमात्मा
अनत ज्ञानी छे तथा सिद्ध परमात्मा अनतदर्शनी छे एटले अनत
पदार्थने देखवे करीने अनतदर्शनी कहीए ते सर्व पूर्ववत्
जाणवु अहीं कोइ कहेशे के चोथु ज्ञान जे मन पर्यवने तेने
दर्शन छे नहीं तो केवल ज्ञानने दर्शन क्या थकी थयु
तेनो उत्तर जे मन पर्यव ज्ञान छे ते विशेष उपयोगी छे शामाटे के
ए एक अवधि ज्ञाननो भेद छे जे अवधि ज्ञान छे ते सर्व पुद्गलिक
भावरुपी पदार्थ ने सपूर्ण जाणे देखे अलोक विष लोकलोक जे-
वडां असख्याता खांडवा जाणे देखे अने मनः पर्यव ज्ञाननो अढी
द्विप प्रमाणे मनोवर्गणाना पुद्गल द्रव्यने जाणे माटे अवधि ज्ञान
करता मन पर्यव ज्ञाननो विषय अत्यत अल्प छे अने तेने विषे पण
रुपी पदार्थनु जाणवु देखवु छे ने एने विष पण रुपी पदार्थनु जा-
णवु छे तथा अवधि ज्ञानि पण मनना पर्यायने जाणे देखे छे एज
अधिकार भगवतिजीमा छे ज्या वे देवता विमानीके भगवानने मन
थकी वात्या पुज्या प्रश्न पुछ्या भगवाने पण मनथकी उत्तर दीधा
एवी रीतनो आधिकार छे तथा प्रत्यक्षपणे जे मनुष्यनी पासे देवनु
आववु थाय छे ते मनुष्य मन थकी देवने स्मरे छे अथवा मनथी
कोइ वात पुछे तेनो उत्तर देव आपे छे माटे एम जाणवामा आवे
छे के मनोवर्गणाना प्रदेश देवने जोवामा सारी रीते आवे छे ए
वात प्रत्यक्षमा पण भाषण थाय छे तथा सिद्धातमा पण लेख छे
तेथी एम जाणीए छीए के अवधि ज्ञान सर्व रुपी पदार्थनो विषयी
छे ते मध्येथी मनोवर्गणानो अल्प विषय मन पर्यव ज्ञानथी नाम
सज्ञा कहीने जुदो भेद पाडयो छे तेथी तेने दर्शन गण्यु नथी पछी

एक प्रशस्त राग १ बीजो अप्रशस्त राग २ प्रशस्त कहेता देवगुरु धर्म सबधी राग ने अप्रशस्त कहेता ससारादिक राग ते बन्ने थकी रहित छे तथा अद्वेषी छे तेना पण बे भेद प्रशस्त एक बीजो अ प्रशस्त प्रशस्त कहेता देवगुरु धर्म उपर खेद करतो देखी तेना उपर द्वेष आवे अप्रशस्त कहेता पाताना ससारादिक कार्यपणामा खेद करतो देखी तेना उपर द्वेष आवे एवा द्वेषथी रहित छे अज्ञानपणा थी रहित छे तथा मोहदशा जे मार मार करवु तेथी रहित छे तथा आश्रवपणाथी रहित छे आश्रव एटले नवा कर्म खचीने आत्म सत्तामा सग्रह करवो तेथी रहित छे तथा अनतु ज्ञान छे अहिंआ कोइ प्रश्न करशे के ज्ञानतो एकज छे ने तमे अनतु केम कहोछो तेनो उत्तर जे ज्ञेय पदार्थ अनता छे ते प्रति जाणे छे माटे अनतु ज्ञान कहीए तथा लोक अलोक रूपी अरूपी सर्वे पदार्थ ने जाणेछे देखे छे ते लोक पण अनत छे तथा पुद्गल परमाणु तथा पुद्गलिक खध ते पण अनता छे एवा अनत पदार्थने जाणे माटे अनतु ज्ञान कहीए छीए

शिष्य वाक्य स्वामि ! एतो पर अपेक्षावड कराने अनतु ज्ञान ठरे छे पण स्वभाविक ज्ञान तो ठरतु नथी जेम कोइ एक चादरने विषे राइ प्रमुख वस्तुओनो गामडो वाधी लाव्यो ए राइना दाणा अनेक छे तेथी ए चादर पण अनेक ठरे छे पण चादर जोता तो एकज छे जेम मनुष्य एकज ते अनेक पदार्थन जाणे देखे छे तेथी ते मनुष्यना काइ मन पण अनेक न थया अने आत्मो पण अनेक न थइ तेम सिद्ध परमात्मानु ज्ञान ते एकज ठरे छे

तेनो उत्तर-आत्माना असख्याता प्रदेश छे ने प्रदेशे प्रदेशे अनतु ज्ञान छे ते पर अनुयायीपणे छे स्वअनुयायीपणे सर्वे प्रदेशे

अने त्यां पण काइ जन्म लीधो नथी जेवा अहींथी असख्यात प्रदेश निर्मल थइने गया तेवाज त्यां प्रगटपणे स्थिर भावे रह्या छे तथा अनादि छे एटले आदि जेनी नथी तथा सिद्ध अनत छे एटले एक एवा अनना छे तथा अक्षय छे एटले कोइ काले सिद्धपणानो क्षय थवानोज नथी तथा अक्षर छे एटले कोइ काळे सिद्धपणामांथी खरवाना नथी तथा कोइ प्रदेश पण खरी पडे नही तथा कोइ गुण पर्याय पण खरे नही, माटे अक्षर कहीए, तथा अणअक्षर छे एटले अकारादि अक्षर तेमा ए रूप आवे नहीं एटले अक्षरादिकथी रहीत छे त्या कोइ कहेशे के सिद्ध अथवा मुक्ति जे कहेशो ते तो अक्षर सहित छे ने तमे अग अक्षर केम कहोछो तेनो उत्तर जे सिद्ध अथवा मुक्ति इत्यादिक कहीने बोलाववु ते तो अहींआं ससारीने उच्चारण करवानी सज्ञा छे पण त्यांतु ते रूप घधाय नहि अने त्या काइ नामादिक नथी माटे अण अक्षरज कहीए तथा अकळ छे एटले ए काइना कळवामां आवे नहि एक ज्ञानि ज एने जाणे, बीजाना जाणवामा ना आवे तथा अचळ छे एटले एक प्रदेश आकाशनो आघो पाछो न थाय जे उर्ध्व अधो तिर्च्छों बीजो प्रदेश वडे एक फरसे नहि जे पोताना आत्मप्रदेश उपमनी वखत फरशेला छे तेना तेज रहे पण आगो पाछो प्रदेश न फरशे माटे अचळ कहीए.

तथा अमर कहिए एटले शुभा शुभ कर्मथकी रहित एटले पाप पुण्य जेने करवु नथी तथा शुभा शुभ प्रदेश थकी रहित कहेता जे पाप पुण्यादिकनी वर्गणाओ आठ जे आत्माने वळगेली हती ते वर्गणायकी रहित थया एटले सर्व कर्मरूप मेल हतो ते थकी रहित थया माटे अमर कहिए, तथा अगम कहिए एटले जे सिद्धपरमात्माना स्वरुपनी गम बीजाने नथी ए तो एक ज्ञानी गमजवस्तु छे.

तत्व तो ज्ञानी गम्य छे माटे सिद्ध परमात्माने जे अनंतु दर्शन छे ते सामान्य उपयोगी छे अने विशेष उपयोगी तो ज्ञान छे ए जिन भद्रगणी क्षमा श्रमणने मते छे तथा सिद्धसेन दीवाकरने मते तो भिन्न उपयोग मान्यो नथी त्या एक समे बन्ने उपयोग कह्या छे तथा सिद्ध परमात्मा अनत चारित्रना धणी छे एटले चारित्र कहेतां जे ज्ञानदर्शनने विषे स्थिर भाव तेने चारित्र कहीए अहींआं व्यवहार चारित्र गनेखवु नहि व्यवहार चारित्र तो पुद्गलिक भाव छे एटले व्यवहार कहेता जे पच महाव्रतादिक बाह्य थकी पाळवु पळाववु ते सर्व पुद्गलिक भाव छे तेमा काइ आत्मानु कल्याण नथी ए पुद्गलिक भावनो नाश थये ज मुक्ति मळे माटे अहींआ निश्चय चारित्र लेवु ते निश्चय चारित्र ते आत्मानो स्थिर भाव जाणवो एज चारित्र सिद्ध परमात्माने छे

वळी सिद्ध भगवानने अनतु विर्य कह्यु छे विर्य कहेता जे आत्मानी शक्ति ज्ञान दर्शनने विषे स्थिरतापणे विस्तरेलीज छे अहीं पुद्गल विर्य जाणवु नहीं पुद्गलिक विर्यथी सिद्ध परमात्मा रहित छे अनत सुखमय कहेता ज्या आधि कहेता मननी चिंता व्याधि कहेतां शरीरना रोगादि तथा क्षुधा वेदनी तथा सात भय प्रमुख अनेक रीतना ससारमा दुःख छे तेथी रहित थया तेज सुख वळी सिद्ध भगवान अनत तपना धणी छे ते सदायकाळ ज्ञान दर्शनमा रमण ता रूप छे तथा अनत उपयोगी छे एटले ज्ञान दर्शननो उपयोग अनताज्ञेय पदार्थोमा प्रवर्ती रह्यो छे तथा शुद्ध छे अज्ञान भावादिक अशुद्धता गइ छे माटे शुद्ध कहीए तथा बुद्ध कहीए एटले बुद्ध कहेता जे क्षायक भावे ज्ञान दर्शन प्रगटेलु छे तथा अविनाशी कहीए एटले अवीनाशी कहेता हवे कोइ काळे सिद्ध क्षेत्रथकी नाश थवानो नथी अज कहीए अज कहेता हवे कोइ काळे जन्म लेवो नथी

कर्म कहिए. ते कर्मथकी रहित थया माटे अकर्मी कहिए माटे सिद्ध भगवान् अकर्मी छे

तथा सिद्ध भगवान् अबंध छे बंधना बे भेद राग बंध द्वेष बंध २ तथा बंधना चार भेद प्रकृति बंध १ स्थिति बंध २ रस बंध ३ प्रदेश बंध तेना भेद अनेक छे इत्यादिक बंध थकी रहित माटे अबंध कहिए. तथा अणउदय कहिए एटले कर्म कोइ छे नहि. माटे उदयश्वानो होय तेथी अणउदय कहिए तथा अण उदारिक कहिए एटले कर्म विना कोइ उदिरणा करवी होय नही तथा अयोगी कहिए एटले मनः योग १ वचनयोग २ कायंयोग ३ ए त्रणे योगना १५ भेद छे ते सर्व योगथी रहित छे माटे अयोगी कहिए तथा अभोगी कहिए, एटले पाच इंद्रिओना तेविश विषय तेमानो एके विषय त्यां नथी, तथा इन्द्रीओ पण त्यां नथी तथा मननो भोग पण नथी तेथी रूपी पदार्थ त्यां कोइ नथी तेथी अभोगी कहिए तथा अरोगी कहिए रोग वात पित्त कफ आदि जे शरीर होय तेने थाय त्यां कोइ शरीर नथी माटे अरोगी कहिए. तथा अभेदी कहिए एटले जे असंख्यात प्रदेशरुप आत्मानो जे घन छे तेने कोइ भाला प्रमुख भेदे कहेतां विंधे एटले छिद्रादिक पडे नही सदाय अभंगी छे. तथा अछेदी कहेता जे घनमाथी कोइ कडको जुदो पाडवो चाहे तो कोइ काले पडे नही तथा अवेदी कहेता जे पुरुष वेद १ स्त्री वेद २ नपुमक वेद ३ ए त्रण करीने रहित छे तथा अखेदी कहेता जे जे कार्य करता थाक लागे तेने खेद कहिए तेमानु त्यां कोइ कार्य करवु करावबु नथी तेथी अखेदी कहिए तथा अकषायी कहिए. कषाय कहेतां जे क्रोधादिक तेना चार भेद क्रोध कहेता जे तप्त परिणाम, मान कहेतां जे अभिमान तेने जगतमद कहे छे तेना आठ भेद छे. जातिमद १ कुलमद

अहिंया कोइ कहेशे के ज्ञानी गय वस्तु एवुं कहो छो तो ज्ञानी वी
जाने जेवु रूप होय ते कहे के नहि जाणता होय तो कहेज तेनो उ
त्तर जे पुरुष जाणे छे तेने केटलीक वस्तु कहेवा योग्य छे केटलीक
कहेवा योग्य नथी तेनु कारण सांभलो के जे वस्तुना हेतु युक्ति दृष्टांत
संसारिक वस्तुने लागु थाय. ते कीधामां आवे पण जे वस्तुने संसा
रीक हेतु दृष्टांत लागु न थाय ते कीधामां न आवे जेम संसारने विषे
घृत खावानो अभ्यास सर्व माणसने छे अने जे माणस घृत खाय
तेना स्वादनी पण मालुम छे पण कोइ ए स्वादनु स्वरूप पुछे के
घृतनो स्वाद केवो छे ते वारे ते कहेवानी सामर्थ्यता कोइमां छे नहीं
शामाटे जे एनो कोइ हेतु दृष्टांत एना स्वाद जेवो पडखे देखाडवानो
नथी, ते रीते ज्ञानी पुरुष सिद्धना स्वरूपने जाणे छे पण काइ शक्ति
नथी वळी कोइ अहिंआं कहेशे के अनुमान थकी समजावे शामाटे
के उपमा देइने कोइ वस्तु समजावा योग्य नथी तो ठीकज छे.
पण अनुमान प्रमाण कह्यु छे ते रीते समजावे तेनो उत्तर जे अनु
मान प्रमाण पण वस्तुना अनुसार विना थतु नथी माटे जे वस्तुनु
दृष्टांत संसारमां नथी तेनु अनुमान प्रमाण शानु करवु माटे सिद्ध
भगवाननु स्वरूप अगम्य छे तथा सिद्ध भगवान अनामी छे ते
स्वरूप पूर्वे आवी गयु छे तथा अरूपी छे एटले सिद्ध परमात्माने
विषे रूप कशुए नथी एटले रूप कहेतां वरण धोळो-लीलो, पीळो
रातो, श्याम इत्यादिक वर्ण विना रूप शानु थाय ए रूपतो पुद्ग-
ळने विषेज छे माटे सिद्ध अरुपी कहिए तथा सिद्ध अकर्मी छे
अकर्मी कहेतां जे कर्म रहित एटले ज्ञानावरणीय१ दर्शनावरणीय २
वेदनीय ३ मोहनीय ४ आयुकर्म ५ नामकर्म ६ गोत्रकर्म ७ अंतरा
यकर्म ८ ए आठ कर्म थकी रहित तेने अकर्मी कहिए तथा बीजे
प्रकार कर्म कहेतां जे करवु क्रिया आचार कष्ट प्रमुख करवु तेने

कर्म कहिए. ते कर्मथकी रहित थया माटे अकर्मी कहिए माटे सि-
द्ध भगवान् अकर्मा छे

तथा सिद्ध भगवान् अबंध छे बंधना बे भेद राग बंध द्वेष
बंध २ तथा बंधना चार भेद प्रकृति बंध १ स्थिति बंध २ रस
बंध ३ प्रदेश बंध तेना भेद अनेक छे इत्यादिक बंध थकी रहित
माटे अबंध कहिए. तथा अणउदय कहिए एटले कर्म कोइ छे नहि.
माटे उदयशानो होय तेथी अणउदय कहिए तथा अण उदारिक
कहिए एटले कर्म विना कोइ उदिरणा करवी होय नही तथा अ-
योगी कहिए एटले मनः योग १ वचनयोग २ काययोग ३ ए
त्रणे योगना १५ भेद छे ते सर्व योगथी रहित छे माटे अयोगी
कहिए तथा अभोगी कहिए, एटले पाच इंद्रिओना तेविश विषय
तेमानो एके विषय त्यां नथी, तथा इन्द्रीओ पण त्या नथी तथा
मननो भोग पण नथी तेथी रूपी पदार्थ त्या कोइ नथी तेथी अ
भोगी कहिए तथा अरोगी कहिए रोग वात पित्त कफ आदि जे
शरीर होय तेने थाय त्या कोइ शरीर नथी माटे अरोगी कहिए.
तथा अभेदी कहिए एटले जे असंख्यात प्रदेशरुप आत्मानो जे
घन छे तेने कोइ भाला प्रमुख भेदे कहेतां विधे एटले छिद्रादिक
पडे नही सदाय अभेदी छे. तथा अछेदी कहेतां जे घनमांथी कोइ
कडको जुदो पाडवो चाहे तो कोइ काले पडे नही तथा अवेदी क-
हेतां जे पुरुष वेद १ स्त्री वेद २ नपुंसक वेद ३ ए त्रण करीने
रहित छे तथा अखेदी कहेता जे जे कार्य करतां थाक लागे तने
खेद कहिए तेमातु त्या कोइ कार्य करवु करावुं नथी तेथी अखे-
दी कहिए तथा अकषायी कहिए. कषाय कहेता जे क्रोधादिक
तेना चार भेद क्रोध कहेता जे तप्त परिणाम, मान कहेतां जे अभि
मान तेने जगतमद कहे छे तेना आठ भेद छे. जातिमद १ कुलमद

२ बलमद ३ रूपमद ४ धनमद ५ ऐश्वर्यमद ६ ज्ञानमद ७ तपमद ८ इत्यादिक अनेक भेद अहंकारना छे

तथा माया कहेतां जे कपट स्व अर्थे करे पर अर्थ करे तथा स्वभावे पण कपटमांज रम्या करे लोभ कहेतां जे तृष्णा धननी, राजनी, पुत्रनी, स्त्रीनी, यश कीर्तिनी, आभवनी परभवनी, ते सर्वे ने तृष्णा कहिए ए क्रोधादिकचारने कषाय कहिए, ए चारे कषाय थकी रहीत तेने अकषायी कहिए एटले सिद्ध भगवान् अकषायीज छे तथा असखाइ कहेतां जे सिद्ध भगवान् सखाइ कहेतां कोइनी साह्य करे नही एटले जे मुक्ति गया तेनी कोइ जीव आशा राखे जे म्हारु कार्य करे ते सर्व मिथ्या छे. सिद्ध भगवान अहिंआं आवे पण नही ते कोइनु कार्य करे पण नही त्यां बेठा पण कोइनु कार्य करे नहि ए तो पोताना स्वभावमां स्थिर भावे छे माटे एमने असखाइ कहिए तथा बीजो अर्थ जे असखाइ कहेतां ए बीजा कोइनी साहाजे कोइ सिद्ध रह्या नथी अने कोइनी साह्य थकी सिद्ध थया नथी ए तो पोतानी आत्म शक्तिएज सिद्ध थया छे ने पोतानी आत्म शक्ति एज स्थिर भावे सिद्धने विषे रह्या छे अही कोइनी साह्य खप लागती नथी, कोइनी साह्य थकी सिद्ध पूर्वे सिद्ध थया नथी हवणा पण कोइनी साह्य थकी सिद्ध थता नथी, आवते काले पण कोइनी साह्यथी सिद्ध थवाना नथी अहि तो एक आत्म शक्ति खप लागे छे माटे असखायीज कहिए वली अलेसी छे. एटले लेश्या कहेतां कृष्णा लेश्या १ नील लेश्या २ कापोत लेश्या ३ ते तो लेश्या ४ पद्म लेश्या ५ शुक्ल लेश्या ६ ए छये लेश्या थकी रहित छे माटे अलेशी कहीए तथा अशरीरी कहेतां औदारिक १ वैक्रिय २ आहारक ३ तैजस ४ कार्मण ५ ए पांचे शरीरे करीने रहित माटे अशरीरी कहिए तथा अणाहारी कहेतां जे

कोळीए वासीने मुखमा धरे रोमाहार कहेतां १ रोम रोमथकी ग्रणमे. २ ओजाहार इत्यादिक आहार करीने रहित तेने अणाहारी कहिए. तथा अव्यावाधक कहेता जे बाधा पीडा रहित तथा अण अवगाह कहेता जे अवगाहना शरीरनी ससारमां नोखी नोखी छे ते सक्षेपथी कहिए छीए पृथ्वी आदिक चार थावरने आगळने असख्यातमे भागे छे वनस्पतिनी हजार योजननी छे बेरेन्द्रियनी बार योजननी, तेरेंद्रियनी त्रण गाउनी, चौरेन्द्रियनी चार गाउनी तिर्यंच पचेन्द्रियनी आंगळनो असख्यातमो भाग उत्कृष्टी हजार योजननी, नारकीनी पाचसे धनुषनी, देवतानी सात हाथनी मनुष्यनी त्रण गाउनी, एवी चार पन्नवणा सूत्रथी जोइ लेज्यो इत्यादिक अवगाहना ए करी रहित तेने निरअवगाहना कहिए अहिआ कोइ कहेशे के सिद्धनी अवगाहना जघन्य बत्रीस आगळनी उतकृष्टी त्रणसे तेत्रीश धनुषने बत्रीश आगळनी छे ने तमे अण अवगाही केम कहो छो. तेनो उत्तर जे त्या काइ पौद्गलिक अवगाहना नथी ने त्या जे छे ते तो आत्मिक अवगाहना छे ते एक अवगाहना त्यां अनति अवगाहनाओ छे माटे ए अवगाहनातो कहेवा मात्र रही छे ने पौद्गलिक अवगाहनामा एक बीजु समाय नहि अहिआं कोइ कहेशे जे मनुष्य तथा जनावरना शरीरने विषे कीडा वगेरे पडे छे माटे बीजी अवगाहनाओ समाय के नहीं; तेनो उत्तर जे मनुष्य तथा जनावरमां कीडाओ पडे छे. ते तो अल्प शरीरी छे. ने रोगादिक कारणे पड छे माटे काइ मनुष्यमां मनुष्य कोइ पडतां नथी ने जनावर जनावरमा पडता नथी ने स्त्री आदिक गर्भ धरे छे. ते तो गर्भनो कोठो न्यारोज छे गर्भ स्थिति पुरि थये प्रसव थाय माटे ए अवगाहनामां अवगाहना कहेवाय नहि माटे ए तो स्थितिअभाव छे माटे अहिआं पुद्गलीक भावमां बीजी अ

वार्ता कहेवाने तो हु समर्थ नथि परंतु किंचित् भाग दृष्टांते सम
जवा मारी शक्ति प्रमाणे कहु छु ते स्वभाविक अनुभव तो ज्यारे
प्रगटे ज्यारे विभाविक अनुभवनो नाश थाय त्यारे स्वभाविक
अनुभव प्रगटे छे. दृष्टांते जेम कोइ भाजनमां दुर्गंध वस्तु भरीने भा
जनमा दुर्गंधनी वासना बेठी छे ते दुर्गंधनी वासना गया विना
ए भाजनने सुगंध वासीये तो सुगंध वासीत थाय नहि माटे अ
हियां आत्माने विभावनो संग न छुटे त्यां सुधी स्वभाविक अनुभव
केम करीने थाय? अहियां कोइ कहेशे के विभावनो नाश थशे त्या-
रे तो ए वीतराग थशे त्यारे पछी एने शेनो अनुभव करवो छे
तेनो उत्तर जेने ज्ञानावर्णीनो क्षयोपशम थयो छे, अने ज्ञानभाव
प्रगटयो छे ते पुरुषने जेटलो जेटलो विभावना अंशनो नाश थाय
तेटलो तटलो स्वभाविक अनुभव प्रगटे ने संपूर्ण विभावनो नाश
थाय तो जाणवा रूप अनुभव प्रगटे करवारूप अनुभव त्यां नहि
हवे जे अंश प्रगटे तेनो निवेरो करीने देखाडु छु ते प्रथम दृष्टांत
कहु छु ते समज!!! जो के जेम सुरज छे ते संपूर्णवादलाये करीने
घेरी लीधो अने एना ताप तडकानो नाश थइ गयो, अने अजवालु
पण ओछु थइ गयु अंधकार विशेष व्याप्यो छे ते मध्येथी एक वा-
दलु खसे तेटला उज्जासमध्ये अन अंधकारनो नाश थाय तेम अ
हियां जीवद्रव्यने अनादिकालना मिथ्यात्वथी अज्ञानरूप वादला फ
री वल्या हतां ते मध्येथी कोइक जीवकाल लब्धि पामी सदगुरूना
समागमथी ने स्वस्वभावथी त्रण करण करीने समकितरूप रु
द्धि [illegible] मि पात्व तथा अनंतानुबंधी चोकडीनोक्षयो
[illegible] ए प्रकृतियोना प्रदेश हता. ते आत्माना प्र
[illegible] त्यारे आत्माना [illegible] जेटलो
एटलो स्वभाविक रमण [illegible]

एटले स्वाभाविक अनुभव ज्ञाननो थयो एम सातमा गुण ठाणा सुधी लइये शामाटे जे अहियां सुधी मोहनु जोर घणुं छे त्यांसुधी अशे विभावनो नाश थायज अने श्रेणी गते मोहनु जोर नरम पडी गयु, त्यारे विभाव रहे ते यावत् दशमाने अंते विभावनोने मोहनो सर्वेनो नाश थाय छे त्यां शुद्ध स्वभाविक अनुभव करवामां आवे छे पण अहिया कृत्रिम नथी जे आ अथवा द्रव्य गुण पर्याय इत्यादिकनो विचार आहिया करवो नथी, अने स्वभाविक गुण गुणीभेद अथवा गुण पर्यायभेद अथवा सक्रमण ए पोताने स्वभावेज विचारमा चाल्यो आवे पण पोते जाणे नहि, के हु आ विचारमा छु एवो तद्रूप एका कारणे पणे प्रणमेलो ए जे अनुभव तेने स्वभाविक अनुभव कहिये तेना बे प्रकार छे एक समल १ बिजोविमल २ एटले जे क्षपक श्रेणीवाळानो जे अनुभव छे ते निर्मल छे अने उपशम श्रेणीवालानो जे अनुभव छे ते समल छे शामाटे जे उपशम श्रेणीवाला ए सर्व मोहनी कर्मनी प्रकृतियोने उपशमावता कहेतां दबतो जाय छे, ते धणी अगीयारमे गुण ठाणे जाय ए उपशम वीतराग कहेवाय, पण आत्मप्रदेशथी मोहनी कर्मनो नाश थयो नहि अने पोतानी विभावदशा जे अशुद्ध प्रणती तेनो पण नाश थयो नहि, सत्ताये ए सर्वे रह्यां छे माटे जे स्थानक विषे ए धणीनो काल आवी पहोंच्यो तो ए चोथे गुणठाणे जाय एटले अगियारमानो उठयो चोथे गुणठाणे आवे त्यारे मोहनी कर्मनी प्रकृति ७ सात प्रकृति विना बधी प्रकृतियोनो उदय थइ जाय पण एकावतारी छे सर्वार्थ सिद्ध जाय अने जेनो ए गुणठाणेकाल नजिक नहि होय तो प्रकृति उदयवश थइने पाछो पडे तो ते जीव यावत् निगोद सुधी पण जाय कोइक जीवतद्भवे मोक्षे पण जाय कोइक जीव उपशम श्रेणी करे तो एक भवमा बे वार करे अने आखी भवस्थितिमां—

पाचवार करे माटे ए स्वाभाविक अनुभव ए उपशम श्रेणीवालानो समल कहेतां मल सहित छे

हवे जेविमल स्वभाविक अनुभव छे ते तो मोहनीय कर्मनो नाश करतो चालयो आवे छे ते दशमाने अने सपूर्ण मोहनीय कर्म नो नाश करे अहींयां अशुद्ध परिणतीनो तथा विभावनो पण नाश थयो ते वारे शुद्ध स्वभाव जेवो सत्ताये हतो एवोज जाण पणा रूप अनुभव थाय एटले ए बारमे गुणठाणे क्षायिक भावनो वीतराग थयो अहींयां गुण गुणी भेद हतो ते गयोने एक मात्र थइने प्रणम्यो अहिं शुद्ध निश्चय नय जाणवा रूप अनुभव थयो एटले ए अनुभव छे तेमनो वांछित दातार छे अने हवे जन्म मरण करवो पडे नही माटे एवा एवा अनुभवनी खप करो हे भ य जीवो शा माटे जे ए शुद्ध स्वभाव रूपी दरवाजामां पेठतो ए एक क्षणनी अंदर केवल ज्ञान पामीने मोक्षे जाय कोइकने आयुष वधारे होय तो आ युष भोगवीने मोक्षे जाय पण फरीथी तो हवे कोइने जन्ममरण करवु नथी, ए सदाये सिद्धमां बीराजमान अनंतु सुख भोगवतां विचरशे ते माटे ए भव्य जीवो शुद्ध स्वभावनो अनुभव करो एज हमारो हेतु उपदेश छे.

दुहा

शुद्ध स्वभाव ए वर्णव्यो शुद्ध अनुभव जोग ।
अशुद्ध स्वभाव दूर टले, टल्यो मोहनी रोग ॥ १ ॥
शुद्ध अनुभव प्रत्यक्ष छे, शुद्ध ज्ञान ए जाणो ॥
शुद्ध स्वरूपनु देखवु, निश्चय चित्तज आणो ॥ २ ॥
ए अनुभव सुज चीत्तवस्यो, जेम मधुकरने कमल ॥
एथी सवी सुख पामीये, होय आतमनिरमल ॥ ३ ॥

निरधनने मनदेवऋध जेम वल्लभ लागे ।
तेम ज्ञानीने अनुभव शुद्ध चित्त लागे ॥ ४ ॥
ए भावमें वर्णव्यो, स्वपर हितकारी ।
ताराचद्रनी जाचना ते मे दीलधारी ॥ ५ ॥
एह ग्रंथ रचना करी बहु न्याय साथे ।
हेतु जुक्ती पणे छे घणी नीज ऋद्धि हाथे ॥ ६ ॥
ज्ञानीकु ए ग्रंथ छे अनुभवींकुं रसलीन ।
ग्रथ हाथ शुं छोडे नही अमरीत घट घट पीन॥ ७ ॥
अज्ञानी समजे नही एह शब्द विचार ।
तेमां मुज कोइ दोप नही क्षय उपसम विचार ।८।
सवत १९३३ मे प्रथम जेष्टकृष्ण पक्ष ।
चतुर्थी गुरुवार ए पूरण थयो दक्ष ॥ ९ ॥
हुकम मुनीनो मानजो बहू श्रुत निस्पृही जोइ ।
ते पासे ग्रथ देखजो अर्थ पामशो सोइ ॥ १० ॥
एह अर्थ पाम्या थकी पामशो अनुभवसार ।
मुनी हूकम ते प्राप्ति शीव वधु वरधार ॥ ११ ॥
सीव वधुसें सुख भोगवो जो करो अनुभव एह ।
हूकम मुनीनो माथे लइ पामोऋद्धि तेह ॥ १२ ॥
मुनी हूकम अनुभव ग्रहे सुधानद स्वरूप ।
शुद्ध थीरता प्रगटसे पामेशीव

॥ इति अनुभव प्रकाश

जे साधु छे के देवता छे ? एवु विचारी कोइ कोइने वांदे नहि, कोइने जो वांदिए तो आपणने दोषण लागे ते जो देवता होय तो अव्रति अपच्चरकाणी होय, तेने साधु करी वांदिए तो मिथ्यात्व थाय, अने मृषावाद पण लागे एटला वास्ते कोइ साधु माहोमाहि वांदे नहि श्री आपाढाचार्यना शिष्य अव्यक्त नामा मतनी मरू पणा करता थका विचरे. हवे ते काले गीतार्थ बहु श्रुत महापुरुष हता, तेमणे घणी चर्चा करी जे ए काइ देवता होय अने साधुनो वेप धरी ते साधुने आचारे मूलगुणपच महाव्रतना ७ आचार पा ल्तो होय तेने साधु करीने वांदे तो मिथ्यात्व न थाय अने मृषा वाद पण न लागे जिन सासनने विषे तो बाह्यथी व्यवहार बलिष्ट छे इत्यादि बीजी पण घणीक युक्तिए करी समजाव्यो पण समजे नहि त्यारे ते आपाढाचार्यना शिष्यने सघ बहार करचा, तोपण कदाग्रह मुके नहि, एवा अवसरे श्रीराजगृहि नगरीमाहे श्री बल-भद्र राजा राज्य करे छे ते सूर्यवशिने जैनधर्मी छे तिहा ते शिष्य आव्या त्यारे तेने मति बोधवाने कामे राजाए पकडी मगाव्या, तेने मारवा माड्या, त्यारे ते साधु कहेवा लाग्या हे राजन ! तु श्रावक थइने अमने केम मारे छे ? त्यारे कहेवा लाग्या जे कोण जाणे जे तमे साधु छो के चोर छो ! के देवता छो अमे पण श्रावक छीए के देवता छीए ते कोण जाणे त्यारे ते प्रतिबोध पाम्या पछी स्थ-विर साधुने पगे लाग्या, पोतानो मत कदाग्रह मूक्यो, आलोइने पछे शुद्ध थया ए तृतीय अव्यक्तनामा श्री आपाढा चार्यना शिष्यनो अधिकार पूर्णम् ॥ इति तृतीय निन्हव ॥ ३ ॥

हवे चोथा निन्हवनो अधिकार कहे छे, ते श्री मथुरा नगरीने विषे थयो, श्रीमन् महावीर स्वामिना निर्वाण पछी बसेने वीस वर्षे श्री आर्यमहागिरीना शिष्य कोडन नामा तेना शिष्य अश्वमित्र-

नामा एकज विद्यानु परवाद दसमु पूर्व निपुणनामा वस्तु भणता थका एवो आलावो आव्यो

" जे पडि पून्य समयनो राजासवे " ॥ २ ॥ विछि जस्सात एव जाववामाणां अति ॥ एवं अतिताए ॥ समय सुविल्वव्य ॥

एहनो अर्थः ॥ पडि पुन्नके० ॥ वर्त्तमानकाल होय एटले वर्त्तमानकाल समयना जे नारकी छे ते बीजे समे ॥ वुछेदके० ॥ विनाश थाय छे एटले प्रथम समये वसट्ट जे नारकी हता, तेहिज नारकी बीजा समयने विषे बीजे समे विसिष्ट थाय तेने ते समजण पडी नहीं मिथ्यात्वना उदय थकी गुरु आदीके घणी परे समजाव्यो तो ए समजे नहि, त्यारे संघ बाहार काढयो तेना मतमा, जे जीव पाप करे छे ते नाश पामे छे जे जीव पून्य करे छे ते पण नाश पामे छे, समये समये ते अश्वमित्र विहार करतो श्री राजग्रही नगरीए आव्यो तिहापडरस्याविद्वान सातक छे ते दरबारनो चाकर छे, मांडवीनो दाणी छे, ते एहने प्रतिबोधवाने काजे पकडीने मारवा लाग्यो, त्यारे तेने कहेवा लाग्यो जे हुं साधु छु, तमो श्रावक छो, तो मने केम मारो छो ? त्यारे दाणी बोल्यो जे साधु हता ते तो नाश पाम्या हवे तमने कोण जाणे छे जे साधु छो के चोर छो ? त्यारे ते प्रतिबोध पाम्यो, गुरुने आविने पगे लाग्यो, खमाविने शुद्ध थयो, ए चोथो निन्हव कह्यो ॥ ४ ॥ हवे पांचमो निन्हव कहिये छीए द्विक्रिया वादि गगनामा आचार्य श्री महाविर स्वामीना निर्वाणथकी नसेंने अठयावीस वरसे श्री आचार्य महागिरीना शिष्य श्री धनुपूर पन्य ... गगनामा ' एकदा ' उष्ट नदि तीरे पूर्वतटे श्री

वनगुप्त आचार्य चोमासु रह्या छे, पश्चिम तटने विषे गंगनामा शिष्य चोमासु रह्या छे, तिहां थकी शरद ऋतुये श्री गुरुने वांदवा आवता मार्गने विषे नदी उतरता माथे टाल हती ते उपर तडको घणो लाग्यो, अने पगे नदीनु पाणी टाढु घणु लाग्यु, तेवारे मिथ्यात्वनो उदय थयो त्यारे मन माहे चिंतववा लाग्यो जे, एक समये श्री सिद्धांत माहे बे क्रियानो उपयोग निषेध कर्यो छे ते खरु छे, जे हु साक्षात् एक काले बे क्रियानो उपयोग अनुभवु छु आ तो नष्टवेदना अनुभवु छु पछी गुरु आगळ चेष्टा करी, त्यारे गुरु केहेवा लाग्या जे, एक समये एकज क्रियानो उपयोग होय, एक समये मुखे खातो होय, बोलतो होय, अने पगे हिंडतो होय, एटले क्रिया तो एक समे घणी करतो थको पण एकज क्रियानो उपयोग होय समयनो काळ सूक्ष्म छे, एम घणु कह्यु पण मान्यु नहि, त्यारे गुरुये संघ बहार काढ्यो पछी ते गंगशिष्य श्री राजगृहि नगरीए आव्यो, तिहा महातपस्तर प्रभावनानु देहरु छे, तिहा मणिनाग नामे जक्षनु देहरु छे, ते पासे खोटि प्ररूपणा करतो देखीने ते जक्ष केहेवा लाग्यो, श्री वर्द्धमान स्वामीयें एक समे एकज क्रियानो उपयोग कह्यो छे तो हे पापीष्ट दुष्ट तु एक समे बे क्रियानो उपयोग केम कहे छे एवा घणाक कठण वचने करीने कह्यु, ते सांभळीने मनमा भय पामतो थको गुरु पासे आव्यो मिथ्यात्व मुकयु गुरुने खमाव्या, इति पांचमो निन्हव कह्यो ॥ ५ ॥ हवे छट्ठा निन्हव 'त्रिराशिकनो' अधिकार कहे छे श्री वर्द्धमान स्वामीना निर्वाणथकी पांचसे ने चुमाळीस वर्षे आंतरंजका नगरीने विषे बलश्री नामा राजा राज्य करे छे तिहां लोहगुप्त नामा परीव्राजक, पोहपट बांधु छे हस्तने विषे, जंबु वृक्षनु डाळ राखे छे, लोक पुछे त्यारे एम कहे जे मारा पेटमां

विद्या राहि तेणें करीनें पेट फाटे छे वास्ते लोहपट बाध्यु छे कोइ मनोवादी जंबूद्वीप माहि दिठा नहिं ते जणाववाने काजे जंबू वृक्षनु डाळु छे ते लेइने फरु छु तिहा ते काले श्रीगुप्ताचार्य विचरे छे तेहना शिष्य रोहगुप्त नामा ग्रामातरे छे. तिहा थकी गुरुने वांदवा आवतां वाटे राजा चर्चानें काजे पडहो वजडावे छे के कोइ पंडित होय ते ए परिव्राजकनी साथे चर्चा करे तिहा रोहगुप्त शिष्ये झाल्यो, पछे गुरु पासे आव्यो गुरुये कह्यु जे ए सारु कर्यु नहि, आपणे वाद करवानु शु काम छे ? भले हवे तो सारु थाय तेम करो पछी गुरुए ज्ञाने करीने जाण्यु जे तेनी पासे नकुलनी विद्या ॥ १ ॥ सर्पनी विद्या ॥ २ ॥ उंदरनी विद्या ॥ ३ ॥ मृगनी विद्या ॥ ४ ॥ सुयरनी विद्या ॥ ५ ॥ कागनी विद्या ॥ ६ ॥ पखिनी विद्या ॥ ७ ॥ ए सात विद्या छे ए विद्याने घातनी करनारी बीजी सात विद्या गुरुए आपी मोरविद्या ॥ १ ॥ नकुलनी विद्या ॥ २ ॥ बिलाडीनी विद्या ॥ ३ ॥ वाघनी विद्या ॥ ४ ॥ सिंहनी विद्या ॥ ५ ॥ घुडनी विद्या ॥ ६॥ बाजपंखीनी विद्या ॥ ७ ॥ ए सात विद्या गुरुए आपी ॥ वळीबीजा [illegible] उपद्रव निवारवाने काजे पोतानो ओघो मत्रीने [illegible]. हवे जे रोहगुप्त हता ते गुरुने कहिने राजसभा माहि [illegible]. त्यारे पटसालक परिव्राजके जाण्यु जे ए जैनि छे पनी [illegible] संस्कृत भाषा बोलीशु तो ते बोलशे नाहि ते वास्ते जैनना [illegible] इने वाद करु, जे उथापि सके नहि. हवे पटसालक [illegible] जे संसार मधे बे पदार्थनी राशि छे. एक पून्य ॥ १ ॥ [illegible] ॥ २ ॥ रात्रि ॥ ३ ॥ दिवस ॥ ४ ॥ आकाश ॥ ५ ॥ [illegible] ॥ ६ ॥ जीव ॥ १ ॥ अजीव ॥ २ ॥ इत्यादिक बेबेनी राशि छे [illegible] रोहगुप्त बोल्यो जे समार मधे राशि [illegible] छे, [illegible]

साधुनी पासे कर्मप्रवादनामा आठमु पूर्व सांभल्यु छे, तेने विषे कह्यु छे जे, आत्माने विषे कर्म रह्या छे जिम दूधमांहे पाणी नाखी ए ने पाणीने दूध एक मेक थाय छे, वलि लोहने अग्नीमाहे तपावीए त्यारे लोह लालचोल मय थइ जाय छे, तेम आत्माने कर्म एकमेक परिणमे छे तेने बदले गोष्टमाली कहेवा लाग्यो जे आत्माने विषे कर्म छे ते कचूकने न्याये रह्या छे जिम पुरुष जामो पेहेरे तेने आकारे कर्म रह्या छे, ते वृद्ध साधुए कह्यु जे एहवु सांभल्यु छे, वली प्रत्या ख्यान प्रवाद नवमु पूर्व सांभलता थका पच्चख्खाणना अधिकार आव्यो, जे साधु दिक्षा ले त्यारे ॥

करेमिभंते सामाइय सावज्ज जोग पच्चख्खामि॥ जाव जीवाए ॥ तिवीहं ॥ तीविहेण ॥ मणेण ॥ वा याए ॥ काएण ॥ न करेमि ॥ इति

इहां जावजीव ॥ ए पद केहवु नहि ॥ ए पद केहतां ॥ साधुने दोष लागे छे ॥ जे जीवु त्यां सुधी ॥ सावद्य जोगनु पच्च ख्खाण साधुने छे ॥ मुवा पछी पच्चख्खाण मोकलु ॥ त्यारे आससा केहता ॥ वाछानो दोष लागे छे ॥ जे परभवे जइ श त्यारे भोगवीश ते वास्ते जावजीव ए पदे केहवु नहि एवु सामली ने श्री वृद्ध साधु ए मान्यु नहि, पछी आवीने श्री दुर्बलिकाजिने कह्यु जे गोष्टमाली एवी प्ररूपणा करे छे, कर्म आश्री तथा पच्चख्खा- ण आश्री, ते सांभलीने दुर्बलिकापुष्पमित्रे कह्यु जे गोष्टमालि उत्सूत्रनी प्ररूपणा करे छे, ते खोटु बोले छे, त्यारे संघने संदे ह पड्यो, के श्री दुर्बलीकाचार्य कहे छे ए खरु के गोष्टमालिक कहे छे ए खरु छे, त्यारे संघे शासन देवीने स्मरीने श्रीसीमंधर

स्वामी पासे मोकली, ते देवीए त्यां जइने श्रीमंधर स्वामिने पूछ्यु, त्यारे श्रीमंधर स्वामीए कह्यु जे ए गोष्ठमाहील सातमो निन्हव छे ते उत्सूत्र भांखे छे, श्रीदुर्बलिकापुष्पमित्र तो जुग प्रधान छे सत्यवादी छे, ए वचन सांभलिने शासन देवीए इहां आवीने कह्यु, पण भारेकर्मी जीव हता तेथी कह्यु मान्यु नहि, जे ए देवी खोटुं बोले छे, श्रीमंधर स्वामी पासे जइ शके नहि अबधक मतप्ररूपक गोष्ठमाली सातमो नीन्हव समाप्त ॥ ७ ॥ ए सात निन्हव कह्या ते मध्ये बीजो निन्हव तीष्यगुप्तनामा चरम प्रदेशे जीव मानतो ॥ १ ॥ त्रीजो निन्हव आषाढाचार्यनो शीष्य साधू छे के देवता छे ए अव्यक्तव्यमत ॥ २ ॥ चोथो निन्हव अश्वमित्रनामा वर्त्तमानकालना नारकी देवता उछेद पामे छे ते समुछेदिक क्रिया । ३ । वादी ए गगनामा निन्हव पांचमो एक समे बे क्रियावादि ॥ ४ ॥ ए च्यारे निन्हव पाछा वल्या अने पेहेलो निन्हव जमाली बहु सतवादी त्रण समे कार्य पूरु थाय ते ॥ १ ॥ तथा छट्ठो निन्हव रोहगुप्तनामा त्रिराशी मतवादी ॥ २ ॥ अने सातमो निन्हव गोष्ठमाली अबधक करमवादी ॥ ३ ॥ ए त्रण निन्हव वल्या नहि आठमो निन्हव दिगंबर थयो सर्व वस्तवादी ते आवश्यकनिर्युक्ति मध्ये कह्यु छे, अने बे तो श्री महावीर स्वामीथकी छसेंनेनव वरसे सेसमलथकी ते तो प्रसिद्ध छे अने जे तो श्री महावीरस्वामी थकाज नीकल्या छे श्री महावीर स्वामी पछी थया कालानुभावे करीने त्यार पछी मती केहेवाणा ते प्रवचनपरीक्षामा दसमति कहीने बोलाव्या छे, अने श्री आवश्यक निर्युक्ति मध्ये तो निन्हव कहीने बोलाव्या छे, यद्यपि निन्हव ने मती ते एकज छे, पण निन्हव पद ते भारे छे अने मति पद हल्कु छे जे आगमधर केवलज्ञानी तथा चउद पूरवधरादिक अतिशे ज्ञानी

आगमवाला होय ते जाणे, जे उत्सूत्र जाणीने बोले तेने निन्हव कहीए अने जे मूरख पणाथी तथा स्वछदपणाथकी पोतानी मतिकल्पनाये करीने उत्सूत्र मरूपणा कर, तेने वस्तुगत निन्हव काहिए जे साक्षात सिद्धात म ये अक्षर देखे अने माने नहि अने वलि जीनमर्यादाविना अने शुद्ध श्री गणधरनी परपराविना न- वीज पोतानी मति मरूपणाये करीने मरूपे, जे जाणीने मरूपे तेने निन्हव कहीए, पण आजना गीतार्थ ते पापथकी डरताथका जाणे छे, जे अमने तेनु ज्ञान नथी उत्सूत्र बोले छे ते जाणीने बोले छे के अजाणे बोले छे ? पण मतकदाग्रह मुकता नथी, त्यारे मती क ही बोलाव्या, अने मवचन परीक्षा धर्मपरीक्षा छे, नमनुं जावु ए अभिनीवेशिक मिथ्यात्व कहिए ॥ ए त्रीजो भेद मिथ्यात्वनो कह्यो ॥ ३ ॥

हवे मिथ्यात्वनो चोथो भेद कहीए छीए, ए ससेके० ॥ मि- थ्यात्व कहीए ते केमके वासी रोटली, खीचडी, वाशी शीरो, लावासि, ढोंढडी, घाल पोतानी सुखडी लेउ, केरी, केरां, इत्यादिकनो बो लोलुण पाडया पछा त्रण दिवश उपरात रहे तो बेरद्रि जीव अस ख्यात उपजे ने मरे, ते माने नहि ते तो जीव अपवेशनारूप मि थ्यात्व थाए अने वली एम जाणे जे एमा जीव हशे के नहि होय ? एवो सदेह होय तेने ससयिक मिथ्यात्व थाए वली उनु पाणी कर्या पछी शीयाले च्यार पोहर पछी, उनाले पाच पोहार पछी, काचु पाणी थाए अने वली काचु दहिं, काची छास, काचु दुध, ते सघा ते विदळ भले ॥ विदल ते मग, चाला, झालर, अडद, चणा, इ त्यादिक कठोल जेटलु धान्य होय ते विदल कहिए, ते काची छा सादिकमां भळता असख्यात बेरद्रि जीव उपजे छे, ते पण माने नीह, अथवा सदेह राखे, तेने पूर्ववत् मिथ्यात्व लागे ए अधिकार

श्री प्रवचनचूर्णी तथा प्रवचन सारोद्धारादिक ग्रंथोने विषे छे हवे कोइक कहे जे अमे तो ग्रंथ मानता नथी काइ सिद्धांतमा होय तो कहो तेने कहीए जे सिद्धांतमा घणे ठेकाणे अक्षर दिसे छे पण जे हने मिथ्यात्वनो उदय होय ते सिद्धांतने माने नहि, तोपण भव्य जीवना उपगारने अर्थे सिद्धांतना अक्षर देखाडीये छीए जे त्रस जीवनी आठ खाण श्री दशवैकालिक सूत्र म ये कही छे

"यदुक्तं" इंडया ॥ १ ॥ पोडया ॥ २ ॥ उटाउवा ॥ ३ ॥ रासिया ॥ ४ ॥ संसमि ॥ ५ ॥ समुछमा ॥ ६ ॥ अजिया ॥ ७॥ वारया ॥ ८ ॥

हवे ए इंडियाइ हजडजा पक्षाताहको कालादि ॥ एटले ए जीव इंडु जणे छे, पछी सपूर्ण शरीर पाख प्रमुख उपजे छे तेज गर्भ पचेंद्री जीव ते पखी तथा गरोलि इडज जीवने इडज कहिए ए प्रथम खाण ॥ १ ॥

पोता जाय ते ॥ इति पोता जाके० ॥

जे गर्भ जणे त्यारे ॥ पोता कहेता०॥ चापडीनी चादर पछेडी कहीए ते सहीत गर्भ जणे तेने पोताजा कहिए हाथी प्रमुखए बीजी खाण ॥ २ ॥ जरा उइयाके० ॥

जरा उवेष्टिता जाय ते ॥

इति जराउर्जा मनुप तथा गाय भेंस जाणवि, ए त्रीजी खाण ॥३॥

रसीया इतिरस जायते भतेरत्थ

एहनो अर्थ रसियाके पाणी कहीए तेह थकी जे उपन्यु एटले पाणीए रां धु धान जेटलु होय, तथा पाणीनो भाग जेहमा रह्यो होय, ते सुखडी नीली होय, सीरा लावसी तथा पूरी तेमा पाणीनो भाग रहे ते वासी

करीने जाणवा, एटले तिर्यचपचेंद्रिना छाण तथा मूत्रादिकने विषे समूर्छिम मनुष्य उपजे नहिं एटले गायना मूत्रनो चोविस पोहोरनो काल कह्यो छे, त्यार पछी बेंद्रियादिक जीव उपजे, पण समूर्छिम मनुष्य उपजे नहिं, एम निश्चय जाणवु हवे गर्भज मनुष्य संबंधि चउद स्थानक देखाडे छे उचारे सुवाके० ॥ मनुष्य संबंधि विष्टाने विषे समूर्छिम मनुष्य उपजे ॥ वाके० बीजे पण थानके जाणवाने काजे "वा" शब्द जाणवो॥१॥पासवणे सुवाके० ॥ लघु नित्यने विषे ॥ २ ॥ वंतसुवाके० ॥ वमनने विषे ॥ ३ ॥ पत्ते सुवाके० ॥ मुखे करीने पीत नाखे छे तेने विषे॥४॥ पूये सुवाके०। पर जे लोहीपाच कहिए तेने विषे ॥ ५॥ शोणिये सुवाके०। मनुष्य संबंधि रुधिरने विषे ॥ ६ ॥ शुक्के सुवाके० ॥ जे मनुष्यने तिर्यचने विषे ॥ ७ ॥ शुक्र पुग्गले परीसाडे सुवाके० ॥ तिर्यचना पुद्गलने विषेके० ॥ जाग कहिए परीसाडे सुवाके० ॥ जुदा जुदा पडया तेने विषे ॥ ८ ॥ विगीयेके लेवरे सुवाके० ॥ मनुष्यने विगयेक० ॥ जीव गया पछी कलेवर मुवु ते शरीरने विषे ॥ ९ ॥ थिपूरी समिगोये सुवाके० ॥ स्त्रिपुरुषना संजोगने विषे ॥ १० ॥ वलखाने विष ॥ ११ ॥ शलेखमने विषे ॥ १२ ॥ नगर निधमणे सुवाके० ॥ नगरनी खालने विषे, जे मनुष्य संबंधि लघु नित्य वडि नित्य एठवाणि प्रमुख वहेतु रहे, तेहने विषे समूर्छिम उपजे ॥ १३ ॥ सवे सुचेव असुये सुथाणे सुवाके० ॥ सर्व सघला मनुष्य संबधी अशुची थानकने विषे एटले मनुष्यनु थूंक तथा परसेवो तथा एठवाणी अथवा अनपाणी जमतां एठु मुके ते अथवा मुखे मुहपति पणी बांधि राखे तेह मुहपति थूंके करीन भींजी जाए तेहने विषे समूर्छिम मनुष्य असंख्यात उपजे इत्यादिक समूर्छिम उपजवाना थानक पणां

छे ते सतगुरु सेवना थकी मालम पडे, ए चौद स्थानकिया जीव ॥ १४ ॥ अगुलसअसखिजे भाग मतिये ऊगाहणायेकें० ॥ एक आगुलनो असख्यातमो भाग मात्र ऊगाहणायेकें० ॥ शरीरनु प्रमाण एटले ए पदे करीने असख्यात जीव कहिए असनियेकें० ॥ असंनिया मिछु दधियेकें० ॥ मिथ्यात्वि न होए अपर्याप्तो, अतो मुहुताये केहता अतर मुहूर्तनु आउखु पुरु करीने काल करे ॥ चय उपचय थाए, पूर्वनी पेरे नवा ऊपजे केटला एक थानकने विषे जीव सद्दहता नथी तेने जीवशुयजीवसनारूप मिथ्यात्व थाए, कोइक जीव संदेह करे जे ए मध्ये उपजता हशे के नहि ? उपज्यानो समय ते ससयक कें०॥ तेहने ससायिक मिथ्यात्व कहिए ए समूर्छिम मनुष्यनी खाण ॥ ६ ॥ नभेद्दा जन्मयेपतिइति उभेदजा पतगखजारी उपरे मवादिय उभेदकें० ॥ भूमिफोडीने बाहेर नीकले एटले बेरेंद्रि आदिक त्रसजीव उपजे छे भूमिफोडिने बाहेर प्रगट थाए ते उभेदज भेद कहिए जिमसुकातलाव मध्ये जीवउपजे पछी बाहार नीकले छे, ते पतग, खजारी उपर म्वादिक जीव विशेष जीवना नाम जाणवा यद्यपि ए समूर्छिमनी जात छे, तो ए भूमि फोडिने बाहर नीकले ए भेद ग्रहिने जूदो भेद कर्यो जेम रसजा पण भेद जूदो कीधो छे, तेम ए पण भेद जाणवा. ए उभेदज जीवनी सातमी खाण. ॥ ७ ॥

उत्पादी इति उत्पादजा उत्पादे भवा इति उत्पातिका देवानारकिश्च उत्पातकें० ॥

देवताने उपजवानी सभानु नाम उत्पात सभा कहिए त्यां देवता आवीने ... पं. बत्रीस वर्षनो जुवान पुरुष उठी बेसे,

उत्पात सभा मध्ये सज्यामा उपजे, एटला वास्ते देवतानी उत्पात योनि कहीये नारकी पण कुंभिपाक मध्ये आवीने अतर्मुहूर्तमां प्रगट थाए ते वास्ते नारकी पण उत्पात योनि कहीए ए आठमी उत्पातजा जीवनी खाण ॥ ८ ॥ अडया ॥ १ ॥ पोयाए ॥ २ ॥ एह बे खाण गर्भज पचेंद्रिय तिर्यंचनी जाणवी ॥ २ ॥ जरायुजा ए गर्भज मनुष्य अने तिर्यंचनी खाण जाणवी ॥ ३ ॥ रसीया इति वासी विदल बोळादिकने विषे पाणीना ससर्गन विषे थकी बेरांद्रि याजीवनी खाण ॥ ४ ॥ ससेइमा ॥ १ ॥ उभीया ॥ २ ॥ इति बे विगलेंद्रिनी खाण ॥ ५ ॥ समूर्छिम ए बेरांद्रि, तेरांद्रि, चउरांद्रि, पचेंद्रि असन्नीया समूर्छिम मनुष्य तिर्यंचनी खाण ॥ ६ ॥ उवाइया ए देवता नारकीनी खाण ॥ ८ ॥ ए आठ खाण त्रस जीवनी जाणवी रसियाएने चोथी खाणने विषे जे ठेकाणे जे जीव रह्यो छे ते ठेकाणे जीव मानता नथी तेहने विषे जीवसनारूप मिथ्यात्व थाय जेने सशय छे तेने सशयिक मिथ्यात्व कहिए ए सशयिक मिथ्यात्वरूप चोथो भेद ॥ ४ ॥ अथ अणाभोगरूप मिथ्यात्वनो पाचमो भेद कहीए छीए जे अणाभोग ते समजण विना प्रवर्त्तनु ते जीव जीवादिकनु स्वरप जाणे नहि, समजे पण नहि, सन्ना पण नहि एकद्रियादिक पचेंद्रिय पर्यतने अणाभोगीक मिथ्यात्व कहिए ए पांचमो भेद ॥ ५ ॥ एटले पांच मिथ्यात्व कह्यां बार अव्रतके० ॥ बार अविरति ते केइ ? बेमणा ॥ १ ॥ करण ॥ १५ ॥ नीयम छ जीव व हेइके० ॥ एकमननी अविरति ॥ १ ॥ पाच इंद्रि छ अव्रत ॥ ६ ॥ छ काय जाणवी । इति गाथानो अर्थ समाप्त ॥

॥ इति मुनिश्री हूकुमचदजी विरचिते द्वीतियोध्याय परीपूर्णम् ॥ २ ॥

एवु मिथ्यात्व जाणी टालीने समकितनी प्राप्ति थाय ते समकितना ३ भेद छे उपशम ॥ १ ॥ क्षय उपशम ॥ २ ॥ क्षायक ॥ ३ ॥ ते मद्धे प्रथम जे जीव समकित पामे ते उपसमसमकित पामे तेनु स्वरूप देखाडे छे अनादि कालनो जीव मिथ्यात्वि हतो ते काललब्ध पामीने मार्गानुसारी थाय तिहा त्रण करण करे यथा प्रवृत्ति करण ॥ १ ॥ अपूर्व करण ॥ २ ॥ अनिवृत्तिकण ॥ ३ ॥ प्रथम थकी यथा प्रवृत्ति करण करे तेनो विधि कहिए छीए । ज्ञानावर्णी ॥ १ ॥ दर्शनावर्णी ॥ २ ॥ वेदनी ॥ ३ ॥ अतराय ॥ ४॥ ए च्यार कर्मनी त्रीस कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति छे तेम येथी २९ ओगणत्रीस कोडाकोडि अने एक पल्योपमनो असख्यातमो भाग अधिक एटली स्थिति खपावे, तथा मोहनि कर्मनी सित्तेर कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति छे, ते मध्येथी उगणोतर कोडाकोडी सागरोपम तथा पल्योपमनो असख्यातमो भाग अधिक एटली खपावे, तथा नामकर्म ॥ ६ ॥ गोत्रकर्म ॥ ७ ॥ ए बे कर्मनी वीस कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति छे ते मध्येथकी ओगणीस कोडाकोडि सागरोपम तथा पल्योपमनो असख्यातमो भाग अधिक एटली स्थिति खपावे, शेषथाकती एक कोडाकोडी सागरोपम मध्येथी एक पल्योपमनो असख्यातमो भाग ओछी एटली स्थिति आयुवर्जिने साते कर्मनीराखे, एवाज उदासि परिणाम ससारथी उदवगता पामे, ससारने अनित्य जाणतो थको ससारथी महा भय भ्रांत थातो थको एम परिणामनी धाराये चडतो थको एक अतर्मुहूर्त्त माहे साते कर्मनी उत्कृष्टि स्थिति जेम पूर्वे कही तेम खपावे तेने यथाप्रवृत्ति करण कहीए ते यथा प्रवृत्ति ज्ञान विना घणा जीव करे छे एक जीव अनतीवार करे, अभव्य पण करे माटे ए करण कीधा काइ सिद्धि थई नहि हवे ए करणे रहेतो अत

मुहूर्त रहे, चडे तो अपूर्व करणे जाय, पडेतो पाछो ठेकाणे आवे. मार्गने दृष्टांते जेम त्रण पुरुष भेला थइने मार्गे चाल्या जाय छे, आगल जातां महा अटवीमां पोहोत्या त्या भय घणो जाण्यो, त्यारे एक जणो पाछो वल्यो, एक जणो त्यां उभो रह्यो, तेने चोरे पकड्यो, एक जणो हिमत करीने आगल गयो ते वछित पूरे गयो, ते सुख पाम्यो ए दृष्टांते उपनय जोडीये छीए. त्रण ससारी जीव स साररूप अटवीमां भमतां यथा प्रवृत्ति करण स्थानके पोत्या, ते म ध्येथी एक जीव पाछो वल्यो, तेने रागद्वेष चोरे पकडयो, बीजो जीव त्यां रह्यो ते मिथ्यात्व कर्मने उदये करीने उत्सूत्र प्ररूपवा लाग्यो, अभिनिवेसिक मिथ्यात्वना जोगथी कुदेव कुगुरु कुधर्मने अंगीकार करीने रह्यो, मनथकी खोटु जाणे पण कदाग्रहने लीधे ते मेले नहि हवे त्रीजो जीव अपूर्व करण करीने समकित पामे सु खी थाय इति उपनय सपू० ॥ इति प्रथम कर्ण पूर्णः ॥ १ ॥ हवे बीजा अपूर्व करणनु स्वरूप देखाडे छे ॥ अपूर्वके० ॥ पूर्वे एवा भाव कोइ काले आव्या नथी विशेष निर्मल भावे होय, ग्रा माटे जे जे जीवने समकित पामवु होय ते जीवने एवा भाव होय ते प्र थम यथाप्रवृत्ति करण थकी अपूर्व करण सुधी जतां रस्तामां अ सख्याति काडियो छे परतु कर्म पयडी टिका मध्ये त्रीस गवेखी छे, ते काडियो के० पावडियो कहीए, तेटला अध्यवसायना ठेकाणा छे, इहां विचार घणो छे, परतु आ ग्रथने विषे व्यवहार नयनी मुख्यता विशेष छे माटे इहा वात वर्णवी नथी, विशेष जोवी होय तो श्रीकर्मपयडीनी टिका थकी जोजो हवे जे यथाप्रवृत्ति करणने विषे जे सात कर्मनी स्थिति एक कोडाकोडी सागरोपम ते मध्ये एक पल्योपमनो असख्यातमो भाग ओछो रही हती ते मध्ये थकी एक मुहूर्त खपावे त्यारे अपूर्व करण थाय

त्यारे अपूर्व नाम वीर्य उदीरे. पछी इहा थकीऽपूर्व नामा मोधर लेइने अगाडी ग्रथी उपर जाए त्यां जईने ग्रथीने विदारे, ग्रथि भेदे तिहा अनिवृति करण थाय तिहा पूर्वे रहेलां कर्म तेमांथकी एक मुहूर्त्त स्थितिखपावे, तिहां अनतानुबधि चोकडी तथा मिथ्यात्व मोहनी ए पाच प्रकृति उदय आवीरुधे, विपाके तथा प्रदेसे. अत मुहूर्त्त मात्र पच प्रकृति उपसमावे, ते माटे एने उपसम समकित कहिये. ते उपर द्रष्टात देखाडे छे. जेम कोइ खारी भूमिना दावा नलनी परेके० ॥ जेम कोईक दावानल बलनो बलतो आवे एम करता आगल खारी भूमि आवी, ते खारी भूमिने विषे त्रखला प्रमुख कांई छे नहिं जे तेने बाले, तेम इहां खारी भूमि समान समकित भूमि कहीये, अने दावानलसमान मिथ्यात्व कहिये, ते जेम दावानलनी अग्नि खारी भूमि ए आवता रोकाणी ॥ आपथु आप उपसमी तेम इहा मिथ्यात्व पण समकित भूमिकाये प्रवेश करी शके नहिं, ते पण आपशु आप उपसमे, ए दृष्टात जाणवो ॥ १ ॥ एम जीव उपसम समकित पामे, ते उपसम समकितमा शुभ परिणामे मिथ्यात्व मोहनीना त्रण पूज करे, एक शुद्ध पूज ॥ १ ॥ बीजो अर्ध शुद्ध पृज ॥ २ ॥ त्रीजो अशुद्ध पूज ॥ ३ ॥ उपसम समकितने अंते शुद्ध पूजनो उदय थाय तो क्षयोपसमसम्यक्त कहीए, अर्ध शुद्ध पृजनो उदय थाय तो मिश्रगुणठाणु त्रीजु जाणवु. अशुद्ध पूजनो उदय थाय तो मिथ्यात्व कहीए. जेम कोद्रवधान्यना त्रण पूज करीए एक छोतरां काढीने पूज करे, बीजो पूज खांडीने एमनो एम मूकयो, त्रीजो पूज अशुद्ध के०॥ कोदरा वण खांड्या; एम जलनो दृष्टात,एक जल निर्मल कर्यु,बीजु थोडु निर्मल, त्रीजु दूर्गध व्यापी. ए दृष्टांते शुद्ध जल ते समकित मोहनी, अर्ध शुद्ध ते मिश्र मोहनी, अशुद्ध ते मिथ्यात्व मोहनी जाणवी हवे उप

सम समकित आदि देइने समकितना घणा भेद छे, पण उपसम अधिकार समाप्त ॥ १ ॥ हवे क्षयोपसम कहे छे ते क्षयोपसम वि चित्र प्रकारनु छे, कर्मना क्षयोपसमना घणा भेद छे, ज्ञानावर्णि कर्म ॥ १ ॥ दर्शनावर्णि ॥ २ ॥ मोहनी ॥ ३ ॥ अंतराय ॥ ४ ॥ ए च्यार कर्मनो क्षयोपसम थाय छे, पण इहां मोहनी कर्मनो अधि कार छे जे दर्शन मोहनी कर्मना क्षयोपसमथकी जीव समकित पामे ते माटे विचित्रपणु छे बहु विध जनागमेके०॥ जिनना आ- गम सिद्धांतने विषे बहु विधके०॥ घणा भेद कीधा छे एटले चोथा गुण ठाणानु समकित जूदु, अने पांचमा गुणठाणानु पण समकित जूदु, तथा छठा सातमा गुणठाणानु समकित जूदु जाणवु यद्यपि- समकितनी रुची जोता तो एकज भेद छे तोपण कर्म मोक्ष उपस मादि भेदे करीने समकितना घणाभेद थाय छे, ते किया ? एक प्रकारे समकित, ते श्रीअरिहंत भगवानना वचनपर रुची जे अरिहंत भग- वंते कह्यु ते सत्य छे एवु एकाश्रित, ते तत्त्वरुची कहीए ए चोथा गुणठाणाथी मांडीने संग्रह नयने मते एक प्रकारे समकित कहीए

हवे केटला प्रकारे समकीत कहीए ते कहे छ, एक द्रव्य स मकित ॥ १ ॥ बीजु भाव समकित ॥ २ ॥ जे द्रव्य समकित जे जीवादि नव पदार्थने सम्यक् प्रकारे जाणी जाणीने सद्दहे ते द्रव्य समकित कहीए ॥ ॥ यदुक्त ॥

जीवाइ नव पयत्थे ॥ जो जाणेइतस्स होइ सम्मत्त ॥ भावेणसद्दहतो॥ अयाणमाणेविसम्मत्त॥१॥

जीवादिक नवतत्वने जाणे तेने समकित कहीए भावेणके० ॥ भावे करीने सद्दहतो थको जे जीव अयाणमाणेके० ॥ नव तत्वने नय निक्षेपे करीने न जाणतो, पण समकित छे, ए गाथार्थ. ॥

जे भाव समाकित ते नव तत्त्वना भेद नयनिक्षेपे करीने सम्यक् प्रकारे जाणीने सद्दहे ॥ ते भाव समकित कहीए ॥ २ ॥ वली निश्चय व्यवहारे करीने बे प्रकारे समकित जाणवु, ते जीवनु ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ तेमा शुभ परिणाम ते निश्चय समकित कहीए इत्यादिक समकित केवलि गम्य जाणवु छद्मस्थ जाणी शके नही अरुपीपणा माटे हवे व्यवहार समकित ते सवेगादिकना आचारे करी ओलखाय ते व्यवहार समाकित कहिये तेनु स्वरूप आगल कहिशु ॥ २ ॥ वली निसर्गने उपदेश ए बे प्रकारे जाणवु ते नीसर्गके० ॥ स्वभाव कहिये गुरुना उपदेश विना जे जीव पोतानी मेले उपदेश पामे ॥ ते निसर्ग समकित कहिये, ते उपर मार्गनो दृष्टांत जाणवो जेम कोइक मार्ग भूल्यो होय, ते पोतानी मेलेज मार्ग जाणे, बीजो पुरुष कोइना कीधाथी मार्ग जाणे । तेम इहां गुरुना उपदेशविना समकित पामे तेने निसर्ग समकित कहिये, बीजो गुरुना उपदेशे समकित पामे तेने उपदेश समकित कहीए, वली त्रण प्रकारे समकित कह्यु छे, एक कारक समकित ॥ १ ॥ बीजु रोचक समकित ॥ २ ॥ त्रीजु दिपक समकित ॥ ३ ॥ कारक समकित ते सिद्धांतमां भाव कह्यो छे ते भावने अनुसारे क्रिया करे, जेम सर्व प्राण ॥ १ ॥ सर्व भुत ॥ २ ॥ सर्व जीव ॥ ३ ॥ सर्व सत्त्व न हणे ॥ एटले छ कायना जीवने हणे नहि, हणावे नहि, हणताने भलो जाणे नहि ॥ मन वचन कायाये करीने एहवा नव कोटिना पच्चखाण पालनार साधुने कारक समकित होय ॥ जम्मंति पासहित मुणंति इतिवचनात् ॥ १ ॥ हवे बीजु रोचक समकित ते जीवादि पदार्थ जाणीने निरपराध निरपेक्षपणे सकल्पीने त्रसादिक जीवने हणे नहि, यथा योग्य चोथे पाचमे गुणठाणे रोचक समाकित कहीये. ए बीजु

सम समकित आदि देइने समकितना घणा भेद छे, पण उपसम अधिकार समाप्त ॥ १ ॥ हवे क्षयोपसम कहे छे ते क्षयोपसम विचित्र प्रकारनु छे, कर्मना क्षयोपसमना घणा भेद छे, ज्ञानावर्णि कर्म ॥ १ ॥ दर्शनावर्णि ॥ २ ॥ मोहनी ॥ ३ ॥ अतराय ॥ ४ ॥ ए च्यार कर्मनो क्षयोपसम थाय छे, पण इहां मोहनी कर्मनो अधिकार छे जे दर्शन मोहनी कर्मना क्षयोपसमथकी जीव समकित पामे ते माटे विचित्रपणु छे बहु विध जनागमेके०॥ जिनना आगम सिद्धातने विषे बहु विधके०॥ घणा भेद कीधा छे एटले चोथा गुण ठाणानु समकित जूदु, अने पांचमा गुणठाणानु पण समकित जूदु, तथा छठ्ठा सातमा गुणठाणानु समकित जूदु जाणवु यद्यपि-समकितनी रुची जोता तो एकज भेद छे तोपण कर्म मोक्ष उपसमादि भेदे करीने समकितना घणाभेद थाय छे, ते किया ? एक प्रकारे समकित, ते श्रीअरिहंत भगवानना वचनपर रुची जे अरिहंत भगवते कह्यु ते सत्य छे एवु एकाथित, ते तत्त्वरुची कहीए ए चोथा गुणठाणाथी माडीने सग्रह नयने मते एक प्रकारे समकित कहीए

हवे केटले प्रकारे समकीत कहीए ते कहे छ, एक द्रव्य समकित ॥ १ ॥ बीजु भाव समकित ॥ २ ॥ जे द्रव्य समकित जे जीवादि नव पदार्थने सम्यक् प्रकारे जाणी जाणीने सद्दहे ते द्रव्य समकित कहीए ॥ ॥ यदुक्त ॥

जीवाइ नव पयत्थे ॥ जो जाणेइतस्स होइ सम्मत्त ॥ भावेणसद्दहतो॥ अयाणमाणेविसम्मत्त॥१॥

जीवादिक नवतत्वने जाणे तेने समकित कहीए भावेणके० ॥ भाव करीने सद्दहता थको जे जीव अयाणमाणेके० ॥ नव तत्वने नय निक्षेपे करीने न जाणतो, पण समकित छे, ए गाथार्थ ॥

वायगाणं ॥ ९ ॥ किलविसियाणं ॥ १० ॥ तिरीछी-
याणं ॥ ११ ॥ आजिवीयाण ॥ १२ ॥ अभीयोगी-
याणं ॥ १३ ॥ सलिंगाणदसणवावणगाणं ॥ १४ ॥
एएसिणंदेवलोगेसु ॥ उववजमणाण ॥ कसकहिउव-
वाएगोयमा ॥ असजणयभवियवदेवाण ॥ जुहणेणं ॥
भवणवासिसूवोकोसेण ॥ उवरीमगेदिजयेसू ॥ अवि-
राहियसजमाणंजेदूणेण ॥ सुहमेकप्पेउकोसेण ॥ सव-
थसिद्धेविमाणे ॥ विराहियसंजमाणंजह ०॥ भवन०॥
उकोसेणंसोहमेकप्पे ॥ उकोसेणअचुएकप्पे ॥ विरा-
हियसजमासंजमाणं ॥ जहण ०॥ भवणवासिसुउको-
सेणं ॥ जाइसीयेसुअसणाणं ॥ जहणभवणे ०॥ उ-
कोसेणवाणवतरेसुयवसेसासवे ॥ जह०॥ भवणवासि-
सुउकोसेण ॥ वोत्छिमितावसाणं ॥ जोइसीयेसुदप्र्पूया-
ण ॥ सोहमेकप्पे ॥ चरगपरीवायगाणं ॥ वेलेलोएक
प्पेकिविसियाएण ॥ लतएकप्पे ॥ तेरीछियाणं ॥ स
हसारेकप्पे ॥ अजियाण ॥ अचुएकप्पे ॥ अभीयो-
गीयाणं ॥ अचुएकप्पे ॥ सलिगिणदसणवावणगाणं॥
उवरीमगे ॥ विजयेसु ॥ १ ॥

एहनो लेशमात्र अर्थ कहे छे ॥ असजयके ०॥ चारित्र प्रमाण
कहित द्रव्यलिंग धारी ॥ भवियके ०॥ देव गति गमन योग्य द्रव्य

समकित ॥ २ ॥ हवे त्रीजु दिपक समकित ते पोते मिथ्या दृष्टि यको पर जीवने जीवादि पदार्थनु स्वरूप सिद्धांतने अनुसारे समजावे, समकितादि गुण पमाडे, तेहना प्रतिबोध्या मोक्ष पण जाय ते वारे वादी बोल्योके जेने दिपक समकीत तेने शो गुण थाय ? तेनो उत्तर दे छे, जे दिपक समकितनो पण एटलो गुण छे जे उत्कृष्टि पुन्यप्रकृति बाधे तो नव ग्रैवेयक सु धीनी बाधे शामाटे जे उत्सूत्रनी प्ररुपणा न करे, पोते मिथ्यादृष्टि होय पण परने मिथ्यात्व पमाडे नहि, अने नव निन्हवादिक पूर्वे एवी क्रिया अनुष्टान आकरु करे तो पण किल्विषियो देवता थाय, ए उत्सूत्रनी प्ररुपणा करीने पोताना आत्मा ने तथा परना आत्माने दूर्गतिये घाले ए उत्सूत्रनी प्ररुपणानो करनारो महापापी जाणवो तेनी अपेक्षाये दिपकसमकितवालो घणो ज रुडो जाणवो पोते मिथ्यात्व थको परने मिथ्यात्व पमाडे नहि, तेज गुणे करीन नवग्रैवेयके जाय ॥ यदुक्त ॥ जइ ल्गमीत्छदिठ्ठि ॥ गेविना जाव जतीमो ॥ कोमपयमवि असद्दहतो ॥ सूत्तमिछिदिधिओ ॥ १ ॥ यत्रापिद्वादशांगीसद्दे ॥ एक पद मात्र न सद्दहेतो सूत्र मा मिथ्या दृष्टि कह्यो छे ॥ साधु मूल गुणे शुद्ध होय एटले साधुनी क्रिया शुद्ध पाले, पण जो उत्सूत्रनी प्ररुपणा न करे,तो नव ग्रैवेयके जाय ते श्रीभगवति सूत्रमा कह्यु छे प्रथम सतकेबीजे उदेसे

तजहा ॥ अहभत्ते । अहजय भवि यद वद वाण । १ । अविराहियसजमाण । २ । विराहियसजमाण । ३ । अविराहीयसजमासजमाण ॥ ४ ॥ विराहियसंजमासजमाण ॥ ५ ॥ असणीण । ६ । धतावसाण ॥ ७ ॥ कदप्पीयाण ॥ ८ ॥ चरग परी

किथिसीय भारण कुणइ ॥ ९ ॥ जे जघन्य भुवनपति अने उत्कृष्ट लातक देवलोक ॥ १० ॥ तिरीरिछयाणके० ॥ तिर्यंच गाय भेंस प्रमुखे देश विरति आदे देइने अकाम निर्जराना धणी जघन्य भुवनपति उत्कृष्टो सहसार आठमू देवलोक ॥ ११ ॥ आजिवियाणके० ॥ पाखडी वेष धारीणं ॥ गोसाला सिष्याणा मिल्यने ॥ कोइक गोसालीयाने पण आजिवकारे छे तथा पाखंडी वेषधारीने आजीवका कहिये ते जघन्य भुवनपति उत्कृष्ट अच्युत बारमु देवलोक ॥ १२ ॥ अभीयोगीयाणके० ॥ अभीयोग कहिए ॥ विद्या मत्रादीक ॥

॥ यदूक्त ॥

दुविहापलुयभियोगे ॥ दव्वे भावेय होइ नायव्वो ॥ दव्वमि होइ जोगा ॥ विजामताय भावमिति ॥ १ ॥

जोग चर्णादि तत्र विद्यामंत्र ॥ विद्या अक्षरानुयोग ॥ एटले व्यवहार थकी चारित्र पाले पण मत्र जत्रादिके मवर्त्ते ते अभीयोगीका कहिये ते जघन्य भुवनपति । उत्कृष्टो बारमु देवलोक ।१३। सलिंगीण दसण वावणाणके० ॥ सलिंगीणके० ॥ साधुना वेष धरनारा ॥ दसण वावण गाणके० दर्शन सम्यक्त व्यापन्न भ्रष्ट ॥ जे खाते दर्शन व्यापना सम्यक्त रहिता ते जघन्य भुवनपति उत्कृष्ट नव ग्रैवेयक जाय ॥ १४ ॥ एटले दिपक सम्यक्तनो ए गुण जे इंद्रिय जघन्य सुख पामे उत्सूत्रनी प्ररूपणा न करे ते माटे ए दिपक सम्यक्तनो गुण छे ए त्रीजु सम्यक्त ॥ एटले क्षय उपशमना अनेक भेद कह्या हवे क्षायक समकितना भेद कहे छे.

देव, जे जीव मनुष्यनी गतिथकी कालकरीने देवता थाय ॥ तेने द्रव्य देव कहिए ॥ एटले कोइ भव्य जीव चक्रवर्ति प्रमुखनी पूजा सत्कार बहुमान साधुने करता देखीने ते बहु मानादिकने कारणे॥ मिथ्या दृष्टि चारित्र लेई सपूर्ण समाचारीने अनुसारे क्रिया पाले, ते उत्कृष्टोनवग्रैवेयक सुधी जाय पण उत्सूत्रनी प्ररुपणा न करेतोना ए ए श्लोकनो भावार्थ जाणवो ॥१॥अविराहियसंजमाणकें०॥ अखंड चारीत्रना पालनार साधु जघन्य सुधर्मदेवलोके जाए उत्कृष्टो सर्वार्थ सिद्धे जाये ॥ २ ॥ विराहिके ० ॥ विराधक चारित्रनो धणीजघन्य भवनपति उत्कृष्टो सौधर्मदेवे ॥ ३ ॥ अविराहियम जमा संजमाणकें० ॥ अखंड श्रावकनां व्रत पालीने जघन्य सौध र्मदेवे उत्कृष्टो अच्युत ॥ एकव्वेके० ॥ बारमु देवलोक ॥ ४ ॥ विराहियके० श्रावक व्रतधारीने जघन्य भवनपति ॥ उत्कृष्टो जो तिषी ॥ ५ असणिकें० ॥ असनियो पचेंद्रिय कोइक अकाम नि- र्जराए करीने जघन्य भुवनपति ॥ उत्कृष्टो व्यंतर ॥ ६ ॥ तनाव साणके० भूमिए पड्यां पांदडाना खानार तपस्वी जघन्य भुवनपति ॥ उत्कृष्टो जोतिषी ॥ ७ ॥ कदप्पियाणकें० ॥ कदर्पके० ॥ पर- हास्य तेहने करीने निर्भे ॥ ते कदर्पिक कहीए ॥ एटले जे व्यवहार थकी चारित्र पाले॥ पण परनी हास्य मस्करी विशेष करे ते जघन्य भवनपति अने उत्कृष्टो सौधर्मदेव लोके ॥ ८ ॥ चरग परीवय गाणकें० । चरक त्रिदंडी परिव्राजकके० कपिल शिष्या जघन्य भु वनपति उत्कृष्टो ब्रह्म देवलोक पांचमु तेने पामे कारणके तेनस जीवनी दया विशेष पाले छे । ९ ॥ काबि सियाणकें० किल्बिष पाप उत् सूत्ररूप जेपाने कुल विषिका ॥ एटले व्यवहार थकी चा रित्रवंत ज्ञानादिकना अवर्ण वादना बोलनारो ॥ यदुक्त ॥ नाण सकेवलिण ॥ धम्मायरीय सवस साहुण ॥ माये अवणवाए ॥

किथिसीय भावण कुणइ ॥ ९ ॥ जे जघन्य भुवनपति अने उत्कृ-ष्टु लातक देवलोक ॥ १० ॥ तिरीरिछियाणके० ॥ तिर्यंच गाय भेंस प्रमुखे देश विरति आदे देइने अकाम निर्जराना धणी जघन्य भुवनपति उत्कृष्टो सहसार आठमू देवलोक ॥ ११ ॥ आजिवियाणके० ॥ पाखंडी वेप धारीण ॥ गोसाला सिप्याणां मिलने ॥ कोइक गोसालीयाने पण आजिवकारे छे तथा पाखंडी वेपधारीने आजीवका कहिये ते जघन्य भुवनपति उत्कृष्ट अच्युत बारमु देवलोक ॥ १२ ॥ अभीयोगीयाणके० ॥ अभीयोग कहिए ॥ विद्या-मन्त्रादीक ॥

॥ यदूक्तं ॥

दूविहापलुयभियोगे ॥ दव्वे भावेय होइ नायव्वो ॥ दव्वमि होइ जोगा ॥ विजामताय भावमिति ॥ १ ॥

जोग चर्णादि तत्र विद्यामत्र ॥ विद्या अक्षरानुयोग ॥ एटले व्यवहार थकी चारित्र पाले पण मत्र जत्रादिके मवर्त्ते ते अभीयोगीका कहिये ते जघन्य भुवनपति । उत्कृष्टो बारमु देवलोक ।१३। सलिंगीण दसण वावगाणके० ॥ सलिंगीणके० ॥ साधुना वेप धरनारा ॥ दसण वावण गाणके० दर्शन सम्यक्त व्यापन्न भ्रष्ट ॥ जे खाते दर्शन व्यापना सम्यक्त रहिता ते जघन्य भुवनपति उत्कृष्ट नव ग्रैवेयक जाय ॥ १४ ॥ एटले दिपक सम्यक्तनो ए गुण जे इद्रिय जघन्य सुख पामे उत्सूत्रनी प्ररूपणा न करे ते माटे ए दिपक सम्यक्तनो गुण छे ए त्रीजु सम्यक्त ॥ एटले क्षय उपशमना अनेक भेद कह्या हवे क्षायक समकितना भेद कहे छे.

एटले अनुतानुबंधियो क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ माया ॥ ३ ॥ लोभ ॥ ४ ॥ मिथ्यात्वमोहनि ॥ ५ ॥ समकित मोहनि ॥ ६ ॥ मिश्र मोहनी ॥ ७ ॥ ए साते प्रकार तिक्षण करीने क्षपक श्रेणि माडे, त्यारे क्षायक समकित कहिये आगल कदि सात प्रकृति खपावे पहेला आयुष्य बाध्यु होय, पछी सात प्रकृति खपावे ते ने खडश्रेणि क्षायक कहिये एटले उपशम ते सात प्रकृति उपसमावे तेन उपशम कहिए ॥ १ ॥ अने क्षयोपशमते जे समकित मोहनीरूप पूजनो उदय थाय अने समकित पामे ते क्षयोपशम समकित कहीये ॥ २ ॥ सात प्रकृति खपावे तेने क्षायक समकित कहिए ॥ ३ ॥ ए त्रण समकित कह्या वली च्यार भेदे समकित कहिए त्यारे सास्वादन समकित मेलवीए, ते जेम कोइक पुरुष खीर खाडनु भोजन करी तुरत वमेते थाणिने शोस्वाद आवे ? तेम जीव पण उपशम समक्तिथकी पडे तो बीजे गुणठाणे आवे, तेहने सास्वादन समकित कहिए, तेहनो काल उत्कृष्टो षट आवलीनो जघन्य एक समयनो जाणवो ॥ ४ ॥ वली समकित पाच भेदे कहिये त्यारे वेदक समकित मेलवीये ते वेदक समक्ति एटले समकित मोहनी क्षय करवानो एक समय बाकी रहे अने क्षायक समकित पामवानो पेहेलो समय ते वेदक समकित जाणवु ॥ ५ ॥ हवे ए समकित रहेवानी स्थीतिनो काल कहे छे उपशम समकित नो अतमुहूर्तकाल ॥ १ ॥ सास्वादननो छ आवलीकाल॥२॥वेदक नो एक समयनो काल ॥ ३ ॥ क्षयोपशमनो छासठ सागरोपम झाझेरानो काल ॥ ४ ॥ क्षायक समकितनो एक सागरोपम झाझे रानो काल ॥ ५ ॥ हवे ससारने विषे परिभ्रमण करता एक जो वने, एवा ने समकितना भेद ते केटलीक वार आवे ॥ उपशम ॥ १ ॥ तथा सास्वादन ॥ २ ॥ ए वे समकित उत्कृष्ट आवे तो

पाचवार आवे क्षायक ॥ १ ॥ तथा वेदक ॥ २ ॥ ए वे ससारमां एकवार आवे. हवे एनो विरहकाल कहे छे ॥ उपशम ॥ १ ॥ ॥ सास्वादन ॥ २ ॥ क्षयोपशम ॥ ३ ॥ ए त्रणनो विरहकाल उत्कृष्ट अर्धपूद्गल परावर्तन होय, जघन्यथी अतर्मुहूर्त जाणवु, क्षायक तथा वेदक ॥ २ ॥ ए बे समकितनो विरहकाल होय नहि, शा माटे जे वेदक समकितनी रहेवानी स्थिती एक समयनी छे अने ससारमा भमता एक जीव एकवार वेदक समकित पामे, बीजी वार पामे नही, त्यारे केनी साथे विरहकाल मेलवीए । माटे एहने विरहकाल होय नहि, तथा क्षायक समकित आव्या पछी जाय नहि, अने आव्या विना विरहकाल थाय नहि, एटला माटे वेदक तथा क्षायक ए बेने विरहकाल होय नहि एटले समकितना स्वरूपना भेद कीधा पण हे भव्यप्राणी जेने जेवा प्रकारनो क्षयोपसम होय एटले जेवो क्षयोपसम, ते भेद धीरज राखीने अगीकार करवो हे भव्य प्राणियो ? पोतानी बुद्धि निर्मळ राखी शुद्ध उपयोगे करीने समकितनी रुचि आचार प्रमाणे पालवी हवे जे समकित छे ते बीजा जीवने ओलखवामा केम आवे ? तेनु स्वरूप कहे छे जे लिंग लक्षण इत्यादिक जोयाथकी मालम पडे ते कहे छे. सद्दहणाचार ॥ ४ ॥ लिंग ॥ ३ ॥ विनय० ॥ १० ॥ शुद्धि ॥ ३ ॥ दोष ॥ ५ ॥ प्रभाविक ॥ ८ ॥ भूषण ॥ ५ ॥ लक्षण ॥ ५ ॥ जत्ना ॥ ६ ॥ आगार ॥ ६ ॥ भावना ॥ ६ ॥ स्थानक ॥ ६ ॥ एव सडसठ बोल समकितना ॥ हवे एनो अर्थ सक्षेपे देखाडे छे प्रथम च्यार सद्दहणा कहे छे जीवादिक नव पदार्थनु यथार्थपणे नयनिक्षेपादिके करीने अर्थनु सम्यक्‌प्रकारे धारवु. एवा जीवने शुभ परिणति ते प्रथम सद्दहणा कही ॥ १ ॥ हवे ज्ञान क्रिया शुद्ध वितराग भाषित करवानी खप विशेष राखे कदापि कोइ कालयोगे

तथा शरीरना योगथकी कोइ दूषण लागे तेनी आलोववानी खप करे तेवा साधुनी भक्ति बहु मान करवु ते बीजी सद्दहणा ॥ २ ॥ उसन्ना ॥ १ ॥ पासत्था ॥ २ ॥ कुशिलिया ॥ ३ ॥ कुलिंगीया ॥ ४ ॥ सेसदा ॥ ५ ॥ ए पाचनी सगतीत जीव ॥ एनु स्वरूप आगल कहीशु. ए त्रीजी सद्दहणा ॥ ३ ॥ कुदर्शनी, योगी, सन्याशि प्रमुखनी सगति तजवी ए चोथी सद्दहणा ॥ ४ ॥

हवे समकितना त्रण्यलिंग कहे छे जे सिद्धातादिक जिनागम ते साभलवानो अभिलाख, ए प्रथम लिंग ॥ १ ॥ स्त्री भर्तारना सुख देवतादिकना सुख तेनी रीती ए धर्म सांभलवानो राग ए बीजु लिंग ॥ २॥ देवगुरुनो विनय वैयावच बहु मानता ॥ आलिस मुकिने विशेषे करे ए त्रीजो लिंग ॥ ३ ॥ जेम धुम्रे करीने अग्नीनु अनुमान थाय ॥ तेम ए त्रण लिंगे करीने अरूचि समकितनु अनुमान थाय ॥

हवे दश प्रकारे विनय कहे छे

॥ यदुक्त ।

अरिहंतसिद्धचेइय ॥ ३ ॥ सुण्य ॥ ४ ॥ धम्मेय ॥ ५ ॥ साहू ॥ ६ ॥ वगोय ॥ आयरीय ॥ ७ ॥ उवझाय ॥८। पवयण ॥९ ॥ दसण ॥ १० ॥ विणउ ॥ १ ॥

अरिहत ते वर्तमानकाले विचरता लेवे एटले मातानीकुखे आवी नेअवतरया त्याथकी मोक्षे जशे त्यासुधी वर्त्तमानकाले विचरता कहीए ए अधिकार भगवति सूत्रना बारमा सतकना नवमा उद्देशे अधिकारे कह्यो छे,

तंजथा ॥ सेकेणठेणंभंते ॥ एवंवुचंतिदेवाधिदेवा ॥ गोयमाजेइम ॥ अरिहताभगवंता ॥ उपणणाणदंसणधराजिवसरवदाश ॥

सेकेणठेण जीव देवाधिदेवा एमा कह्यु जे हे भगवंत देवाधिदेव ते केने कहीए त्यारे भगवते कह्यु जे अरिहंत भगवंत देवाधि देव कहीए एटले अरिहतने देवाधिदेव एकज कहीए ते ... सोने पचोतेर ते एकज कहीए तेम अहिं पण ... देवनी स्थीति पूछे छे ॥

तजथा ॥ भवियदवदेवाण ॥ केवतियंकालंठि तिपन्नता ॥ गोयमा ॥ जहणेण ॥ अंतमुहूर्त ॥ उकोसेण ॥ तिणिपलियोवमाइणरे ॥ देवाणं ॥ पुछा गोयमा ॥ जहणेण ॥ सतवासंसताए ॥ उकोसेणं ॥ चउरासितिपुवसयसहसाइ ॥ धर्मदेवाणं ॥ पुछा गोयमा ॥ जहणेण । अतमूहूर्त्तो ॥ उकोसेणंदेसुणापुवकोडि देवाधिदेवाण ॥ पुछागोयमाजहणेणं ॥ बावतरंवासाए ॥ उकोसेणचउरासितिपुवसयसहसाइं ॥ भाव देवाण ॥ पुछागोयमाजहणेण ॥ दसवासिसहसाइ उकोसेणंतेतिसंसागरोपमइतिभविस्सतीति॰

जे मनुष्य ॥ , ... पचेंद्रि ॥ ए वे गति माहि
जे देवता थनार ... त्यां स्थिति
तर मुहुर्त ... पटले मह

प्रण पल्योपमनु आवखु, त्यां सुधी द्रव्यदेव कहीए नरदेवते चक्रव
र्ति कहीए ते आवखा पर्यंत नरदेव कहीए धर्म देवने साधु करीए
ते जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्टो देशे ऊणु पूर्वकोडनी स्थिति ज्यांथी
चारित्र लीधु त्याथकी धर्मदेव कहीए देवाधिदेव अरिहंत भगवंत
कहीए तेहनी स्थिति जघन्य ७२ वर्षनी उत्कृष्टि चोरासी लाख
पूर्वनी स्थिति एटले आवखा पर्यंत अरिहंत भगवंत कहीए त्यासुधी
पूजनीक कहीए ॥ एटले कोइक कहे छे जे अरिहंत भगवंतने केवल
ज्ञान उपजे तथाचारित्र लीधु त्यारपछी पूजनीक कहीए ॥ ते शुद्ध॥
जे दिवसे मातानी कुक्षे अवतरया उपन्या त्याथकी पूजनीक अरि
हंत भगवंत वीचरता कहीए वली कोइ वादी बोल्यो जे अरिहंत
भगवंत गृहस्थावस्थाने विषे होय त्यारे तेमने साधु निर्ग्रंथ पंच
महाव्रतना पालनारा वांदे नमस्कार करे के न करे ? ए वादीनुव-
चन एनो उत्तर जे वांदवु नमस्कार करवा तेना प्रकार बे छे एक
द्रव्य थकी बीजो भाव थकी ए बे प्रकार छे जे द्रव्य थकी वांदवु
ते पंचांग प्रणाम तथा द्वादश वर्त्तादिक वांदवु । १ । जे भाव थकी
वांदवु ते मनना शुभ परिणाम करीने तथा नमो अरिहंताणं इत्या
दिक नवकार गणवे करीने वांदवु ते भाव वंदन कहिए, ते ज्यां
सुधी अरिहंत भगवंत गृहस्थावस्थामा होय त्यां सुधी साधु भगवंतने
वांदे, जेम गुरु शिष्यने नमो लोए सव्व साहुण इत्यादिक पद गणवे
करीने भगवंतने वांदे छे पण खमासमण द्वादश वर्त्तादिक वंदण क-
रीने द्रव्य वंदनथी नथी वांदता तथा तेमज व्यवहार जाणवो, नमो-
अरिहंताणं ए पदे अतित अनागत अने वर्त्तमान कालना सर्व अ
रिहंत भगवंतने सदा साधु वांदे छे, पण जे दिवसे मातानी कुक्षे
आवीने अरिहंत भगवंत अवतरया, त्या थकी च्यवन कल्याणका
दिके करीने पुजनिक, विशेष प्रकारे चोसठ इंद्र मलीने पुजे छे ते

कारण माटे मातानी कुखे अवतर्‍या एटले मनुष्यपणा माटे श्री अरिहंत भगवंत विचरता कहीए त्याथी यथाजोगे विनय करवो घटे, मोक्षनेऽर्थे ॥ १ ॥ सिद्ध कहेता ॥ आठ कर्मनो क्षय करीने मोक्षे पहोंच्या ॥ ते सिद्ध कहिए ॥ २ ॥ चेइय ॥ श्री अरिहंत भगवतनी प्रतिमा ॥ ३ ॥ शुभ कहेता ॥ सामायकादिक सिद्धांत ॥ तेहनो विनय करवो ॥ ४ ॥ धर्मके ॥ चारित्र धर्म क्षमादिक जाणवु ॥ ५ ॥ ते धर्मनो अधि० ॥ १ ॥ साधु वर्ग पच महाव्रतना पालनार ॥६॥ आचार्य छत्रीस गुणे विराजमान ॥ ७ ॥ उपाध्याय पचवीस गुणे करीने सहित ॥ ८ ॥ प्रवचनके० ॥ सघ कहिए ॥ ॥९॥ दसणके० सम्यक्त कहीए ॥ १० ॥ ए दशनो विनय करवो ॥ ते विनय पाच प्रकारे जाणवो ॥ भक्ति ॥ १ ॥ बहुमान ॥ २ ॥ गुण स्तुति ॥३॥ अवर्णवादनो नाश ॥४॥ आशातना परीहार ॥ ४ ॥ भक्ति ते बाह्य द्रव्ये करीने ॥ ते धन खरचवे करीने ॥ पतिके० ॥ सेवा करे ते भक्तिरूपविनय कहीए ॥ जेम उदायनादिके ॥ श्री अरिहंत भगवतनी वधामणीना साडीबार लाख सोनैयानु दान आप्यु ते भक्ति ॥ १ ॥ बहुमानते हृदयने विषे घणो प्रेम ॥ ते बहुमान कहीए ॥ २ ॥ गुण स्तुति ते छता गुणनु प्रगट करवु ॥ जेम श्री अरिहंतना जे गुण हता ॥ पण श्री अरिहंतनु क्यां ठेकाणु होय ॥ तेथी श्री अरिहंत भगवतनी प्रतिमा तथा देहरा करावीने अरिहंत भगवतना गुण प्रगट करवा ॥ श्री अरिहंतनी प्रतिमा देखीने बीजा देवनी मूर्त्ति झांखी दीसेछे ॥ वली साधु महापुरुष एकला जता होय, त्यारे कोइक जाणे जे ए महापुरुष छे, अने घणाक जीवतो जाणे नही, घणा श्रावक श्राविका साथे होय, त्यारे जाणे जे कोइक मोटा पुरुष छे, एम अनेक प्रकारे गुणीना गुण प्रगट करवा ए गुणस्तुतिरूप विचार जाणवो सहि..

कोइ अवर्ण वाद बोलतो होय तो तेनु नीवारण करवु, ते अवर्णवादनो नाशरूप विनय ॥ ४ ॥ आशातना ते तांबुल मैथुनादिकवर्जवु ते आशातना परिहाररूप विनय कहीए ॥ ५ ॥ ए अरिहंतादिक दशनो पांच प्रकारे विनय करवो ॥ १० ॥

हवे शुद्धिके०॥ सम्यक्तनी त्रण शुद्धि ॥ एक मननी शुद्धि । १ । बीजी वचननी शुद्धि ॥ २ ॥ त्रिजी कायानी शुद्धि ॥ ३ ॥ जे जिन तथाजिनना सिद्धांतादिक विना बीजु सर्वे जूठु एवु मनमां चिंतवु ते मन शुद्धि ॥ १ ॥ जे श्रीतीर्थंकरनी भक्ति विनये थाय ॥ बीजानी भक्तिए शु थाय एवु मुखे कहेवु ते वचन शुद्धि ॥२॥ जो छेद्यो भेद्यो शरीर दुःख पामे तो पण बीजा देवने न नमे ते काय शुद्धि ॥ ३ ॥

पंच गयदोसके० ॥ सम्यक्तना पांच शंकादिक दूषण टालवां अठ प्रभावके० । आठ प्रभाव पुरुष जिनसासनना दीपावनार जाणवा ॥

यदुक्त ॥ पावयणी ॥ १॥ धम्मकहि ॥२॥ वाई ॥३॥ नेमितिउ ॥ ४ ॥ तवसीय ॥५॥ विद्या ॥ ६ ॥ सिद्धोय ॥७॥ कइ ॥८॥ अठेव प्रभावग्गभणीय ॥१॥

प्रवचनीके० ॥ वर्त्तमानकाले जे सिद्धांतादिकनो यथार्थ अर्थ जाणवो ॥ ते प्रवचननो प्रथम प्रभावक ॥ १ ॥ धर्मकथा नंदिषेणनी परे ॥ बीजो प्रभावक ॥ २ ॥ वाद करीने यथार्थपणे जीनसासननी उन्नत्ति थाय ॥ ते वादी त्रीजो प्रभावक ॥ ३ ॥ जीनसासनने निमित्ते निमित्त कहे ॥ ते भद्रबाहूनी परे निमित्तक चोथो प्रभावक ॥ ४ ॥ क्षमासहित तपस्वी पंचमो प्रभावक ॥ ५ ॥ विद्याके ०॥

मत्रने जोगेजिनसासनने दीपावे जेम वयर स्वामी, एम छठो विद्या पुरुष प्रभावक ॥६॥ सिद्धके ०॥ अंजनादिक प्रयोगे करीने ॥ जिनसासन दीपावे ॥ कालकाचार्यनी पेरे ते सिद्ध पुरुष प्रभावक सातमा ॥ ७ ॥ कइके ०॥ कविश्वर जे नव नवा काव्य करी राजादिक रीझवे धर्म दीपावे ते आठमा कवि प्रभावक ॥ ८ ॥ ए आठ प्रभावक जाणवा एम तीर्थ जात्रा कल्याण महोच्छव, दिक्षा महोत्सव प्रमुख करीने जिनशासन दीपावे ते पण प्रभावक कहीए

भूषणके० ॥ सम्यक्तना पाच भूषण जाणवा ते, वदन, पच्चख्खाण प्रमुख जैन क्रिया विषे डाह्यापणु ॥ तथा कुशलपणु ॥ ते प्रथम भूषण ॥ १ ॥ बहु श्रुत गीतार्थादिकनु सेवयु ते तीर्थ सेवारूप बीजु भूषण ॥ २ ॥ जे गुरु देवनी भक्ति करे ते भक्तिरुप त्रीजु भूषण ॥ ३ ॥ जे देवतादिकनो चलाव्यो चले नहि ए अचलरूप चोथु भूषण ॥ ४ ॥ जे थकी घणा जीव धर्मनी अनुमोदना करे ते प्रभावनारूप पाचमु भूषण ॥ ५ ॥

लक्षणके० ॥ सम्यक्तना पाच लक्षण जेणे करी सम्यक्त ओलखाय ते लक्षण कहीए जेम अग्निनु लक्षण न्यायशास्त्रने मते ॥ उष्णस्पर्शत्व ॥ अशीत्व धुम्रलिंगत्व ॥ अग्नीनु लक्षण ते उष्णस्पर्श जाणवो अने अग्निनुं लींग ते धूम्र जाणवो, तेम सम्यक्तनु लक्षण ते समसवेगादिक पच जाणवाने कहे छे उपशम जे पोताना वेरी उपर पण प्रतिकुलपणु चिंतवे नहि, ते उपशम एवु लक्षण कहीए कोइक वादी केहेछे के श्री भगवती सूत्रना सातमा शतके ॥ नवमा उद्देसाने विषे ॥ वारुण नामावर्णागनटु ॥ श्रीचेडा महाराजना सेवक कोणिकनी लडाइ म ये ॥ आशुरु ते जावमीसी मीसीमाणके०॥

कोप करीने वेरीने हण्यो दिसे छे ॥ सम्यक् दृष्टि श्रावक बारव्रत धारी छठ छठने पारणे करतां पण समरूप लक्षण तो जणातु नथी; जो अतरंग उपशम होत तो पचेंद्रिय मनुष्यने हणता नहि तेने सिद्धांतिक उत्तर देछे जे, तें कह्यु ते साचु पण सांभलजो. वारुण नामावर्णांग नटुआने अतरंग उपशम न होत तो एक अवतारीपणे सौधर्म देवलोके उपजत नहि, जे पचेंद्रियनो घात करयो ते तो अनुतानुबंधि क्रोधादिक पणे नथी करयो, जो अनुतानुबंधि क्रोधादिकपणे करयो होत तो एकावतारीपणे सौ धर्म देव लोके उपजतनही ए काले करीने निश्चय अतरंग उपसमरूप लक्षण छे यद्यपि सम्यक्तदृष्टी तथा मिथ्यादृष्टी ए बे जणा सरखी क्रिया करे तो पण सम्यक्तदृष्टी शुभ फल पामे अने मिथ्यादृष्टी अशुभ फल पामे जुओ ते ठेकाणेवर्णांग नटुओ मनुष्यनो घात करीने एकावतारी सौधर्म देवलोके पहोतो अने तेनो वेरी मनुष्यनो घात करी नरकादिकने विषे पहोतो, इहां परिणामनो भेद जाणवो जेवो जेवो परिणाम होय तेवो कर्मनो बंध पडे ए सम्यक्तनुज अतरंग उपशमरूप लक्षण जाणवु ॥ १ ॥ हवे बीजु लक्षण सवेगरूप ॥ सवेग० ॥ मोक्षनो अभिलाप इच्छा कहीए । सवेगत्व नामक्षिा अभिलापत्व ॥ मितिवचनात् ॥ वली श्री उत्तराध्ययन सूत्रना ओगणत्रीसमा अध्ययनने विषे प्रथम ए पूछ्यु ॥

॥सवेगेण भंते॥ जीवेकिंजणईय इ सवेगेणं॥अणुत्तर ॥धम्मस ॥धंजणायई अणुत्तराए धम्मसधाये॥सवेगहव्वमागतछ ॥ इयनताण ॥ बधिकोह मानमायालोभे पवेईनवत्यकम्मनवधई ॥ तपवइपंचणमित्छत वि-

सेहिकाउणदसणाराहरो ॥ भवंदंसणावि सुद्धाए ॥ अत्थेगडएतिणेव भवगाहणेणं सिज्झईबुज्झई दंसणसोहिएअंविसुधाए तचपुणो ॥ भवगहणनाईकम्मे ॥१॥

सवेगेणके० ॥ सवेग मोक्षा भिलापरुप ॥ सम्यक्तनुं लक्षण ते अगीकार करीने जीवशु ॥ किंजणइके० ॥ शो गुण प्रगट करे ॥ ए प्रश्न ॥ एनो उत्तर दे छे ॥ सवेगेण अणुत्तर ॥ धम्मसद्धजणअेइके० ॥ जेनी उपमा न होय ॥ अणुत्तर एहवि धर्मके० ॥ श्रुत धर्म तथा चारित्र धर्मने विषे श्रद्धा ते धर्म करवाने विषे अत्यत अभिलाप उपजावे, अणुतरा एइ धम्मसधाए सवेग हवामा गछइके० ॥ उत्कृष्टि सुत चारित्र धर्मना सवेग हवके० ॥ सिघ्र आगच्छतीके उत्कृष्टो सवेग मोक्षाभिलाप प्रत्ये पामे, त्यारे उत्कृष्टी दर्शननी आराधना करे देवगुरुनी भक्ति अत्यत करे, जे श्री अरिहत भगवतनी वधामणी लाव्यो तेने साढीबार लाख सोनइया आप्या, श्री अरिहत जीनने वण दीठे एटलु धन खर्च्यु तो श्री अरिहत जिनने दीठे तो केटलु धन खर्च्यु हशे ? जेम कोइक देश मुलक जमाडे, ते मध्ये शाकमा १०१ एकसोने एक रुपीयानां मरचानु खरच थाय, तो त्यां मुखडीनो शो सुमार रह्यो तेम त्या साढीबारलाख सोनइया वधामणी आपी तो बीजा धन खरचवानी शी वात कहेवी श्री उदायन प्रमुखे तो श्री अरिहत भगवतनी देशना साभलीने तत्काल चारित्र लीधु श्री श्रेणीक तथा श्रीकृष्ण वासुदेव प्रमुख पोताना भोग कर्मने उदये चारित्र लेइ न शक्या, तोपण सवेग गुण वधे थके चारित्रनी वहु माननाए करीने जे कोई चारित्र ले तेनी घणी पेरे साहाय करे इत्यादिक गुण आवे थके अनुतानुबधि क्रोध मान माया लोभनो क्षय करे ॥ नवचक मन वधिके० । पापानु व

थी कर्म नवा न बांधे ॥ तप चइय छणमिरउ तविसोहि काउण दसणा राइ ए भवतिके० ॥ सवेगमतयउसवेगनीमिचिउ ॥ मिथ्यात्वनी शुद्धि करीने दर्शननो आराधक थाय ॥ दसण सोहिए यणवसुथाई ॥ अछगइए तेणेव ॥ भवगाहणेण ॥ सीज्झइ बुज्झइके० ॥ दर्शननी शुद्धि करीने ॥ विशुधाएके० ॥ अत्यंत निर्मलपणे के टलाक तेज भवने विषे सिद्ध बुद्ध थइने मोक्षे जाय ॥ दसणसोहिए यण ॥ विशुधाए चपुणो नयमहणनाइकमइए ॥ दर्शन शुद्धि करीने त्रीजो भव उलघे नहि ॥ १ ॥ ए सम्यक्तनु सवेगरूप बीजु लक्षण जाणवु ॥ २ ॥ त्रीजु लक्षण सम्यक्तनु निर्वेदपणु निर्वेद ते ससारने बधीखानारूप जाणे,

नीवेएण भन्तेजिवेकि जणजईनी वेएणदिवमाणु ॥ सतेरीत्लिए सुकामे भोगेसुनिवेय मागछइ सव्वविस ॥ एसुविरजई ॥ सवविसए ॥ सुविरजमाणे ॥ आरभ परीचायकरेइ ॥ आरभ परिचाय करेमाणे ॥ ससार मगावुछुदइ सिद्धेमगोपडीवर्नेपमवई ॥

जीवने निर्वेद गुण ते देवादिक भोगनो त्याग करीने, ससार मार्गना उदय वश करीने, सिद्ध मार्गने अगीकार करे; एह सम्य क्तनु लक्षण त्रीजु निर्वेद ॥ ३ ॥ सम्यक्तनु चाथु लक्षण अनुकपा, द्रव्य थकी भाव थकी आत्मानी अने परनी एम च्यार भेद थाय, ते केम ॥ आत्मानी द्रव्य अनुकपा ॥ १ ॥ पोताना आत्मानी भा व अनुकपा ॥ २ ॥ पर आत्मानी द्रव्य अनुकपा ॥ ३ ॥ पर आ- त्मानि भाव अनुकपा ॥ ४ ॥ पोताना आत्माने क्रोधादिके करीने ॰ ने मयोगे करीने आपघाते मरे ते द्रव्य अनुकपा, पो-

चोरादिकनो हठ ते बल ॥ ३ ॥ मिथ्यादृष्टि देव इत्यादिकनो अभियोगके० ॥ तेने भयेंगे करीने मिथ्यात्वनो आचार करे तो सम्यक्त्व भागे नहि. मिथ्या दृष्टि माता पिता कुलाचार्यने, निगहके० पराभवे करीने, व्रत्तिके० आजीवीका, कंतार अटवि रोगादिक ॥ दुःखे पीडाणो थको मिथ्यात्व सेवे ॥ गाथा ॥ आगमतु ॥ इति आरुयो मिथ्या मिति विभेदक ॥ १४ ॥ अनाचार सेवे पण मन थकी न सेवे, ए छ आगारे सम्यक्त भागे नहि, नगरने रखोपाक-त्व जे कोट सरखा छ आगार जाणवा ॥ ६ ॥

हवे सम्यक्त्वनी छ भावना कहे छे मूलभूत ॥ १ ॥ द्वारभूत ॥ २ ॥ प्रतिष्ठाभूत ॥ ३ ॥ निधिभूत ॥ ४ ॥ आधारभूत ॥५॥ भावभूत ॥ ६ ॥ चारित्ररूप धर्मस्याके० ॥ चारित्र धर्मरूप वृक्षनु मूल ते सम्यक्त्व छे ॥ १ ॥ धर्मरूप नगरनु बारणा सरखु सम्यक्त्व जाणवुं ॥ २ ॥ धर्मरूप मंदिरनुं पाया सरखु ते सम्यक्त्व जाणवु ते प्रतिष्टाभूत तृतीय ॥ ३ ॥ जेम चक्रवर्त्तिना निधान माहे सर्व जातना रत्न छुटा होय, ते सर्वे रत्ननी जात निधानमा समाय, तेम मूलगुण उत्तरगुणरूप छुटा रत्न सरखा गुण ते सम्यक्त्व निधि सरीखु मननेविषे भाववु ॥ ४ ॥ जेम सर्व वस्तुनो आधार पृथ्वी होय, तेम सर्व गुणनो आधार एक सम्यक्त्व छे, ते आधारभूत ॥ ५ ॥ जेम अमृतादिक रसनो आधार ते कलसादिक भाजन होय, ते श्रुतशिलादिकनो रस ते सम्यक्त्वमा रहे एम ए छ भावनाए करीने नित्य सम्यक्त्वनी भावना भावे. ॥ ६॥

हवे आत्माना स्थानक कहे छे. प्रथम स्थानक जे आत्मा छे, शरीरथकी भिन्न असंख्यात प्रदेशी, ज्ञान, दर्शन चारित्र वी-[illegible] ॥ आकार अनाकार रूप उपयोगमय, एवो आत्मा [illegible] भिन्न एवा अनंता आत्मा व्यक्ति भेदे तेनीए सि-

सारे मरचेंवुं ए पांचमु लक्षण ॥ ५ ॥ एटले समकितना पांच लक्षण कह्यां, तथा लिंग पण पूर्वे कह्या छे अतिशे रागे सिद्धांतनु सांभलवु तेने लिंग कहीए ए लिंग लक्षणनो भेद जाणवो ॥

छव्विहाजयणाके० ॥ अरिहंत भगवंतनी प्रतिमा मिथ्यात्वी ए ग्रही होय तेने वंदनादिक न करवु, ए यतना कहीए, तेना छ प्रकार छे, ते क्रिया ॥ वंदन ॥ १ ॥ नमन ॥ २ ॥ दान ॥ ३ ॥ अनुप्रदान ॥ ४ ॥ आलाप ॥ ५ ॥ सलाप ॥ ६ ॥ ए नामे छ यतना जाणवी वंदन ते बे हाथ जोडवा वंदन कहीए ते न करवु ॥ १ ॥ नमन ते अन्यतिर्थादिकने ॥ धर्मबुद्धि देखीने मस्तक न नमावरु ॥ ते नमन ॥ २ ॥ दान ते भक्तिए करीने दान देवु नही ॥ ३ ॥ वारवार अन्य तीर्थादिकने धर्म बुद्धि सुपात्र जाणीने दानदेवु, ते अनुप्रदान कहीए ते न करवु ॥ ४ ॥ अनुकंपादिकने हेतुये दानदेवु निषेध नथी ॥ ४ ॥ मिथ्यादृष्टिने कारणविना अण बोलावे बोलावरु ते एकवार बोलाववु ते आलाप कहीए ॥ ५ ॥ वारवार बोलाववु ते सलाप कहीए ॥ ६ ॥ ए छ यतना कहि ॥

हव छ आगार कहीए छीए ए सम्यक्तमां छ आगारे करीने सम्यक्त्व भागे नहि, बाह्य मिथ्यात्व करता थका भागे नहि ते॥

रायाभियोगेण ॥ १ ॥ गणाभियोगेण ॥ २ ॥ बलाभियोगेण ॥ ३ ॥ देवाभियोगेण ॥ ४ ॥ गुरुनीग्गहेण ॥ ५ ॥ वीतीकंतारेण ॥ ६ ॥

राजानगर धणि ॥ १ ॥ गण ते नात प्रमुख लोक समूह ॥२॥

चोरादिकनो हठ ते बल ॥ ३ ॥ मिथ्यादृष्टि देव इत्यादिकनो अभियोगके० ॥ तेने प्रयोगे करीने मिथ्यात्वनो आचार करे तो सम्यक्त्व भागे नहि. मिथ्या दृष्टि माता पिता कुलाचार्यने, निगहके० पराभवे करीने, वृत्तिके० आजीवीका, कतार अटवि रोगादिक ॥ दु खे पीडाणो थको मिथ्यात्व शेवे ॥ गाथा ॥ आगमतु ॥ इति आरयो मिथ्या मिति विभिदक ॥ १४ ॥ अनाचार सेवे पण मन थकी न सेवे, ए छ आगारे सम्यक्त भागे नहि, नगरने रखोपाकत्व जे कोट सरखा छ आगार जाणवा ॥ ६ ॥

हवे सम्यक्त्वनी छ भावना केहे छे मूलभूत ॥ १ ॥ द्वारभूत ॥ २ ॥ प्रतिष्ठाभूत ॥ ३ ॥ निधिभूत ॥ ४ ॥ आहारभूत ॥५॥ भावभूत ॥ ६ ॥ चारित्ररूप धर्मस्याके० ॥ चारित्र धर्मरूप वृक्षनु मूल ते सम्यक्त्व छे ॥ १ ॥ धर्मरूप नगरनु बारणा सरखु सम्यक्त्व जाणवु ॥ २ ॥ धर्मरूप मंदिरनु पाया सरखु ते सम्यक्त्व जाणवु ते प्रतिष्ठाभूत तृतीय ॥ ३ ॥ जेम चक्रवर्तिना निधान माहे सर्व जातना रत्न छुटा होय, ते सर्व रत्ननी जात निधानमा समाय, तेम मूलगुण उत्तरगुणरूप छुटा रत्न सरखा गुण ते सम्यक्त्व निधि सरीखु मननेविषे भाववु ॥ ४ ॥ जेम सर्व वस्तुनो आधार पृथ्वी होय, तेम सर्व गुणनो आधार एक सम्यक्त्व छे, ते आधारभूत ॥ ५ ॥ जेम अमृतादिक रसनो आधार ते कलसादिक भाजन होय, ते श्रुतशिलादिकनो रस ते सम्यक्त्वमा रहे एम ए छ भावनाए करीने नित्य सम्यक्त्वनी भावना भावे. ॥ ६॥

हवे आमाना स्थानक कहे छे. प्रथम स्थानक जे आत्मा छे, शरीरथकी भिन्न असंख्यात प्रदेशी, ज्ञान, दर्शन चारित्र वीर्यमय. ॥ आकार अनाकार रूप उपयोगमय, एवो आत्मा प्रत्ये शरीर भिन्न अनंता आत्मा व्यक्ति भेदे तजीए सि-

द्ध ससारीरूप एकज आत्मा ते कारण माटे श्रीठाणांगे एगे आया ॥ इति वचन प्रमाणात् ए प्रथम स्थानक ॥१ ॥ बीजु स्थानक नित्यके ०॥ आत्मा नित्य छे ॥ द्रव्यार्थिकनये ॥ अतित अनागत ॥ वर्त्तमानकाले अविनासी छे पर्यायार्थिकनये तो देवता मनुष्यादिक पर्यायनो अनित्यपणे अनित्य छे ए बीजु स्थानक ॥ २ ॥ त्रीजु स्थानक ए आत्मा कर्त्ता छे स्वकृत कर्मणाके ०॥ पोताना सुख दुखरूप कर्मनो कर्त्ता ए आत्मा छे ॥ ३ ॥ तथा पोताना करत्ता कर्मनो भोक्ता छेके०॥ भोगवनारो पण एज आत्मा छे ॥ ४ ॥ पाचमु स्थानक मुक्ति छे, ते जीव आठ कर्मरहित थाय त्यारे मुक्ति कहीए ॥ ५ ॥ छहु स्थानते मुक्तिनु सार ते ज्ञानदर्शन चारित्र छे, तेने आधारे आठ कर्म क्षय करीने मोक्ष जाय ॥ ६ ॥ ए छ स्थानक मूक्तिना जाणवा

हवे समकितना पांच अतिचार कहे छे सकाके ०॥ सशय ते बे प्रकारे एक देशशका ॥ १ ॥ बीजो सर्वशका ॥ २ ॥ जे देशशका ते श्रीअरिहंत भगवतनी प्रतिमा । मोक्षनु साधन छे के नथी, ए देशशका ॥ सर्वशका ते श्रीवीतरागनो धर्म खरो हशे के खोटो? ए सर्वशका ॥ १ ॥ कांक्षाके ०॥ परमतनो अभिलाष कांक्षा कहिए ॥ वितिगिच्छाके०॥ ए करु छु ते आगळ फल हशे के नहि होय । अथवा साधुनु मलिनगात्र देखीने दुगच्छा करवी ते विगिच्छा कहीए ॥ अन्य सशाके०॥ मिथ्यात्वीनी प्रसशा करवी नहि. ॥ ४ ॥ सस्तवके ०॥ मिथ्यात्वीनो परिचय करवो नहि ॥ ५ ॥ ए पच अतिचार सहित सम्यक्त्व जाणवु ॥ हवे समकितनी दश रुची कहे छे ॥ त्या पहेली निसर्गरुचि केहे छे, निश्चय व्यवहारनये करा जीव अजीव नवतत्व जाणी आश्रव त्यागे, सवरल्हे, वीतरागे कह्या जे भाव ॥ ६ ॥ द्रव्य ते द्रव्यक्षेत्र मालना भावशु

जाणे, नामादि चार निक्षेपा जाणे, सद्दहे, आपणी बुद्धि शु सद्दहे, वीतरागनी भाषा भावतद्दाति छे, एवी सद्दहणा, ते निसर्गरुचि कहीये. ॥ १ ॥ हवे उपदेशरुचि कहे छे, जे एज नवतत्व, छ द्रव्य, गुरु उपदेस शु जाणीने सद्दहे ते उपदेशरुचि कहीए ॥ २ ॥ हवे आज्ञारुचि कहे छे, रागद्वेषमोह जेना गया होय, अज्ञान मटयु होय अने जे अरिहत देवे आज्ञा कहि ते माने ने सद्दहे, ते आज्ञा रुचि कहीए ॥ ३ ॥ हवे सूत्ररुचि कहे छे. जे सूत्रना नाम नदि-सूत्रथी लखीए छीए

॥ अहवात्त समासउ ॥ दुविहंपन्नतं ॥ तजहा ॥ आवसयंच ॥ आवसय ॥ वयरीतंच ॥ आवसयं ॥ वयरीतंदुविह ॥ आवसयं ॥ वइरीतं ॥ आवस्सय ॥ वयरितं ॥ दुविहंपन्नत तजहाकालीयं ॥ उकालीयं सेउकालिय ॥ अणेगाविह ॥ पणतंत ॥ दसवेयालियं ॥ कप्पिआ ॥ १ ॥ कप्पीय ॥ २ ॥ चूलकप्पसुयं ॥ ३ ॥ महाकप्पसूयं ॥ ४ ॥ उवाइयं ॥ ५ ॥ रायप्प-सेणियं ॥ ६ ॥ जिवाभिगमो ॥ ७ ॥ पन्नवणा ॥८॥ महापन्नवणा ॥९॥ पमायपमायं ॥१०॥ नदि ॥११॥ अनुयोगद्धाराइं ॥ १२ ॥ देविंदत्थओ ॥ १३ ॥ त-दुलवेयालीयं ॥ १४ ॥ चंदाविजयं ॥ १५ ॥ सुयभति ॥ १६ ॥ पोरसि मडलं ॥ १७ ॥ मंडलप्पवेसो ॥१८॥ विद्याचरण विणत्छीओ ॥ १९ ॥ गणि विद्या ॥२०॥ झाण [illegible] त्ती ॥ २१ ॥ मरणविभत्ती आयवीसोहि

॥ २३ ॥ वियरायसुय ॥ २४ ॥ सलेहणासुयं ॥२५ ॥ व्यवहारकप्पो ॥ २६ ॥ चरणविसोहि ॥ २७ ॥ आउरपचखाण ॥ २८ ॥ महापचखाण ॥ २९ ॥ एवमाइशेकिं तकालिअ ॥ तजहा ॥ उत्तर झयणाइ ॥ १ ॥ दस्याकल्पो ॥ २ ॥ व्यवहारो ॥ ३ ॥ नीसिह ॥४॥ महानीसिह ॥ ५ ॥ इसिभासियाइ ॥ ६ ॥ जवुद्विप पन्नति ॥ ७ ॥ दिवसागरपन्नति ॥ ८ ॥ सुरपन्नत्तीचद पन्नत्ती ॥ ९ ॥ खुडीयावीमाणपवीभत्ती ॥ १० ॥ महलीयाविमाणपवीभत्ती ॥ ११ ॥ अगचूलिया ॥१२॥ वंगचूलिया ॥१४॥ व्यवहार चूलिया ॥१५॥ अरणोववाए॥१५॥वरणोववाए ॥१६॥गरुलोववाए॥१७॥धरणोववाए ॥ १८ ॥ वेसमणोववाए ॥ १९ ॥ वेलधरोववाए ॥ २० ॥ देविंदोववाए ॥ २१ ॥ उठाणसूए ॥२२॥ समुठाणसूए ॥ २३ ॥ नागपरीयावलिआणं ॥२४॥ नीरयावलीओ ॥ २५ ॥ कप्पियाओ ॥ २६ ॥ कप्पवडींसियाओ ॥ २७ ॥ पुप्फियाओ ॥ २८ ॥ पुप्फिचूलीयाओ ॥ २९ ॥ वयेहिदेसाओ ॥ ३० ॥ एवमाइतत्थअगपवीव दुवालसवीह तंजहा आयारो ॥ १ ॥ सुयगडो ॥ २ ॥ ठाण ॥ ३ ॥ समवाओ ॥ ४ ॥ विवाहपन्नती ॥ ५ ॥ नायाधम्मकहाओ ॥६॥

उपासक दशाओ ॥ ७ ॥ अंतगडदशाओ ॥ ८ अ णुतरोववाई दशाओ ॥ ९ ॥ वीवागसूय ॥ १० ॥ पन्नावागरणाणं ॥ ११ ॥ दीठीवाओ उआई ॥

तथा ठाणग मध्ये चार सूत्रना नाम छे, तथा योग विधि मध्ये आठ नाम वधताना जोग छे, नदी सूत्रे पण एवमाईमए पाठथी उपदेशमाला प्रमुख, सर्व तीर्थंकर विराजमान थका जे थया, ते वसुदेव हुड प्रमुख सर्व आगम मानवा योग्य ॥ हमणा वर्त्तमानकाले ४५ आगम छे, तेना नाम कहेछे अगीयार अंगः

॥ आचारांग ॥ १ ॥ सूयगडांग ॥ २ ॥ ठाणंग ॥ ३ ॥ समवायांग ॥ ४ ॥ भगवती ॥ ५ ॥ ज्ञाता धर्मकथा ॥ ६ ॥ उपासकदशांग ॥ ७ ॥ अतगडदशांग ॥ ८ ॥ अनुत्तरोववाइ दशांग ॥ ९ ॥ प्रश्न व्याकरण ॥ १० ॥ विपाकसूत्र ॥ ११ ॥

ए अगीयार अग जाणवा बारमु अग दृष्टिवाद जेमा चौद पूर्व हता, पण ते विछेद गया छे. बार उपागना नाम

उववाई ॥ १ ॥ राय पसेणि ॥ २ ॥ जिवाभिगम ॥ ३ ॥ पन्नवणा ॥ ४ ॥ जवूदिव पन्नति ॥ ५ ॥ चद पन्नति ॥ ६ ॥ सुरपन्नति ॥ ७ ॥ कप्पिय ॥ ८ ॥ कप्पवडसिया ॥ ९ ॥ पुप्फिया ॥ १० ॥ पुप्फ चुलीया ॥ ११ ॥ वन्हि दशाओ ॥ १२ ॥ ए उपांग जांणवां ॥ अथ छ [illegible] नाम कहेछे, व्यवहार ॥ १ ॥ वृह-

ल्कल्प ॥ २ ॥ दसा श्रुतस्कध ॥ ३ ॥ निशीथ ॥ ४ ॥ महा निशीथ ॥ ५ ॥ जित कल्प ॥ ६ ॥ अथ दस पयन्नानां नाम ॥ चौसरण ॥ १ ॥ सथारापयनो ॥ २ ॥ तडुल वेयालीय ॥ ३ ॥ चदाविजय ॥ ४ ॥ गणि विजय ॥ ५ ॥ देविंदथुओ ॥ ६ ॥ विरक्रओ ॥ ७ ॥ गछाचार ॥ ८ ॥ योंती करड ॥ ९ ॥ च्यारमूल सूत्रना नाम आवस्यक ॥ १ ॥ दश वैकालिक ॥ २ ॥ उत्तराध्ययन ॥ ३ ॥ ओघ निर्युक्ति ॥ ४ ॥ वे चूलीका सूत्रतेनादि ॥ १ ॥ अनुयोग द्वार ॥ २ ॥

ए आगम सर्वना जोग छे अने बीजाना जोगनी विधि नथी देखाती. जे एवा जोग मध्ये आव्या छे ते माटे आगम, सूत्र, निर्युक्ति, भाष्य, चूरणी टिका, ए पचागीना वचन माने, आगम सुणवा मणवानी इछा होय, ते सूत्र रुचि जाणवी ॥ ४ ॥ इहां श्री भगवति नदि सुत्र मध्ये गाथा छे, जे ॥

सूत्र थोखलो पढिमो बियोनि जुति मिसीओ ॥ तइयोय नीखसेसो ॥ ए सविहि होइ अणुउगो ॥ १ ॥

तथा अनुयोग मध्ये ॥ निगूको अनुगम कह्योछे समवायागे ॥ सनियूताए ॥ इत्यादिक घणी शास्त्र छे ॥ ते माटे पचागीनी श्रद्धा राखे, तेने आराधना छे ॥ ते माटे पचागीनी श्रद्धा राखवी, हवे बीज रुचि कहे छे ॥ जे जीव गुरु मुखे ॥ एक पदनो अर्थसुणी अनेक पद सन्हे ते बीजरुचि जाणवी ॥ ५ ॥ हवे अभीगम रुचि कहे छे जे जीव गुरु मुखे सूत्र सिद्धांत अर्थ साथे

जाणे अने अर्थ साथे विचार सुणवानी भणवानी जेने घणी चाहना होय, ते अभिगमरुचि जाणवी ॥ ६ ॥ हवे विस्तार रुचि कहे छे, छ द्रव्य जाणे, छ द्रव्यना गुणपर्याय, चारे प्रमाण ॥ सर्व नय जाणे ॥ ए नय प्रमाण शु छ द्रव्य सद्दहे ॥ ते विस्तार रुचि जाणवी ॥ ७ ॥ हवे क्रियारुचि कहे छे दर्शन, ज्ञान, चारित्र, तप, विनय, सुमति, गुप्ति, ब्रह्म क्रिया सहित, आत्मधर्म शु जेने रुचि घणी होय, ते क्रियारुचि जाणवी ॥ ८ ॥ हवे सक्षेपरुचि कहे छे, अर्थमा ज्ञानमा थोडो कहे, घणो जाणे, कुमतमा न पडे, जिनमतमा प्रतित माने, ते सक्षेपरुचि जाणवी ॥ ९ ॥ हवे धर्मरुचि कहे छे, जे पचास्ति कायनु स्वरूप जाणे श्रुत ज्ञानने स्वभावे अतरग सत्ता सद्दहे ते धर्मरुचि जाणवी ॥ १० ॥ एदसरुचि कही इत्यादि समकितना ६णा बोल छे, माटे सडसठ बोले नियम रह्यो नहि वली समकितना बोल बीजा छे. आगल केटला एक केहेवाशे ॥ इति श्री समकितद्वार ग्रथे मुनिश्री हुकमचद्रजिविरचित्त तृतीयाध्याय परिपूर्णम् ॥ ३ ॥

एटले त्रीजा अधिकारमा समकितनु स्वरूप देखाडयु. हवे चोथा अधिकारे देवतत्व ओलखावे छे. शा माटे जे शुद्ध देव ॥ १ ॥ शुद्ध गुरु ॥ २ ॥ शुद्ध धर्म ॥ ३ ॥ ए त्रण तत्वनी सद्दहणा होय तेने समकित कहीए माटे प्रथम देवतत्व ओलखावे छे देव ते अरिहतने कहीए एटले अरिहत के०॥ आठ कर्मरूप शत्रुने हण्या ते अरिहत कहीये, त्यारे शिष्ये प्रश्न कर्यु जे अरिनाम शत्रुने हणे तेने अरिहत कहोछो, त्यारे राजा प्रमुख घणा लोक शत्रुने हणे छे, तेने अरिहत कहीए ? एवु प्रश्न करयु त्यारे गुरुए कह्यु, हे शिष्य । तें भलु प्रश्न करयु. परतु तारी सरत स्वजाति विजातिमा पहोची नहि, ते शत्रुने हणे छे ते काइ शत्रु नथी, केम जे

शत्रु तो विजाती होय, पण स्वजाति होय नहि, माटे एतो मूर्ख छे जे स्वजातिनो घात करे छे, अरिहंत परमात्माए विजातीनो घात करयो छे. त्यारे फरि शिष्य वली बोल्यो हे स्वामी ? स्वजाति विजातिनी वेंहेचण करी पण अमे स्वजाति विजाति जाणता नथी माटे अमारा उपर कृपा करी स्वजाति विजातिनु स्वरूप ओलखावो त्यारे गुरु ओलखावे छे भो शिष्य ! स्वजातिके० ॥ जे पोतानी जातिके० ॥ जेने विषे सरखा गुण छे, सरखां लक्षण छे सरखो स्वभाव छे तेने स्वजाति कहीए, अने विजातिक ॥ द्रव्य पण बीजो, गुण लक्षण स्वभाव पण बीजो, तेने विजाति कहिए इहा स्वजाति विजातिनी चोभगी लगावीने देखाडे, स्वजातिने हणे ते पहेलो भांगो ॥ १ ॥ स्वजाति विजातिने हणे ते बीजो विजाति स्वजातिने हणे ते त्रीजो, अने विजाति विजातिने हणे ते चोथो एनो अर्थ' हवे स्वजाति स्वजातिने हणे के० ॥ जेम मोटो मछ नाना मछने गले तेम मछ जाना नो स्वजाति छे, पण शा थकी हणे छे ? जे क्षुधा वेदनि ते पुद्गलना घरनी छे, ते विजातिने अर्थे स्वजातिने हणे छे, ते केम जे कोइ राजा बीजा राजानु राज्य लेवा जाय, त्यांहा ते राजाने हणे, ते देशना लोभे राजाने हणे छे, तो जूओ ए प्रत्यक्ष मूर्ख छे, शामाटे जे देश छे ते पुद्गलना भोगमा आवे छे, अने कर्म पोताने भोगववा पडे, अने देश तो विजाति छे, अने राजा स्वजाति छे, ते विजातिने अर्थे स्वजातिनो घात करे छे ते स्वजातिना बे भेद छे, एक द्रव्य स्वजाति, बीजो भाव स्वजाति, ते द्रव्य स्वजातिके० ॥ राजाने हण्या ते द्रव्य स्वजाति कहीए, अने राजानी घात करयाथी लाग्या जे कर्म ते थकी पोतानो आत्मा संसारने विषे परि भ्रमण करशे ते माटे एने भाव स्वजातिने हण्यो कहीए ए पेहेलो भांगो. ॥ १ ॥ हवे स्वजाति

विजातिने हणे तेनो अर्थ कहेछे, स्वजातिके०॥पोतानो आत्मा अनंत गुणे करीने सहित छे, ए जेटला जीव छे ते सर्वे स्वजाति छे, शा माटे जे श्रीऊत्तराध्ययनमां कह्यु छे जे छ लक्षण सर्व जीवमा लाभे ते कीया ? ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥२॥ चरित्र ॥३॥ वीर्य ॥४॥ सुख ॥ ५ ॥ उपयोग ॥ ६ ॥ ए छ लक्षण होय तेने जीव कहीए एटले सग्रह नये सत्ता गवेषतां सर्वे जीव सरखा छे ते ठाणांगमां कह्यु छे ॥ एगे आयाजीवा ॥ एटले सर्वेजीवने एकज गवेख्यो; माटे सर्व जीव सरखा छे, माटे सर्व जीव स्वजाति जाणवा हवे स्वजाति छे ते विजातिने हणे, ते विजाति कयो तेनु स्वरूप देखाडे छे एटले विजातिके ०॥ बीजी जात छे तेन विजाति कहीए ते पुद्गलास्तिकाय ॥ १ ॥ धर्मास्तिकाय ॥२॥ अधर्मास्तिकाय ॥३॥ आकाशास्तिकाय ॥४॥ नेकाल ॥५॥ ए पांचमां पुद्गल वर्जित चार, ते तो हणाता नथी. अने पुद्गल विशेषण मिश्रसादिक पुद्गलने हणवानु काम जरुर नथी एक मिश्रसापुद्गलने हणवा तेना आठ भेद छे, ते कहे छे, उदारिक वर्गणा ॥ १ ॥ वैक्रिय वर्गणा ॥ २ ॥ आहारक वर्गणा ॥ ३ ॥ तेजस वर्गणा ॥ ४ ॥ भाषा वर्गणा ॥ ५ ॥ उस्वास वर्गणा ॥ ६ ॥ मनोवर्गणा ॥ ७ ॥ कार्मण वर्गणा ॥ ८ ॥ ए आठ वर्गणाना नाम जाणवां. बे परमाणु भेला थाए त्यारे द्वणुक खंध थाय त्रण परमाणु भेलाथाय त्यारे त्रणुक खंध थाय, एम असंख्याते परमाणुए असंख्यातखंध थाय, अनंतापरमाणुये अनंताणुखंध थाय ए सर्व जीवने ग्रहवा योग्य नथी, अने अभव्यथकी अनंतगणा अधिक परमाणु भेला थाय, त्यारे एक उदारिकनी वर्गणा लेवा योग्य थाय ॥ एटले एक एकथी अनंतगणी अधिक ॥ एकथकी बीजी, [illegible] बीजी, एम अनुक्रमे सातमाथकी आठमी वर्गणा

कार्मण नामे वर्गणा अनतगुणी अधीक मल्यार्थी जीवने ग्रहवा योग्य थाय उदारीक ॥ १ ॥ वैक्रिय ॥ २ ॥ आहारक ॥ तेजस ॥ ४ ॥ ए चार वर्गणा बादर छे एमां पांच वर्ण ॥ ५ ॥ बेगंध ॥ २ ॥ पांचरस ॥ ५ ॥ आठफरस ॥ ८ ॥ ए वीस गुण छे ॥ भाषा ॥ १ ॥ स्वास ॥ २ ॥ मन ॥ ३ ॥ कार्मण ॥ ४ ॥ ए च्यार वर्गणा सूक्ष्म छे, एने विषे सोल गुण छे केमके फरसना एने च्यार होय एटला माटे तथा एक परमाणुमा पांच गुण होय ॥ वर्ण ॥ १ ॥ एकगंध ॥ २ ॥ एकरस ॥ ३ ॥ बेफरस ॥ ५ ॥ एम पुद्‌गलना अनेक विचार छे ॥ एमानो गुण आत्मामा नथी ए पुद्‌गलमांज छे एटले आत्माथकी भिन्न गुण ठरया छे माटे एने विजाती कहीए एटले वर्गणानो घात आत्मा करे, ए स्वजाति विजाती घात बीजो भांगो ॥ २ ॥ हवे त्रीजो भांगो विजाति स्वजाति घात नामे, विजातिके० ॥ जे पुद्‌गल कहेतां जे कर्मदल ते आत्मानो घात करे छे, तेनु विवरण कहे छे, जे आत्माना आठ गुण छे, जे अनतज्ञान ॥ १ ॥ अनतदर्शन ॥ २ ॥ अनतो अव्याबाध ॥ ३ ॥ अनतचारित्र ॥ ४ ॥ अटल अवगाहना ॥ ५ ॥ अरूपी गुण ॥ ६ ॥ अगुरुलघु ॥ ७ ॥ अनतवीर्य ॥ ८ ॥ ए आठ गुण हण्या एटले विजातिये स्वजातिने हण्यो, ए त्रीजो भांगो ॥ ३ ॥ हवे चोथो भांगो विजाति विजातिने हणे, एटले जेम कोइक पथ्थर प्रमुख भितादिक उपरथकी स्वभावे रडी पडयो, नीचे माटीनां वासण प्रमुख पडया हता तेनो घात थई एटले पथ्थर पण पुद्‌गल छे माटीनां भाजन पण पुद्‌गल छे, एम्ले विजाती विजातीने हण्यो, ए चोथो भागो ॥ ४ ॥ ए चोभगी कही हवे ए च्यार भागा मांहथी जे त्रीजो भागो छे ते भागो होय ते अरिहंत परमात्मा कहीए इहां विचार घणो छे, पण ग्रंथ गौरव थाय माटे लख्यो

नथी, हवे एवा जे अरिहंत देव अढारे दूपणे करी रहित तेने जिनेश्वर देव कहीए तथा जिन चैत्याणके० ॥ श्रीजिनराज रागद्वेष रहीत ते जिन कहीए, तत्संबंधी चैत्यानिके० ॥ प्रतिमा श्रीवीतराग देवनी प्रतिमाने चैत्य कहीए तथानीग्रथाके० ॥ बाह्य अभ्यतर गांठ रहित साधु कहीए तेनी थापनाने निग्रथ कहीए, थापनाचार्यने पण निर्ग्रंथ कहीए, तथा सामायकादिक आगम तथा आदि शब्द थकी संघ साधर्मिकादिकनी भक्ति, बहु मान करवु इयूके० ॥ ए जे कह्या अर्हच्चैत्यादिकने विषे, शका कांक्षादिक रहित आठ आचार ते सम्यक्त्वनु साधन जाणवु जे जीव भद्रकादिक गुण सहित अरिहंत भगवतनी प्रतिमाना दर्शन पुजा थकी सम्यक्त्व पामे, तथा साधुना दर्शनादिक थकी तथा तीर्थ जात्रा, ते श्री तीर्थंकर भगवतना पच कल्याणक भूमि तथा श्री सिद्धाचल गिरनार प्रमुख माहातीर्थनी जात्रा, तथा साधर्मिकनी भक्ति दिक्षा महोछवादिक, उपधान मालारोपणादिक जिनना म होछव देखीने सम्यक्त्व पामे, जे पाम्या होय ते गुणने वधारे, सम्यक्त निर्मल करीने चारित्र पामीने यावत् मुक्तिपद पर्यंत साधन थाय, निसंकितके० ॥ देशशका ॥ १ ॥ सर्व शका ॥ २ ॥ देशशंका ते वीतरागना मार्गने विषे जे जीवादीक कहेता० ॥ पदार्थ कह्या ते मध्ये एकदेश ते पाणीने बिंदुए असख्याता जीव कह्या तथा वासि धानने विषे सख्याता बेरद्रिय कह्या, ते शका न होय तथा जैन मार्गना मतने विषे शका ते सर्व शका रहित निशकित ॥ वेदात्रोके० ॥ प्रथम आचार ॥ १ ॥ निराक्षितके० ॥ जे अन्य तीर्थी ते योगी कापडीना धर्मनो अभिलाप, ते रहित ते बीजो आचार ॥ २ ॥ दर्शनस्याके० ॥ धर्मना फलनो सदेह तथा साधुनी दुगछा [illegible] रहित ॥ ए त्रीजो आचार. ॥ ३

अमुद द्रष्टित्र कुतिर्थिकना मत्र चमत्कार देखीने ॥ तथा स्वदर्शनने विषे नय निक्षेपादिक ॥ उत्सर्गापवादादिक अगाध अर्थ देखी मुझाय नहि ए अमुद दृष्टि चोथो आचार ॥ ४ ॥ ए चार आचार अतरग जाणवा, जो निशंकितादिक बाह्य क्रिया करे तो अनुमान जणाय ॥ ४ ॥ हवे च्यार आचार बाह्य प्रवृत्ति करे ॥ ते कहेछे ॥ जे गुणी ते तिर्थंकरादिक तथा साधु साधवि प्रमुख चतुर्विध सघने गुणी कहीए तेनी प्रसशा करवी जे तीर्थंकर भगवतनी प्रतिमा भरावबी, ते गुणी प्रसशा कहीए जे श्री तीर्थंकर देव देशातरने विष होय तेनी प्रतिमा थापीने ते गुण प्रगट करवा त ज्याहा सुधी पोताना आत्माना सम्यक्त्वादिक गुण वृद्धि पामे यावत् चारित्र गुण अगीकार करे छे त्यांहां सुधी द्रव्य स्तवनी मुख्यता छे, पछी चारित्र गुण आराधवे करीने विनय वे यावच्चादिक करीने गुणनी प्रसशा करे, ए प्रवृत्तिरूप पाचमो आचार प्रधान छे ॥ ५ ॥ जे ज्ञान दर्शन चारित्रना गुण साधतो होय तेने साहाय्यादिक करवे करीने स्थिर करे श्रीकृष्ण वासुदेव श्रेणीक प्रमुखे, चारित्रनी सहाय करी, एवी उद्घोषणा करावी सांभली छे, ए प्रवृत्तिरूप छठो आचार ॥ ६ ॥ वात्सल्यताके० ॥ भक्तिरूप जाणवी बाह्य प्रति श्री तीर्थंकर भगवतनी तथा साधर्मीना यथास्थित पूजा सेवादिक करवी, ते वात्सल्यतारूप सातमो आचार ॥ ७ ॥ जिनशासननी उन्नति करे, घणा जीव अनुमोदना करे, तथा अमारना पडह वजडावीने जेम दीपावे ने साधु होय, ते उत्कृष्टी तपस्या तथा देशनादिकनी कलाये करीने, अष्ट महा प्रभावक कह्या तेनी पेरे जिनशासन दीपावे, ए प्रभावक नाम आठमो आचार ॥ ८ ॥ समकितना ए आचार कह्या. अष्टो आठ सत्यार्थ सम्यक्तने निर्मलके० ॥ उजलु करवाने हेते ए

कह्या, ए आठ आचार श्री उत्तराध्ययनना अठावीसमा मोक्ष मार्गाध्ययनने विषे ॥

॥ यदुक्तं ॥

निसंकियनिकंखिय निवितिगिच्छा अमूंणआठ १

ए एकत्रीसमी गाथा उववूहके० ॥ गुणवंतनी प्रसंशा करवी, वीजो अर्थ ते लख्यो छे श्रावकने जिन पूजाके० ॥ श्री वीतरागनी पूजाने विषे, तथा सामायिकने विषे, तथा पोपधे पोसाने विषे, ए आठ आचार यथा योग्ये के० ॥ ज्यां जेवु घटे त्यां तेवु जोडवु, तथा मन वचन कायाना योगे करीने श्री वीतरागनी पूजादिकने विषे जोडवा आदि शब्द थकी प्राणातिपात विरमणादिक बार व्रतने विषे ॥ सकलके० ॥ सर्वे आचार जोडवा जिन पूजाया स म्यक्त्वने विषे तथा बार व्रतने विषे पण यथायोग्ये जोडवु. एक वीतरागनी पूजाने विषे निःशंकितादिक आठ आचार जोडवा ते केम ? ॥ श्री वीतराग देवमा ॥ अने श्री वीतरागनी प्रतिमामा कशो अंतरभेद नथी, एवु शंकादिक रहितपणु होय ते पुरुप श्री वीतरागदेवनी प्रतिमानी पूजा करे. अहीं शिष्ये प्रश्न कर्यु, जे वीतराग तो अनंत गुणना धणी छे, चोत्रीस अतिशये करीने विराजमान पात्रीस वाणी गुणना धणी छे, केवलज्ञान भास्कर, इत्यादिक अनेक गुणे करीने सहित छे, अने श्री वीतरागनी प्रतिमामा तो ते मानो एके गुण दिसतो नथी ? तो तमे कहु जे श्री वीतरागनी प्रतिमान श्री वीतरागमा कशो अंतर भेद नथी, तो इहां शंका मनमां उपजे छे इहा शिष्यने उत्तर दे छे, जे हे शिष्य तें साचु कह्यु, तें भलु प्रश्न पूछ्यु, अभिप्राय जाण्या विना शंका उपजे, ते माटे तु ए वातना समज्यो नाहि, जे अमे कह्यु जे कशो

अतरमेद नथी ते अभिप्राय सांभळ ॥ जे चोत्रिस अतिशयादि गुण तो भावनिक्षेपामां होय, तेम गुण प्रतिमामां होत तो भावनिक्षेपोज केहेत, प्रतिमा कहेत नहि कशो अतरभेद नथी ए जे कह्यु ते जे कोई भव्य जीव भद्रक सम्यक्त्व दृष्टि देवद्दत्ति तथा साधु निग्रंथ होय, जे कह्यु ते जे पोताने घटमा उचित्त ॥ मन ॥ वचन ॥ कायानी शक्ति घलवीर्य ॥ १ ॥ बालपंडितवीर्य ॥ २ ॥ पंडित वीर्यरूप शक्ति तथा तेवी पुन्य प्रकृतिने अनुसारे विद्यमान श्रीअरिहंत भगवतनी प्रतिमानी सेवाभक्ति विनय बहू मान करे, पुन्यानुबंधी पुन्य प्रकृति बांधे तेवीज महा निर्जराए कराने उत्कृष्टपदे वर्त्ते तो जीव सिद्धि पामे, त्यां श्रीवीतरागनी प्रतिमामा कशो अतर भेद नथी, ए अभिप्राय वचन कह्यु छे वळी जे सरखो गुणने सरखापणु नहि, एवु जो एकांते कहे तो मिथ्यात्व थाय, तेतो पूर्व श्रीसुयगडांगनी साखे कह्युज छे, तो इहां कशु कहेवानु काम रह्यु नथी वळी जो तमे कह्यु जे अतिशयादिक गुण माहेलो एक गुण दिसतो नथी ते समज्या वगर बोल्यो श्रीतिर्थकर भगवतना प्रतिमामां तो निर्विकारने नेत्र प्रमुख सस्थानादिके शैलेसि मोक्ष जावानी अवस्था तेनी मुद्रा, परम उत्तम रसनो आकार, श्रीतिर्थकर भगवतना शरीरनु सरखापणु, तेह प्रतिमा देखीने साक्षात् भगवतने संभारवानी शक्ति, विषयकषाय त्यागना परिणाम कराववानी कारणता, तथा जाति स्मरण प्रमुख केवल ज्ञानपर्यंत तेने उपजाववानी कारणता, इत्यादिक अनेक गुण श्रीवीतरागनी प्रतिमा मांहे साक्षात् दिसे छे तो केम कहेवाय जे गुण नथी

॥ यदुक्त ॥

प्रसमरसनिमग्नं ॥ दृष्टियुग्मं प्रसन्नं ॥ वदनकम-

लमककामिनीसंगशून्य ॥ करयुगमपिधत्ते शस्त्रसंबंध वंध्य, तदासिजगतिदेवो वीतरागस्त्वमेव ॥ १ ॥

- मसमके० ॥ उपसमरसने विषे निमग्नके० ॥ व्यापि रह्या एहवां हे वीतराग ! तारा स्हा नेत्र वलीमसन्नके० ॥ निर्विकारी तारु मुखकमल ताहारो अकके० ॥ खोलो प्रेमदाना सगेरहित छे, वली तारु हाथ जोडु शस्त्रसबधे शून्य छे, ते हेतु माटे तारी निर्विकारी प्रतिमा आकाग्ने हेतुए करी त्वके० ॥ तु वीतरागके०॥ द्वेष रहित छु, ते कारण माटे श्रीवीतरागनी प्रतिमा अनेक गुणे करीने सहित छे जे सम्यग्दृष्टिजीव होय तेने, तथा थोडा भवमां मोक्षे जवु होय तेने अभेद बुद्धि श्रीतीर्थकरनी थाय, ते आहार्यारूप कहीए, ए प्रथम आचारनि सकितनो ॥ १ ॥ बीजो निकाक्षित परमत अभिलाप रहित पूजामा इत्यादिक आचार, जिनपूजादिक बारव्रतमा जोडवा श्रद्धानके० ॥ श्रावकने प्रथमके० ॥ मनुष्य प्रधान कारण ते जिननी पूजा छे त द्रव्यभाव स्तवात्मिकके० ॥ द्रव्य स्तवभावरूप पूजा कहीए द्रव्य स्तव, ते द्रव्य धनादिके, संपदाए करीने स्तवके० श्री वीतरागना छता गुण प्रगट करवा ते द्रव्य स्तव गृहस्थने दान पूजादि दिक्षामहोच्छवादिक सर्व द्रव्यस्तव कहीए शुद्ध अध्यवसाये करीने क्रिया अनुष्ठान करे ते भावस्तव कहीए. वली ते पूजा केवी छे, नव विध धन धान्य वस्तु इत्यादिक तेणे करीने आर्त्तके० ॥ आर्तध्यान ॥ रौद्रके० ॥ रौद्रध्यान हिंसानुबधी ॥ १ ॥ मृषानुबधी ॥ २ ॥ चोरानुबधी ॥ ३ ॥ परीग्रह रक्षानुबधी ॥ ४ ॥ इत्यादिक रौद्रध्यानरूपे जे आधी (मननी पीडा) ते रूप ग्राह्य अभ्यतररप, रोगसके० ॥ हरतिते दूत ॥ एटले [illegible] ान रौद्रध्यान रोगनी टालणहारी पूजा छे

॥ २१ ॥ भेषजमिवके० ॥ जेम रोगने भेषजके० ॥ बहुविधउ औषधनी परे सतरभेदि पूजा तथा अष्ट प्रकारी पूजा, सदिष्टाके० ॥ प्रकासि, वीधिवतके० ॥ विधि सहित दशत्रिकादिके करीने परमेश्वरे प्रकाशी, अनत तीर्थंकरे पूजा प्रकाशी छे ॥ आमरणोप मातके० ॥ अलकारनी उपमा छे

वली विधि सहित पूजा करवी तेमा दशत्रिकना नाम कहेछे ॥

तिन्निनिसीहि ॥ तिन्नितिन्नियपयाहिणा ॥ २ ॥ तिन्निवे वयपणामा ॥ ३ ॥ तीविहापूयायतहा ॥ ४ ॥ अवथतिय भावणचेव ॥ ५ ॥ तिदिसिनिरखणविरइ ॥ ६ ॥ तिविहभुमिपमज्जणचेव ॥ ७ ॥ वन्नाइतिअं ॥ ८ ॥ मुद्दातीयच ॥ ९ ॥ तिविहचपणीहाण ॥१०॥

पूजायात्रान विषे पेहेली निसिहिके० ॥ देहराने बारणे घरनो वेपार त्याग करीने पेसे बीजी निसीहि देहरानो वेपार कामादिकनु फाडवु, तेनो निषेध त्रीजी निसीहि पूजाना व्यापारनो त्याग, चै य वदननी वेलाए ॥ १ ॥ अजली बद्धोके० ॥ हाथ जोडवा ॥ १ ॥ अर्ध अग नमाववु ॥ २ ॥ पचांग प्रणाम ॥ ए प्रणामत्रिक त्रण प्रदक्षणा प्रभुने जमणे पासेथी ॥ २ ॥ पुष्पादिकने अगपूजा ॥ १ ॥ निवेदने अगपूजा ॥ २ ॥ चैत्य वदनादिक भावपूजा ॥ ३ ॥ चोथोत्रिक ॥ ४ ॥ पींडस्थते छद्मस्थावस्था ॥ १ ॥ पद स्थ ते केवली अवस्था ॥ २ ॥ रुपातित ते सिद्धावस्था ॥ ३ ॥ छद्म स्थावस्थाना त्रणभेद ॥ बाल अवस्था ॥ १ ॥ राज्य अ वस्था ॥ २ ॥ सामान्य चारीत्र अवस्था चवन कल्याणक अवतार ॥ १ ॥ बीजु जन्म कल्याण ॥ २ ॥ त्रीजु

दिक्षा कल्याणक ॥ ३ ॥ चोथु केवल कल्याणक ॥ ४ ॥ पांचमु निर्वाण कल्याणक ॥ ५ ॥ जे दिवसे मातानी कुखे स्वर्गादिक थकी चविने अवतर्या, तेज दिवस थकी विशिष्ट पूजनीक थया, त्या त्रण ज्ञान सहित अवतरे ॥ त्यारे चोसठ इंद्रमलीने अठाइ महोच्छव नंदिश्वर द्विपे जइने पूजा करे, जन्म कल्याणके तो विशिष्ट पूजानो व्यवहार प्रवर्ते, चोसठ इंद्र मलीने मेरु पर्वते एक क्रोड अने साठ लाख कलसे, ते वार जोजनने विस्तारे, एक जोजननु नालवु, अ ढीसेंवार अभिषेक करे, इत्यादिक कारण थकी विशिष्ट पूजनीक थया वाह्य थकी तो लौकिक प्रवर्ते अत्यंत निर्लेप चारित्रनी प्रवृत्ति होय, त्रिभुवनमा कोइ तीर्थंकर सरीखो न होय ॥ जे लोगुत्तमाण ॥ इत्यादिक स्तुति लायक एम पुरुष होय एह पुरुषोपुरुषोत्तमना गुणकोणवर्णवीशके ? ते कारण माटे ससारमा पूजनीक छे, ॥ जेनी सेवा भक्ति जन्माभिषेकादिके इंद्रादिक करे छे, पोताना आत्माने उधरवाने वास्ते जाणवु तेज भावनाए सम्यग्दृष्टिजीव श्रीतीर्थंकर भगवतनी प्रतिमानो अभिषेक करता बाल्या वस्थाभावे, घरेणु पेहेरावता राज्यावस्थाभावे, घरेणु उतारता चारीत्रावस्थाभावे, छत्र चामरादिक अष्टमहा प्रतिहार्यनी अपेक्षाए केवल्या वस्थाभावे, पर्यंकासन काउस्सगना मुद्रानी अपेक्षाए सिद्धावस्थाभावे, ए पाचमु त्रिक ॥ ५ ॥ श्रीतीर्थंकर भगवतने देहरे, जात्राए जाय त्यारे उंचु नीचु तिर्छु जोवु नहीं, अथवा पूठेजमणीडाबि दिशे जोवु नहि, एकज वीतराग उपर दृष्टि थाय, त्रिदिशा निरखण विरतिरुप छठुत्रिक ॥ ६ ॥ प्रभुने खमासमण देता त्रणवार भूमि पूजवी ॥ ए सातमुं त्रिक ॥७॥ देव वादता सूत्रना अक्षरनु आलंबन ॥ १ ॥ अर्थालंबन ॥ २ ॥ वीतरागनी प्रतिमालंबन ॥ ३ ॥ वर्णादियालंबन ॥ ४ ॥ ए आठमुत्रिक ॥ ८ ॥ चैत्यवदन करता योग

॥ २५ ॥ भेषजमिवके० ॥ जेम रोगने भेषजके० ॥ बहुविधउ औषधनी पेरे सतरभेदि पूजा तथा अष्ट प्रकारी पूजा, सदिष्टाके० ॥ प्रकासि, वीधिरत्तुके० ॥ विधि सहित दशत्रिकादिके करीने परमेश्वर प्रकाशी, अनत तीर्थंकरे पूजा प्रकाशी छे ॥ आभरणोप मातृके० ॥ अलकारनी उपमा छे

वली विधि सहित पूजा करवी तेमा दशत्रिकना नाम कहेछे ॥

तिन्निनिसीहि ॥ तिन्नितिन्नियपयाहिणा ॥ २ ॥ तिन्निचे वयपणामा ॥ ३ ॥ तीविहापूयायतहा ॥ ४ ॥ अवयतिय भावणचेव ॥ ५ ॥ तिदिसिनिरखणविरइ ॥ ६ ॥ तिविहभुमिपमज्जणचेव ॥ ७ ॥ वन्नाइतिअं ॥ ८ ॥ मुद्दातीयच ॥ ९ ॥ तिविहचपणीहाण ॥१०॥

पूजायात्राने विषे पेहेली निसिहिके० ॥ देहराने बारणे घरनो वेपार त्याग करीने पेसे बीजी निसीहि देहरानो वेपार काजादिकनु काढनु, तेनो निषेध त्रीजी निसीहि पूजाना व्यापारनो त्याग, चैत्य वदननी वेलाए ॥ १ ॥ अजली बद्धोके० ॥ हाथ जोडवा ॥ १ ॥ अर्धे अग नमावनु ॥ २ ॥ पचांग प्रणाम ॥ ए प्रणामत्रिक त्रण प्रदक्षणा प्रभुने जमणे पासेथी ॥ २ ॥ पुष्पादिकने अगपूजा ॥ १ ॥ निवेदने अगपूजा ॥ २ ॥ चैत्य वदनादिक भावपूजा ॥ ३ ॥ चोथोत्रिक ॥ ४ ॥ पींडस्थते छद्मस्थावस्था ॥ १ ॥ पद्मस्थ ते केवली अवस्था ॥ २ ॥ रुपातित ते सिद्धावस्था ॥ ३ ॥ छद्मस्थावस्थाना त्रणभेद ॥ बाल अवस्था ॥ १ ॥ राज्य अवस्था ॥ २ ॥ सामान्य चारीत्र अवस्था चवन कल्याणक मातानी कुखे अवतरे ॥ १ ॥ बीजु जन्म कल्याक ॥ २ ॥ त्रीजु

श्री हरिभद्र सूरिश्वर कृत ननुष्युणनी टिका ललित विस्तारनामे छे
ते मध्ये नव आधिकार कह्या छे ॥ जे अइयाजिन चैत्यानि मथासमा
एकामगमादया सिद्धा ए वीजो अधिकार ॥ २ ॥ उज्जितसियल
सिहरे ॥ १० ॥ चतारि अट्ठदश दोय वंदिया ॥ ११ ॥ ए त्रण
परपरागत जाणवी एटले ए वार अधिकार कह्या

वली श्री तीर्थंकर भगवतने देहेरे चोरासी आसातना टालवी
ते ग्रथांतर थकी जाणवु हवे मूलगभारेदश आसातना टालवी
ते कहे छे. ॥

॥ तजथा ॥ तंबोल ॥ १ ॥ पाण ॥ २ ॥ भो-
यण ॥ ३ ॥ वाहण ॥ ४ ॥ मेहूण ॥ ५ ॥ श्रुसुयण
॥ ६ ॥ निहुवण ॥ ७ ॥ मुत्त ॥ ८ ॥ चार ॥ ९ ॥
जुय ॥ १० ॥ वज्जे जिणनाह जगइए ॥ ६१ ॥

तंबोल ते पानसोपारी देहेरामध्ये खावु नहि, ॥ १ ॥ पाणी न
पीवु, ॥ २ ॥ भोजन न करवु, ॥ ३ ॥ पगरखा पहेरीने देहेरा
मध्ये न जवु ॥ ४ ॥ देहेरा मध्ये मैथुन न सेववु, ॥ ५ ॥ देहेरा
माहे सुवु नहि, ॥ ६ ॥ देहेरामाहे थुकवु नहिं, ॥ ७ ॥ देहेरामाहे
लघुनिति करवु नहि, ॥ ८ ॥ देहेरामाहे वडिनिति करवी नहिं
॥ ९ ॥ देहेरामाहे जुगट्ट प्रमुख रमवु नहिं ॥ १० ॥ ए दस आ-
शातना नित्ये वर्जवी ॥ १ ॥ इत्यादिक पूजानी विधि कहि छे ते
ग्रथांतर थकी जाणवी.

वली इहा शिष्य वोल्यो श्रीतीर्थंकर भगवतनी प्रतिमा के
वे आकारे छे ? ॥ १ ॥ केनी प्रतिष्टीत प्रतिमा वादवी पूजवी
घटीत ? ॥ २ ॥ प्रतिमानु परिमाण केटलु होय ? ॥ ३ ॥

मुद्रा ॥ ? ॥ उभा रहीने देववादता जिनमुद्रा ॥ ? ॥ अर्थ केहेतां ॥ निलाड देशे हाथ करीने मुक्तामुक्तिमुद्रा ॥ एम मुत्रिक. ॥ ९ ॥ जावंती चेइयाइ ॥ १ ॥ जावंति केविसाहू ॥ २ ॥ जयवीयराय ॥ ३ ॥ ए त्रणने प्रणिधान कहीए एकाग्र चित्त प्रार्थना करे, ए प्रणिधान दशमु त्रिक । १० ।

॥ वलीबार अधिकारे देववांदवा ते कहे छे ॥

॥ नमु ॥ १ ॥ जे अइया ॥ २ ॥ अरीह ॥ ३ ॥ लोग ॥ ४ ॥ सव्व ॥ ५ ॥ पुखर ॥ ६ ॥ तम ॥ ७ ॥ सिद्धा ॥ ८ ॥ जोदेवा ॥ ९ ॥ उज्जित ॥ १० ॥ चतारि ॥ ११ ॥ वयावचगअधिकार ॥ १२ ॥

नमुथ्थुण ॥ इति प्रथम अधिकारे भावनिक्षेपोवांद्यो ॥ १ ॥ जेअअइयासिद्धा बीजे ॥ २ ॥ अरिहंत चेइयाण त्रीजे, एकाजिननी स्थापना ॥ ३ ॥ लोगस्सउज्जोयगरे चोथेनाम जिन ॥ ४ ॥ सव्वलोए अरिहंत चेइयाण पाचमे त्रिभूवनना चैत्यवांद्या ॥ ५ ॥ पुरव्वरवरदीवड्ढे ॥ छठे विहरमान जिनवांद्या, ॥ ६ ॥ तमतिमीरपडल सातमे श्रुतज्ञानने वांद्या ॥ ७ ॥ सिद्धाण बुद्धाण आठमे सिद्धनी स्तुति ॥ ८ ॥ जोदेवाणविदेवो ॥ नवमे तीर्थाधिप महावीर स्तुति ॥ ९ ॥ उज्जित स्तुति दशमे ॥ १० ॥ चत्तारि अट्ठदस दोयवंदिया ॥ श्रीअष्टापदना देववांद्या अग्यारमे ॥ ११ ॥ वेयावच्चगराण ॥ सम्यग्दृष्टिदेवताने स्मरण बारमे अधिकारे ॥ १२ ॥ ए बार अधिकारे देववांदवा ॥ अरिहंत भगवंतनी प्रतिमाना ध्याननु आळंबन राखवु ॥ ए बार अधिकार ॥ परंपरागत चाल्या आवे छे जेम श्री आचारांग सिद्धांत परंपरागत चाल्या आवे छे तेमज जाणवु.

वाछल्य भक्तिरूपता ते माहे अवयव आवे नहि, जे कोइ आत्मार्थि डाह्या हो ते विचारी जोजो. इहां मतनुं काम नथी जे प्रतिमा वस्त्र कछोटासहित देखे छे, नेतो महा गिल्वतनु चिन्ह महा प्रगट दिसे छे, ते कारण माटे जे वस्त्र कछोटासहित जे प्रतिमा ते तो तीर्थकरनी स्तुतिरूप भासे, जो कोइ डाह्या होय ते इहा पण विचारी जोजो, एतो प्रवचन परीक्षाने अनुसारे कह्यु, तत्व तो केवलिगम्य जाणवु, ए प्रश्ननो उत्तर ॥ १ ॥ बीजु प्रश्न जे केनी प्रतिष्ठित वादवी पूजवी घटे ? तेनो उत्तर जे कोइ यति वेषधारी प्रतिमा भरावे, देहेरु करावे, प्रतिष्ठा करावे, पोतानु द्रव्य खरचीने करावे, ते प्रतिमा वादवी घटे नहि जे यतिने विषे द्रव्यस्तव सर्वथा निषेध छे श्रीमहानिशियसूत्र माहे विस्तारीने कह्यु छे, ते माटे निषेध यद्यपि श्रीतीर्थंकरनी प्रतिमा पूजनीक छे, तो पण वेषधारीनी करावत्री ॥

सप्तमस्त्वयमाचारोऽष्टमप्रभावनामय आचारथकीताअष्टौ ॥ सम्यक्तसेव निर्मला

प्रतिमानी पूजादिकनी आज्ञा श्रीतीर्थंकर भगवत आपे तो बीजा पण साधु जाणे जे साधुने पण द्रव्यस्तवनो जोग छे, ते साधुपणु मूकीने भ्रष्ट थाय, ते माटे निषेध कर्यो छे गृहस्थने सम्यक्तनु कारण छे, बीजु स्वहस्ते प्रतिष्ठा करी होय, ते प्रतिमानी त्रण नवकार गणीने थापीने पूजादिक घटे, ते कोइ ठेकाणे कर्यु सभवे छे, जे दिगंबरनो भरावी प्रतिमा पण श्रीऋषभ देवादिक तीर्थंकरनी थापना छे, ते कारणे साधर्मिपणु छे, एम सर्वथापणे निषेध करे तो श्रीतीर्थंकर भगवतनी आशातना थाय एक वेषधारीनी भरावी प्रतिमा जे होय, ते तो सर्वथा वांदवी

प्रतिमाना भरावनार देहेराना करनार कोण अधिकारी होय ? ए चार प्रश्न ॥ ४ ॥ हवे ए चारनो उत्तर कहे छे प्रतिमा बहु आकारे होय, एक पद्मासन, ॥ १ ॥ बीजो काउस्सगमुद्रा ॥ २ ॥ ए बे आकारे जिननी प्रतिमा होय, एज आकारे श्रीतीर्थंकर भगवत सैलेसि करणे करीने सकल जोग रुधि करीने मोक्ष पधारया, एज स्वरूपने ध्यानमा ध्यावाने काजे भव्य जीव जिन प्रतिमा भरावे, ए सम्यक् दृष्टिनी करणी छे वली शिष्ये पुछ्युं जे दिगंबरने गच्छे तो जिनप्रतिमा लिंग सहित नग्न भरावे छे ॥ १ ॥ श्वेतांबर गच्छे तो वस्त्र कछोटो कदोरो आकाररूप प्रतिमा भरावे छे ते केम ? तेनो उत्तर जे नग्नरूप प्रतिमा करे छे तेने पूछीए, जे तीर्थंकर चारित्र लेइने नग्नपणे विचरता ? तेने नग्नपणे लोक देखता ? जो नग्नपणे देखे तो श्रीतीर्थंकर अतिशय रहित थाय, जो नग्न रहितपणे लोक देखे तो सातिशय तिर्थंकर जाणवा जेवु रुप लोक देखे तेवीज प्रतिमा भरावती घटे छे, ज्यारे साक्षात् तीर्थंकर भगवत हता, त्यारे तो अपर लोके नग्न दीठा नहोता, ते हवे तो घरवरने रिपे नग्नपणे प्रतिमा भरावत्रा माडवी, अने लोकोने देखाडवु ते श्रीतीर्थंकरनी स्तुतिरूप भासतु नथी. श्रीतीर्थंकरनी फजेतीरूप तथा हासी सरखु भासे छे वली कोइक कहेवा लाग्यो जे प्रतिमा माहे सपूर्ण अवयवो जोइए तेने कहीए जे एक लिंगनु चिन्ह कर्यु एटले सपूर्ण आव्या नहि, बीजा घणा अवयव ओछा रहे छे, ते तो तीर्थंकर भगवतनी प्रतिमा कहेवाय छे, ते थापना निक्षेपो छे ॥

चतुर्थोमूढ दृष्टित्व ॥ गुणप्रसंसनवरयत्स्थी रीणपणो ॥

बाजुए रहीने चैत्यवंदन करे, श्रीतीर्थंकर भगवंतनो महा मोटो प्रसाद होय तो पोताना साठ हाथ वेगला रहीने चैत्यवंदन करे, जे साठ हाथथकी ओछो नव हाथथकी अधिक ते सर्व मध्यम अवग्रह मांहि जाणवु नानु देहरुं तथा घरनु देहरु होय त्यां उत्कृष्टा एक हाथ वेगला जघन्य अर्द्धहाथ वेगला रहीने चैत्यवंदन करे ॥

भेखजमीवंसंदिठा विविवत्परमैश्वरेप्राज्ञोपधोपवा-सादेरासरणोपमात्यर ॥

एम अनेक विधि सहित श्रीदेवाधि अने देरनी पूजा श्राव कने कही छे ॥

॥ तंजथा ॥ वरपुष्फ ॥ १ ॥ गध ॥ २ ॥ अ-क्खय ॥ ३ ॥ पडवो ॥ ४ ॥ फल ॥ ५ ॥ धुव ॥६॥ निर पतेंहे ॥ ७ ॥ नेवज वीहाणे हिय जिणपुया-अट्टहाभणिया ॥ १ ॥

वरक, उत्तम जातिनां फुल, जाइ जुइ प्रमुखना फुल ॥ १ ॥ गधके० ॥ वरास कपूर प्रमुख ॥ २ ॥ अक्खयके० ॥ अक्षत चोखा ॥ ३ ॥ पडवोके० ॥ दीवो ॥ ४ ॥ फलके० ॥ नालिएर प्रमुख ॥ ५ ॥ अगर प्रमुखनो धूप ॥ ६ ॥ निरपतिहके० ॥ जलना भरया कलसे करीने पूजा करे ॥ ७ ॥ नैवजविहाणे-हियके० ॥ नैवेद्य सुखडी प्रमुखे पूजा करे ॥ ८ ॥ जिण पूजा अट्टहा भणीया ॥ ए अष्ट प्रकारी पूजा ॥ जीनके० ॥ श्री वीतरागनी पूजा आठ प्रकारे ज्ञानवर्णादिक कर्मने क्षय करवाने

वाहनके० ॥ पगनी पावडी ॥ ३ ॥ सनडके० ॥ माथानो मुग ॥ ४ ॥ चामर ॥ ५ ॥ ए पच चिन्हराजानां मुकीने प्रभु पासे आव ए अभिगमन ॥ ५ ॥ साधु तथा श्रावकने दिन मत्ये उत्कृष्ट सात वार चैत्य वदन करवु सम्यक्त निर्मलने काजे, तथा ॥

पडिकमणे ॥ १ ॥ चेइय ॥ २ ॥ भोयण ॥३॥ चरीम ॥ ४ ॥ पडिकमण ॥ ५ ॥ सुयण ॥ ६ ॥ प डिबोहे चेइयवदण साहूण सत्तवारा होइ अहोरत्त ॥१॥

प्रभातकाले विसाल लोचन रुप चैत्य वदन करवु ए प्रथम॥१॥ चेईयके० ॥ श्रीतीर्थकर भगवतने देहरे जइने नित्ये चैत्य वदन करवु, ते जोगवाइ न होय तो इशान खुणे श्री श्रीमधर स्वामीने सन्मुखे चैत्यवदन करवु ॥ २ ॥ भायणके० पच्चखाण पारती वेलाए चैत्यवदन करीने सझाय करीने पच्चखाण पारवु, पछी आहार लेवो ॥ ३ ॥ चरीमके० ॥ आहार लेइने पछी चैत्यवदन करीने पाणी पीवु ॥ ४ ॥ पडिक्कमणके० । सध्याये पडिकमणु करता, तथा नमोस्तु वर्द्धमानाय ए वेतु एक पडिकमणानु चैत्य वदन गणवु ॥ ५ ॥ सुयणके० ॥ पोरसी रात्रीनी वेलाए चउकसाय केहेवु ए छठ्ठ चैत्य वदन ॥ ६ ॥ पडिबोहेके० ॥ पाछली रात्री ए जागीने कुसुमिणनो काउस्सर्ग करीने चैत्यवदन जगचिंतामणिनु करवु ॥ ७ ॥ एह चैत्य वदन साहुणके०॥ यतिने साधुने अहोरात्री माहे करवु जे सम्यक् दृष्टिजीव श्रावक जघन्य त्रण काले पूजा करे त्रणकालेचैत्य वदन करे, एकवार पडिकमणु करे ते पचावार चैत्यवदन करे, जे बे टक पडिकमणु करे तेने सातवार चैत्यवदन थाय, ए गृहस्थनी विधि जे देहरे चैत्यवदन करवु ते पुरुष होय ते प्रभु जीने जमणी दिसे राहुये रहीने चैत्यवदन करे, स्त्री होय ते डाबी

बाजुए रहीने चैत्यवदन करे, श्रीतीर्थंकर भगवंतनो महा मोटो प्रसाद होय तो पोताना साठ हाथ वेगला रहीने चैत्यवंदन करे, जे साठ हाथथकी ओछो नव हाथथकी अधिक ते सर्व मध्यम अवग्रह माहि जाणवु नानु देहरु तथा घरनु देहरु होय त्यां उत्कृष्टा एक हाथ वेगलां जघन्य अर्द्धहाथ वेगलां रहीने चैत्यवंदन करे ॥

भेखजमीवंसंदिठा विधिवत्परमैश्वरेप्राज्ञोपधोपवासादेरासरणोपमात्सर ॥

एम अनेक विधि सहित श्रीदेवाधि अने देरनी पूजा श्रावकने कही छे ॥

॥ तंजथा ॥ वरपुप्फ ॥ १ ॥ गध ॥ २ ॥ अक्खय ॥ ३ ॥ पइवो ॥ ४ ॥ फल ॥ ५ ॥ धुव ॥ ६ ॥ निर पतेंहे ॥ ७ ॥ नेवज वीहाणे हिय जिणपुया-अट्ठहाभणिया ॥ १ ॥

वरक, उत्तम जातिनां फुल, जाइ जुइ प्रमुखना फुल ॥ १ ॥ गंधके० ॥ वरास कपूर प्रमुख ॥ २ ॥ अक्खयके० ॥ अक्षत चोखा ॥ ३ ॥ पइवोके० ॥ दीवो ॥ ४ ॥ फलके० ॥ नालियेर प्रमुख ॥ ५ ॥ अगर प्रमुखनो धूप ॥ ६ ॥ निरपतिरके० ॥ जलना भरया कलसे करीने प्रजा करे ॥ ७ ॥ नेवजविहाणेहियके० ॥ नैवेद्य सुखडी प्रमुखे पूजा करे ॥ ८ ॥ जिण पूजा अट्ठहा भणीया ॥ ए अष्ट प्रकारी पूजा ॥ जीनके० ॥ श्री वीतरागनी [illegible] कारे ज्ञानवर्णादिक कर्मने क्षय करवाने

काजे श्रावक एवी भावना करे. एम सत्तरभेदे सनम आराधवाने अर्थे सत्तरभेदि पूजा करे ॥

तजथा ॥ नवण ॥ १ ॥ विलेपणं ॥ २ ॥ व-खुजुअलच ॥ ३ ॥ पूप्फारोहण ॥ ४ ॥ मालारोहणं ॥ ५ ॥ वणया रोहण ॥ ६ ॥ चूणारोहण ॥ ७ ॥ जिण पूगवाण पूरस्ताधज प्रगट नमित्याध्याहार्य ॥८॥ आहारणा रोहण ॥ ९ ॥ पूप्पगेह ॥ १० ॥ पूप्फपग-रो ॥ ११ ॥ आर्त्तिमंगल पइवो ॥ दिवो ॥ १२ ॥ धुवरकेवानेवज्फलविहाण ॥ ढोवणय ॥ १४ ॥ गीय ॥१५ ॥ नट ॥ १६ ॥ वज्ज ॥ १७ ॥ पुयाभ-याइमेसेनं ॥ २३ ॥

प्रथम पूजा नवण, ते जले करीन अभीषेक करवो ॥१॥ विलेवण अगमिके० ॥ अगने विषे केसरचंदने पूजा करे ए बीजो भेद, ।२। वत्थुजुअलके० ॥ त्रीजी पूजा वत्रूनि तथा अगलहणा ३ त्रीजो भेद ॥ ३ ॥ चोथो वास पूजा ॥४ ॥ पूप्फारोहणके० ॥ वर्णरुहण-के० ॥ छटा फुलनी आरोहणके० ॥ चढावनु पूजनु ॥ ५ ॥ माला रोहणके० ॥ फुलनी मालानी पूजा ॥ ६॥ वणियारोहणके० ॥वर्ण-के० ॥ पचवर्ण आंगीनी पूजा ॥ ७ ॥ चूणारोहणके०॥ बरासादि कनी पूजा ॥ ८ ॥ जिणपूगवाण ॥ श्रीतीर्थंकर भगवतने आगल ध्वजनी पूजा नवमी ॥ ९ ॥ आहारणी रोहणके० ॥ आभर्णनी पू-जा मूगट प्रमुखनु चडावनु ॥ १० ॥ पूप्फगेहके० ॥ फुलनु घर ॥ ११ ॥ पूप्फपगरोहरे० ॥ फुलनो प्रकार समूह जेम श्रीतीर्थंकर-

नी समोवसरणने विषे ॥ देवता पंचवर्ण फुलनो वरसादवरसावे ते-
मज इहा पचवर्ण फुलना वर्षादनी पूजा ॥ १२ ॥ आरती मगल
पइवोके० ॥ आरती उतारवी मगल मदिप मगल दीवो ॥ तथा मग-
लके० ॥ अष्टमगलीकनी स्वस्तिके० ॥ १ ॥ दर्पण ॥ २ ॥ कुभ
॥ ३ ॥ भद्रासन ॥ ४ ॥ नदावर्त्त ॥ ५ ॥ श्रीवच्छ ॥ ६ ॥ वर्द्ध-
मान ॥ ७ ॥ मछयुग्म ॥ ८ ॥ ए तेरमी पूजा ॥ १३ ॥ धुवर
केशनेवजफलविहाणढोयणव्यके० ॥ अगर प्रमुखनो धूप, नै-
वेद्य, सुखडी प्रमुखनु चढाववु, । फल नालियेर प्रमुखनु चडाववु ।
ए चौदमी पूजा ॥ १४ ॥ गितके० ॥ स्तवना ॥ १५ ॥ नटके०॥
नाटक पूजा ॥ १६ ॥ वजके० ॥ वाजित्रपूजा ॥ १७ ॥ पूयाभेया
इभे सत्तर ॥ ए सत्तरभेदिपूजा करवी ते सत्तरभेद सजमपालवा
नी भावना करवी इत्यादिक अनेक प्रकार सम्यग्दृष्टि श्रावकनु
सम्यक्त निर्मल करे, ए श्रावकने भेषज सरखी श्रीवीतरागनी पूजा
करवी, ए सम्यक्तनु लक्षण व्यवहार नयनी अपेक्षाये जाणवु. साधु-
ने श्रीतीर्थंकर देवनी आज्ञाए नित्ये दर्शन करवु चै यवदन करवु,॥
श्रद्धाना प्रथम पूजा भेषज मित्रसादिठा ॥ एटले एवी रीते देवतत्व-
नी परीक्षा करीने देवतत्व सद्दहे ॥ इति प्रथमतत्व ॥ १ ॥ इतिश्री
सम्यक्तद्वार ग्रथो मुनिश्री हूकमचदजी वीराचित्ते चतुर्थो याय परी-
पूर्णम् ॥ ४ ॥

हवे गुरुतत्व ओलखावे छे गुरुके० ॥ साधु ते साधु छठे तथा
सातमे गुण ठाणे होय निश्चय तथा व्यवहारथकी होय तेने साधु
करी सद्दहवु ए छठे तथा सातमे गुण ठाणे होय ते साधु
तेनु स्वरूप देखाडे छे हवे छठ्ठ गुणठाणु प्रमत्तनामा तथा सात
मु गुणठाणु अप्रमत्त नामे. ए बेनु स्वरूप भेगु देखाडे छे. जे प्रत्या-
ख्याननी चोकडीनो उदय टल्यो, सर्व विरति प्रगटी, सयम साधन

माटे पुद्गलिक लेवे अवलाविपणे ग्रहे, पण पुद्गलने भोगीपणे पुद्गलीक ग्रहे नहीं. स्वरूपरमणि आत्मधर्मस्थिरतारूप सर्व विभाव पर अग्राहकतारूप एवो चारित्रधर्म प्रगट्यो छे ते साधु उछरग अपवाद मार्गे पचमहाव्रत पाले त्या द्रव्य भाव पचमहाव्रत सहित पांच समिति, त्रण गुप्ति, दश यति धर्मने पात्रथका निरासीस एक आत्मद्रव्यना रसिया एक आत्मा निर्मळ करवाना उपयोगथका विचरे ते पचमहाव्रत पाले, त्यां पेहेलु महाव्रत

सव्वाओपाणाएवायाओविरमण

व्यवहारे छकायना जीवना द्रव्य प्राण ॥ १० ॥ हणे नहीं, हणावेनहीं, हणताने अनुमोदे नहीं, मनवचन काया ए करीने निश्चय अने निश्चयथी ज्ञानदर्शन चारित्र सुख प्रमुख भाव प्राण पोताना परना कर्म आवर्णपणे हणे नहि, हणावे नहि, हणता प्रमुखने अनुमोदे नहिं, तथा बीजे महाव्रते

सव्वाओमुसावायाओविरमण ॥

द्रव्य ते क्रोधे माने ॥ मायाये लोभे सूक्ष्म बादर ॥ लौकिक तथा लोकोत्तर, जुठु पोते बोले नहि, बोलावे नहिं, बोलतां अनु मोद नहि, मन वचन कायाए करीने भावथी सर्व द्रव्यपर्याय नय निक्षेपा यथार्थ जाणपणु, सत्य भाषणरूप ज्ञान यथाशक्ति साधे, ज्ञान सत्यपणे पाळे, तथा वीतरागना आगम प्रमाणेऽर्थ भावे छे. तेनी सझाय करे ते तथा पोताना ज्ञानदर्शन चारित्र निर्मळ थाय, ते भाषा बोले हवे त्रीजा महाव्रते

सव्वाओअदत्तादाणाओविरमणं ॥

जे द्रव्य ते तृण तुछ मात्र पण अणदिधो लेवे नहि, लेवरावे

नहि, लेवा प्रत्ये अनुमोदे नहि, जे लेवे ते सर्वने कही करीने लेवे, एटले मन वचनकयाए करीने लोकिक चोरी जे ससारनी वर्जि वस्तु चोरी लेवे नहि; अने लोकोत्तर चोरी जे तीर्थंकर आणामें जे न लेवानु कह्यु ते लेवे, ते चोरी करीने भावथी आत्मानी ग्राहकता शक्ति ते स्वरूप गृहण कार्यनो कर्त्ता छे ते प्रभाव साहायकना करी रह्यो छे ए निवारी स्वरूप ग्राहकतापणे परिणमावे, ते अदत्तादान विरमण व्रत थयु ते अदत्तादानना च्यार भेद छे, तीर्थंकर अदत्त जे तीर्थंकरनी आणामा न लेवो कह्यो ते सर्व प्रभाव ते लेवा छे. बीजो गुरु अदत्त जे गुरु परपरा विना सूत्रना अर्थ कहेवा, त्रीजो स्वामि अदत्त, जे वस्तुनो जे धणी होय तेनी अणदीधी वस्तु लेवी चोथु अदत्त ते कोई जीव एम कहेतो नथी, जे माहारा प्राण हणो, अने पोतानी इद्रिना स्वाद माटे परजीवना प्राण हणे ते जीव अदत्त, तथा प्रशस्त काम करतां कोइ जीवना प्राण घात थाय ते श्री भगवते हिंसामा गण्या नथी, विनय तथा वेयावचमां गण्यु छे. ए द्रव्यभाव अदत्तादान त्रिविधिपणे तजे ॥२॥ चोथो महाव्रत

सव्वाओमिहुणाओविरमण

जे द्रव्यथी पाच इद्रियना ॥ २३ ॥ त्रेविस विषय सेवे नहि, सेवरावे नहि, मन वचन कायाए करीन विषयनी वांछा न करे, न करावे, करतानें अनुमोदे नहि, ने भावथी जे आत्मद्रव्य आत्मगुणनो भोगी छे ते परभावनो भोग ग्रहे, ते भाव मैथुन. ते सर्व परभाव भोगीपणे भोगवे नहिं ते आत्मीक कर्म करवा माटे परभाव साधनपणे ग्रहे, पण अभोगी अग्राहकपणे अरमणिक मान जे आत्मानी भूल छे, एम आत्माने निंदतो थको जे माहरे आत्मा ‿ १. ते परभाव अनंत जीवे अनतीवार

लेइ भोगव्यो ते मने ग्रहवो भोगववो घटे नहि, ए अनंत जीवे अनंतवार भोगवीने छाडयो, ए एटु वस्तु जल तेहने हु न भोगवु एम सर्व परभाव भोगीपणे तजी स्वभाव भोक्तापणे रहेवु, ते द्रव्य मैथुन, ते फरणीरूप तथा रूपीलय मिल्या जीवने आणंद उपजे हवे क्षेत्रथी मैथुन ते त्रण लोकने विषे इद्रिना स्वादनी इच्छा अने कालथी मैथुन ने दिवस तथा रात्री,भावथी मैथुन रागथी तथा द्वेषथी सर्वथी सेववो नहिं, तेनी वाड नवे पालवी पेहेलीवाडे जे स्थानके स्त्री पशु पंडक रहे ते स्थानके ब्रह्मचारीए सुवु नहिं, बीजीवाडे स्त्री साथे हासी तथा कामकथा करवी नहि ॥ २ ॥ त्रीजीवाडे जे पीठ पाटले स्त्री बेठी होय ते पाटल बे घडी लगी ब्रह्मचारी पूरुषने बेसवू नाहि, स्त्रीने त्रण महर लगी बेसवु नहि ॥ ३ ॥ चोथीवाडे स्त्रीनोरूप नजर जोईने जोइ रहेवु नहि ॥ ४ ॥ पांचमीवाडे ज्यां स्त्री भरथार कामभोग भोगवता होय त्यां भिंतने आनरे ब्रह्मचारीने रात रहेवु नहि ते शब्द काने पडवा देवा नहि ॥ ५ ॥ छट्ठीवाडे गृहस्थपणे जे भोगभोगव्या ते संभारवा नहि ॥ ६ ॥ सातमीवाड सारो आहार जे थकी काम दीपे ते आहार करवो नहि ॥ ७ ॥ आठमीवाडे अति मात्राये आहार करवो नहि ॥ ८ ॥ नवमीवाडे शरीर शणगार लुगडानो तथा घरेणांनो करवो नहि स्नान उवटणां न करवां एकली स्त्री साथे मार्गमां चालवु नहि, तथा नानु बाळक बालिकाथी एक सज्झाए सुवु नहि सात वर्ष पछी, ॥ ९ ॥ हवे पांचमु महाव्रत

सव्वाओ परीगहाओ विरमण ।

जे द्रव्यथी परीग्रह सूक्ष्म बादर राखे नहि ॥ रखावे नहि ॥ राखे तेने अनुमोदे नहि जे संजम पालवा माटे सुखे सझाय थाय

ते माटे उपगरण चउद ॥ १४ ॥ राखे कारणे अधिको जोइए तो गृहस्थना थका नावरे ए स्थविर कल्पिनो व्यवहार छे, ने जीनकल्पि कोइ उपगरण न राखे, अपवादे दश उपगरण राखे चार कषाय उदयटल्या, तेने छट्ठे गुणठाणे साधु कहिए पण प्रमाद सेवे निद्रा ॥ १ ॥ विकथा ॥ २ ॥ आहार ॥ ३ ॥ अल्प विषय ॥ १ ॥ अनादिक ॥ २ ॥ ए अल्प सेवे ॥ अनाभोग जाणे ॥ भोगीपणे सेवे नहि ॥ ए छट्ठा गुणठाणानी स्थिति ॥ ६ ॥ जघन्य एक समय उतकृष्टो अंतर्मुहूर्त ए गुणठाणे तिन चारित्र छे सामायक, छेदोपस्थापनीय ॥ परीहारविशुद्धि, ए तीन चारीत्र छे तेनो स्वरूप परभाव त्यागे स्वरूप एकत्व, ते चारित्र कहीए ते मध्ये जे तजवा योग्य भाव तजे ते द्वेष विना, अने रत्नत्रयी जे आत्म धर्म ते गृहे, स्वधर्म माटे, पण लोकिकादिक इष्टता राग विना, एवो सम परिणाम ते सामायक कहीए, तथा जे सामायक म ये सजना तिव्रोदये जे आकरे अतिचारे अथवा १२ कषायने उदये सनम परिणाम फरसे, ते पूर्व पर्याये छेदने अभिनव पर्याय निर्मल पर्यायनो अंगीकार करवो, ते छेदोपस्थापानिय कहीए, ते भरत ॥ ५ ॥ तथा ऐवरत ॥ ५ ॥ म ये प्रथम चर्मतीर्थंकरना साधुजीने होय ॥ अथवा तीर्थंकर अथवा गणधरजीना शिष्य नव पूर्वथी उपरात श्रुतवंत ॥ म-यम वयना ॥ प्रथम संघयणी अढार मासनो उग्रतप तपता अप्रमादी, निद्रा रहित नव जणा गच्छथकी बाहेर नीकलीने तप करे ते परीहारविशुद्ध चारित्र कहीये, दसमे गुणठाणे शुक्ल ध्यानी सूक्ष्म लोभनो उदय छे, ते सूक्ष्मसंपराय चारित्र कहीए, तथा सर्वथा कषायनो उदय नथी ते यथाख्यात चारित्र कहीये ते मध्ये ११ मे गुणठाणे उपशान्त यथाख्यात छे ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥

मे गुणठाणे क्षायक यथाख्यात छे, हवे सातमुं अप्रमत गुणठाणु तिहांए छीए छठे गुणठाणे जे भाव साधुजीना कह्या ते सर्वे होय पण पांच प्रमाद न होय, ते माटे अप्रमादिक ए छठे गुणठाणे वर्त्ततो साधु जीन सासननें श्राप लब्धि फोरवे, पण सातमे गुणठाणे वर्त्ततो साधु लब्धि न फोरवे, एहनी स्थिति जघन्य एक समय उत्कृष्टे अंतर मुहूर्त्तनी छे, छठे तथा सातमे गुणठाणे मलीने देशेउणा पूर्वकोडि रहे, श्रीभगवतिसूत्रे ए बे गुणठाणानी देशेउणी पूर्व कोडिस्थिति जुदी जुदी कही छे ते व्यवहारनय छे, समय त था वेसमय बने गुणठाणु पल्टे, ते गवेस्यो नथी ते माटे अंतर मुहूर्त्तनी स्थिति कही, छठे सातमे गुण ठाणे समायक तथा छेदो परथान तथा परीहार विशुद्ध चारित्र छे तथा सातमे गुणठाणे साधुजी लब्धि फोरवे नहि अने छठा गुणठाणाना साधु जिन-सासननें काजे लब्धि फोरवे तेनु साधुपणु जाय नहिं, अने उस न्यादिक पांच प्रकारसेवे तो साधुपणु जाए, जेम ? तो के श्री आ-चारांगादिक मध्ये कह्यु छे, जे हे साधु ! तु पासथ्यादिकनो संग करीश नहिं एनी साथे शेष्टाचार पण करवो नहि, तथा संसर्ग करवो नहिं तथा तेनी साथे गोचरी तथा विहार पण करवो नहिं एटले सर्वथा प्रकारे एनी संगत करवी नहीं तथा संबोध शित्तरी मध्ये आवश्यक निर्युक्ति मध्ये

॥ उक्तञ्च ॥

उसन्ना ॥ १ ॥ पासथ्था ॥ २ ॥ कुसीलिया ॥ ३ ॥ कुलिंगीया ॥ ४ ॥ सेसदा ॥ ५ ॥ जिनमार्गे अवं-दणिजा ॥ १ ॥

एटले ए गाथा मध्ये जिनसासनने विषे वांदवा पूजवा योग्य नहि, तथा श्री उपदेशमालाने विषे कह्युं छे जे एहने वांदे तो समकितनो नाश थाय. मिथ्यात्व लागे, एटले उसथ्थादिक पांच प्रकारना होय तेहने साधु करीने सद्दहवुं नहि तथा वांदवा पूजवा नहि, त्यारे शिष्ये प्रश्न कर्युं, जे स्वामि अमने उसथ्यादिक पांच भेद जे कह्या ते अमे जाणता नथी, ते ओलखावो, ते ओलखावे छे हवे प्रथम उसथ्थानो भेद कहे छे, जे श्रीतीर्थंकर देवे नव कल्पि वीहार कह्यो छे, ते आठ मासना आठ विहार अने चतुर्मासनो एक विहार एटले त्रीस रात्री उपर एकत्रिसमी रात रहे तेने उसथ्थो कहीए तेवारे वली शिष्य बोल्यो, हे स्वामि! तमे तो त्रीस उपर एकत्रीसमी रात रहे तेने उसत्थो कही बोलावो छो, त्यारे कदापि कोइ ग्लान तथा स्थविर होय ते वारे ! तेह थकी विहार केम करीने थाय ? तेनो उत्तर दे छे, हे शिष्य ! श्री अरिहंत परमात्मा सर्वज्ञ हता तेमनी प्ररुपणामा कोइ वातनो संदेह रहे नहि, सर्वनो मार्ग देखाडयो छे, एटले जे ग्लान तथा स्थविर होय, ने विहार करवानी शक्ति होय नहीं, यद्यपि एक नगर मध्ये नव उपासरा होय, ते मासे मासे उपासरे उपासरे फरे ।। एटले पेहेले उपासरे उतर्या होय त्यांहा मास ।। १ ।। मास कल्प रहे, उपरांत रहे नहि, बीजे मास कल्पे बीजे उपाश्रये रहे एम अनुक्रमे आठ मास कल्प आठमा उपाश्रये करे, अने नवमो कल्प चार मासनो नवमे उपाश्रये करे ।। एम नव कल्पी विहार सदाये करे पण कल्प लोपे नहि तथा एटली शक्ति जो न होय ने गाम मध्ये फरवु ते पण थाय नहि तो एक उपाश्रयना नव भाग करये एकेके कल्पे अकेको भाग भोगवे, एम नव भाग नव कल्प करीने भोगवे, जेम श्रमणका आचारजनो अधिकार, सथारापयन्ना मध्ये कह्यो छे तेम इहां जाणवुं.

एटले कल्प लोपे नहि जे कल्प लोपे तेने उसन्नथो कहीए, ॥ ए पेहेलो भेद ॥ १ ॥ हवे बीजो पासथ्थानो भेद देखाडे छे ॥ पास थ्थोके० ॥ जे आचारे ढीलो ॥ जे पाच समिति त्रण गुप्ति इत्यादिक अनेक प्रकारनो आचार छे, ते थकी ढीलो चाले तेने पासथ्थो कहीए ॥ केम ॥ श्री ज्ञातासूत्र मध्ये बीजा स्कधने विषे श्री पार्श्वनाथजीनी चेलीयो विषे, हाथ पाद कुशादिक पखाल्या, ते थकी पासथ्थि केहेवाणी, अने चारित्र विराधीने भुवनपति आदी गतिने विषे गइ, कालि देवि प्रमुख इद्राणीयो थइ तथा श्री महा निशिथ मध्ये नागिल ने सोमिलनामा बे मित्र छे, एकदिन बे मित्रे विचार करयो जे ससार महा अनित्य छे, माटे आपणे चारित्र अगीकार करीने आपणा आत्मानु कल्याण करीए, एवु विचारीने बे जणा घर थकी नीकल्या साधुनो घणी खप करे पण शास्त्रप्रमाणे सारू कोइ देखे वेसे नहि, एम करता एक साधुनो सघाडो मल्यो ते साधु केवा छे ॥ निरालबी ॥ नि परिग्रहि ॥ विषयकषाये करीने रहित, महा शमताना समुद्र इत्यादिक गुणे करीने सहित ॥ तेनी सगते केटलाएक दिन रहीने तेनो आचार विचार सर्व जोयो, ते वारे सोमिल रहीने नागिल प्रत्ये कहे छे, जे हे भाई ! आ साधु ठीक छे आपणे एमनी पासे चारित्र लइये, ते वारे नागिल बोल्यो जे ए साधु वादवा पूजवा जोग्य नथी, तो एनी पासे चारित्र केम लइये ॥ ते वारे सोमिल बोल्यो जे एवा साधु निग्रथ छे एने विषे एवडो वडो दूषण केम काढो छो ते वारे नागिल बोल्यो ॥ जे एना पचे महाव्रत भागेला छे जे पेहेलु व्रत हरीकायना सघटाथी भाग्यु॥ १ ॥ तेनु वस्त्रु त्यारे ना पाडी ॥ २ ॥ त्रीजु उक्करडा थकी राखनी चपटी लीधी॥३॥ चोथु गृहस्थना घरनी खाल मध्ये जोयु ॥ ४ ॥ पाचमे बे मुहपति राखे छे ॥ ५ ॥ एवी रीते व्रत पांच

भाग्या छे ते वारे सोमिले मान्यु नहि चारित्र ए साधु पासे लीधु अने नागिलने साधुनी जोगवाइ मली नहि अने काल पोतानो नजिक आव्यो जाणीने एकाते जइने सथारो करयो ते काल ते समयने विषे भगवत श्री महावीर स्वामी गामानुग्राम विहार करता त्या नजीक वन छे तेने विषे समोसर्या ते वारे भगवत साधुने कहे छे, हे साधु ! इहा वनने विषे नागिलनामा श्रावके सथारो कर्यो छे एने चारित्र लेवु हतु पण साधुनी जोगवाइ मली नहि ने काल नजीक आव्यो जाणीने सथारो कर्यो छे माटे तमे जइने निजमणा करावो पछी साधुये जइने निजमणा करावी ते श्रावक काल करीने देवलोके गयो, तो हवे डाह्या हाय तो विचारी जो जो जे एवा साधु निग्रथ हता तेने सूक्ष्म दूषण माटे निषेध्या अने श्रावकनो सथारो भगवते गणतिमा आण्यो माटे एवु विचारीने पासथानो सग करवो नहि ए त्रीजो भेद ॥ २ ॥ हवे त्रीजो कुसिलिया ॥ कुसिलियाके० ॥ सिलनाम जे आचारके० ॥ माठो हिणाचारी तेने कुसिल कहीए एटले भगवते मरूप्यो जे आचार ते थकी वीपरित तेने हिणाचारी कहीये, एटले भगवाने जे साधुनो आचार मरूप्यो छे जे साधु गृहस्थनी सगति करे नहि, तथा मत्र जत्र जोतिष्य वैद्यकादि करे नहि, करे तेने पाप श्रमण करीने बोलाव्या छे गृहस्थादिकनी सगतवर्जि तो बीजु ते शु कहेवु एटले भगवते तो नापाडी छे ने पोते एवा काम करे जाय छे तेने कुसिलियो कहीए ए त्रीजो भेद ॥ ३ ॥ हवे चोथो भेद कुलींगीयानो कहे छे. कुलिंगीयाके० ॥ भगवतनो मरूप्यो जे लिंग ते थकी विपरीत तेने कुलिंगीया कहीए एटले भगवते जे मरूप्यु ॥ जे न रगेजा न धोयेजा ॥ एवो पाठ छे अने जे मीण गळी प्रमुखे कपडा रगे छे तथा मुखे मुहपत्ति [illegible] हा विरूप दिसे छे अने जानवर करता

पण अवलीरीत दीसे छे जे घोडा तिर्यंच पचेंद्रि छे तेने स्वारां तो वरो चडे छे अने पछी उतरे छे, अने जे दूंढीया छे तेने खातां उ तरे छे, पछी चडे छे, एवी अवली चाल छे, तेने कुलिंगीया कही ए तेवारे वादि बोल्यो जे ए तो तमे द्वेष करीने बोलो छो अने ए तो मुखे मुहपत्ति बांधे छे ते वायुकाय न हणाय ते वास्ते बांधी राखे छे, तेनो उत्तर जे तमे द्वेष थकी कहोछो पण साधुने राग द्वेष होय नही यद्यपि आज सराग सजम छे वीतराग सजम नहि अने सराग सजम छे तेने विषे प्रशस्त रागद्वेष थाय ते श्रा वकने तो अप्रशस्त रागद्वेषनी आलोयण कीधी छे पण प्रशस्तनी आलोयण कीधी नथी, एवु श्रावकोना प्रतिक्रमण मध्ये दिसे छे अने साधु ते अप्रमादि गुण स्थानकने विषे तो रागद्वेष करे नहीं, प्रमादि गुणठाणे प्रशस्त रागद्वेष करे, ते इरीयावही पडिक्कमे निवारण थवानु छे ते श्री भगवती मध्ये जोजो, ने इहा तो य- थार्थ प्ररूपणा करवी तेमां कोइ रागद्वेषनु कारण नथी, जेम श्री ज्ञाताजी मध्ये नागिला ब्राह्मणीनी अपहेरणा उद्घोषणा करावी तेमा इरियावहिनी आलोयणा आवी नाहि, तो इहां तो एक साधुने कडवु तुबडु वोहरावीने मारयो हतो तेनो पण एटलो फजे- तो करयो, तो आतो दुर्बुद्धिपणे सख्याता जीवने धर्मथकी भ्रष्ट करीने मिथ्यात्वने विषे पमाडे छे ते अनता भवभ्रमण करशे ते माटे जेवु स्वरूप होय एवु वर्णवीएतो, बीजा लोक कोइ कुमतमां पडे नहि, ने पड्या होय ते पण सुलभबोधि होय ते सत साभलीने पाछा वळे, माटे यथार्थ प्ररूपणा करतां कोइ दूषण छे नहि, जे दुर्लभ बोधि हसे, तेने तो रागद्वेष भासशे हवे जे उघाडा मुखे बोलतां वायुकाया जीव हणाय ते कहे छे शा माटे जे वायुकाया जीवने आठ फरस छे अने भाषावर्गणाना फरस च्यार छे, माटे कांइ च्यार

फरसीयाथी आठ फरसीयो हणाय नहि. किलामणा उपजे पण हणाय नहि, त्यारे वादि बोल्यो जे, भगवतीमां कह्युं छे जे उघाडे मोढे बोले तेने सावद्य भाषा कहीए, तेनो उत्तर जे अमे क्यां कहीये छे जे उघाडा मोढे बोलवु पण हणावानु कहोछो ते खोटु छे, तथा जे मुहपत्ति बांधी राखे छे, ते क्रिया सूत्रमा कह्यु छे, श्री आचारंगजी मध्ये तो कह्यु छे, जे हे साधु बगासु आवे तथा छिंक आवे तो मोढा आडो हाथ देजे, ते लेखे पण मुहपत्ति बांधवी संभवति नथी, तथा श्रीविपाकसूत्र मध्ये श्रीपूज्य गौतम स्वामि महाराज मृगालोढीने जोवाने गया त्यां मृगावती राणीए कह्यु जे मुखे चोपडो बाधो ते वारे जो मुखे मुहपत्ति बांधी होत तो शा वास्ते कहेत, त्यारे वादि बोल्यो दुर्गंध आवे ते वास्ते नाके देवा वास्ते कह्यु, त्यारे तेनो उत्तर देछे जे विपाकजी मध्ये तो नाक बोलनु नथी मुखज बोले छे, तमे खोटी युक्ति शा वास्ते करोछो, कोइ कहेशे जे फलाणानु मुख तो गोल छे, मोढु ते होठने कहीए, ते कपाल सुधी कहीए, तो होठनो आकार जोइए तो लांबो होय, पण गोल होय नहि ज्यारे कपाल सुधी ले त्यारे मोढु गोल बने ॥ ते माटे मुखे चोपडानु कह्यु त्यारे नाक भेगु आव्यु ॥ तथा परंपरा पण एमज दीसे छे जे मुहपत्ति मुखे आडी दे, ते वारे नाक उपर चढावे एवु आजदिन सुधी दिसे छे तो खोटी कल्पना शा वास्ते करोछो ॥ वली जे साधुनु लिंग छे ते जुदु छे ॥ ते देखाडीए छे॥ एटले जे ओघो बत्रीस आंगुलनो राखे ॥ ते मध्ये चोवीस आंगुलनी डांडी ॥ दश आंगलनी दशी अने अष्ट मंगळ आलेख्यो ॥ एवो बनातनो पाटो तेथकी गुथी दशी ते प्रमाणे वस्त्रनो खंड, ते श्रीनिशिथनी भाष्य मध्ये कह्यु छे, ते उपर फारलियु ॥ ते उपर दोरो ॥ दोराना त्रण आंटा बाधवा, एवो बत्रीस आंगुलनो ओघो

अने मुख प्रमाणे मुहपत्ति पोतानी एक वेंत छ आंगुल प्रमाणे चोखु णे सरखी एवी मूहपति, तथा ढिचण प्रमाणे चोलपटा ते उप सूतरनो कदोरो ॥ ते उपर कपडो जेवो दातारे दीधो होए त वो, जे तेने रगवो नहि तथा धोवो पण नहि, तेना उपर डाबे खभ कांबली ने डाबे हाथे डांडो तथा डाबा हाथे झोली राखवी, इत्यादिक मानोपेत ज लिंग ते साधुनु कहीए तेथकी विपरित ते कुलिंगीया कहीए ते कुलिंगीया जाणीने ए थकी छेटे रहेवु. क्दापि कुलिंगीयाने साधु जाणी आहार पाणी आपे तो एकांत पापकर्म बाधे, एवु श्री भगवतिना आठमा सतके कह्यु छे ए अधिकार चो थो समाप्त ॥ ४ ॥ हवे पांचमो सेसदो देखाडे छे एटले सेसदोके० जहां जेवो तहा तेवो थाय के० ॥ साधु मले तहा साधु जेवो थाय, ने पासथ्यादीक मले तहां तेवो थाय, तथा आहा छंदो के० ॥ स्वे च्छाचारी जे भगवाननी आज्ञा प्रमाणे न चाले केमके भगवते कह्यु जे, साधु निमित्त तथा साधवि निमित्त करी विहितिके० ॥ उपा- श्रय तथा आहार तथा वस्त्र पात्र अथवा उद्देशीने जे कर्यु होय ते साधुने खप लागे नहि, एवी जे भगवतनी आज्ञा लोपिने पोतानी इच्छाए चाले पोतानी इच्छाए उपाश्रय प्रमुख करावीने भोगवे ॥ ते स्वेच्छाचारी जाणीए, इत्यादिक अनेक भेद डाह्या होय ते समजे, ए पाचमो भेद ॥ ५ ॥ ए उसन्नादिक पाच भेद जे कह्या ते वांदवा पूजवा योग्य नहि, त्यारे अजाण रहीने बोलशे जे रोज साधु क्या थकी लावीये, अमने तो धर्मशास्त्रना समजावनारा एज छे ॥ तेनो उत्तर ॥ एनु समजावेलु शास्त्र पण खप लागे नहि अने उसन्ना दिकने वांदतां पूजतां मोक्ष पण मले नहि जेम कोइक बालकनी मा ता मरी गइ अगर परदेश गइ ने बालकने हीमडाने सोंपे ते हीज- डाने धावण आवे ने बालक जीवतो रहे ? क्दापि नहि, पण बाल

कनी माता मले तो ज जीवतो रहे, के दुधादिक पाय तो जीवतो रहे
तेम इहा उपनय मेलवे छ जे वालक माय ससारी जीव अने मा
ता तेम इहां शुद्ध साधु अने हीजडो तेम इहां उसन्नयादिक साधु ॥
जेम दुध तेम इहा धर्म ॥ जे वालकने हीजडाने घवरावे जीववु रहे
नहि तेम इहां उसत्थादिक पासे धर्म साभल्या थकी मूक्ति मले नहि
वली जो तमे कह्युं जे साधुनी जोगवाइ क्या थकी अमने मले ॥
तेनो उत्तर ॥ साधुनी जोगवाइ चोथे आरे पण घणी दुर्लभ हती ते
पासत्थाना अधिकार मधे नागिलना अधिकारमा कही छे, त्याहा
थकी जाणजो तो जुवो तदा काले पण साधुनी जोगवाइ घणी मु-
श्केल हती अने सुसाधु पण तदा काले घणा दिसे छे, ते माटे र-
त्नसाटे काकरा छेडे वाधे, तेना दाम वटे नही लोकोमा मूर्ख केहे-
वाय वास्ते जो साधूनी गुरुनी जोगवाइ मले तो वांदवु, पूजवु नहीं तो
पोताने घेर वेठा शास्त्र सिद्धातनु वाचवु, भणवु, धर्म ध्याननु करवु,
तेज श्रेय छे, माटे शास्त्र भणवु अने उसत्थदिक पाचना मत्तने
दुर करीने सुसाधुनी सद्हणा राखवी ते सुसाधुनु स्वरूप
प्रथम पण कह्यु छे, वली सक्षेप मात्र देखाडे छे, एक विध सजम
त्यागी के० ॥ एक विध अव्रत ॥ तेनु लक्षण तेज असजम
तेनो त्याग कर्यो छे, द्विविध वधण राग अने स्नेहनु लक्षण ॥
द्वेष ते अभितिनु लक्षण ॥ ते बे वधण थकी वेगलो छे,
त्रिविध डडेण ॥ एटले मन थकी डडाय नहि ॥ वचन थकी डंडाय
नहि ॥ काया थकी डडाय नहि ॥ त्रिविध गुत्तेणके० ॥
मन ॥ १ ॥ वचन ॥ २ ॥ काया ॥ ३ ॥ ए त्रणने अशुभ माठा
वेपारथकी गोपवे छे, तेम सल्लेणके० ॥ जेम तिरादिकनो घात
छातीने विषे साले, तेमज अनाचार हैए साले तेने सल्य कहीए,
ते सल्यना ... एक मायाके० ॥ कपटरूपी सल्य ॥

नाम कहे छे ॥ पेहेली एक मासनी ॥ १ ॥ बे मासनी ॥ २ ॥ त्रण मासनी ॥ ३ ॥ चार मासनी ॥ ४ ॥ पांच मासनी ॥ ५ ॥ छ मासना ॥ ६ ॥ सात मासनी ॥ ७ सात अहो रात्रिनी ॥ ८ ॥ वली सात अहोरात्रिनी ॥ ९ ॥ सात अहोरात्रीनी ॥ १० ॥ एक अहो रात्रीनी ॥ ११ ॥ एक रात्रिनी॥ १२ ॥ इति साधुनी बार प्रतिमा हवे पेहेली प्रतिमा वहे त्यारे एक दांति आहारनी, एक दांति पाणीनी एम सातमी प्रतिमाए सात दांति आहारनी ने सात दांति पाणीनी छे आठमी पडीमा उतानसेन अथवा पासाभर करे उपम र्गं सहे ॥ ८ ॥ नवमे लुरग, वाका पडेला काष्टनी परे ॥ ९॥ दशमे गोदोहि आसन अथवा वीरासन करे ॥ १० ॥ अग्यारे छठ भक्त करी पर्ज्रमोसु अहोरात्रि लगे करी काउस्सग्ग करे ॥ ११ ॥ बारमी अट्ठम भक्त करी एक रात्रि लगे मेषोन्मेष नेत्रे अहोरात्रि रहे ॥ १२ ॥ ए संक्षेप थकी लखी वली विशेषे जोवु होय तो दशाश्रुतस्कंध थकी जाणवी साधु होय ते सत्तर भेदे संजमना पालक होय पृथिवकाय संजम ॥ १ ॥ अप्काय संजम ॥ २ ॥ तउकाय संजम ॥ ३ ॥ वाउकाय संजम ॥ ४ ॥ वनस्पति काय संजम ॥ ५ ॥ बेइंद्रि संजम ॥ ६ ॥ तेइंद्रि संजम ॥ ७ ॥ चउरिंद्रि संजम ॥ ८ ॥ पचेंद्रि संजम ॥ ९ ॥ अजीव संजम ॥ १० ॥ पेहा संजम ॥ ११ ॥ उपेहा संजम ॥ १२ ॥ पमज्जणा संजम ॥ १३ ॥ पारिठावणीया संजम ॥ १४ ॥ मन संजम ॥ १५ ॥ वचन संजम ॥१६ ॥ काय संजम ॥ १७ ॥ ए सत्तर भेदे छे वली वीश असमाधि स्थानक सेवे नहि ॥ ते कहीए छे ॥ उतावळो चाले नहि ॥ १ ॥ अपमार्जित ठामे बेसे नहि ॥ २ ॥ दुःपमार्जित ठामे बेसे नहि ॥ ३ ॥ पथसाराादिकने विषे रहे नहि ॥ ४ ॥ अधिक आसनादिकने विष रहे नहि ॥ ५ ॥ गुरुना पराभव करे नहि ॥६॥

स्थावर उपघात करे नहि ॥ ७ ॥ भूत उपघात करे नहि ॥ ८ ॥ क्षण मात्र मांहे कोपे नहि ॥ ९ ॥ कदापि कोपे तो घणो काल राखे नहि ॥ १० ॥ पुठे अवर्णवाद बोले नहि ॥ ११ ॥ जुठो आल आपे नहि ॥ १२ ॥ समीया अधिकर्ण उदिरे नहि ॥१३॥ अकाले सझ्झाय करे नहि ॥१४॥ रजखडर्या हाथ पग राखे नहि ॥१५॥ पोहोर रात्रि पछे ताणीने बोले नहि ॥१६॥ मांहोमांहे कलह करावे नहि ॥ १७ ॥ माहोमाहे भेद पडावे नहिं ॥ १८ ॥ आथमता लगे जमे नहिं ॥ १९ ॥ दोष टाली आहार लेवो ॥ २० ॥ मुनिराज एवी रीते निर्दोषपणे विचरे ए थकी वीपरित विचरे तेने असमाधिस्थान सेव्यु कहीए हवे सबल कर्म ॥२१॥ ते कहे छे ॥ हस्त कर्म करे ॥१॥ मैथुन सेवे ॥२॥ रात्रि भोजन करे ॥३॥ आधा कर्मिक ले ॥४॥ राजपिंड ले ॥५॥ क्रित ले ॥६॥ मामित उछीनो ॥७॥ अभ्याहृत ॥८॥ आछेद्य ले ॥ ९ ॥ पचखाण भागे ॥ १० ॥ गण थकी बीजे गच्छे जाय ॥११॥ मास मांहे बेलेप ॥ १२ ॥ मास मांहे मातृस्थान ॥ १३ ॥ आकुदि हिंसा करे ॥ १४ ॥ आकुदि मृषा भांखे ॥ १५ ॥ आकुदि चोरी करे ॥ १६॥ आकुदि कंदमूल खाय ॥ १७ ॥ फलफल बहुबीज खाय ॥ १८ ॥ वर्ष मांह गदलेप ॥ १९ ॥ वर्ष मांहे मातृस्थान ॥ २ ॥ सचित सरज सहित हस्तभाजन आहार ले ॥ २१ ॥ हवे बावीस परीसह कहे छे खुहा ते भूख ॥१॥ पिवासा ते तरस॥२॥ सित ते टाढनु सेहेवु॥३॥उष्ण ते तापनु सेहवु॥४॥दस ते मछरादिकनो॥५॥ अचेलक ॥६॥ अरति ॥७॥ स्त्री ॥८॥ चरिया ते विहार ॥९॥ निमीहीया ॥१०॥सज्जा॥११॥ आक्रोश ॥१२॥ वध ॥१३॥ याचना ॥१४॥ अलाभ ॥१५॥ रोग ॥१६॥ तृणस्पर्श ॥१७॥ मल ॥ १८॥ सत्कार ॥ १९॥ प्रज्ञा ॥२०॥ अज्ञान ॥२१॥ सम्यक्त्व ॥२२॥ अथ

सुयगडांगाध्ययन श्रुतस्कंध ॥ १६ ॥ पुंडरीकाध्ययन आहार परिज्ञा ॥ क्रियास्थान प्रत्याख्यान क्रिया ॥ अनाचारश्रुत आर्द्रकुमारना लदीयाध्ययन ॥ बिश्रुतस्कंधे ॥ ७ ॥ एव सुयगडांगना ध्ययन ॥ २३ ॥ देव ॥ २४ ॥ तिर्थकर ॥ अथवा प्रकारे ॥ भुवनपति॥१०॥व्यंतर॥८॥ज्योतिषी॥५॥ वैमानिक १ एव ।२४।५। हास्य त्याग आलोचि बोले ।४। लोभ त्याग । क्रोध त्याग ॥ २ ॥ व्रत भावना एव ॥१० ॥ प्राणि क्या अनुग्रह मागवो ॥ १ ॥ तृणादिकनो अनुग्रह मागे ॥ ९ ॥ अवग्रहनी मर्यादा करी रहे ॥३॥ गुरुनो अनुग्रह मागी भात पाणी भोगवे ॥ ४ ॥ साहम्मिकना अनुग्रह मागी रहे ॥ ५ ॥ एव ॥२॥ पनरे अति सरस आहार न ले ॥१॥ विभुषा न करे ॥२॥ स्त्री सह वस्ती न रहे ॥३॥ एत्री स्त्री कने स्थानके न रहे ॥४॥ स्त्रीनां अगोपाग न जोवो ॥५॥ ए चार व्रतभावना ॥ ५ ॥ एव वीस, ए चोथो व्रतभावना एव ॥२०॥ रुडो पाडवो शब्द सांभळी रागद्वेष न करे ॥१॥ एव रूप ॥ २ ॥ गंध ॥ ३ ॥ रस ॥४॥ स्पर्श आश्री रागद्वेष न करे ॥५॥ ए पांचमे व्रत भावना ॥५॥ एव मळी ॥२५॥ भावना, दश श्रुत स्कंध, दशकाल कल्पना छे ॥१०॥ सहकाळ ॥ ६ ॥ व्यवहारसूत्र दशकाल ॥१०॥ एव त्रिहु सूत्र ॥२६॥ काल जाणवा अथ अणगार गुण ॥ २७ ॥ कहे छे ॥व्रत ॥६॥ पांच इंद्रि जीतवो ॥११॥ भावशुद्ध ॥१२॥पडिलेहणाविशुद्ध ॥ १४ ॥ क्षमा ॥ १४ ॥ वैराग्य ॥ १५ ॥ अकुशल मन वचन कायाने रुंधवो ॥ १ ॥ छकायनी रक्षा ॥ २४ ॥ संजम योगयुक्त ॥ २५ ॥ शितादिक वेदना सहन ॥ २६ ॥ मरणांत उपसर्ग सहन ॥ २७ ॥ इत्यादिक साधुना अनंत गुण छे श्री उत्तराध्ययन थकी जो जो, एटले एवा गुणे करीने सहित होय तेने गुरु कहीने, सद्दहे ॥ कदापि आ काळ तो

दूषम छे, माटे एवा गुरुनी जोगवइ मलवी घणी मुश्केल छे पण कदापि आजने काले पण मुल गुणे करीने सहित जोइए, एटले शुद्ध लिंग आगल कह्यो ते प्रमाणे होय, अने पच महाव्रत मूल गुणे करीने सहित होय ॥ अने उत्तर गुणे सामान्य विशेषे होय तेनु कांइ जोवानो विचार नहि, शा माटे जे श्री भगवतीजी म-ये कह्यु छे जे पांचमे आरे बकुश चारित्रिया होशे। एटले बकुश चारित्रके०॥ चारित्र छे ते निर्मल छे पण उत्तर गुणमां दूषण लागे एटले दोष रूप पडी जे भात ते थकी चारित्र रूप वस्त्र कावरू थयुं, एने बकुश चारित्र कहीए. एटला माटे आ काले मूलगुणे उत्तरगुणे करीने सहित एवु चारित्र संभवे नहि, ते माटे मूल गुणे करी सहित होय, वली बेतालीस दोषरहित आहार ले तेने साधुकरी सद्दहवा ॥ ते बेतालीस दोष देखाडे छे ॥ एनी गाथा ६ कहे छे ॥

आहाकम्मु ॥ १ ॥ द्देसिय ॥ २ ॥ पुइकम्मेय ॥ ॥ ३ ॥ मिसजाएअ ॥ ४ ॥ ठवणा ॥ ५ ॥ पाहूडीयाए ॥ ६ ॥ पाओयर ॥ ७ ॥ किय ॥ ८ ॥ पांमीच्चे ॥ ९ ॥ परीअट्टिये ॥ १० ॥ अभिहड्ड ॥ ११ ॥ भिन्ने ॥ १२ ॥ मालोहडे ॥ १३ ॥ अछिज्जो ॥१४॥ अणसिठे ॥ १५ ॥ अझोयर ॥ १६ ॥ सोलस पिंडूग्गमे दोसा ॥ २ ॥ धाइ ॥ १ ॥ दुई ॥ २ ॥ निमित्तं ॥ ३ ॥ आजीव ॥ ४ ॥ वणिमगे ॥ ५ ॥ तिगीच्छाय ॥ ६ ॥ कोहे ॥ ७ ॥ माणे ॥ ८ ॥ माया ॥ ९ ॥ लोभेय ॥ १० ॥ हवति दशएण ॥ ३ ॥ पुव्निपच्छा संथव ॥ ११ ॥ विज्ञा ॥२२॥ ञ्छातेय ॥

॥ १३ ॥ वुत्र ॥ १४ ॥ जोगेय ॥ १५ ॥ उप्पायणाय ॥ १६ ॥ दोसा सोलसये मूल कम्मेय ॥ १६ । ४ । संकिय ॥ १ ॥ मखिय ॥ २ ॥ निखित्त ॥ ३ ॥ पिहीय ॥ ४ ॥ साहरीय ॥ ५ ॥ दायग्र ॥ ६ ॥ मिस्से ॥ ७ ॥ अपरीणय ॥ ८ ॥ लित ॥ ९ ॥ छड्डिअ ॥ ॥ १० ॥ एसण दोसा दसहवंति ॥ ५ ॥ संजोअणा ॥ १ ॥ पमाणे ॥ २ ॥ इगाले ॥ ३ ॥ धुम ॥ ४ ॥ कारणे ॥ ५ ॥ पढमावसहि बहिरंतरेवा सहे उदव सजोगा ॥ ६ ॥

एनो अर्थ सोल उद्गम दोष कहीए छीए आधाकर्मी ते अतिथाने अथ मूल थकी छकायनो आरभ करी निपायु आहारादिक ते आधाकर्मि दोष कहीए ॥ १ ॥ उद्देशिक ते मागणहार आवशे एम जाणो त अथे कीधु ने ॥ उद्देशिक दोष कहीए ॥ २ ॥ पूति कर्म ते आधाकर्मने कारण सहित कीधु, ते पूति कर्म कहीए ॥ ३ ॥ मिश्रजाति ते कोइ यतिने अर्थे कोइ पोताने अर्थे कीधु ने मिश्रजाति दोष कहीए ॥ ४ ॥ स्थापना ते साधुने अर्थे इउा राखे ते स्थापना दोष कहीए ॥ ५ ॥ माहुभा ते सुखडीके० ॥ जमणवार आघी पाछी करे ते माभृतदोष कहीए ॥६॥ माडुःकरण ते साधु निमिने, अधारे कांइ छानु प्रगट करवाने छिद्रादिके करी प्रकाश करे तेने माडु करण दोष कहीए ॥७॥ करण ते साधु नीमित्ते वेचातु लेइ आपे ते करणदोष कहीए ॥ ८ ॥ मामित्य ते उछिनु साधुने अर्थे लेइ आपे ते मामित्य दोष कहीए ॥ ९ ॥ परावर्त्त ते नरवर सरवर वस्तु कांइ पाछटी

साधुने आपीए ते परावर्त्तदोष कहीए ॥ १० ॥ अभ्याहृत ते अनेरां आमपाडि घरथकी साधु आणी आपे ते अभ्याहृत दोष कहीए ॥ ११॥ उद्भिन ते साधु नीमित्ते कमाड तथा तालु उघाडी आपे ते उद्भिन दोष कहीए ॥१२ ॥ मालापहृत ते उंचु नीचु तिर्च्छुं ते थकी लेइने दे ते मालापहृत दोष कहीए ॥ १३ ॥ आछेद ते कुमारादिकनु खुचावी लेइ साधुने दिए, ते आछेद्य दोष कहीए ॥ १४ ॥ अनिसृष्ट नेह् निहुनि वस्तु साधारण माहे एक दिए ते अनिसृष्ट दोष कहीए ॥ १५ ॥ अध्यवपुरक ते मूल आधणथकी अधिकु नाखे अमारे साधुनी आवनार छे ते निमित्त ते अध्यवपूरक ॥ १६ ॥ एटला दोष गृहस्थ कर्त्ता हवे उत्पादन दोष साधु कर्त्ताना कहे छे ॥ १६ ॥ ए सोले दोष आहारना उत्पादन दोष ते कहिए के जे साधुथकी उपजे धात्रि ते गृहस्थना बालक रमाडी आपर्गि दान ले ते धात्रि दोष कहीए ॥ १ ॥ दूति ते गामादि सदेशा कह्या दान ले ते दूति दोष ॥ २ ॥ निमित्त ते अतित अनागत कही दान ले ते निमित्त दोष कहीए ॥ ३ ॥ आजिविका ते जाति कुलादिक कही दान ले ते आजिविका दोष कहीए ॥ ४ ॥ वनिपककें० ॥ आहार निमित्त ब्राह्मणादिकने घेर हुं पण ब्राह्मणादिकनो भक्त छु एवो थई ले, ते वनिपक दोष कहीए ॥ ५ ॥ चिकित्सा ते वैद्यक कही ले ते चिकित्सा दोष कहीए ॥ ६ ॥ क्रोध पिंड ते विद्यावत तप मत्रादिक बालेदान ले ते क्रोध पिंड दोष कहीए ॥ ७ ॥ मान पिंड ते गृहस्थने अहकार चडावी दान ले ते मानपिंड दोष कहीए ॥ ८ ॥ मायापिंड ते मायाये अनेक रूप करी दान ले ते मायापिंड दोष करीए ॥ ९ ॥ लोभपिंड ते सरस आहारने अर्थे सई, घई, फरई, केसरीया मोदमोदकने अर्थे ते लोभपिंड दोष कहीए ॥ १० ॥ पूर्व पश्चात्

सस्तव ते, पहेलु तथा पछी गृहस्थनी स्तुति करे तो पूर्वे पश्चात् संस्तव दोष कहीए ॥ ११ ॥ विद्यापिंड ते देवतानु आराधन करे करावे, आहारादिकने अर्थे विद्यापिंड दोष ॥ एवी देवी अदृष्टाता होय ॥ १२ ॥ मत्रपिंड ते अदृष्टार करणादि मत्र साधे सधावे आहारादिकनेऽर्थे मत्रपिंड दोष कहीए ॥ १३ ॥ चूर्णपिंड ते आंखनु अजनादिक आपी दान ले ते चूर्णपिंड दोष कहीए ॥१४ योगपिंड ते शौभाग्य दौर्भाग्यादिके करी दान लिए ते योगपिंड दोष कहीए ॥ १५ ॥ मूलकर्म ते गर्भ उत्पातादिक करे करावे अने दान लिए ते मूलकर्म कहीए ॥१६॥ ए उत्पादन दोष कहीए ॥ ते साधु थकी नीपजे ॥ ए सोल दोष एव बत्रीस ॥ ३२ ॥ दोष सर्व मली जाणवा, हव एपणादोष लिखीए छीए सकित ते आधा कर्मादिक दोष तणी शकाए गृहण करे ते सकित दोष कहीए ॥ १ ॥ मचितदोष ते सचित अचिते करी खरड्यो ले ते मचीत दोष कहीए ॥२॥ निक्षिप्त ते सचित पृढविकायादिक उपर मेल्लो वस्तु मानु ले तेने निक्षिप्त दोष कहीए ॥ ३ ॥ पिहितदोष ते सचिते करी ढांकि अचित्त वस्तु लिए दिए ते पिहितदोष कहीए ॥ ४ ॥ सहृत ते मोटा भाजनथी नाना भाजने अथवा अधुजने लिए दिए ते सहृतदोष कहीए ॥ ५ ॥ दायक ते खडण पीसणादिक छकायनी विराधना करतां तथा बाल धरावती उठी अथवा गर्भवती स्त्री लिए दिए ते दायक दोष कहीए ॥ ६ ॥ उन्मिश्र ते सचित फलादिक अचित्त खाद्यादिक एकठां भेलि लिए दिए ते उन्मिश्रदोष कहीए ॥ ७ ॥ अपरीणित ते कांइक काचु कांइक पाकु दान लिए दिए ते अपरीणित कहीए ॥ ८ ॥ लिप्त ते सचित्ते अथवा मिश्र वस्तु भीने हाथे तथा लेपवाला हाथे लिए दिए ते लिप्त दोष ॥ ९ ॥ छर्दित ते घृतादिक छांटो पडे लिये

दिये ते छर्दित दोप कहिये ॥ १० ॥ एपणादोप दश होय ते साधुथी तथा गृहस्थथी लागे ॥ हवे पांच दोप मालाना केहे छे स योजना ते खीर खांड घृत स्वादने अर्थे, एकठा मेलि पोशाळा माही अथवा बाहिर ते सयोजनाना दोप कहीए, अप्रमाण ते प्र- माण जेटली ले, तेटलाथी अधिक ले ते अप्रमाण दोप कहीए ॥ २ ॥ इगाल ते मन माहे दातारने प्रशस्त रागे जमतो करे ते इगाल दोप चारित्र बालीलाहाला करे ॥ ३ ॥ धूम्र ते सामान्य अन्न माटे दातारने निंदतो द्वेषे जमतो करे ते धूम्रदोप कहीए ॥ ४ ॥ कारणने क्षुधा वेदनी, अहिं आसन केना ॥ कारणे आ हार करे ॥ १ ॥ अथवा आचार्यादिकनु वेयावच करवाने कारणे आहार करे ॥ २ ॥ अथवा इर्यासमिति पालवाने कारणे आहार करे ॥ ३ ॥ अथवा सजम पालवाने अर्थे आहार करे ॥ ४ ॥ अथवा धर्म ध्यान धारवाने कारणे आहार करे ॥ ६ ॥ ए छ कारण विना आहार करे ते साकर्ण दोप कहीए उपाश्रय बारणे अथवा माही रस वधारवा हेतु ए वे एकठा करवा ते सजना जा- णवा ॥ ६ ॥ इत्यादिक एपणा दोपने टाले मूल गुणे करीने स- हित होय तेने साधु करीने सद्दहे ते त्रीजो तत्व कह्यो ॥ इतिश्री सम्यक्त द्वार ग्रथो मुनिश्री हुकमचदजी विरचिते पचमोऽध्याय परीपूर्णम् ॥ ५ ॥

पांचमा अध्यायमा गुरुतत्व ओलखाव्यो, हवे छट्ठा अध्या- यमां धर्मतत्व ओलखावे छे, धर्मतत्व केवो छे अतितकाले पण धर्म तत्वने आराधीने मुक्ति रूप लक्ष्मीने वर्या, वर्त्तमानकाले पण धर्मतत्वने आराधीने घणा जीव मुक्तिरूप लक्ष्मीने वरेछे, अनागत काले वरशे, ते माटे हे भव्य जीवो प्रथम जे सद्- गुरु देखाड्या, तेवा गुरुनी सेवा उपासना करो ॥ पछी तेमनी

पासेथी धर्मतत्व सांभळवो, शामाटे के सद्गुरुविना बीजा गुरु धर्मतत्वने यथार्थ ओलखाववा समर्थ नथी, ते माटे जे सद्गुरु होय अने बहु श्रुत होय तेनुं बहूमान भक्ति करवी, अने धर्म ते मनी पासेथी सांभलीने ओलखवो, सद्दहीने आराधवो, आरा धवाथी मुक्तिरूप लक्ष्मी मले, ते माटे हे भव्य जीवो धर्मतत्व नी खप विशेषे करीने करजो, ते धर्मना बे भेद एक अणगार धर्म ॥ १ ॥ बीजो आगार धर्म ॥ २ ॥ अणगारके० ॥ साधुनो धर्म तो पांचमा अधिकारमां कह्यो छे अने आगारके० ॥ श्रावकनो धर्म ते कहे छे ते श्रावकने देशविरति कहीए देशके० ॥ थोडु छे व्रत तेने देशविरति कहीए, तेना बार भेद छे, ते निश्चय ने व्यवहारथकी ओलखावे छे, ते प्रथम प्राणातिपात व्रत ॥ १ ॥ प्राणातिपातके० ॥ जीवनी हत्या न करवी, ते जीवना भेद देखाडे छे हवे जीवके० ॥ चेतना लक्षणो जीवः एटले चेतना लक्षण छे तेने जीव कहीए ते जीवना बे भेद ॥ त्रस ॥ १ ॥ थावर ॥ २ ॥ ते थावरना पांच भेद ॥ पृथिविकाय ॥ १ ॥ अप्काय ॥ २ ॥ तेउ-काय ॥ ३ ॥ वाउकाय ॥ ४ ॥ वनस्पतिकाय ॥ ५ ॥ हवे ते पृ थ्वीकायना च्यार भेद सूक्ष्म पृथिविकाय पर्याप्तो ॥ १ ॥ अपर्याप्तो ॥ २ ॥ हवे सूक्ष्मके० ॥ जेनी काया अतिसे नानी छे एटले चर्म दृष्टिगोचर आवे नहीं ए ते केवलीगम्य छे तेना प्राण पर्याप्ति तथा शरीर बादरमां कह्यां हवे सूक्ष्म पृथ्विकायने त्रण लेश्या होय ॥ कृष्ण ॥ १ ॥ नील ॥ २ ॥ कापोत ॥ ३ ॥ एमप्रमाणे सूक्ष्म पृथ्विकाय अपर्याप्ता जाणवा ॥ ते चौदराज लोक व्यापि छे हवे बादर पृथिविकायना बे भेद ॥ एक पर्याप्तो ॥ १ ॥ बीजो अपर्याप्तो ॥ २ ॥ हवे पर्याप्ति तथा प्राण एनी ओलखाण बतावे छे ॥ फर-सेंद्रि ॥ १ ॥ रसेंद्रि ॥ २ ॥ घ्राणेंद्रि ॥ ३ ॥ चक्षु इंद्रि ॥ ४ ॥

श्रोतेंद्रि ॥ ५ ॥ मनबल ॥ ६ ॥ वचनबल ॥ ७ ॥ कायबल ॥८॥ श्वासोश्वास ॥ ९ ॥ आवखु ॥ १० ॥ तथा पर्याप्ति छ ॥ आहार पर्याप्ति ॥ १ ॥ शरीरपर्याप्ति ॥ २ ॥ इंद्रियपर्याप्ति ॥ ३ ॥ श्वासो-श्वासपर्याप्ति ॥ ४ ॥ भाषापर्याप्ति ॥ ५ ॥ मनपर्याप्ति ॥ ६ ॥ ए छ पर्याप्ति हवे पृथ्विकायना जीवने ए दश प्राण माहेला चार प्राण होय ते कहे छे फरसेंद्रि ॥ १ ॥ कायबल ॥ २ ॥ श्वासोश्वास ॥ ३ ॥ आवखु ॥ ४ ॥ ए च्यार प्राण होय तथा छ पर्याप्ति मां-हेली च्यार पर्याप्ति होय ते कहे छे, आहारपर्याप्ति ॥ १ ॥ शरीर पर्याप्ति ॥ २ ॥इंद्रियपर्याप्ति ॥ ३ ॥ श्वासोश्वासपर्याप्ति ॥ ४ ॥ ए च्यार माहेथी त्रीजी जे इंद्रियपर्याप्ति बांधे, तेने करणपर्याप्तो कहीए. एटले कोइ जीव करण अपर्याप्तो मरे नहीं करणपर्याप्ति बांध्या पछी मरे, अने जे जीव अपर्याप्तो मरे ते लब्धि अपर्याप्तो मरे, एटले पृथ्विकायनो जीव च्यार पर्याप्तिथकी उणो होय त्यां सुधी अपर्याप्तो कहीए. अने च्यार पर्याप्ति पूरी बांध एने पर्याप्तो कहीये. ॥ हवे बादर पृथ्विकायने च्यार लेश्या होय कृष्ण ॥ १ ॥ नील ॥ २ ॥ कापोत ॥ ३ ॥ तेजो ॥ ४ ॥ तथा पृथ्विकायने त्रण शरीर होय ॥ औदारीक ॥ १ ॥ तेजस ॥ २ ॥ कार्मण ॥ ३ ॥ तथा पृथ्वि-कायनी अवगाहना आंगुलने असख्यातमे भागे होय ॥ तथा पृ थ्विकायनु आवखु ॥ जघन्य अतर्मुहूर्त ॥ उत्कृष्ट २२ हजार वर्षनु ॥ हवे अप्कायना पण च्यार भेद सर्व पृथ्विकायनी परे, एटलो विशेष के उत्कृष्टु आवखु ७ हजार वर्षनु होय ॥ २ ॥ हवे तेउकाय पृथ्विकायवत् एटलो विशेष जे लेश्या त्रण होय कृष्ण ॥ १ ॥ नील ॥ २ ॥ कापोत ॥ ३ ॥ तथा आउखु उत्कृष्टु त्रण अहोरात्रिनु होय ॥ ३ ॥ हवे वाउकाय पण पृथ्वि कायनी परे-एटलो विशेष के शरीर च्यार होय औदारीक ॥ १ ॥

वैक्रिय ॥ २ ॥ तेजस ॥ ३ ॥ अने कार्मण ॥४॥ तथा लेश्या तेउकायवत् ने आउखु उत्कृष्ठु त्रण हजार वर्षनु ॥ ५ ॥ हवे वनस्पतिकायना वे भेद, प्रत्येकने साधारण ॥ प्रत्येकना वे भेद पर्याप्तोने अपर्याप्तो प्रत्येक वनस्पति पृथ्विकायवत् एटलो विशेष के आउखु उत्कृष्ठु दस हजार वर्षनु साधारण वनस्पतिना च्यार भेद सूक्ष्मने बादर ॥ सूक्ष्मने निगोद कहीए तेनो विचार लेश मात्र बतावे छे एटले चौद राजलोक छे, ते लोकरु० ॥ आकाश, ते आकाश एक आगुलने असख्यातमे भागे आकाशना असख्यात प्रदेश छे ते एकेका आकाश प्रदेशे एकेको गालो छे ते एकेक गोलामां असख्याति निगोदो छे एकेक निगोदमा अनता जीव छे ते केटला ॥ अतित कालना गया समय तथा अनागत कालना जेटला समय ते थकी अनत गुणा एक निगोदमां जीव छे हवे ते निगोदिया जीवनु आवखु ॥ एक श्वासोश्वास जुवान पुरुष निरोगी कायानो घणी एक सास उचो लेइने नीचो मूके एटलामा साडा सत्तर भव करे एटले सत्तरवार जन्मीने मरे, अढारमी वारनो जन्मे वली बीजे प्रकारे आउखु वसेंने छप्पन आवलिनो क्षुल्लक भव जाणवो, ते मांहोमाहे घणी भिडथी दुख भोगवीने मरे छे ते दुखनी वेदना केटली छे ? के सातमी नर्के तेत्रिस सागरोपमनु आउखु छे ते तेत्रिस सागरोपमना जेटला समय एटलीवार सातमी नर्के उपजे ते तेत्रिस सागरोपमनु दुख एकठु करीये ए थकी अनत गुणी वेदना एक समये निगोदियो जीव भोगवे छे, ते सुक्ष्म निगोदने अव्यवहार राशि कहिये अव्यवहार राशिके० ॥ जे जीव बादरमा नथी आव्यो त्यां सुधी अव्यवहार राशिनो जाणवो, जे जीव बादर राशिमां एकवार आव्यो तेने व्यवहार राशियो कहीए तेवारे शिष्य बोल्यो हे स्वामि व्यवहार राशि तथा अव्यवहार राशिनु शु कारण छे,

तेनो उत्तर जे व्यवहार राशिमा आवेलो जीव, ते फरी सूक्ष्म नि गोदमां जाय तो जघन्य थकी अंतर्मुहूर्त्त रहे, उत्कृष्टो रहेतो अढी पुद्गल परावर्त्तन रहे ते उपरात रहे नहि अने अव्यवहार राशि मां जे जीव सूक्ष्म निगोदमांथी नीकल्या नथी ते जीव अनंता पुद्-गल परावर्त्तन वहि जशे, तो पण नीकलशे नहि, ते माटे व्यवहार राशिने अव्यवहार राशि जुदी कहेवी पडे हवे जेटला जीव इहां थकी मोक्षे जाय, एटला जीव अव्यवहार राशिमांथी व्यवहार राशिमां आवे, पण व्यवहार राशि घटे वधे नहि, हवे सूक्ष्म निगोदना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता तथा बादर निगोदजे कद मूला-दिक तेना पर्याप्ता अने अपर्याप्ता सर्व पृथ्वि कायवत् एटलो विशेष के लेश्या त्रण होय; अने बादर निगोदनु आउखु प्रत्येक वनस्पतिवत् अने बादर निगोदनी अवगाहना एक शरीरे अनता जीव होय, एटल वनस्पतिनु स्वरूप कह्यु एटले पांच थावरना बाविश भेद करी देखाड्या ॥ २ ॥ त्रसना चार भेद ॥ बेरद्रि ॥ १ ॥ तेरद्रि ॥ २ ॥ चउरेंद्रि ॥ ३ ॥ पचेंद्रि ॥ ४ ॥ हवे बेरद्रिना बे भेद ॥ पर्याप्तो॥१॥ अपर्याप्तो ॥ २ ॥ अलशिया प्रमुख जीव तेने प्राण ॥ ६ ॥ होय ॥ फरसेंद्रि ॥ १ ॥ रसेंद्रि ॥ २ ॥ वचनबल ॥ ३ ॥ कायबल ॥४॥ श्वासोश्वास ॥ ५ ॥ आउखु ॥६॥ ए छ प्राण तथा पर्याप्ति पांच होय ॥ आहार, शरीर, इद्री, श्वासोश्वास अने भाषा पर्याप्ति ॥६॥ तथा लेश्या त्रण होय ॥ कृष्ण ॥ १ ॥ नील ॥ २ ॥ कापोत ॥३॥ तथा शरीर त्रण होय औदारिक ॥ १ ॥ तेजस ॥२॥ कार्मण ॥३॥ अवगाहना बार जोजन, आउखु जघन्य अतरमुहुर्त्त, उत्कृष्ट बार वर्षनु ॥ १ ॥ हवे तेरद्रिनु कीडी मकोडी प्रमुख बेरद्रिवत् एटलो विशेष जे सात प्राण, एक घ्राणेंद्रि वधे तथा अवगाहना त्रण

गाउनी, आउखु उत्कृष्ट ओगण पचास दिवसनु ॥ २ ॥ तथा च उरेंद्रि बेरिंद्रिवत् एटलो विशेष जे प्राण आठ होय, घ्राणाद्रिने चक्षु इद्रि वधे, तथा अवगाहना च्यार गाउनी, तथा आउखु छ मासनु ॥ ३ ॥ ए त्रणने विगलेंद्रि कहीए, ए त्रणना पर्याप्ता अपर्याप्ता थइने छ भेद थाय हवे पचेंद्रिना च्यार भेद, नारकी ॥ १ ॥ देवता ॥ २ ॥ तिर्यंच ॥ ३ ॥ मनुष्य ॥ ४ ॥ ते नारकीनां नाम ॥ घमा ॥ १ ॥ वसा ॥ २ ॥ सेला ॥ ३ ॥ अजण ॥ ४ ॥ रिठा ॥ ५ ॥ मघा ॥ ६ ॥ माघवति ॥ ७ ॥ ए सातनो पर्याप्ता अपर्याप्ता थइने चउद भेद थाय, हवे देवताना च्यार भेद भवनपति ॥ १ ॥ व्यतर ॥ २ जोतिषि ॥ ३ ॥ वैमानिक ॥ ४ ॥ दस भवनपति पनर परमधामि, सोल व्यतर, दस तिर्यंच जृभक दश जोतिषि ते पाच चर अने पाच स्थिर ॥ वमानिकमां बार देवलोक त्रण किल्बिषिया, नव लोकांतिक, नव ग्रैवेयक, पांच अनुत्तर विमान, ए सर्वे मलीने च्यार निकायना देवना नवाणु भेद थया, ते नवाणु पर्याप्ताने ने नवाणु अपर्याप्ता, सर्व थइने एकसोने अठाणु भेद थया, ए देवता तथा नारकीनो भावार्थ जीवाभिगमथकी जाणवो हवे तिर्यचना पाच भेद, जलचर ॥ १ ॥ थलचर ॥ २ ॥ खेचर ॥ ३ ॥ उरपरि ॥ ४ ॥ भुजपरि ॥ ५ ॥ ए पांच गर्भज पाच समुर्छिम, ए दसना पर्याप्ताने अपर्याप्ता थइने त्रीस भेद थया हवे मनुष्यना पांच भरतना, पांच ऐरवतना, पाच महाविदेहना, ए पनर कर्मभूमिना पनर भेद, हवे अकर्मभूमिना त्रीस भेद लिखीए छे, पांच हेमवत क्षेत्रना, पांच हरीवर्ष क्षेत्रना, पाच देव कुरुक्षेत्रना पांच उत्तर कुरुक्षेत्रना, पाच रमणीकवास, पाच अरणकवास ए त्रीस अकर्म भूमिना मनुष्य, छप्पन अतराद्विपना मनुष्य, पनर कर्मभूमि, त्रीस अकर्मभूमि, छप्पन अतराद्विप ए एकसोने एक क्षेत्रना

पर्याप्ताने अपर्याप्ता ए त्रसेंने बे भेद अने एकसोएक असनीयाके० ॥ चउद स्थानके उपजे ए पर्याप्ताज मरे, ए त्रणसने त्रण भेद वसेंनेसाठ त्रण गतिना पूर्वे कह्या ते मळी जीवना पाचसेंने त्रेसठ ॥ ५६३ ॥ सहु भेद जीवना, मनुष्यना ने तीर्यचना तेनो विचार पन्नवणाथकी विशेष जाणवो. इहा तो ग्रथगौरव थाय ते माटे नाम मात्र लिख्या ए जीवनु स्वरूप अजीवने ओलख्या विना जीवनु स्वरूप बराबर जाणे नहि, माटे अजीवनु स्वरूप सक्षेपथकी देखाडीए छीए हवे अजीवना बे भेद, एक रूपी, एक अरूपी, ते अरूपी अजीवना च्यारभेद धर्मास्ति काय ॥ १ ॥ अधर्मास्तिकाय ॥ २ ॥ आकाशास्तिकाय ॥ ३ ॥ काल ॥ ४ ॥ धर्मास्तिकाय खधते चउद राजलोक प्रमाण ॥ १ ॥ देश ते कल्पना मात्र ॥ २ ॥ धर्मास्तिकायनो प्रदेश ॥ ३ ॥ अधर्मास्तिकाय खध ॥ १ ॥ देश ॥ २ ॥ प्रदेश ॥ ३ ॥ आकाशास्तिकाय खध ॥ १॥ लोकालोक प्रमाण ॥ २ ॥ देश ॥ २ ॥ प्रदेश ॥ ३ ॥ लोकाकाश प्रमाण ॥ कालनो एक समय ॥ १ ॥ एनो खध देश होय नही शामाटे जे एक समयथी बीजो समय मळतो नथी माटे कालनो एकज भेद ॥ ए दश भेद थया ॥ १० ॥ धर्मास्तिकाय द्रव्य थकी नित्य छे ॥ १ ॥ धर्मास्तिकाय क्षेत्र थकी चउदराज लोक प्रमाण ॥२॥ धर्मास्तिकाय काल थकी अनादि अनत ॥३॥ धर्मास्तिकाय भाव थकी॥४॥वर्ण, गध,रस, फरस नथी॥४॥धर्मास्तिकाय गुण थकी ॥२॥ चलण सहाय गुण॥५॥अधर्मास्तिकाय॥१॥ द्रव्यथी॥२॥ खेत्रथी ॥३॥ कालथी भावथी पुर्ववत् ॥४॥ गुण थकी स्थिर सहाय गुण ॥ ५ ॥ आकाशास्तिकाय द्रव्यथकी एक क्षेत्रथकी लोकालोक प्रमाण ॥२॥ कालथकी ॥ ३ ॥ भावथकी ॥ ४ ॥ गुणथकी अवगाहना गुण ॥ ५ ॥ काल द्रव्यथकी ॥ १ ॥ क्षेत्रथी कालथी

॥ २ ॥ भावथी ॥ ३ ॥ गुणथकी ॥ ४ ॥ नवापुराणावर्त्तना गुण ॥ ५ ॥ ए अरूपि अजीवना २० भेद थया, दश भेद पेहेलाकह्या छे ते मली ३० भेद थाय हवे रूपी अजीवना पांचसें त्रीश भेद कहे छे वर्ण पांच ॥ १ ॥ कालो ॥ निलो ॥ २ ॥ पीलो ॥ ३ ॥ रातो ॥ ४ ॥ धोलो ॥ ५ ॥ गंध ॥ २ ॥ सुर्भिगंध ॥ १ ॥ दुर्भिगंध ॥ २ ॥ रस ॥ ५ ॥ खाटो ॥ १ ॥ खारो ॥ २ ॥ तिखो ॥ ३ ॥ तमतमो ॥ ४ ॥ मिठो ॥ ५ ॥ फरस ॥ ८ ॥ खरखलो ॥ १ ॥ सुवालो ॥२ ॥ टाढो ॥ ३ ॥ उनो ॥ ४ ॥ भारे ॥ ५ ॥ हलुओ ॥ ६ । लुखो ॥ ७ ॥ चोपडो ॥ ८ ॥ सस्थान ॥ ५ ॥ ए पचवीश भेद ॥ एक वर्णमां वीस भेद लाधे ॥ बेगंध ॥ २ ॥ पांच रस ॥ ५ ॥ आठ फरस ॥ ८ ॥ पांच सस्थान ॥ ए वीश ॥ २० ॥ ए पांच वर्णना ॥ १०० ॥ भेद ॥ एम पाच रसना पण सो ॥ १०० ॥ भेद ॥ पाच सस्थानना पण ॥ १०० ॥ भेद, आठ गंध अने बे फरस ए दशना बसेंने त्रीश ॥२३०॥ भेद थया एम रूपी अजीवना पांचसेंने त्रीश भेद थया ॥ ५३० ॥ अरूपी अजीवना ॥ ३० ॥ भेद मांहे भेगा करीये एटले अजीव द्रव्यना पांचसेंने साठ भेद ॥ ५६० ॥ थया एनो विस्तार जोवो होय तो श्री पन्नवणाजी मं वे छे, एवी रीते जीव अजीवनु स्वरूप जाणीने पछी श्रावकना व्रत ले, तेने थावर जीवनां पचखाण तो छे नहि, अने त्रसजीवना अपराधनी जयणा छे, विण अप राधि रह्या तेमां आरंभे जयणा, अणारंभि रह्या तेमां सउ उप ग्रहितनी जयणा ॥ एटले अणापराधि अणारंभे अने अण उपग्रहित ॥ एवा जीवने हणवाना श्रावकने पचखाण छे ॥ ते पण छ कोटीना पचखाण छे ॥ एटलो मन ॥ १ ॥ वचन ॥ २ ॥ काया ॥ ३ ॥ थकी अनुमोदवानी जयणा छे माटे श्रा-

वकु व्रत छेक थांडु तेथी देश विरति कहीए ते पेंहलु व्रत ते प्राणातिपात, जे परजीवने आपणा सरखा जाणी सर्व जीवने रखवाले ते दया ॥ ए व्यवहार प्राणातिपात विरमण जाणवु हवे निश्चय दया कहे छे जे आपणो जीवकर्म वशे दुखी थाय छे, ते आपणा जीवने कर्मथी छोडाववो, आत्मगुण रखवालवा गुणविचारवो ते चार प्रकारे बंध हेतु पणाथी निवारे, स्वरूप गुणनो प्रगटपणो करवो, प्रगट थयो गुण ते राखवो, एम आत्मस्वरूपने विषे विश्राम ते तत्वानुभव, ते चारित्र कहीए ते निश्चय दया, एटले ज्ञानथी मिथ्यात्वने खपावे आपणा जीवने निर्मल करे ते निश्चय दया, ते जीव प्राणातिपातथकी विरम्यो छे ते प्राणातिपात कह्यो हवे मृपावाद कहे छे, कुडो वचन बोलवो, ते व्यवहार मृषावाद विरमण कहिये, हवे निश्चय कहे छे, जे परवस्तु पुद्गलादिने आपणी कहेवी, ते मृषा वचन छे, अने जीवने अजीव कहे अने अजीवने जीव कहे इत्यादिक अज्ञान ते भाव मृपावाद छे, अथवा सिद्धांतनो अर्थ खोटो कहे ते मृषावादमां छे, ए मृषावाद जेणे छाड्यो ते निश्चय मृषावादथी विरम्यो एटले बीजा अदत्तादानादिक जो भाजे तो चारित्र भाजे, पण ज्ञान दर्शन चारित्र अने निश्चय जेणे मृषावाद भाज्यो तेणे समकित ज्ञानचारित्र भाज्यां तथा आगममां एम कह्यु छे जे एक साधु ए चोथो व्रत भाज्यो अने एक साधुए बीजो मृषावाद भाज्यो, एटले ह्वां जेणे चोथो व्रत भाज्यो ते आलोयणलिये शुद्ध थाए, पण जे सिद्धांतादिकनो मृषा उपदेशदेवे ते आलोयणलिये पण शुद्ध होवे नहि ॥ हवे अदत्तादान कहे छे जे पारकुं धन वस्तु उपार्जने चोरीने ठगीने लीये ते चोरी छे, एटले अणदीठी पारकी वस्तु लेवे ते अदत्तादान व्यवहार नयथी जाणवो निश्चयनय अदत्तादान कहे छे ते पांच इंद्रिनाविषय विषयने आठ कर्मनी वर्गणा

इत्यादिक परवस्तु ते आत्माने अग्राह्य छे, पर छे, ते लेवानी वांछा करे ते निश्चयनय अदत्तादान कहीए तथा कोइक कहेशे जे विषयनी अने कर्मनी वाछा करे छे ते वाछा कोण करे छे ? तेनो उत्तर जे पुन्यनेमेतु लेवा जोग्य कहे छे, ते जीव कर्मनी वाछा करे छे, ते पुन्यना बेतालीस भेद छे ते चार कर्मनी शुभ प्रकृति छे एटले जे व्यवहार अदत्तादान नहि लेवो पण अतरग पुन्यादिकनी वाछा छे तेने निश्चय अदत्तादान लागे छे हवे मथुन विरमण व्रत कहे छे, तिहां जे कोइ पुरुष पर स्त्रीनो परिहार करे ते मैथुन विरमण व्यवहार कह्यो तथा स्त्री पुरुषनो परिहार करे, ते मैथुन विरमण व्यवहार कहीये इहां साधुने स्त्रीनो सर्वथा त्याग छे, अने गृहस्थने हाथ परणि स्त्री मोकळी छे अने परस्त्रीनां पचखाण छे, ते व्यवहार हवे निश्चय कहे छे जे विषया भिलापनो त्याग अने ममता तृष्णा ए परभाव अने वरणादिक परद्रव्य स्वामित्वादिक तेनु अभोगिपणु आत्माना स्व गुण ज्ञानादिकनो भोगी ते पुद्गलरूप अननाजीवनी एठ ते ॥ मने भोगववी घटे नहीं, ए रीते त्याग ते निश्चय मैथुन विरमण कहीये जेणे नाव विषय छोडयो छे, अने अतरग लालच नहि छुटि तो तेने मैथुननां कर्म लागे, हवे परिग्रह परिमाण व्रत कहे छे परिग्रह धन, धान्य, दास, दासि, चौपद, घर धरति, वस्त्र आभर्णनो त्याग ते परिग्रह त्यागव्रत व्यवहारथी जाणवो ए साधुने सर्व परीग्रहनो त्याग छे, श्रावकने इच्छा परिमाण छे, जेटली इच्छा होय तेटलो मोकलो राखे, बीजानी विरति करे, ए व्यवहार पाचमो व्रत कह्यो निश्चय भावकर्म रागद्वेष अज्ञान द्रव्य कर्म ज्ञानावरणीय प्रमुख आठ कर्म शरीर इंद्रिनो परिहार एटले कर्मने पर जाणी छाडवा ते निश्चय परिग्रहनो त्याग एटले परवस्तुनी

मूर्छा छोडवी, तेणे परिग्रह छाडयो छे, एटले परिग्रह त्यागव्रत कह्यो, ए पांच व्रत कह्या, छठ्ठु दिशि परिमाण व्रत कहे छे, च्यार दिशि अने ऊर्ध्व तथा अधो ॥ ए छ दिशाना क्षेत्रनु मान करी मोकलु राखे, ते व्यवहार दिशिपरिमाण व्रत कहीये, अने गति च्यार कर्म गुण जाणी तेथी उदासपणु अने सिद्धावस्था शु उपादेयपणु ते निश्चयादिशि परिमाण कहीए. हवे भोगोपभोग परिमाण व्रत कहे छे ते भोग कहेता एकवार भोगविये अने उपभोग जे वारवार भोगविये तेनु परिमाण कर ते व्यवहार भागोपभोग व्रत कहीये, अने निश्चय भोगोपभोग व्रत तो जे व्यवहारनये कर्मनो कर्त्ता ने भोक्ता ते जीव छे, निश्चयनये कर्मनो कर्त्ता कर्म छे ए आत्मा अनादिनो परभावभोगी थयो त्यारे परभाव ग्राहक थयो परभाव रक्षक थयो, एटले आत्माना ज्ञेयकता ॥ १ ॥ ग्राहकता ॥ २ ॥ भोग्यता ॥ ३ ॥ रक्षकता ॥ ४ ॥ वीगडे कर्त्तापणो वीगडयो तेथी परभाव कर्त्ता थयो, तेणे करी परभावरगीपणे आठ कर्मनो कर्त्ता थयो छे पण सत्ताये तो स्वभावनो कर्त्ता छे, पण उपगरण अवराणाथी स्वकार्य करी शकतो नथी विभावने करे छे, ने अज्ञानपणे जीवनो उपयोग भल्यो छे पण न्यारो छे, अने जीव तो आपणा ज्ञानादि गुणनो कर्त्ता भोक्ता छे एवा परिणाम ते स्वरूपानुयाइरूप, ते निश्चय भोगोपभोग व्रत जाणवो ॥ हवे अनर्थ दड विरमण व्रत कहे छे अनर्थ कामे जीवने पाप आरभे लगाववो ते अनर्थ दड. त्याहा जे पारके वास्ते आज्ञा प्रमुख देवी ते व्यवहार अनर्थ दड, अने जे शुभ अशुभ कर्म मिथ्यात्व अविरति कषायजोग शु कर्म बधाय छे ते जीव आपणा करी जाणे ए निश्चय अनर्थ दड जाणवो हवे समायक कहे छे जे मनवचन कायाना आरभथी टाले, निरारभपणे वर्तावे, ते व्यवहार [illegible]णवो; अने जे जीव ज्ञान दर्शन चारित्र-

गुण विचारे ते सर्वे जीव सत्वगुणे एक समान जाणी सर्वे सम ता परिणाम ते निश्चय समतारूप समायक कहीए हवे देशाव- गासिक व्रत कहे छे जे मन वचन कायाना जोग एकठा करी एक स्थानके वेसी धर्मध्यान करवो ते व्यवहार देसावगासिक कहीए अने श्रुतज्ञानशु छ द्रव्य ओलखीने पाच द्रव्य त्याग करे, अने ज्ञानवत जीवने ध्यावे, तेहमां रमे, परभावमा वसे नहि ते निश्चय देशावगाशिक जाणवो हवे पोसह कहे छे जे च्यार प होर अथवा आठ पहोर सुधी समता परिणामे निरारभ सावद्य छोडी सज्झाय, ध्यानमां प्रवर्त्ते, ते व्यवहारपोसह कहीए अने आ पणा जीवने ज्ञान ध्यान शु पोषीने पुष्ट करे ते निश्चयपोसह क हीये, जीवने आपणे स्वगुणे करी पोषीये ते पोषह कहीये, हवे अति थिसविभागव्रत कहे छे जे पोसहने पारणे अथवा सदा साधुने जिन धर्मि श्रावक पोतानी भक्ति सारु दान देवो ते व्यवहार अतिथि सविभाग कहीए, अन जीवने अथवा शिष्यने ज्ञान भणवो भणाववो सभलाववो साभलवो ते निश्चय अतिथि सविभाग कहीए, ए वार व्रत कह्या –हवे एवा जे बार व्रतधारी श्रावक छे, ते करणि शी करे ? ते देखाडे छे, श्रावक पाछली चार घडी रात लेइ उठे, त्रण मनोरथने विचारे तेनां नाम हु आश्रव थकी के दहाडे मूकाइश ॥ १ ॥ सर्व विरति चारित्र के दहाडे अगीकार करीश ॥ २ ॥ समाधि सथारो के दिन आवशे ॥ ३ ॥ एवा त्रण मनोरथ श्रावक विचारे, एनो विस्तार मनोरथ भावना थकी जाणवो तेवार पछि श्रावक प्रतिक्रमण करे तेवार पछी उठीने श्री जीन मदिरे दरशन जाय, ते पूर्व कह्यु छे तेमज पच अभिगमन तथा दसत्रिक दर्शन करे जो कदापि छती जोगवईये प्रमादने वशे एक छवनी आलोयण आवे तथा मनमां

शंका राखीने न जाय तो पाच उपवासनी आलोयण आवे एवुं पच महा कल्प भाष्य मध्ये कह्यु छे ते माटे जिनराजनां दर्शन अवश्यमेव करवा, दर्शन करया पछी गुरुने वादे, वादीने नमस्कार करे पछी धर्मदेशना साभले, पछी सांभळीने जिनमंदिरे जीनपूजा करवा जाय ते पूजानी विधि श्राद्ध विधिथकी जाणजो, त्यार्हां साजना प्रतिक्रमण करे, इत्यादिक श्रावकनी विधि श्राद्ध दिनकर थकी जोज्यो, तथा श्रावक होय ते पर्व तिथिये पोसा समायक तप इत्यादिक करे, तथा श्रावक होय ते साते क्षेत्रे धन वावरे ते सात क्षेत्रना नाम कहे छे. साधु ॥ १ ॥ साधवि ॥ २ ॥ श्रावक ॥ ३ ॥ श्राविका ॥ ४ ॥ देहरु ॥ ५ ॥ जिन पडिमा ॥ ६ ॥ ज्ञान ॥ ७ ॥ ए सात क्षेत्रनो अर्थ सक्षेपथकी देखाडे छे हवे साधु साधवि ए बेनी एक रीत छे, माटे भेगो कहे छे, साधुने श्रावक होय ते सात पिंड आपे असनके० ॥ आहार ॥ २ ॥ पाणके० ॥ पाणी ॥ २ ॥ खादिमके० ॥ मेवा प्रमुख ॥ ३ ॥ स्वादिम के० ॥ मुखवास ॥ ४ ॥ लेनके० ॥ वस्ति ॥ ५ ॥ सेनके० ॥ सज्या पाट पाटला प्रमुख ॥ ६ ॥ वथके० ॥ वस्त्र पात्र प्रमुख ॥ ७ ॥ ए सात पिंड साधु साधविने देवा निमित्त धन वावरे तथा श्रावक श्राविका ए बे क्षेत्रना काजे पण धन वावरे, शी रीते ते कहे छे जे श्रावक होय ते सघ काढे, स्वामि वत्सल करे तथा स्वामिभाइनी भक्ति बहुमान करे त्यारे वादि बोल्यो जे सघ काढवा थकी शु धर्म छे ? ए तो हिंसाना काम छे, एनो उत्तर जे तें कीधु सघ काढे शु थाय ते सघ काढवाथकी अनता कर्मनी निकाचित गांठि तोडे, शा माटे जे तीर्थे जइने वादवानां मोटा फल कीधा छे, केमके श्री भगवतिजीमां तीर्थंकरनी वदणा अधिकारे त्यांहां जइने वादवानो महा लाभ कीधो छे ॥ ते वारे वादि बोल्यो जे एतो

शास्वता तीर्थंकर हता, आतो प्रतिमा छे तेनु केम ? एनो उत्तर जे प्रतिमाने जीनपडीमा कहीने बोलावी छे ॥ ते त्यारे तमे केहेशा जे एतो जिनपडिमा कही छे पण जिनवर तो कह्या नथी, एमा ने एमा तो फरक घणो तेनो उत्तर जे जगाए रूपनो अधिकार चाल्यो ते जगाए एवो पाठ छे

॥ दाहधुवजिनवराणा ॥

एवो पाठ ज्ञाता प्रमुख घणा सूत्रमा छे एटले इहा जिनपडिमाने जिनवर कहीने बोलाव्या, एटले ए पाठ जोतां जिनवरमां ने जिनपडिमामां फरक काइ दिसतो नथी माटे तिर्थे जइने वाद्वानु घणु फल छे, तथा तमे कह्यु जे हिंसाना काम छे ॥ तेनो उत्तर ॥ जे गाडा गडेरां इत्यादिक जोडवा ॥ जोडाववां ॥ ते कारण थकी तमे हिंसा गणो छो, ते एम छे नहि ॥ शामाटे जे श्री दसाश्रुत स्कधमा श्रेणीक राजा भगवानने वादवा गया ते समे बेसवाने वास्ते रथ मगाव्यो छे ॥ ते रथने धर्म रथ कहीने बोलाव्यो, हवे ते रथ ज्यां चाले त्यां हिंसाज थाय, केम जे त्यां कह्यु छे के बलधने आर घाचता दोडावता थका गया ते जगाए हिंसा केम न थाए पण इहा तो धर्म रथ कह्यो छे ॥ तथा गाम म वेथी उकरडा कढाव्या, पाणी छटाव्यां, तथा चउरंगी शेना सजीने गया ते लेखे तो महा आरंभनु काम दीसे छे पण भगवते तो काइ पाप कह्यु छे नहि, भगवते तो एनु फल मोक्षनु कह्य छे, ते माटे धर्म काम ने अर्थे नीकल्या, ते कामने विषे जेटलु काम थाय तेटलु धर्म खातामा गणाय, एम जो न गणाए तो साधुनो विहार गोचरी अटकी जाय, ते माटे डाह्या होय ते विचारी जोज्यो, तथा तीर्थे वादवु तेनु कारण को छे, जे ठेकाणे तीर्थंकरादि मोक्षे पो

हता तेज आपणे पूजनिक छे, शा माटे जे श्री भगवतीजीमां उदायन राजाने अधिकारे कह्यु छे ॥ धन ते नगरी ॥ धन ते गाम आगर इत्यादिकने धन कही बोलाव्या छे शा माटे जे श्रीभगवान विचरता होय ते माटे ॥ एटले ज्या तीर्थंकर विचरता होय ते नगरीयादिकने पण धन केहेवाणु तो ते नगरीने विषे तो कोइ जीव सुलभबोधि हशे, कोइ दूल्लभबोधि हशे, अथवा पापि पण कोइक हशे, कोइक धर्मि हशे, अथवा गामनी माहेली कोर कोइ शुध अशुध वस्तु पण हशे, ते पण सर्वेने धन कह्यु तो जे जगाए तिर्थकरनु निर्वाण कल्याणक थयु ते जगाए फरसना कल्याणक केम न थाय ? वंदण नमन करे तो कर्म निर्जरे, डाह्या होय ते विचारी जोज्यो, माटे सघ तीर्थ जात्रा निमित्त श्रावकने धन वावरवु तेनो विशेष अर्थ सेत्रुजामाहात्म्य थकी जाणजो तथा स्वामिवत्सल निमित्ते धन वावरे ॥ एटले स्वामिके० ॥ सरखा धर्मनाओने जमवु जमाडवु करे ॥ शामाटे जे श्री भगवतिजीमा सखजी पुष्कलीजीने अधिकारे पण स्वामिवत्सलनो अधिकार दीशे छे, तथा स्वामिभाईनी भक्ति बहूमान करवु, एनो पण पाठ श्री भगवतीजीमा सनत्कुमार इद्रने अधिकार जोज्यो, अग्यारमा तथा बारमा शतकमा श्रावक श्रावकने वंदण नमस्कार करे ॥ एवो पाठ छे ॥ ते माटे श्रावक होय ते श्रावक श्राविकाना विषे वावरे. हवे वली श्रावक पाचमा क्षेत्रे देहरु करावे, तथा छट्ठे क्षेत्रे जिन पडिमानु भरावबु ॥ तथा देहरानु रगाववु ॥ तथा आंगी रचाववी ॥ तथा अठ्ठाइ महोत्सव करावे ते वारे वादि बोल्यो ॥ जे देहरु करावे प्रतिमा भरावे शु थाय ॥ तेनो उत्तर ॥ जे देहरु कराववु ॥ प्रतिमा भरावबी ॥ ए काम श्रावकने श्रेय दीशे छे शामाटे जे देहरु ॥ तथा जिन प्रतिमा आज पाचमा आरामा आ-

शास्वता तीर्थंकर हता, आतो प्रतिमा छे तेनु केम ? एनो उत्तर जे प्रतिमान जीनपडीमा कहीने बोलावी छे ॥ ते वारे तमे केहे शो जे एतो जिनपडिमा कही छे पण जिनवर तो कह्या नथी, ए मा ने एमां तो फारक घणो तेनो उत्तर जे जगाए धूपनो अधिकार चाल्यो ते जगाए एवो पाठ छे

॥ दाहधुवजिनवराणा ॥

एवो पाठ ज्ञाता प्रमुख घणा सूत्रमां छे एटले इहा जिनपडिमाने जिनवर कहीने बोलाव्या, एटले ए पाठ जो तां जिनवरमा ने जिनपडिमामां फरक कांइ दिसतो नथी माटे तिर्थ जइने वादवानु घणु फल छे, तथा तमे कहु जे हिंसाना काम छे ॥ तेनो उत्तर ॥ जे गाडा गडेरां इ-त्यादिक जोडवा ॥ जोडाववां ॥ ते कारण थकी तमे हिंसा गणो छो, ते एम छे नहिं ॥ शामाटे जे श्री दसाश्रुत स्कधमा श्रेणीक राजा भगवानने वादवा गया ते समे वेमवाने वास्ते रथ मगाव्यो छे ॥ ते रथने धर्म रथ कहीने बोलाव्यो, हवे ते रथ ज्या चाले त्या हिंसाज थाय, केम जे त्यां कहु छे के चलपने आर धावता दोडावता थका गया ते जगाए हिंसा केम न थाए पण इहा तो धर्म रथ कह्यो छे ॥ तथा गाम म येथी उकरडा क ढाव्या, पाणी छटाव्यां, तथा चउरगी शेना सजीने गया ते लेखे तो महा आरंभनु काम दीसे छे पण भगवते तो काइ पाप कह्यु छे नहि, भगवते तो एनु फल मोक्षनु कह्य छे, ते माटे धर्म काम ने अर्थे नीकलया, ते कामने विषे जेटलु काम थाय तेटलु धर्म खातामा गणाय, एम जो न गणाए तो साधुनो विहार गोचरी अटकी जाय, ते माटे डाह्या होय ते विचारी जोज्यो, तथा तीर्थे जइने वादवु तेनु कारण कहे छे, जे ठेकाणे तीर्थंकरादि मोक्षे पो

हता तेज आपणे पूजनिक छे, शा माटे जे श्री भगवतीजीमां उदायन राजाने अधिकारे कह्यु छे ॥ धन ते नगरी ॥ धन ते गाम आगल इत्यादिकने धन करी बोलाव्या छे शा माटे जे श्रीभगवान विचरता होय ते माटे ॥ एटले ज्या तीर्थंकर विचरता होय ते नगरीयादिकने पण धन केहेवाणु तो ते नगरीने विषे तो कोइ जीव सुल्भबोधि हशे, कोइ दुल्लभबोधि हशे, अथवा पापि पण कोइक हशे, कोइक धर्मि हशे, अथवा गामनी माहेली कोर कोइ शुध अशुध वस्तु पण हशे, ते पण सर्वेने धन कह्यु तो जे जगाए तिर्थंकरनुं निर्वाण कल्याणक थयु ते जगाए फरसना कल्याणक केम न थाय ? वंदण नमन करे तो कर्म निर्जरे, डाह्या होय ते विचारी जोज्यो, माटे सघ तीर्थ जात्रा निमित्त श्रावकने धन वावरवु तेनो विशेष अर्थ सेत्रुंजामाहात्म्य थकी जाणजो तथा स्वामिवत्सल निमित्ते धन वावरे ॥ एटले स्वामिके० ॥ सरखा धर्मनाओने जमवु जमाडवु करे ॥ शामाटे जे श्री भगवतिजीमां सखजी पुष्कलीजीने अधिकारे पण स्वामिवत्सलनो अधिकार दीशे छे, तथा स्वामिभाईनी भक्ति बहूमान करवु, एनो पण पाठ श्री भगवतीजीमा सनत्कुमार इद्रने अधिकारे जोज्यो, अग्यारमा तथा बारमा शतकमा श्रावक श्रावकने वंदण नमस्कार करे ॥ एवो पाठ छे ॥ ते माटे श्रावक होय ते श्रावक श्राविकाना विषे वावरे, हवे वली श्रावक पाचमा क्षेत्र देहरु करावे, तथा छट्ठे क्षेत्रे जिन पडिमानु भरावनु ॥ तथा देहरासु रगाववु ॥ तथा आगी रचाववी ॥ तथा अठ्ठाइ महोत्सव करावे ते वारे वादि बोल्यो ॥ जे देहरु करावे प्रतिमा भरावे शु थाय ॥ तेनो उत्तर ॥ जे देहरु कराववु ॥ प्रतिमा भरावी ॥ ए काम श्रावकने श्रेय दीशे छे शामाटे जे देहरु ॥ तथा जिन प्रतिमा आज पाचमा आरामा आ-

धारभूत छे केमके केवलीनो तो आज विरहकाल छे शुद्ध आ लखन तो आज ए छे, तथा श्री अनुयोग द्वारमां पण कह्यु छे जे भावनिक्षेपो, नाम थापना द्रव्य विना थाय नहि तथा च्यार निक्षेपामां एके निक्षेपो उथापे ॥ तेने मिथ्यात्वी कहीए ॥ ते वास्ते थापनानिक्षेपो अवश्य मानवो ॥

॥ यदूक्त ॥

नाम जिणाजिणणामा ॥ ठवण जणा जिणद पडिमाओ ॥ दव जिणाजिण जिवा ॥ भाव जिणा समवाम रणाथ्था ॥ १ ॥

ए गाथामा पण थापनानिक्षेपामा तो जिनपडिमाज कही छे ॥ अथवा अनुजोग द्वार मध्ये आवश्यकने अधिकारे दश प्रकारनी थापना कही छे, ते तो सद्‌बोध अने असद्‌बोध कही छे, तथा ए तो गुरुनी थापना छे, आ तो तीर्थंकरनी थापना, अने वली सद्‌बोध छे तो एने करावना नफो केम न होय ? डाह्या होय ए विचारी जोज्यो, तथा देहरासना करावनारो तथा प्रतिमानो भरावनारो बारमे देवलोके उपजे एवु श्री महानिशिथजीमा कह्यु छे, ते माटे श्रावक होय ते देहरा करावे, प्रतिमा भरावे, आंगी रचावे, अठाइ महोत्सवादिक करे ॥ एवा मारगे धन वावरे हवे सातमु क्षेत्र जे ज्ञान ते मारगे पण धन वावरे, एटले ज्ञान लखावे, तथा ज्ञान भणतो होय, तेने साहाय आपे, तथा ज्ञानीना बहु मान करावे शा माटे जे श्रुत ज्ञान छे ते मोटु छे, यद्यापि केवल ज्ञान मोटु छे, पण स्वअनुयायी छे अने श्रुतज्ञान छे ते स्वपर प्रकाशे दिसे छे माटे ज्ञानीना बहु मान करवा, केम जे श्री नंदि

सूत्रमां ज्ञानिने सूर्यनी, चद्रमानी, कल्प वृक्षनी, स्वयभूरमण समुद्रनी इत्यादिक घणी उपमाओ आपी छे ॥ माटे ज्ञानीनु बहूमान विशेषे करवु, ज्ञान भणतो होय तेनी पण साहाय करवी ॥ शा माटे जे ज्ञानना भणनारा पासे पइसो होय नहिं, अने व्याकरणादिक भणवाने पइसो पण जोइये, पुस्तक पानु पण जोइये, माटे ए बातनी साहाय गृहस्थ आपे त्यारे भणाय, त्या वादिए तर्क करी जे साधु तो साहाय वछे नहिं, अने तमे कहोछो के साहाय आपे तो साधु भणे तेनु केम ? तेनो उत्तर दे छे. जे साधु होय ते साहाय न वछे पण ते दहाडे तो सूत्र पाठ उपाध्यायजी भणावता अने अर्थ आचार्य आपता, अने मारु तारु हतु नहिं ॥ जे जतु तेने भणावता ॥ आज तेमाना आचार्य उपाध्याय किया तमारी सरते आवे छे जे तेनी पासे जइने भणे ? अथवा ज्ञान आश्री साहाय वछे तो दूषण जणातु नथी, शा माटे जे पोताने शरीरे सुख वछतो नथी, ए तो आत्म हेते ज्ञान भणे, अने ज्ञान काजे साहाय वछेछे, तथा श्री पच महाकल्प भाष्य मध्ये पण कह्यु छे, जे ज्ञाननो साधु अभ्यास करतो होय ते ठामने विषे कदापि आहारने विषे आधा कर्मादि दोष लागतो होय तो ज्ञान अभ्यास करवाने साधु रहे के न रहे ? त्या कह्यु छे जे ज्ञाननो अभ्यास करता कदापि आधा कर्मादि दोष लागे तेनो विचार करे नहि, पण ज्ञाननो अभ्यास करवो शा माटे जे ज्ञान न होय तो दोष अदोष कोण जाणे, माटे ज्ञान मोटो पदार्थ छे, ते माटे ज्ञानने वास्ते साहाय वछतां दूषण जणातु नथी, तथा जो शरीरादिकने अर्थे साहाय वछे तो दूषण लागे, जोयामा तो एवु आवे छे, पछी केवली गम्य तथा जे गृहस्थ श्रावक होय, ते सूत्र सिद्धातादिक लखी राखे, शा माटे जे साधु साधवि आव्या गया ने वाचवा भणवाने खप लागे, तथा

धारभूत छे केमके केवलीनो तो आज विरहकाल छे शुद्ध था लखन तो आज ए छे, तथा श्री अनुयोग द्वारमां पण कह्यु छे जे भावनिक्षेपो, नाम थापना द्रव्य विना थाय नहि तथा च्यार नि क्षेपामां एके निक्षेपो उथापे ॥ तेने मिथ्यात्वी कहीए ॥ ते वास्ते थापनानिक्षेपो अवश्य मानवो ॥

॥ यदुक्तं ॥

नाम जिणाजिणणामा ॥ ठवण जणा जिणद पडिमाओ ॥ दव जिणाजिण जिवा ॥ भाव जिणा समवास रणाथ्था ॥ १ ॥

ए गाथामा पण थापनानिक्षेपामा तो जिनपडिमाज कही छे ॥ अथवा अनुजोग द्वार मध्ये आवश्यकने अधिकारे दश प्रकारनी थापना कही छे, ते तो सद्बोध अने असद्बोध कही छे, तथा ए तो गुरुनी थापना छे, आ तो तीर्थंकरनी थापना, अने वली सद्बोध छे ते एने करावना नफो केम न होय ? डाह्या होय ए विचारी जोज्यो; तथा देहरानो करावनारो तथा प्रतिमानो भरा वनारो बारमे देवलोके उपजे एवु श्री महानिशिथजीमा कह्यु छे, ते माटे श्रावक होय ते देहरा करावे, प्रतिमा भरावे, आंगी र चावे, अठाइ महोत्सवादिक करे ॥ एवा मारगे धन वावरे हवे सातमु क्षेत्र जे ज्ञान ते मारगे पण धन वावरे, एटले ज्ञान लखावे, तथा ज्ञान भणतो होय, तेने साहाय आपे, तथा ज्ञानीनां बहु मान करावे श्या माटे जे गुरु ज्ञान छे ते मोटु छे, यद्यपि केवल ज्ञान मोटु छे, पण स्वअनुयायी छे अने श्रुतज्ञान छे ते स्वपर प्र- काशे दिसे छे माटे ज्ञानीना बहु मान करवां, केम जे श्री नंदि

सूत्रमां ज्ञानिने सूर्यनी, चद्रमानी, कल्प वृक्षनी, स्वयभूरमण समुद्रनी इत्यादिक घणी उपमाओ आपी छे ॥ माटे ज्ञानीनु बहूमान विशेषे करवु, ज्ञान भणतो होय तेनी पण साहाय करवी ॥ शा माटे जे ज्ञानना भणनारा पासे पइसो होय नहिं, अने व्याकरणादिक भणवाने पइसो पण जोइये, पुस्तक पानु पण जोइये, माटे ए वातनी साहाय गृहस्थ आपे त्यारे भणाय, त्या वादिए तर्क करी जे साधु तो साहाय वछे नहिं, अने तमे कहोछो के साहाय आपे तो साधु भणे तेनु केम ? तेनो उत्तर दे छे. जे साधु होय ते साहाय न वछे पण ते दहाडे तो सूत्र पाठ उपाध्यायजी भणावता अने अर्थ आचार्य आपता, अने मारु तारु हतु नहिं ॥ जे जतु तेने भणावता ॥ आज तेमाना आचार्य उपाध्याय किया तमारी सरते आवे छे जे तेनी पासे जइने भणे ? अथवा ज्ञान आश्री साहाय वछे तो दूषण जणातु नथी, शा माटे जे पोताने शरीरे सुख वछतो नथी, ए तो आत्म हेते ज्ञान भणे, अने ज्ञान काजे साहाय वछेछे, तथा श्री पच महाकल्प भाष्य मध्ये पण कह्यु छे, जे ज्ञाननो साधु अभ्यास करतो होय ते ठामने विषे कदापि आहारने विषे आधा कर्मादि दोष लागतो होय तो ज्ञान अभ्यास करवाने साधु रहे के न रहे ? त्या कह्यु छे जे ज्ञाननो अभ्यास करता कदापि आधा कर्मादि दोष लागे तेनो विचार करे नहिं, पण ज्ञाननो अभ्यास करवो शा माटे जे ज्ञान न होय तो दोष अदोष कोण जाणे, माटे ज्ञान मोटो पदार्थ छे, ते माटे ज्ञानने वास्ते साहाय वछता दूषण जणातु नथी, तथा जो शरीरादिकने अर्थे साहाय वछे तो दूषण लागे, जोयामा तो एवु आवे छे, पछी केवली गम्य तथा जे गृहस्थ [illegible] होय, ते सूत्र सिद्धातादिक लखी राखे, शा माटे जे साधु [illegible] या गया ने वाचवा भणवाने खप लागे,

गाममां पण बीजा श्रावकोने भणवा गणवा खप लागे, ए सातमुं क्षेत्र एम श्रावक होय ते साते क्षेत्रे धन वावरे वलि एने अनुसारे बीजा पण उचित स्थानक जोइने वावरे एम श्रावकनु स्वरूप कह्यु ते श्रावक त्रण प्रकारना छे ॥ जघन्य ॥ १ ॥ मध्यम ॥ २ ॥ उत्कृष्ट ॥ ३ ॥ ते जघन्य श्रावक केने कहीएके प्रभाते नोकारसि, रात्रे दुविहार, अने बावीस अभक्ष्यनो त्याग करे तेने जघन्य श्रावक कहीए ॥ १ ॥ अने बार व्रत श्रावकना अंगीकार करया होय तेने मध्यम श्रावक कहीए ॥ २ ॥ अने बारव्रत उचरया होय अने अग्यार पडिमा वही होय तेने उत्कृष्टो श्रावक कहीए ॥ ३ ॥ एवी रीते श्रावकनो धर्म तथा साधुनो सर्वविरति पंचमहाव्रत धर्म एवु श्री वीतराग परमात्माए प्ररूप्यो जे धर्म तेने धर्म करी सद्दहे, तेने धर्म तत्व सद्द्यो कहीए एटले धर्मतत्व के० ॥ साधु श्रावकनु जे धर्म तथा खट द्रव्य नव तत्व नयानिक्षेपा प्रमाण स्याद्वाद खटकारकादिक सर्व सद्दहजो हे भव्य जीवो! समजमा आवे तो समजजु, कदापि समझमा न आवे तो एम धारवु जे मारी बुद्धि ओछी छे अने केवलीनु ज्ञान अनंतु छे तेथी मारी समजमां आवतु नथी, पण जे आगममा भाव प्ररूप्या ते सर्व सत्य छे एवो विचार राखवो पण पोतानी मति कल्पनाथी कशो नवो मार्ग थापशोमां एवी रीते हे भव्य जीवो धर्म तत्वने सद्दहजो ॥ इति धर्म तत्व तृतीय ॥

इति श्री सम्यक्त्वद्वार ग्रंथो मुनी श्री हुकमचंदजी विरचीते षष्ठमो अध्याय पूर्ण ॥ ६ ॥

ए छठा अधिकारने विषे धर्म तत्व ओलखाव्यो, हवे सातमे अधिकार ए तत्वनी सद्दहणानु फल देखाडे छे हे भव्य जीवो आर्य क्षेत्र, मनुष्य भव, देवगुरुनी जोगवाइ ते पामवी घणी दु-

लभ छे अनंता पून्यनी राशीना थोकडा बध्या त्यारे तमे पाम्या छो, पामीने जो प्रमाद करशो तो फरीने च्यार गति ससारने विषे परिभ्रमण करशो फरीथी आ जोगवाइ मलवी घणी दूर्लभ छे तु जे आ ससाररूप मोह जालमा गुथाणो छु अने पूत्र कलत्र धन धान्यादिक माहरु माहरु करे छे ते तारी भूल छे ते कोइ तारु छे नहि, केम जे मोहजालने विषे गुथायाथकी नर्क तिर्यचना दुःख भोगववा पडे, ते नर्कनु स्वरूप लेश मात्र कहे छे ते नर्कना क्षेत्रनो फरस केवो छे ते कहे छे. जेवी तरवारनी धार, जेवी बरछीनी अणी, जेवी कटारीनी धार, जेवी भालोडनी अणी, जेवी अस्त्रानी धार, जेवो नगरनो दाह, जेवो गामनो दाह, एवो तो उष्ण फरस छे, वली जीहा गोखरु घणा तिखी अणीना पथरायेला पड्या छे, तथा डाभ तीखी अणीना उगेलानु वन छे, वली ज्याहा वैतरणी नामा नदियो छे, ज्याहा असिपत्र वृक्षना वन छे ज्याहा घणा कुभीपाक छे, ते कुभीपाकनो खरखरो फरस पूर्वे कह्यो तेवोज छे, वली जेवी पोष माघनी महा हिमाजल टाढ, जेम हिमाला क्षेत्रनी टाढ ज्याहा माणसना माणस शिजी जाय छे तो ढोरनु ने झाडनु शु कहेवु एवा क्षेत्र फरसनादिकथी ते टाढ अनतगुणी वधती छे, ए कुभीपाक उपरथी चोखुणी छे अने माहे थकी कुडाना आकारे छे, ते कुभीपाकने विषे नारकी आवी उपजे, ते प्रथम समये नारकीनी आगलने असख्यातमे भागे अवगाहना होय, पछी एक अतरमूहूर्त्तमा जेटली नारकीना शरीरनी अवगाहना होय एटली वाधे, ते वारे कुभीपाक पेटेथकी पहोली, अद्धो उर्द्ध सकिर्ण एनो फरस महा तिखो ने वली टाढो तेथकी थइ जे वेदना तेथी महा रीव पोकारे अने मुखथी कहे जे मुने इहाथकी काढो काढो, ने [illegible] क्षेत्रने विषे रह्या जे परमाधामि ते पनर जातना

छे तेना नाम कहे छे अंब ॥ १ ॥ अंबरिस ॥ २ ॥ श्याम ॥३॥ सबल ॥ ४ ॥ रुद्र ॥ ५ ॥ महारुद्र ॥ ६ ॥ काल ॥ ७ ॥ महाकाल ॥ ८ ॥ असिपत्र ॥ ९ ॥ धनुष्य ॥ १० ॥ कुंभ ॥ ११ ॥ वालुक ॥ १२ ॥ वैतरणी ॥ १३ ॥ खरस्वर ॥ १४ ॥ महाघोष ॥ १५ ॥ एवा जे पनर जातना परमाधामि ते त्यां पासे होय ते दोडीने आवे ते आवीने नारकीने कहे जे मांहेलिकोर तो हमी तने सुख छे अने बाहेर तो महा दु:ख छे, अने कुंभीपाकनु मोढु सांकडु छे माटे तने तोडी तोडीने काढवो पडशे, त्यारे तु ना पाडीश तो पण अमे तने छोडीशु नहि, वास्ते तु पेहेलाज माहि रहे पण ते नारकी महा दु:खे पीडयो थको दिनवचने कहीने बोले जे हु महा दुःखीछु महाराथी नरकनु दुःख भोगवातु नथी, माटे मने काइ करता इहां थकी काढो हु ना नहि पाडु, ते वारे परमाधामि साणशिथी तोडि तोडिने काढे त्यारे, महा रीव पोकारे ने कहे जे मुने रेहेवा द्यो पण ते काइ छोडे नहि इत्यादिक वली बाहेर निकल्या पछी पण महा छेदन भेदन ताडना तर्जनादिक वेदना घणी भोगवे ज्ञानी विना आपणथी कही जाय नहि, तेनो विशेष अधिकार श्रीजीवाभिगम तथा पन्नवणा प्रमुख सूत्रथकी जाणजो एवां नरकादिकना महा दु:ख भोगववा पडे, ते वास्ते हे भव्यजीवो मोह जालने विषे मुझाशु नहि, जे मोहने विषे मुझाय तेने एवा दु:ख भोगववां पडे ॥ जेम ब्रह्मदत्त चक्रवर्ति मोहने विषे मुझाणो अने साधुनो उपदेश न मान्यो त्यारे मरीने सातमी नर्केगयो तेम हे भव्य जीवो ! एम जाणीने जोगवाइ मलेथके प्रमाद करशो नहि, धर्मसाधन करजो, जे थकी देवलोकना सुख भोगवो, परपराए मोक्षना सुख पण भोगवशो, वली जे पुत्रकलत्र धनधान्यादिक माहारु माहारु करो छो, ते काइ छे नहि ने तो सर्वे स्वार्थना सगां छे,

तेनु स्वरूप देखाडे छे, जेम श्रेणिक राजाए कोणीकनो अगुठो छ-
मास सुधी मुख मध्ये राख्यो, अने लोहिपरु चुश्यां, शामाटे जे
मारो पुत्र रखे मरी जशे, के रखे दुःखी थशे, एम जे मोहना वश-
थकी एवी रीते पुत्रने वास्ते पोते दुख भोगव्यु, तो तेज पुत्रे पोताने
काष्ट पिंजरमा घाल्यो अने नित्य प्रत्ये पाचसें कोरडा मरावे, अने
जीवथी पण गया, तो जोयु पुत्रनु सगपण, एक राज्यने वास्ते पि-
तानु मृत्यु कर्यु अने महादु ख दीधु, तो हे भव्य जीवो ससारने
विषे पुत्रनु सगपण अनित्य छे ए सर्व स्वार्थनु सगु छे, तथा कल-
त्रके० ॥ जे स्त्री तेने तो माहारी करी जाणे छे तेतो ससारने विषे
महादुःख दाइ छे केमके स्त्री ना मोहना मारयाथका नदिषेण नि
याणु करयु तो अते नर्क मलि, तो जुओ स्त्रीनो मोहराख्यो तो पर
भव महानर्कमली, अने आभवने विषे पण स्त्री सुख दे नहि, जेम
यसोधरने स्त्री ए झेर देइने मारयो, तेनो अधिकार समरादि-
त्य चरित्र थकी जोजो तथा परदेशी राजा प्रमुख घणा जीवो स्त्री-
ए मार्या छे, माटे हे भव्यो स्त्रीयो कोइनी सगीयो नथी ए तो
स्वार्थनी सगी छे एनु खोटु सगपण तेने विषे तमे केम मुझाइ र-
ह्या छो ? ए स्त्री तो आ भव पण दुःख दाई अने परभव पण दु ख
दाइ छे स्त्रीना सगपणमां पण राचवु नहिं, तथा जे ससारने विषे
माता छे ते पण स्वार्थनी सगी छे, जेम ब्रह्मदत्तने चुलणी राणीए
मारवानो उपाय कर्यो. जुओ सगो दीकरो छे, पण काइ दया आवी
नहिं, तथा चेलणा राणीए कोणीकने जनम्यो तेज वखते उकरडे
नखाव्यो तो जुओ माताना सगपण पण ससारने विषे एवा छे, इ
त्यादि अनेक दृष्टांत छे ते ग्रंथो थकी जाणजो वली ससारने विषे
जे सगपण छे ते सगपणनो काइ नियम नथी, जे एनु एज सगपण
रेहेशे जे ते पुत्रपणे थाय एवो काइ नियम नथी, जे पुत्र

होय ते पितापणे थाय अने पुत्री होय ते स्त्रीपणे थाय, केम जे शुक राजाना मातापिता तेओ पाछले भव पोतानी स्त्रीओ हती, तेनी कथा श्राद्धविधिमा छे तथा श्रेयांस कुमारनो जीव तथा श्रीऋषभ देवस्वामीनो जीव केटलाएक भवने विषे स्त्री भरतारनु सगपण थयु, केटलाएक भवने विषे मित्रपणु थयु, आ भवने विषे दादोने पडपोतरो थया, तथा यसोधर पोताना पुत्रनो पुत्र थयो तथा यसोधरनी माता हती ते आ भवने विषे स्त्री थइ इत्यादिक विचारतां सगपणनो नियम रहेतो नथी तथा सिद्धांतमा पण कह्यु छे जे एक एक जीवने माहामाहे अनतां सगपण थया, एवु जे खोटु सगपण तेने विषे कोण राचे, केमजे कियो जीव आपणो सगो छे अने कियो जीव सगो नथी एटलु विचारीने जोइए तो सर्वे जीव साथे आपणां अनतां सगपण थया माटे एमा मातापिता कोने कहीए तथा भ्रात कलत्र पुत्र कोने कहीए ? जे सर्व जीव साथे अनतां सगपण थयां, माटे एवां सगपणने विषे राची रहेवु नहि, एवां सगपण करतां अनतो काल गयो पण काइ आत्मानु कल्याण थयु नहि, जे दहाडे ससार थकी वैराग्य पामीने धर्मकरणी करशो, ते दिन आत्मानु कल्याण थशे वली कायानु स्वरूप देखाडे छे हे भव्य जीवो ! तमे शरीरना वर्ण गध फरस देखीने घणा लोभाइ रह्या छो, जे रखे मारी काया सुकाये, रखे दुःख पामे, रखे बीगडे, एवु विचारो छो, ते सर्व खोटु छे, शामाटे के, हे देवाणु प्रिय ! तमने कायाना स्वरूपनी खबर नथी, ए काया तो पुद्‌गल दल छे, ए कायाने विषे तो रुधिर छे, तथा मांस छे, तथा मेद छे, तथा नस जाल छे, वीर्य छे, पेसि छे, लघुनित्य छे, वडि नित्य छे, एवा शरीरने विषे तमे शु राचि रह्या छो, ए शरीरने गमे एटलु पाळो पोषो साचवो, पण अते काइ रेहेवानु नथी, शामाटे जे पुद्-

गलनो स्वभाव तो सडण पडण विध्वसण छे, ते माटे एने विषे मूर्छा शा वास्ते लाववी पडे. तुं तारा स्वरूपनी गवेषणा करे तो ठीक, माटे एहवी काया उपर मूर्छा राखवी नहीं, केमके काया छे, ए तो अशास्वती छे, अथीर छे, एनो तो धर्मज, मलवा विखरवानो छे, एटले सजोगे मले अने विजोगे जाय, एवा शरीरउपर ममता राखवी नहीं हवे आवखानु अनित्यपणु देखाडे छे, हे भव्य जीवो ससारने विषे जे आवखु छे एतो अनित्य छे, अने तमे तो तृष्णा घणी लावी राखो छो अने जीवितनी घडीनी खबर छे नहि केमके आवखु तो अथीर जेम डाभविंदुके० ॥ जेम डाभनी अणी उपर पाणीना विंदु केटलीवार ठरे तेम आवखु पण अथिर जाणवु तथा जेम हाथीनो कान चपल छे तेम आवखु पण अथिर छे तथा जेम पाणीनो परपोटो, जेम सध्यानो रग, इत्यादिक अनेक द्रष्टाते करीने आवखु तो अनित्य छे एवु आवखु अनित्य छे तेने विषे तु माहारु माहारु करी माची रह्यो छु, अतिशय तृष्णानो वायो थको अनेक आरभ करे छे, अने कालतो अचानक आवी पुगशे पछी वा या जे कर्म ते हारे आवशे, अने धन धान्यादिक मेलव्यु ते तो इहा रहेशे, अने एनो तो भोगदारी कोइक थशे, अने नरकादिक दुःख तो तारे भोगववा पडशे, जेम सुभूम नामा चक्रवर्ति छ खडनो भोगदारी हतो, पण अतिशय तृष्णानो वायो थको समुद्र मध्ये बुडीमुओ, ए राजपाट ऋद्धि तो इहा रही अने पोताने मरीने नरके जवु पडयु, तेम हे भव्य जीवो ! एवु आवखु अथिर जाणीने मोह ममता निवारीने धर्म साधन करो ते धर्म साधवानु मूल ते समकित छे, ते प्रथम कह्यु छे अने देवतत्व ॥१॥ गुरु तत्व ॥ २ ॥ धर्मतत्व ॥३॥ ए त्रण तत्वने सद्दहे तेने समकिती कहीए एटले [illegible] भाख्यु, ए समकितनु फल शु ? समकितनु

फला व्रतिके० जे सर्व विरति देश विरति तेने व्रति कहीए. व्रतितु फल ते सवर, सवरके० आवतां कर्मनु रुधवु, तेहने सवर कहीए, ते सवरनु फल ते तप, ते तपना वार भेद, अणसणके० नवकारसिथी मांडीने छ मासी पर्यंत ते अणसण तप कहिये ॥ १ ॥ उणोदरीके० ॥ पुरुषने वत्रीस कवलनु प्रमाण छे, स्त्रीने अठयावि स कवल्नु प्रमाण छे, तेमा थकी वे तथा च्यार कवल भुख्या उठे, तेने उणोदरी तप कहीये ॥ २ ॥ अने वृत्तिसंक्षेपके० ॥ आगे वृत्ति होय तेमा सकोचविके० ॥ साकडी करवी तेने वृत्तिसक्षेप कहिये ॥ ३ ॥ रस चाओके० ॥ पटरसमांथी ॥१॥२॥ ४ ॥ त्याग करवा ॥ ४ ॥ कायक्लेशके० ॥ उष्णकाले तापनी आतापना लेवी, सीतकाले सीतनी आतापना लेवी ॥ ५ ॥ सलिननाके० ॥ अग उपागनु सकोचवु ॥ ६ ॥ ए षड्विध बाह्यतप ॥ ६ ॥ एथकी काया वलवानी ॥ लोकमा तपसि जणाय ॥ अने केम वलवानी भजना ॥ हवे षड्विध अभ्यतर तप कहे छे ॥ पायच्छितके० ॥ लाग्या जे पाप तेन वारवार सभालीने आलोवे ॥ १ ॥ अने अ रिहतादिकनो विनय वहुमान करवु ॥ २ ॥ वेयावच्चकुल्क प्रमुख दसनो तथा वहु विधिके० ॥ घणानो ॥ ३ ॥ सज्झाय जे भणवु भणाववु तेने सज्झाय कहीये ॥ ४ ॥

ध्याननु स्वरूप लखीए छीए ॥ ध्यानके० ॥ धर्मध्यान ॥ हवे च्यार ध्यान कहीए छीए ॥ त्यां च्यार भेद ध्यानना छे ॥ आर्त्त ध्यान ॥ १ ॥ रौद्रध्यान ॥ २ ॥ धर्मध्यान ॥ ३ ॥ शुक्लध्यान ॥ ४ ॥ पेहेलां वे ध्यान अशुभ छे, ए परिहरवा अने २ शुद्धध्यान ए आदरवा, एक ध्यान विषे अतर मुहूर्त्त चित्तनो उपयोग तन्मय एकाग्रपणे स्थिर रहेवो ते ध्यान कहीए, अने केवलिने योगनु रोकवु तेज ध्यान कहीए

॥ यदुक्तं ॥

अंतोमुहूत्तोमित्त ॥ चित्तावस्थाणमेगवत्छु ॥
भित्छोमत्छाणझाणं ॥ जोगनिरोहोजिणाणंतु ॥ १ ॥

हवे आर्त्तध्यान कहे छे मनमा कांइक पीडाए आर्त्त थाय जे आहट दोहट परिणाम ते आर्त्तध्यान कहीये ॥ १ ॥ ते आर्त्तध्यानना पाया च्यार छे ॥ पेहेलो इष्टवियोग ॥ इष्टके० ॥ वल्लभ ते भाइ मित्र सज्जन माता, पिता, स्त्री, पुत्र, धन प्रमुखनो वियोग, एकत्व आर्त्तनु करवु ते इष्टविजोगआर्तध्यान कहीये ॥ १ ॥ बीजो अनिष्ट संजोगके० ॥ अणगमती वस्तुनु आवीने मलवु, तेनी चिंता, आ केवारे टले एवो जे एकत्व परिणाम ते अनिष्ट सजोग ॥२॥ त्रीजो रोग चिंता आर्त्त ध्यानके० ॥ शरीरमां रोग उपन्या तेनी चिंता करे, ते रोग चिंताआर्त्तध्यान ॥ ३ ॥ चोथो अग्रशोचआर्त्त ध्यान ते आवता कालनी चिंता करवी, जे आवता कालमां आम करीशु के आम करीशु ए अग्रशोच आर्त्त ध्यान कहीए ॥४॥ हवे रौद्र ध्यान कहेछे रौद्र ध्यानना पाया च्यार, पेहेलो हिंसानुबधि रौद्र ध्यानके०॥ जीव हिंसा करतो करावतो अथवा सग्राम सबधी वात करतो सांभलतो तेनी अनुमोदना करतो ते पेहेलु ध्यान ॥ १ ॥ बीजु मृषानुबधि रौद्रध्यान ॥ जे मृषा बोलीने राजी थावु ॥ ते बीजो पायो ॥ २ ॥ त्रीजु चोरानुबधि रौद्र ध्यानके० ॥ चोरी ठगाइ करवाना परिणाम ॥ ए त्रीजो भेद ॥ ३ ॥ चोथो परिग्रहरक्षानुबधि रौद्रध्यानके० ॥ नवविध परिग्रह वधारवाना परिणाम ॥ अथवा होय तेने रखवालवाना परिणाम ॥ ए चोथो पायो ॥ ४ ॥ ए रौद्रध्याननो पेहेलो पायो छठ्ठा गुणठाणा सुधी छे ॥ ए आर्त्त रौद्र ध्यान बे अशुभ माठी गतिना करणहार छे ते छोडवां

फला व्रतिके० जे सर्व विरति देश विरति तेने व्रति कहीए व्रतिनु फल ते सवर, सवरके० आव्रता कर्मनु रुधवु, तेहने सवर कहीए, ते सवरनु फल ते तप, ते तपना बार भेद, अणसणके० नवकारसिथी मांडीने छ मासी पर्यंत ते अणसण तप कहिये ॥ १ ॥ उणोदरीके० ॥ पुरुषने बत्रीस कवलनु प्रमाण छे, स्त्रीने अठयाविस कवलनु प्रमाण छे, तेमा थकी बे तथा च्यार कवल भुख्या उठे, तेने उणोदरी तप कहीये ॥ २ ॥ अने वृत्तिसक्षेपके० ॥ आगे वृत्ति होय तेमा सकोचविके० ॥ साकडी करवी तेने वृत्तिसक्षेप कहिये ॥ ३ ॥ रस चाओके० ॥ षटरसमांथी ॥१॥२॥ ४ ॥ त्याग करवा ॥ ४ ॥ कायक्लेशके० ॥ उष्णकाले तापनी आतापना लेवी, सीतकाले सीतनी आतापना लेवी ॥ ५ ॥ सलिनताके० ॥ अग उपागनु सकोचवु ॥ ६ ॥ ए षड्विध बाह्यतप ॥ ६ ॥ एथकी काया वलवानी ॥ लोकमा तपसि जणाय ॥ अने केम वलवानी भमना ॥ हवे षड्विध अभ्यतर तप कहे छे ॥ पायच्छितके० ॥ लाग्या जे पाप तेने वारवार सभालीने आलोवे ॥ १ ॥ अने अरिहतादिकनो विनय वहुमान करवु ॥ २ ॥ वेयावच्चक्षुलक प्रमुख दसनो तथा वहु विधिके० ॥ घणानो ॥ ३ ॥ सज्झाय जे भणवु भणाववु तेने सज्झाय कहीये ॥ ४ ॥

ध्याननु स्वरूप लखीए छीए ॥ ध्यानके० ॥ धर्मध्यान ॥ हवे च्यार ध्यान कहीए छीए ॥ त्यां च्यार भेद ध्यानना छे ॥ आर्त्तध्यान ॥ १ ॥ रौद्रध्यान ॥ २ ॥ धर्मध्यान ॥ ३ ॥ शुक्लध्यान ॥ ४ ॥ पेहेला बे ध्यान अशुभ छे, ए परिहरवा अने २ शुद्ध ध्यान ए आदरवा, एक ध्यान विषे अतर मुहुर्त्त चित्तनो उपयोग तन्मय एकाग्रपणे स्थिर रहेवो ते ध्यान कहीए, अने केवलिने योगनु रोकवु तेम ध्यान कहीए

अनाश्रित, अकंप, अविरुद्ध, अनाश्रव, अलख, अशोकी, असंगी, अलोक लोकालोक, ज्ञायक शुद्ध चिदानंद माहरो जीव छे, एवो जे एकाग्रतारूप ध्यानते अपायविचय धर्मध्यान जाणवो ॥ २ ॥ हवे विपाकविचय धर्मध्यान कहे छे, जे एवो जीव छे तोय पण कर्मवशे दुःखी छे जे ज्ञानगुण ज्ञानावर्णी कर्मे दबाव्यो छे एटल आठ कर्मे जीवना आठ गुण दबाव्या छे, एटले ससार भमता जे सुखदु ख उपजे ए सर्व कर्मना कीधा छे, एटले इहा कर्म स्वरूपनु विचारवु ॥ जे विपाकविचय धर्मध्यान कहीए ॥ ३ ॥ हवे चोथो पायो संस्थानविचय धर्मध्यान कहे छे ॥ त्यादा चौदराज लोक छे तेमां उर्ध्व अधो तिर्छो लोक. ने उर्ध्व लोकमा वैमानिक देवता वसे छे ते उपर सिद्ध क्षेत्र छ एम लोकनु मान छे, ए लोक छे ते सस्थान छ, आपणो जीव सर्व लोक ससारमां भमतो जन्म मरण करी फरस्यो छे, एवु जे लोक स्वरूप तथा लोकने विषे पचास्ति कायनु अवस्थान तेनो विचार ते संस्थान विचय धर्मध्यान कहीए ॥ ४ ॥ ए धर्मध्यानना चार पाया कह्या ॥ ४ ॥ ते ध्यान सातमा गुण ठाणा सुधी छे हवे शुक्ल ध्यान कहे छे, शुक्ल क्रे०॥ निर्मल शुद्ध पर आलंबन विना आत्माना स्वरूपने तन्मय पणे धारे ॥ ते शुक्ल ध्यानना पाया चार छे पृथक्त्ववितर्क समविच्चार ॥ १ ॥ एकत्व वितर्क अमविच्चार ॥ २ ॥ सूक्ष्म क्रिया अप्रतिपाति ॥ ३ ॥ उच्छिन्न क्रिया निवृति ॥ ४ ॥ तिहा पेहेलो पृथक्त्व वितर्कसम विच्चार ते जीवथी अजीव जुदा करवा, स्वभाव विभाव जुदा पृथक्पणे वेंचवा स्वरूपने विषे पण द्रव्य तथा पर्यायनो पृथक्पणे ध्यान करवो, पर्यायते गुणमा सक्रमावे, गुण ते पर्यायमा सक्रमण करे, एवी रीते स्वधर्मन विषे धर्मांतर भेदते पृथक्त्व कहीए, तेहनो वितर्क जे श्रुतज्ञाने स्थित उपयो-

हवे धर्मध्यान कहे छे धर्म ते व्यवहार क्रियारूप कारण ते धर्म, तथा श्रुतज्ञान तथा चारित्र ए उपादानपणे ते साधन धर्म, तथा रत्नत्रयी भेदपणे ते उपादान शुद्ध व्यवहार एटले उत्सर्ग मार्गानुयायीपणे ते अपवाद धर्म, तथा अभेद रत्नत्रयी ते साधर्म एटले शुद्ध निश्चयनये उत्सर्ग धर्मनु कारण

॥ धम्मोवत्थुसहावो ॥

जे वस्तुनो सत्तागत शुद्ध परिणामिक स्वगुण प्रकाशित कर्णादिक अनतादिरूप सिद्धावस्थाय रह्या, एवभुत उत्सर्ग उपादान शुद्ध धर्मनु भासनरमण एकाग्रतापणे चिंतन तन्मयतनो उपयोग एकत्वना चितवणो ते धर्म ध्यान कहीय. ते धर्मध्याननना पाया चार छे आज्ञाविचय ॥ १ ॥ अपायविचय ॥ २ ॥ विपाकविचय ॥ ३ ॥ संस्थानविचय ॥ ४ ॥ त्यांहां पहेलो आज्ञाविचय कहे छे जे वीतराग देवनी आज्ञा ते हेत करी माने एटले भगवते कहेलु जे द्रव्य छनु स्वरूप तथा सिद्धनु स्वरूप, निगोदनु स्वरूप, स्याद्वाद, निश्चय, व्यवहार इत्यादि तेने विषे भासनरमण करे ते आज्ञाविचय धर्मध्यान ते कहीए ॥ १ ॥ हवे बीजो अपायविचय धर्मध्यान कहे छे जे जीवमां अशुद्धपणु रह्यु छे जे अज्ञान, राग, द्वेष, कषाय, आश्रव ए माहारा नहि, हु एथी न्यारोछु, अनत ज्ञान दर्शन चारित्र वीर्यमां शुद्ध बुद्ध अविनाशी छु, अज अनादि, अनत, अक्षय, अक्षर, अनक्षर, अचल, अकल, अमल, अगम, अनमि, अरूपी, अकर्मा, अबंधक, अनुदय, अनुदीरक, अजोगी, अभोगी, अरोगी, अभेदि, अवेदि, अछेदि, अखेदि, अकषायी, असखायी, अलेशी, अशरीरी, अमासीय, अणाहारी, अव्याबाध, अनवगाहि, अगुरुलघु, परिणामि, अणोंद्रि, अप्राणि, अजोनि, असंसारी, अमर, अपर, अपरपर, अव्यापि,

अनाश्रित, अकंप, अविरुद्ध, अनाश्रव, अलख, अशोकी, असंगी, अलोक लोकालोक, ज्ञायक शुद्ध चिदानद माहरो जीव छे, एवो जे एकाग्रतारूप ध्यानते अपायविचय धर्मध्यान जाणवो ॥ २ ॥ हवे विपाकविचय धर्मध्यान कहे छे, जे एवो जीव छे तोय पण कर्मवशे दुःखी छे जे ज्ञानगुण ज्ञानावर्णि कर्मे दबाव्यो छे एटले आठ कर्मे जीवना आठ गुण दबाव्या छे, एटले ससार भमता जे सुखदुःख उपजे ए सर्व कर्मना कीधा छे, एटले इहा कर्म स्वरूपनु विचारवु ॥ ते विपाकविचय धर्मध्यान कहीए ॥ ३ ॥ हवे चोथो पायो सस्थानविचय धर्मध्यान कहे छे ॥ त्यादा चौदराज लोक छे तेमा उर्ध्व अधो तिर्छो लोक, ते उर्ध्व लोकमा वैमानिक देवता वसे छे ते उपर सिद्ध क्षेत्र छे एम लोकनु मान छे, ए लोक छे ते सस्थान छ, आपणो जीव सर्व लोक ससारमां भमतो जन्म मरण करी फरस्यो छे, एवु जे लोक स्वरूप तथा लोकने विषे पचास्ति कायनु अवस्थान तेनो विचार ते सस्थान विचय धर्मध्यान कहीए ॥ ४ ॥ ए धर्मध्यानना चार पाया कह्या ॥ ४ ॥ ते ध्यान सातमा गुण ठाणा सुधी छे हवे शुक्ल ध्यान कहे छे, शुक्ल के० ॥ निर्मल शुद्ध पर आलंबन विना आत्माना स्वरूपने तन्मय पणे धारे ॥ ते शुक्ल ध्यानना पाया चार छे पृथक्त्ववितर्क समविच्यार ॥ १ ॥ एकत्व वितर्क अप्रविच्यार ॥ २ ॥ सूक्ष्म क्रिया अप्रतिपाति ॥ ३ ॥ उच्छिन्न क्रिया निवृत्ति ॥ ४ ॥ तिहा पेहेलो पृथक्त्व वितर्कसम विच्यार ते जीवथी अजीव जुदा करवा, स्वभाव विभाव जुदा एथक्पणे वेंचवा स्वरूपने विषे पण द्रव्य तथा पर्यायनो एथक्पणे ध्यान करवो, पर्यायते गुणमा सक्रमावे, गुण ते पर्यायमा सक्रमण करे, एवी रीते स्वधर्मने विषे प्रमोतर [illegible] कहीए, तेहनो वितर्क जे श्रुतज्ञाने स्थित उपयो-

ग ते समाविच्चार, ते सविकल्प उपयोग एक चिंतव्या पछी बीजो चिंतववो ते विच्चार कहीए. निर्मल विकल्प सहित पोतानी सत्ताने ध्यावे ए एपकत्व वितर्क समविचार, ए प्रथम शुक्ल ध्यान जाणवु, ए पायो आठमा गुण ठाणाथी माहांने अगियारमा सुधी छे ॥१॥ एकत्व वितर्क अमविचार कहे छे जे जीव आपणा गुण पर्यायनी ऐक्यता करी ध्यावे, जीवना गुण पर्याय अने जीव ते एकज छे, अने माहारो जीव सिद्ध स्वरूप एकज छे, एहवु ध्यान ते एकत्व पणे स्वरूप तन्मयपणे आत्म धर्म अननानो एकत्वपणे ध्यान, पण वितर्कपणे केहेतां श्रुत ज्ञानावलंबीपणे, अमविचार केहेतां विकल्प रहित दर्शन ज्ञानने समयांतरे कारणता विना ए रत्नत्रयीनो एक समयी कारण कार्यतापणे जे ध्यान वीर्य उपयोगनी एकाग्रता ए एकत्व वितर्क अमविचार जाणवो ए पायो बारमे गुण ठाणे ध्यावे ए बे पायामां श्रुत ज्ञानावलबीपणो छे, पण अवधि, मन. पर्यव ज्ञानना उपयोगे वर्त्ततो जीव कोइ ध्यान करी सके नहि ए ब ज्ञानपरानुयायी छे ते माट ए ध्यानथी घनघाति च्यार कर्म खपावे, निर्मल केवलज्ञान पामे, पछी तेरमे गुण ठाणे ध्यान अतरीकापणे वर्त्ते छे, पछी तेरमाने अंते अने चउदमे गुण ठाणे ए बे पाया ध्यावे, त्याहां त्रीजो सूक्ष्म क्रिया अमतिपाति कहे छे ते सूक्ष्म मन वचन कायाना जोग रुधे शैलेशीकरण करी अजोगी थाय ते जे अमति पाति निर्मल वीर्य अचल्तारूप परिणाम ते, सूक्ष्म क्रिया अमतिपाति ध्यान जाणवु इहां सत्तापे पचाशी प्रकृति हती, ते मांहेथी बहोतेर खपावे हवे चोथो उछिन्न क्रिया निवृत्ति कहे छे. जे जोगनी रुध कीधा पछी तेर प्रकृति खपावे ने अकर्मा थाय, सर्व कर्मथी रहित थाय ॥ ते समुछिन्न क्रिया निवृत्ति शुक्ल ध्यान कहीये ॥ ए ध्यान चारे कह्यां ॥ ४ ॥

एने ध्यान कहीये ॥ ५ ॥ कायोत्सर्गके० ॥ आत्माथकी कायाने वोसराववी तेने काउस्सग कहीए ॥ ६ ॥ ए षट्विध अभ्यतर तप ते थकी काया पण बलवानी भजना तथा लोक तपसी जाण्यानी पण भजना पण कर्म बलवानी,—एहवो जे बाह्य अभ्यंतर थईने बार भेदे जे तप ते तपनु फल ते निर्जरा ॥ निर्जराके० ॥ आत्माने सर्व कर्मथी मुकीने लोकने अंते सिद्ध क्षेत्रने विषे सिद्धपणे जइने वसवु एने मोक्ष कहीये, ते माटे हे भव्य जीवो ! जुओ अनुक्रमे समकित-नु फल मोक्ष थाय एवु श्री भगवतीजीमां पण कह्यु छे माटे श्रद्धा शुद्ध राखजो. श्रद्धा हशे तो सर्व काम बनी आवशे.

इतिश्री सम्यक्द्वार ग्रथो मुनीश्वर श्री हूकमचदजी विरचित्ते सप्तमोऽध्याय परिपूर्ण ॥ ७ ॥

दुहा

सप्तद्वारे करी वर्णव्यो, पूरण हुओ प्रमाण ॥
ते अनुक्रमे वर्णवु, सुणजो चतुर सुजाण ॥ १ ॥
प्रथम व्यवहार पुष्टि करयों, बीजो मिथ्या निखेद ॥
त्रिजुं सम्यक् वर्णव्युं, जिहां कह्या बहु भेद ॥ २ ॥
देवतत्व चोथो कह्यो, जिहां जिनपडिमा विचार ॥
तत्व कह्यो गुरु पाचमो, छट्ठो धर्म ते धार ॥ ३ ॥
सातमो साधारण कह्यो, बहु उपदेश विचार ॥
एम सप्तद्वारे करी, रच्यो ग्रथ निरधार ॥ ४ ॥
ग्रथ संखेप केहेवा भणी, हतो एह विचार ॥
कारण जोगे [illegible]यो, तेह कहुं अधिकार ॥ ५ ॥

काले पोताना स्वस्वरूपथी ए धर्म जुदु नहि पडे ए एक आत्म स्वरूपनी वृत्ति मात्र एनेज कही छे

॥ उक्तञ्च ॥

चेतन मात्र वृत्ति धर्मविछिन्न ॥

एवी रीते परभावमां जे रमणता अने धर्मनु मापवु एवु पण एक स्वभावे छे इत्यादिक अशुद्ध परिणतिरूपे शुभा शुभ कार्य कारणना समभ व चेतन वलगेला छे ते सर्वे परभावना घर ना समभाव छे, पण शुद्ध परिणतिरूप समभाव न थयो तेथी ए समभावने पुद्गलिक ऋद्धिमा गण्यो छे, ते परभावनो नाश थाय त्यारे शुद्ध रूपनी प्राप्ति थाय, ते शुद्ध स्वरूपने विषे तो उपादान कारण कार्य समये समये अनन्तु नीपजी रह्यु छे, ए भाव जेने प्र गट थयो, तेने प्रागभाव कहीये शामाटे जे पूर्वे एवी शुद्ध स्वभावनी प्राप्ति नहि हती ते प्राप्ति थइ एटले पूव शुद्ध स्वस्वरूपनो अभाव ज हतो एटले प्रागभाव कहीये तथा समकितनी आदे देई जे जे नवा गुण प्रगट थाय ते सर्वे ने प्रागभाव कहीए

॥ उक्तञ्च ॥

अनादि सांत प्रागभाव इतिवचनात् ॥

एटले पूर्वना भावनो नाश थयो तेने प्रागभाव कहीए ॥ इति प्रथम ॥ १ ॥

हवे बीजो प्रध्वंशाभाव केहेतां जे कार्यनी उत्पत्ति थया पहेला अथवा थया पछी ध्वंश कहेतां नाश करवो तेने प्रध्वंशा भाव कहीए, एटले आपणो आत्मा अनादिकालनो संसारने विषे रखडे छे, अने अनंत गुणनो धणी छे ने कइ स्वप आव्यु नहि अने रखडवु पडे छे, तेनु कारण ए छे जे मोहादिक शत्रुओ उत्पत्ति

थया पेहेला एटले समकित पाम्या पहेलाथी आत्माना गुणनो नाश करता रह्या, एटले गुण प्रगट थावा दीधो नहि, अने परभावमां रमाड्या, परपातानु करी मान्यु, शुभाशुभने धर्म करी मान्यु, अज्ञानने ज्ञान जाण्यु, ज्ञानने अज्ञान जाण्यु वस्तुधर्मने अधर्म जाण्यु, शुद्ध परिणतिने अशुद्ध परिणति जाणी, अशुद्ध परिणतिने शुद्ध परिणति जाणी, आरोपिता उपचरित असद्भूत तेने धर्म करी मान्यु, अण-आरोपित अणउपचरित सद्भूत तेने अधर्म जाण्यु, ए सर्व समकित पाम्या पेहेलांना लक्षण छे, शा माटे जे केटलाएकतो आजिविकाने अर्थे करता फरे छे, केटलाएक पूजावा मनावाने अर्थे, केटलाएक पोताना मतादिकनी खचे करीने, ते सर्व मिथ्यात्वी छे, तथा समकित पामीने वम्यु ते पण मोहादि शत्रु भमावे छे, शा माटे के समकित पामीने वे अक्षरनु जाणपणु थयु, अथवा बाह्यथकी करणी आदिक सारी रीते करे ते वारे मिथ्यात्वरूपभूत एना हृदयमां पेसे ते वारे मत फरी जाए अने गुरु आदिकने माने नहि अने स्वमति कल्पनाए धर्म उपदेश करे जथारोहगुप्त निन्हव एटले पञ्च शास्त्र सिद्धांत माने नहि पोतानी मति कल्पनाए करी एनु युक्तिए करीने समजावे ते म ये साधुने उपदेश करवानो अधिकार, अथवा सूत्र भणवानो अधिकार, जेम व्यवहारसूत्रमा कह्यो छे तेटले तेटले वर्षे थाय ते विना फरे ते पण सूत्रना उत्थापक छे, तथा श्रावक थइने जे उपदेश करे ते पण सूत्रसिद्धांतना तथा गुरुना पण उ-थ्थापक छे तथा भगवाननी आज्ञाना पण उथ्थापक छे ए सपूर्ण सर्व प्रकारेथी निन्हवज छे, अने जमालि प्रमुख जे निन्हव थया ते तो देशथकी छे, अने ग्रहस्थ थइने देशना दे ते सर्वथकी निन्हव छे, शा माटे जे श्रीवीर परमात्माए तो ग्रहस्थने श्रोता कह्या छे अर्थनी प्राप्ति गुरुने प्रश्न पृछवाथी कही छे पण वांचवा भणवा लोकोने

सभलावा तेथकी नथी ए अधिकार श्रीभगवतीजीथी जाणवो तथा श्रीप्रश्न व्याकरणने विषे संवरद्वारे ग्रहस्थ तथा देवताने साभलवानो अधिकार कह्यो छे, पण कइ सभा भगी करवी, देशनाओदेवी, ते अधिकार तो साधुनो कह्यो छे, तथा श्रीनिशिथसूत्रने विषे जे साधु ग्रहस्थने भणाव तथा ग्रहस्थने भण्या वखाणे, तो तेनु चार महिनानु च रित्र जाय तथा ग्रहस्थ जा भण्शे वखाणे तो तेने चार महिनाना चउविहारा उपवासनु आलवण आवे, इत्यादिक घणा शास्त्र विषे ग्रहस्थनी देशना अथवा ग्रहस्थनु भणवानु निषेध कर्यु छे ते कारणथी जे करे तेने निन्हवन कहीये ते धणी अनताभव रखडे, तथा एनी देशनाना सांभळनार पण अनता भव रखडे ए श्रीवीर परमात्मानु भाखेलु छे ते सर्वे शास्त्रमा छे ए पण एने मोहादिक शत्रुए एना धर्मनो नाश कर्यो हवे जे मोहादिक शत्रु समकित पाम्या पछी जे शुद्ध परिणतिनो अश प्रगट थयो हता तेनो नाश करे छे, तेनो विचार किंचित् मात्र देखाडु छउ एना निमित्तकारण तो पाच इद्रिन मन छे अने उपादान कारण रागद्वेष परिणति छे ते मध्ये रागना जे भेद छे, एक शुभ राग छे १ बीजो अशुभ राग छे २ शुभ रागना बे भेद छे एक प्रशस्त राग १ बीजो अप्रशस्त राग २ ते मध्ये समकितादिक पामवानो जे राग ते पण स्वपरिणति छे तथापि पामवानो राग छे अथवा पाम्या ते गुण साचववानो राग छे अथवा आत्माना केवलादिक गुण प्रगट करवानो राग छे अथवा मारा आत्मानी मुक्ति थाये इत्यादिक सर्वे राग छे ते स्वपरिणति नेलीधे छे माटे एने प्रशस्त कहीय अने राग छे ते कर्मबंध हेतु छे, माटे एने शुभ राग कहीये तथा अप्रशस्त शुभ राग ते ज्यां आत्मस्वरूपनी रमणता नथी, अने देवगुरु धर्म उपर ए राग राखे त्रे अने गुरु

आदिकनी भक्तिने विषे लयलिन रहे ते धर्मने अप्रशस्त शुभ राग छे, शा माटे जे स्वपरिणति रहित छे प्रशस्तपणु नथी, तथा अशुभ राग तेना बे भेद छे, एक प्रशस्त ॥ १ ॥ बीजो अप्रशस्त ॥ २ ॥ ते मध्ये प्रशस्त जे धर्म एवो शब्द नाम ग्रहण करीने जे क्रिया कष्ट तप जप करे छे ए सर्व अशुभ छे अहींआं कोई केहशे जे धर्मना एवा कारण तेने तमो अशुभ केम कहोछो, तेनो उत्तर के ए सर्वे कारण विष क्रिया ॥ १ ॥ गरल कीरिआ ॥ २ ॥ अनुष्टान अन्योअन्य किरीआ ॥ ३ ॥ ए त्रण क्रियाने विषे थाय छे, अने ए त्रण क्रिया ते अशुभज छे, ए क्रियाने कोई शुभ लखता नथी एनो विशेष विचार शास्त्र थकी जाणजो, तथा अप्रशस्त अशुभ राग ते वणसमजण अथवा उपयोगरहित परजीवने बचाववा अथवा दानादिक देवु अथवा ससारना सर्वे कारण ए सर्वे अप्रशस्त अशुभ राग छे, माहावीर स्वामि ए गोसालाने बचाव्यो तद्वत् समजी लेवो हवे जे द्वेष छे, ते पण बे प्रकारनो छे एक स्वपरिणति थकी कर्मादिक भिन्न द्रव्यने काहाडवानो विचार एक एवो पण द्वेष छे ए सर्व धर्मद्वेष एक प्रकारनो केहवाय, बीजो जे अधर्मद्वेष ते ससारादि सर्वे कारणमा समजवो, एवां जे कारण मलवाथी, जे पोतानी शुद्ध परिणतिनो अश प्रगट थयो, ते धर्म थकी भ्रष्ट करीने ससारमा रोले, एटले ए आत्मगुणनो नाश करे ते मोहादि शत्रु आत्मगुणनो प्रध्वसभाव छे तेम आत्मा पोते प्रध्वस स्वभाव जाणे जे आ मोहादिक शत्रु कर्त्ता छे, माटे हु एनोज नाश करु ते शावडे थाय तेनो हेतु बताउछु, के सद्गुरु बहुश्रुत निस्पृहभाव स्वस्वभावना भोगी परस्वभावना त्यागी, तेवा गुरुनी हु शेवा भक्ति करु तेमने शरणे जइने रहु एटले एवा मोहे ... वलातु लीधे थके मारी आदिनो नाश

मोहादिक चोर करी शके नहि, माटे हु ए श्री सद्गुरुने आधिन थइने रहु, पुण आलंबन ए वगर बीजो कोइ नहि, हवे उपादान कारणने विषे स्वपरिणति परभावमा जावा न देउ, ते स्थिर भाव थाउ, शुभाशुभ कारण कारज थकी माहारा आत्माने उगारु, अने शुद्ध भावने विषे माहारा आत्माने जोडु तो ए मोहादिक शत्रुओनो नाश थाय, ए रीते पूर्वे पण जे सिद्धि वरया ए धणी ए भावथीज सिद्धि वर्या छे, वर्त्तमान काले पण जेनी सिद्धि थाय छे, ते पण एज भावथी थाय छे, अनागत काले पण कार्यसिद्धि ए भावथीज थाशे, ए विना बीजा प्रकारथी कार्यसिद्धि छे नहि, ए वात निःसंदेह छे एटले आत्मा परभावमा रमतो हतो ते वारे स्वस्वभावनो प्रागभाव हतो, तेम आत्मा स्वस्वभावमां परिणम्यो तेवारे सर्व परभावनो ध्वंश थयो हवे कोइ वस्तुनो एने नाश करवो नथी, एटले ए सत्य प्रध्वंशाभाव कही देखाड्यो एटले ए बीजो भाव कह्यो

हवे त्रीजो अत्यन्ताभाव कहेता अत्यंत अभाव छे, ते कहीए छीये, ते आत्माने विषे परभावनो अभाव छे, शुद्ध निश्चयनये करीने जोईये तो कर्तापणे छे नहि, अने शुभाशुभ पण छे नहि, ए मूल वस्तु धर्ममा अत्यंत कहेता घणो घणो करीने ए धर्म आत्माने विषे छेज नहि, एटले ए त्रीजो अभाव कह्या

हवे चोथो अन्योन्य अभाव कहेतां जे प्रगट पण घटने विषे पटनो अभाव छे ने पटने विषे घटनो अभाव छे तेम चेतनने विषे परधर्मनो अभाव छे, ने परधर्मने विषे चेतननो अभाव छे ते किंचित् विवरीने कहु छउ अहियां प्रथम छ द्रव्य छे तेनां नाम ॥ धर्मास्ति काय ॥ १ ॥ अधर्मास्तिकाय ॥ २ ॥ आकाशास्तिकाय

प्रकारना कह्यां छे अभयदान ॥ १ ॥ सुपात्रदान ॥ २ ॥ अनुकं पादान ॥ ३ ॥ कीर्तिदान ॥ ४ ॥ उचितदान ॥ ५ ॥ ए पांच दान मध्ये कीर्तिदान तथा उचितदान ए बे तो पुन्यहेतु जेम नहि, अने अनुकंपादान छे ते किंचित् भाग पापनुबंधि पुन्यनो हेतु छे, अने अभयदान स्वगुण रखोपु करता धर्मनु छे, अने परप्राणनु रखोपु करतां पापानुबंधी पुन्यहेतु किंचित्भाग छे अने परगुणनु रखोपु करतां पुन्यहेतु छे ज्ञानादिक गुणहेतुनु करे तो, नहितो पाप हेतुमा जाय हवे जे सुपात्रदान छे ते तो एक साधु मुनिराजने छे, ते विना बीजा कोईने सुपात्र कह्या नथी अहिंयां कोई कहेशे के साधुने अभावे श्रावकने पण जमाडवा तेनो उत्तर, जे साधु विना सुपात्र थाय नहि, अने पुन्यबंधनो थानक ॥ ९ ॥ नव कह्यां छे ते श्रीसुयगडांगजी मध्ये छे ते तो साधुने आश्रिने कह्या छे, तेनां नाम

॥ अन्नपुन्ये ॥ १ ॥ पानपुन्ये ॥२ ॥ वच्छपुन्ये ॥ ३ ॥ शेनपुन्ये ॥ ४ ॥ लेनपुन्ये ॥ ५ ॥ मनपुन्ये ॥ ६ ॥ वचनपुन्ये ॥ ७ ॥ कायपुन्ये ॥ ८ ॥ नमस्कारपुन्ये ॥ ९ ॥

ए नव प्रकारे छे ते तो साधुने आश्री कह्यां छे, तथा उपाशक दशांगमां साधु विना बीजाने आप्पु नाहि, एवु आणंदजी बोल्या छे, अहिंयां कोई प्रश्न करशे जे सखमी आदे देइने, तेनो उत्तर, जे ए जमता कई कह्यु नथी, स्वामिवत्सल कयु नथी, पो साति कह्या तीहा तो एवु रयु छे जे आवगे एक ठेकाणे एकठा जमीए, त्या तो एक उजाणीरूप च्यार दोसदार मळीने कर तेम

छे, अहियां कोई कहेशे जे स्वामिवत्सल एनु नाम ते शुं छे ? तेनो उत्तर जे सरखा धर्मना साधु साधुनी वेआवच करे, तेनु नाम स्वामिवत्सल छे, अथवा श्रावक कोई धर्मथी भ्रष्ट थतो होय अथवा आजीविकाए दुखियो होय तेने स्थिर करवो, तेनु नाम वत्सलता कहीए, अहियां कोई कहेशे जे, सात खेत्रे धन खरचवु कह्यु छे ते खरु छे पण कंई श्रावकने धन आपि देवु एम तो कह्यु नथी ? तथा आ कालने विषे आजिविका अर्थी पेटभरा घणा लोको कमाइ खाय छे, तथा केटलाएक मुवाना धन लावी मिष्टान भोजन जमे छे धाम धूमादिक करी तेने ओठे खाय छे, तो ए मुवानो काढेलो द्रव्य ते गडका दान कहीए ते महा अशुभ द्रव्य छे ते तो भाट, भोजक, ब्राह्मण, कूतरां खोडा ढोर पारेवा प्रमुख अपुन्निया जीव छे ते खाय छे पण उत्तम जीवने तो ए भक्षण करवा लायक नथी, तथा हाथ ग्रहवा लायक नथी, अने साधु तथा श्रावक नाम धरावीने एवा अशुभ माठा द्रव्यने भोगवे छे, ने ते धणीने धर्म बतावे छे, ते धणी महा दिण पुन्नियाने बहुल ससारी समजे छे, अनतोकाल ससारमा रखडशे, अने सात खेत्रे जे वावरवु, ते तो गृहस्थने घेर निरतर वपराय छे, अने जे मानत मानीने खरचवु, ते कल्पित द्रव्य छे, ते अशुभज कहेवाय ते उत्तम जीवने वापरवा लायक नथी, ए सर्वे पाप हेतुज कहेवाय हवे जे साधुने दान देवु ते शुभ हेतु छे, अहियां कोई कहेशे जे भगवतिजीने विषे एकांत निर्जरा कही छे. अने तमे शुभ हेतु केम कहो छो ? तेनो उत्तर तेना गुणठाणानी हद प्रमाणे निर्जरा करे, पण सर्वथी निर्जरा एने होय नहि, शामाटे के एने शुभ आवखु लायु बांधवानु कह्यु छे,माटे एने घेर पुन्य बध हेतुज छे, तथा शियलव्रत छे ते जगतमा शोभा लायक छे,तथा तप जे छे ते बाह्य तप शोभा लायक छे, ने अभ्य-

तर तप कर्म निर्जरे ते पण सर्व शुभ हेतु छे, अने भाव छे तेना अनेक भेद छे, ते मध्ये शुद्ध भाव ते मुक्ति दाता छे, बाकी भाव छे ते शुभाशुभ हेतु छे

॥ उक्तंच ॥ १ ॥ दानदुर्गति नाशाय ॥ शीलंसौभाग्य कारण ॥ तप कर्म विनाशाय ॥ भावनाभवनाशिनि ॥ २ ॥

ते माटे धर्म त्यां पुन्य नहि ने पुन्य त्यां धर्म नहि, शामाटे जे बन्नेनां कारण कार्य भिन्न छे, पुन्य छे ते धर्म बंध हेतु छे, धर्म छे ते मुक्ति हेतु छे अहियां कोई पुन्यने धर्म माने छे, ते धणीने आत्म स्वरूप स्वगुणनो अत्यंत अभाव छे अने हजु परभावनो अत्यंता भाव नथी करयो ए रीते स्वधर्मने विषे, परधर्म अने परधर्मने विषे स्व धर्मनो अन्योअन्य अभाव छे, ए अन्योअन्याभाव चोथो भेद समजवो ए आत्मस्वरूपने विषे त्रणे भाव मध्वशादिक अंगीकार करो, तो प्रथमनो प्राग्भाव प्रगट थवे, अने ए प्राग्भाव प्रगट एज आत्मा नी सिद्धि थाय एटले शुद्ध भाव तेज प्राग्भाव छे.

॥ दुहा ॥

अभाव चार वर्णव्या, प्रागभावादि जेह ॥
बालजीवने कारणे, तत्व प्राप्ति तेह ॥ १ ॥
आतमस्वभाव अशुद्ध जे, काल अनादि लाध्यो ॥
तेथी अभाव चारे हुता, अवलि परिणति साध्यो ॥२॥
हवे शुद्ध स्वभाव ए, ज्ञान द्रष्टिए जाग्यो ॥
च्यारे स्वभाव हवे साधिया, शुद्ध स्वरूपमें लाग्यो ॥३॥
ए रीते समजी करी, निजस्वभावमा रेरो ॥

अवला ते सवला करी, निजस्वरूपमां लेशे ॥ ४ ॥
अनुभव ज्ञानथी ए रच्यो, चउ अभाव प्रकरण ॥
शुद्ध स्वरूपनी खोजथी, शुधो अनुभववर्ण ॥ ५ ॥
ए रीते अनुभव सहित, वांचशे भणशे जेह ॥
कारज तेनु सिद्ध होशे, तेमां नहि संदेह ॥ ६ ॥
ओगणिसे बतरीसमे, संवछरे अवधार ॥
श्रावण उत्तम मासए, शुक्लद्वादशिसार ॥ ७ ॥
भोमिपतिवार भलो, सुरत शेहेर मोझार ॥
श्रोता उत्तम जोगथी, चोमासु रह्या उदार ॥ ८ ॥
सेहेज अनुभव रमतां थकां, ए अनुभव चित्त आयो ॥
ते तुरत प्रगट कर्यो, भव्य जीवहित लायो ॥ ९ ॥
हुकम जे मुनिवर तणो, माथे चडावी सार ॥
शास्त्र अनुसारे भाखियो,अध्यात्म गुण उदार ॥१०॥
शुद्ध स्वरूप प्रकाशियो, कीधो अशुद्धनो नाश ॥
परपरिणति परभावनो, अहियां नहि रेहेवास ॥ ११ ॥
शुद्ध भावशुद्ध भेदथी, शुद्धपरिणति विशाल ॥
अभाव च्यारे त्यांहां प्रगटया,उत्तम लक्षण निहाल१२
ए प्रवध ए रचनासवि, जाणे भाव वहु श्रुत ॥
अल्प वुद्धि समजे नहि, गुरुगमथी एकंत ॥ १३ ॥
ते माटे वहु श्रुत जोई, निस्पृहि निजानंद ॥

शेवा करजो तेहनी, भेद पामशो आणंद ॥ १४ ॥
आणदरूप एक आतमा, बाकी सर्व असत्य ॥
ते ध्याने मुक्ति लहे, आगे पाम्या अनंत ॥ १५ ॥
वलि अनता पामशे, पामे छे वर्त्तमान ॥
निश्चित उपादान शुद्ध ग्रहि,ए भाखुं शुधमान॥१६॥
मुनि हुकम रचना करी, स्वअनुभवधारि ॥
परअनुभव अलगो टर्यो, शुद्ध भाव निहालि॥१७॥
श्रोता पण तेवा तिहां, अनुभव गुणना रशिया ॥
शुद्ध भावना लालचु, ते मुज पासे वशिया ॥१८॥
पुद्गलना भिखारि जेह, तेनु नहि अहियां काम ॥
ते अहियां आवे नहि, ते चउगति भटकण ठाम॥१९॥
रागद्वेष रहित ए, कीधो ग्रथ विनाण ॥
भावे करि जे वाचशे, सांभलतां प्रगटे नाण ॥२०॥
बहू श्रुत तर्कवाद सहित, स्वपर स्वरूपने जाणे ॥
निस्पृहि भाव सदा रहे, ते पासे भेद ठाणे ॥ २१ ॥
न्याय विना समजे नहि, शुद्धा शुद्ध स्वरूप ॥
ते माटे गुरगम कही, लेवी शुद्ध अनुप ॥ २२ ॥
ए उपदेश हृदय धरी, जे करशे अभ्यास ॥
मुनी हुकम ते पामशे, शीवसुदरी घर वास ॥ २३ ॥

॥ इति चउअभाव प्रकरण सपूर्ण ॥

तथा लौकिक गुरु कहेतां ब्राह्मण, जोगी, सन्याशी, प्रमुखने गुरु करी जाणे तेना चमत्कार देखीने तेने माने २ लौकिकधर्म जे सदाव्रत देवु तथा होली भुरर्या रेहेवु, इत्यादिक मिथ्यात्वीना पर्व तथा व्रत करे तेने लौकिकधर्म कहीए ३ लोकोत्तर देव जे रिखवादिक जे तीर्थंकर तेना जे तीर्थ प्रतिमा तेने पोताना ससार हेतुए मानवा, बाधा आखडी राखवी ते लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व कहीये ४ तथा लोकोत्तर गुरु मिथ्यात्व कहेतां जे साधु मुनिराजनी शेवा भक्ति आहारपाणी प्रमुखनी सुश्रुषा राखे, मनमा एवु विचारे के, महाराज वचन आशिर्वाद कहे तो आपणु सारु थाय तथा मन जत्र प्रमुखनी आशाए करे ५ तथा लोकोत्तर धर्म कहेता श्रीपाळने आंबिलनी ओलीथकी सारु थयु, तथा गुणमजरी वरदत्तने पाचम करवाथकी सारु थयु, इत्यादिक बहु जणने तपजप धर्मकरणी थकी सारु थयु, तो आपणे पण अमुक तप प्रमुख करवा थकी सारु थाय ॥ ६ ॥ ए छ मिथ्यात्व ते मध्ये त्रण लौकिक मिथ्यात्व तथा त्रण लोकोत्तर मिथ्यात्व छे, ए मिथ्यात्व ते वेहेवार थकी छे तथा द्रव्य मिथ्यात्वना घरना छे, तथा द्रव्य मिथ्यात्वना घरनो निश्चय मिथ्यात्व तेना दश भेद छे, देव मिथ्यात्व केहेता जे देववीतराग जेनो रागद्वेष गयो, सर्व कर्म थकी रहित थया स्वरूप रमणी लोकालोक भास्कर, एवा जे अरिहत परमात्मा तेने देव करी न जाणे ए प्रथम मिथ्यात्व. १ तथा जे देवपणु नथी पाम्या, रागद्वेष विषय कषायना भरेला एवा जे हरिहरादिक तेने देव करीने माने ते बीजु मिथ्यात्व २ तथा जे साधु आत्मरमणीक स्वरूपानुयायी परभाव त्यागी, स्वभाव भोगी मद कषायी, करुणासागर, ज्ञान उपयोगी, एवा जे मुनिराज तेने साधु करी न

माने, ए त्रीजु मिथ्यात्व ३ जे असाधु रागद्वेष विषय कषायना भरेला, आत्म स्वरूपना अजाण, शुभाशुभ करणीना रागी, जड भावमां रच्या पच्या रहे, तेने साधु करीने माने, ए चोथु मिथ्यात्व. ४ धर्म जे वस्तुनो स्वभाव तथा जीवदया, स्वपरनो जड चेतननो विभाग, इत्यादिक जे केवली भाख्यो धर्म तेने अधर्म माने, ए पाचमु मिथ्यात्व ॥५॥ जे अधर्म जीवदया प्रमुख नही तथा वस्तु स्वरूप जाण्या विना क्रिया कष्ट तपजप प्रमुखने धर्म माने ते छट्ठु मिथ्यात्व ॥ ६ ॥ जे जीव स्वरूप चेतना लक्षण चार सज्ञा सहित तथा एकेंद्रिथी ते पचेंद्री पर्यंत अनेक थानक उपजवानां तथा वीणसवाना शास्त्रादिक न जाणे, ने इत्यादिक स्वरूपने जीव न माने ए सातमु मिथ्यात्व ७ जे अजीव पदार्थ जड छे तेने पण समजणथी केटला एकठामने विषे जीव करीने माने छे ते आठमु मिथ्यात्व ८ मुक्ति केहेता सरव जड भागनो त्यागी सर्व कर्म रहित शुद्ध स्वरूप जेवु सत्ताए हतु तेवुज निर्मल प्रगट थयु, ने लोकने अंते सिद्ध स्वरूप थइने बीराजमान थया तेने मुक्ति न माने ते नवमु मिथ्यात्व ९ जे अमुक्ति केहेतां जे संसारना वैभव थकी छुटया नथी, चाकर ठाकरपणु ज्या रह्यु छे जन्म मरण जेना गया नथी, एवा जे वैकुंठ गौलोक यावत् जीव पर्यंतने जे मुक्ति माने छे ते दशमु मिथ्यात्व १० ते दश मिथ्यात्व पाच प्रकारे करीने मानवामा आवे जे पुर्वे ए दश कह्या ते माहेला जे बोल जे कुगुरुना झलावेला ते मत्ये छाडे नहि, सुगुरु मले समजावे तोयेपण हठवाद छोडे नहि, तेने अभिग्रहित मिथ्यात्व पेहेलु कहीए १

हवे ते मध्ये केटलाएक जीव एम जाणे जे सुगुरु केहेछे ते पण ठीकज [illegible] कुगुरुए समजावेलु छे, ते पण ठीकज छे.

आपणे ए कुटमां पेसवु नहि, आपणे तो सर्वे मानवा जोग छे, एवुं जे विचारे छे तेने सुगुरु कुगुरुनी परीक्षा न थइ, तथा सत्यासत्य वचननी परीक्षा न थइ, तेने एक वातनो निरधार पण न थयो तेने मन दूध अथवा छाश बन्ने एके पाडे जाय तेने अनाभिग्रहित मिथ्यात्व कहीए २

जे पूर्वे सुगुरुए बताव्या, एवा जे दश बोल ते सारी रीते सम जेलो ते कोइ कर्मना उदयथकी अणस्मृतिथी वचन नीकल्यु, पछी पोते समज्यो के आ वचन तो हु बोलता बोल्यो परतु हु बोल्यो ते वचन पाछु न फरे, एवु धारीने खोटी युक्तिओ करी, ते वचनने सावित करे तथा कोइ वात उपर ममत थतां ते धर्मने खोटु करवा चाहे ते धर्मने तोडवा चाहे,ए सर्वे जाणीने करवु रहु अथवा स्वल्प व्यवहारनी मर्यादा वास्ते आत्मस्वरूपने जाणतो थको शुद्ध मार्गनी खबर वाला जीव जडनी पुष्टि करे, एटले शुभाशुभ क्रियानी पुष्टि करे तेने जडनी पुष्टि करी कहीए शामाटे के क्रिया त्यां कर्म छे माटे ए सर्व जडनु पोषण थयु, शा माटे के इहां कर्मनु वधारवु थाय छे, एवी रीते जाणीने एवा काममां प्रवर्ते तेने अभिनिवेशिक मिथ्यात्व कहीए ३

एज पूर्वे दश बोल कह्या इत्यादिक बोलोने विषे शका पडे जे कोणे जीव दीठो, तथा मुक्ति अरिहत ए कोणे दीठां छे, इत्यादिक सत्र परपराथी केहेता आव्या ते मानीए छीए शु जाणीए के ए वस्तु साची छे के जूठी छे, अने शास्त्रनो काइ भरोसो पडे नहि, केमके जेम आ स्वामीनारायण काल नजरे थयो तेणे महा दु ख महा कष्टे करी घणो द्रव्य राजा तथा ब्राह्मणने खवरावीन पोतानो धर्म चलाव्यो, ते सर्वे आपणे प्रत्यक्ष नजरे दीठेलु छे, तेने लोक एना मतवाला भगवान करीने माने छे, तथा कुबेर भक्त

हाल वर्त्तमान बेठोज छे, तेने पण तेना मतवाला भगवान केहे वानी इच्छा राखे छे, ते जाणीए छीए के चारे दहाडे एने मुवा पछी भगवान ठरावशे, तेनां कर्तव्य सर्व आपणे प्रत्यक्ष नजरे देखीए छीए, एम आगलना कोइ ढोंगीथी आ धर्म चलाव्यो होय तो केम खबर पडे ? अने शास्त्र उपर जो जोवा जइए तो हाल जे उपरना कह्या ते धर्मवालाए शास्त्र नवा बांधेला छे ते धणीए पण घणी युक्ति अने हलाहल खोटी वार्त्ताओ माहेली कोरे नाखी छे, ते धणीना विश्रमानना देखवावाला नहि होय त्यारे केटला लोको एवु जाणशे के अहो भगवाने आवा आवां काम करेला छे, ने ते प्रत्यक्षपणे आपणे जोइए छीए के खोटां शास्त्र बनाव्या छे एम आगलनाए तेवा शास्त्र बनाव्या होय तो तेनो शो भरोंसो रहे ? एम मनमां शका करवा जेने रेहेती होय तेने सशयिक मिथ्यात्व कहीए ४

शिष्यवाक्य –स्वामी तमे सशयिक मिथ्यात्व कह्यु ते ठीक पण प्रत्यक्ष आ लोकोना जे शास्त्र अने आ लोकोना भगवान् आपणे देखिये छीये, तेमज आ धर्म सामाने भासन थाय सत्धर्म शा थकी भासन थाय एतो काइ इहां वेसतु नथी, पछी तमे जोरावरीथी मनावो तो मोटा छो, कोण जोइ आव्यु के एटली वस्तु पूर्वे बनेली छे के एवा ढोंगी पुरषे पोताने पूजावा वास्ते अथवा पोतानी पडीताइ देखाडवा वास्ते उभु कर्यु छे, जेम आ डाकोरनी मूर्ति गुगली लोको द्वारकांथकी चोरीने लइ आव्या छे अने ते हक नामा पुराण जे आमोदना दीनानाथ नामे ब्राह्मणे बनाव्यु छे, ते धणीये डाकोरनु देहेरु तथा गामना झाड प्रमुख सर्व सोनानां कह्यां छे, ते दीनानाथ भटने मुवाने वरस दशने आशरे थवा आव्यां ते धणीए ---ा प्रत्यक्ष मारेला छे तेम बीजा शास्त्रवालाए पण

गप्पां मारयां होय तो, शी मालुम पडे माटे ए ठेकाणे तो, शंका मोहोटीज रहे, ते वातमा संदेह नहीं गुरु वाक्यः-हे भद्र, एवी तने महामोटी शंका उत्पन्न थइ तो ताहारो समकितादिक गुण वयों रह्यो, प्रत्यक्ष नास्तिक पणु भासन थाय छे माटे एवी शंका न जोइये हवे हु तने ए शंकानो उत्तर आपु ते तु स्थिर चित्त करीने सांभल अने तारा मननी शंका कह्या होय अथवा आ उत्तरमां शंका उत्पन्न थाय ते पूछीने निश्चल था जे तने सर्व थकी धर्मनी शंका पडी तथा शास्त्रनी पण शंका पडी, माटे तने शास्त्रनो उत्तर तो हाल भ्रम थकी देवाय नहि, परतु न्यायवादे करीने जे उत्तर तने आपीये ते तु धार प्रत्यक्षपणे जीव छे ते खरो के नहि ? वादी कहे जीव काइ दीसतो नथी, गुरुवाक्यः-जीव विना बोलवु चालवु ते कोण करे छे ? वादी कहे बोलवानु स्वरूप ते आकाशमां रह्यु छे, अने चालवु ते जडनो स्वभाव छे गुरु वाक्य--के जे बोलवानु स्वरूप त आकाशने विषे कह्यु, ते आकाशने विषे तो शब्दनो गुण छे, पण अक्षरादीक उच्चारण नथी, तथा चालवानो गुण जे ते पुद्गलनो स्वभाव कह्यो ते तो सूक्ष्म पुद्गलमां छे, परतु बादर जे स्थूल पुद्गल तेमां काइ चालवानो स्वभाव प्रत्यक्षपणे दीसतो नथी, तेमां प्रत्यक्ष चालवानो स्वभाव होय तो घट पटादीक चाल्यां जोइये, ए माटे चेतननोज गुण इहां लेवो वादी उक्त-के जो चेतनमांहे होय ते थकी चालतु होय तो तमारा केहेण थकी वनस्पतिमा जीव छे तो ते पण चाली जोइए गुरुवाक्य,--वनस्पतिने विषे इद्रि एकज छे तथा ए चाली शके नहि, वादी उक्त एकेंद्रि जे काया छे तेथी चाली न शके तो बीजी चार इद्रिमां तो चालवानो स्वभाव छेज नहि, तो जीवनु चालवु शानु रह्यु माटे अमे कहीये छीए के चालवु ते जडमांज छे, जेम घडीआल प्रत्यक्ष

जड छे ते एनी मेले चाल्या करे छे तेम ए काया पण पुद्गल चाले छे, इहा काइ जीवनु कारण छे नहीं, गुरु वाक्य–जे काइ घडीयाल चाले छे ते जीवनी बनावेली कल ते उपरथी चाले छे, ते पण जीवने आठेने आठे दहाडे सभाल लेवी पडे छे, कुची फेरवे छे चक्कर प्रमुख लुछी पुजी पाछा चढावे छे, त्यारे चाले छे पण काइ तेनी मेले चालती नथी, तथा ते जे कह्युके चार इंद्रि वीजामां चालवानो गुण छे नहि ते खरु छे, परतु वीजी इद्रिओ आव्या विना फरश इद्रि थकी चलाय नहि, केनी गोडे के जे दूध छे तेमाथी कोइ घी-काहाडवा चाहाशे, तो पण सर्वथा नीकली शके नहीं, पण जो पैसा भार मेलवण पडे तो पछी घी नीकले तेम एकेंद्रिमां वीजी इद्रिनी प्राप्ति थाय तोज चालवानी गति आवे पण ते विना चालवानी गति आवे नही. वादी उक्तः–जेम वीजी इद्रिना मलवा थकी तमे चालवु कह्यु, ते वारे एवु भासन थाय छे के इद्रिओमांज चालवानो गुण रह्यो छे पण कांइ जीव पण जो दीसतु नथी

गुरुवाक्यः–जीवपणा विना इद्रिओनु वाधवु कोण करे माटे जे इद्रिओ वांधे छे तेज जीव छे, वादी उक्तः—जे तेम इद्रिओना वांधनाराने जीव ठरावो छो ते तो कइ संभवतो नथी जे त्रस रेणु प्रमुख उडी उडीने घर प्रमुख अवावर जगाने विषे पडे छे ते रज पाछी स्थूल थाय छे तेमां तो कोइ शास्त्रवाला जीव केहेता नथी, तो ए इद्रि एक कोणे वाधी माटे जडनो कर्त्ता जड छे गुरु वाक्यः ते त्रसरेणु प्रमुख जे खध ते सरवे पृथ्वी काय वनस्पतिकायना छे ते प्रथम जीवना वांधेला एकेंद्रिनाकायना पुद्गल छे जीव विना वनस्पतिकाय प्रमुख थाय नहीं वादीयुक्तः-वनस्पति प्रमुखनुं जे थवु छे ते माटी पाणीना जोगथी उत्पत्ति थाय छे एमां कइ जीवन दीसतु नथी गुरुवाक्य –जीव विना उगे

नही, के जुवो मत्यक्ष जे कइ झाड छे, ते जेना माहे जीव होय ते पाणीना जोगथी नव पल्लव थाय, परतु तेज ज्ञाडनी डाली जीव रहित थइ होय तेने काइ पल्लव आवे नहि माटे जीव छे ते सत्य छे वादीयुक्त –के ते डालीना पुद्गल घणा खरी गया हशे तेथी तेने पल्लव आवतु नथी जेम वृद्ध पुरुपने छोकरां न थाय तेम एने पण पल्लव नथी आवतु गुरुवाक्य –तेहीज वृद्ध पुरुष वीर्यहिण थयो तेथी तेने छोकरा न थाय परतु आहार तो ते पुरुष करे तेम ए डाली प्रमुखने विषे पल्लवतो ना आवे परतु पाणी तो खेंच्यु जोइए, तो तारी वात खरी थाय परतु पाणीनो रस खेंचवानी एनी शक्ति नथी शक्ति तो जीव होय त्यारेज पामीए वादीयुक्त–जो पाणीनो रस खेंचवाथकी जीव मानो तो मृतिकाना हाथी प्रमुख अनेक जनावर आवे छे, तेने जेटलु पाणी मुकीये तेटलु पीधे जाय छे, माटे तेने पण जीव मान्यो जोइये गुरुवाक्य–एतो पाणी पीए छे तेम मूतरतु जाय छे तेनी कायामां काइ रेहेतु नथी माटे ए जड-रूपज छे, वादीयुक्त–कायामां जे रसनो सग्रह तेने तमो जीव मानो छो, ते तो जठराग्निनु जोर होय ते रसपाचन घणु करे, जेने जठ-राग्निनु जोरमद होय ते रसपाचन ओछु करे, माटे रसना ग्रहण अग्रहणथकी जीवनो निर्णय न थाय शा माटे के पाच भूत मलीने एक स्थूल बधाय छे ते पाचे भूत पोतपोतानां काम करे छे तेमां काइ जीवपणु न मनाय गुरुवाक्य–जो पांच भूत पोतपोतानु काम करे छे, तो पृथ्वि आदिक चार थावरने विषे वायुतत्व शु काम करे छे ? वायुतत्व इहा कांइ काम करतो दिसतो नथी, शा माटे के पृथ्वि आदिक थावरने विषे एक एक तत्वनी मुख्यता छे एटले पृथ्विकायने विषे पृथ्वी तत्वनी मुख्यता छे अपकायने विषे जल तत्वनी मुख्यता छे, अग्निकायने विषे अग्नितत्वनी मुख्यता छे

वायुकायने विषे वायुतत्वनी मुख्यता छे, अने वनस्पतिकायने विषे पृथ्वीतत्वनी मुख्यता छे, ए पाच थावर मध्ये आग्निकायने विषे आग्नितत्व तथा पृथ्वीतत्व बेनी मुख्यता दीसे छे, तथा वनस्पतिकायने विष चार तत्वनी मुख्यता दीसे छे पृथ्वीतत्व तथा जल तत्व तथा आग्नितत्व तथा आकाशतत्व ए चार तत्वनी मुख्यता जोवामा आवे छे तथा बेइन्द्रियादिक जे त्रस जीव रह्या तेने विषे पांचे भूत मालुम पडे छे, परतु ए पाचे भूत काइ जीव नथी ने ए पांचे भूत जीव विना रसपाचन करवा समर्थ नाहि, तथा चालवा पण समर्थ नहि तथा अक्षर उचारण करवा काइ समर्थ नाहि, ए कारण सव जीव होय त्यारेज बने वादीयुक्त–चालवु हालवु सर्वे वायुतत्वना बलथकी थाय छे, ज्यासुधी वायुतत्व होय त्या सुधी ए रसपाचनादिक सर्वे कार्य करे ने वायुतत्व गयाथी ए सवे तत्व जुदां पडे छे ते प्रत्यक्ष जोवामा आवे छे इहा कोइ जीव स्वरूप दीसतु नथी गुरुवाक्य–तु वायुतत्वने जीव सरखो माने छे ए तारी मोटी भूल छे केमके अक्षर उचारण करवानी शक्ति, वायुनी होय नाहि तथा शुभाशुभ वेदवु, ते पण वायुतत्व जाणे नाहि, केमके वायु तत्वथकी श्वासोश्वास लेवाय छे, परतु–शुभाशुभमा ए जड शु समजे, तमे तमारा मनमां विचारी जुओ वादीउक्त–शुभाशुभनु जाणवावालु तो मन छे अथवा नवा विचार उठाववावालु पण मन छे पण काइ जीव तो दीसतो नथी

गुरुवाक्य —एज जीव गया पछी जे कलेवर पडेलु छ ते केम वइ शुभाशुभ वेदतु नथी, इद्रिओ तो पांचे साबुत छे, एक वायु तत्व मांहेथी गयो छे, परतु तेने कांइ शुभाशुभ कारण छे नहि वादीयुक्त —मननो नाश थइ गयो माटे कोण वेदे ? गुरुवाक्य· वायुतत्व [illegible] पण मन तो तमारा जीधाथी गयु नथी

युक्तः-मन ते वायु छे के नहि जगतमां मन पवन केहेवाय छे माटे मन तो वायु मेगुज गयु गुरुवाक्यः-जो मनथकी शुभाशुभ वेदे छे तो पृथ्वी आदिक थावरने विषे वेद्यु जोइए, परतु पृथ्वी, वनस्पति इत्यादिक जे छे ते कइ शुभाशुभ ने वेदता नथी तो शु एने तमे एक भूत मानो छो के पांचभूत मानो छो कदापि तमे केहेशो के पृथ्वी आदिकने एक एक भूत मानीएछीए तो वनस्पति काय भूतमां छे नहि. वादीयुक्त -वनस्पति पृथ्वीतत्वमा गणीएछीए. गुरुवाक्य - पृथ्वी तत्व छे तो ए रसशाथकी पाचन करे छे ? तो मत्यक्ष इहां अग्नि तत्व दीसे छे, तथा तेना पान प्रमुखने मरदीए तो रसनीकले छे, तो जलतत्वपण दीसे छे तथा खीली प्रमुख एनेविषे मारीए तो मांहेली पेरे समाय छे तो आकाशतत्व पण दीसे छे, ए चार तत्व वनस्पतिने विषे दीठामा आवे छे, ने वायुतत्व दीठामां आवतो नथी अने रसनु पाचन वायुतत्वविना इहां थाय छे, तो इहां जीव खरो के नहि ? अने जो जीव न मानो तो पाचभूत इहां मेलवी आपो, पांचभूतविना पुतलु न थाय नहि, एवी तारी बोली छे वादीयुक्त -तमारा शास्त्रमां श्वासोश्वास पर्याप्ति तथा श्वासोश्वास प्राण कह्यो छे ते वायुतत्व ज छे गुरुवाक्य -तु शास्त्रतो प्रथम मानतो नथी तथा परोक्ष वस्तु पण मानतो नथी अने हवे तने उत्तर देवानी जगो न मली त्यारे तें शास्त्र देखाडवा मांडयु तो एम परोक्षने वाछे छे त्यारे जीवज कबुल करनी अने शास्त्रमां पण जीव कहेलो छे एम शास्त्रथी पूछीश तो अमारे जवाब देवानु घणु सुळभ छे माटे जीव छे ते सत्य छे खोटी कल्पना शाने करे छे वादीयुक्त -एम जोतातो जीव भासन थाय छे परतु जीव ते केवो हशे अने जीव कांइ दीठामा आवतो नथी तेथी मनमां शका रहे खरी माटे अमने जीवनु स्वरूप बराबर गळे उतारो तो अमारी

शका मटे गुरुवाक्यः—जीव केवो हशे ते जीव तो अरुपी छे ते कंइ देखाय नही, परतु एना लक्षण स्वमावे करीने जाणवामां आवे ते जीवनेविषे आठ सामान्य लक्षण छे तेना नाम कहीएछीए अस्तित्व १ वस्तुत्व २ द्रव्यत्व ३ प्रमेयत्व ४ अगुरुलघुत्व ५ परदेशत्व ६ चेतनत्व ७ अमूर्तत्व ८ ए आठ जीवना सामान्य गुणछे, तथा छ विशेष गुण छे, तेनां नाम ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ वीर्य ४ चेतनत्व ५ अमूर्तत्व ६ हवे तेनो अर्थ सक्षेपथी देखाडीए, छीए, जीव द्रव्यना गुण ते द्रव्यने वळगीने रह्या छे तेनो कोइ काले नाश न थाय तेने अस्ति स्वभाव कहीए वादीयुक्त—जीव द्रव्य तेशु ? एटले जीव केहेता शु ? द्रव्य केहेता शु ? ने गुण केहेतां शु ? तेनी अमने समज पडी नथी ते अमने प्रथम समजण पाडीने पछी आगळ चालो.

गुरुवाक्य—जीव तो जे पूर्वे कह्यो ते चेतना लक्षणे करीने सहित होय तेने जीव कहीये अने खध जे एक आखो होय कोइ काले खडन न थाय तेने द्रव्य कहीए अने गुण जे द्रव्यने ओळखावे तेने गुण कहिये, जेम पट छे ते ओढवा पेहेरवा खप लागे तेथकी ओलखीएके ए पट छे, तथा घट छे ते जल भरवा खप लागे ते गुणवडे करीने घट ओलखाय, एटले एक द्रव्यनो गुण बीजा द्रव्यमां मळे नहि जेम घट ओढवा खप न लागे, पट छे ते जळ भरवा खप न लागे एटले ते पोते पोतानो गुण पोताना द्रव्यने मळीने रह्यो छे तेथकी द्रव्यनी ओळखाण थाय छे हवे ते द्रव्य छ प्रकारना छे तेना नाम धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ आकाशास्तिकाय ३ पुद्गलास्तिकाय ४ जीवास्तिकाय ५ काल ६ ए छ द्रव्य छे ते मध्ये धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ आकाशास्तिकाय ३ काल ४ एच्यार एकज अनेजीव द्रव्य एक एवा अनता छे,

ने पुद्गल द्रव्य परमाणुरूप अनंता छे, तथा द्वीप्रदेशीनी आदे देइने अनंत प्रदेशी खंध एवा द्रव्य उपचारे करीने अनंता छे हवे जे जीवस्वरूप छे ते कहीए छीए, एटले एक जीवना असंख्याता प्रदेश छे, अनंता गुण छे, ने अनंता पर्याय छे, ते स्वरुपसर्वे प्रमाण नयथी जाणवामां आवे, तेप्रमाण नयना बेभेदछे, एक प्रत्यक्षप्रमाण बीजो परोक्ष प्रमाण, प्रत्यक्ष प्रमाणना बे भेद, केवलज्ञानसर्व प्रत्यक्ष प्रमाण छे, ए प्रथम भेद १ अवधिज्ञान मनपर्यवज्ञान ए देश प्रत्यक्ष प्रमाण २ हवे परोक्ष प्रमाण केहेतां मति श्रुतज्ञान ते परोक्ष प्रमाण छे तेना बे भेद एक द्रव्यथकी १ बीजो पर्यायथकी २ त द्रव्यार्थिकना १० भेद छे, तथा पर्यायार्थिकना छ भेद छे, तथा ए द्रव्यार्थिक तथा पर्यायार्थिक ए बे नय मलीने सात नय पण थाय छे, तेनां नाम, निगम १ संग्रह २ व्यवहार ३ ऋजुसूत्र ४ शब्द ५ समभीरुढ ६ एवंभूत ७ तथा व्यवहारनयना पक्षथकी उपचारे त्रण उपनय पण थाय छे, तेना नाम सद्भूत व्यवहार १, असद्भूत व्यवहार २, सद्भूतासद्भूत व्यवहार ३, तेनु स्वरूप आगल कहीशु हवे द्रव्यार्थिकना दश भेद देखाडीए छीए हवे शुद्ध द्रव्यार्थिक केहेता कर्म उपाधिरहित सत्ता स्वरूप जोइए तो सर्वे संसारी जीव सिद्धरूप छे ए त शुद्ध आत्माज केहेवाय १, नित्य द्रव्यार्थिक केहेता उत्पाद व्ययने न विचारीए तो शुद्ध द्रव्य सत्ताने विषे जोतां ते नित्य छे २, तथा अति शुद्ध द्रव्यार्थिक केहेतां भेद कल्पनानी अपेक्षा न करवी जेथी गुण पर्यायरूप द्रव्यनु इहां अभिन्नपणु थयु ३, कर्म उपाधि सापेक्ष स्वरूपनु विचारवु ते अशुद्ध द्रव्यार्थिक कहीए जेम क्रोधी आत्मा, इत्यादिक नाम धरावे ते ४, उत्पाद व्ययनी अपेक्षा सहित स्वरूपनु जोवु ते अशुद्ध द्रव्यार्थिक, जेम एक समयमां उत्पाद व्यय ध्रुव आत्मा छे ५ भेद कल्पनानी

अपेक्षा लेइने स्वरूपनु जोवु ते अशुद्ध द्रव्यार्थिक छे, जेम आत्माना ज्ञानदर्शनादिक गुण छे एवु बोल्वुं ६, अन्वय द्रव्यार्थिक कहेता गुण पर्याय स्वाभाविक द्रव्य, ७, स्वद्रव्यादि ग्राहिक द्रव्यार्थिक जेम स्वद्रव्यादि चतुष्टयीक अपेक्षा द्रव्यास्ति ८, परद्रव्यादि ग्राहक द्रव्यार्थिक यथा परद्रव्यचतुष्टिय अपेक्षाए द्रव्यनास्ति ९ परमभाव ग्राहिक द्रव्यार्थिक यथाज्ञान स्वरूप आत्मा एटले अनेक स्वभाव चेतनना छे ते मध्ये ज्ञान मुख्यपणे छे, शामाटे के ते स्वपरप्रकाशक छे ते वास्ते १०, एटले द्रव्यार्थिकना दशभेद कह्या

हवे पर्यायार्थिकना छ भेद कहीए छीए अनादि नित्यपर्याय कहेतां पुद्गलपर्याय नित्य छे १ सादि नित्यपर्याय कहेता सिद्धपर्याय नित्य छे २ शुद्धपर्याय कहेता सत्तानी गुणताए उत्पात व्ययनु ग्रहण स्वभाव ते सदा अनित्य छे, एम समये समये पर्याय विणसे ३ सत्तासापेक्षभाव अनित्य अशुद्ध पर्यायार्थिक कहीए. ४ हवे कर्म उपाधि निरपेक्ष स्वभाव अनित्य शुद्ध पर्यायार्थिक कहीए जेम सिद्धना पर्याय तादृशरूप अथवा ससारीना पर्याय अशुद्ध कहीए. ५ कर्म उपाधि सापेक्ष स्वभाव अनित्य अशुद्ध पर्यायार्थिक कहीए जेम ससारी जीवनी उत्पत्ति मरण खरु छे. ६ एटले पर्यायार्थिकना छ भेद कह्या

हवे सातनयना नाम मात्र सक्षेपे देखाडीए छीए निगमनय अतित अनागतादिक आरोपणने माने छे १, सग्रहनय छे ते परस्पर अविरोधी छे २, व्यवहारनय देखता भेदने वेंहचे छे३, ऋजुसूत्र वर्त्तमानग्राही छे ४ शब्दनय शब्दादिकग्राही छे ५ सभीरुढदेश उणाने वस्तु माने छे ६, एव भूत सपूर्णने माने छे. हवे उपनयना [illegible] छीए शुद्ध सद्भूत व्यवहार केहेता शुद्ध

गुणगुणीना तथा शुद्ध पर्यायना केहेवा, ए पेहेलो भेद १, अशुद्ध सद्भूत व्यवहार अशुद्धगुण अशुद्ध गुणीना अशुद्ध पर्यायना भे केहेवा ने बीजो भेद २, स्वजाति सद्भूत व्यवहार कहेतां षट् परदे शनु केहेवु १ विजाति सद्भूत व्यवहार यथा मूर्तिमान, ज्ञान दर्शन तथा द्रव्य तथा आत्मा कहेवो २, स्वजाति विजाति सद्भूत व्यव हार एटले जीवअजीव ज्ञाननु कथन भेगु करवु, जेम अमुक पुरुष ज्ञानी छे ३, हवे असद्भूत व्यवहारना त्रणभेद स्वजाति उपचरित असद्भूत व्यवहार केहेता पुत्रकलत्र इत्यादिक ए मारु छे १ विजाति उपचरित असद्भूत व्यवहार कहेता वस्त्रआभरण प्रमुख माहारु छे२, स्वजाति विजाति उपचरित असद्भूत व्यवहार एटले देश नगर रा ज्य माहारु छे ३, हवे जे पुत्र प्रमुख पोताना कहे ते जीवजीव स्व जाति छे ने तेनु जे शरीर प्रमुख ते विजाति छे, परतु जीव आ श्रीने स्वजाति कहीए. पण जीव कोइ कोइनो छे नहि, पण उप चारे करीने पोतानो माने छे, ए पेहेला भेदनो अर्थ थयो हवे विजाति कहता जे वस्त्र आभरण तेने विषे काइ जीव छे नहि, माटे ए अपरजाति तेने विजाति कहीए ते पण वस्तुना भोगदारी अनेक थइ गया ते पण काइ पोतानी छे नहि, परतु उपचारे करीने पोता नी मानी छे, ए बीजानो अर्थ, तथा स्वजाति विजाति केहेतां जे देश नगर प्रमुखने विषे जीव छे ते स्वजाति छे, ने देशादिक ऋद्धि छे ते विजाति छे एटले ए बे मळीने स्वजाति विजाति त्रीजो भेद थयो, ते पण काइ आपणु छे नहि, आपणाथकी तो भिन्न छे परतु उपनये करीने आपणु माने ए त्रीजा भेदनो अर्थ, एटले नय अधि कार पुरो थयो

एवी रीते विचारे तो जीवनु स्वरूप हाथ आवे, पण काइ रूपी नथी के देखाडवामा आवे, माटे एना जे कोइ अस्तित्वादिक

गुण ते थकी वस्तु हायमा आवे, ते अस्तित्व स्वभाव प्रथम कह्यो
छे. हवे तेना सात गुण बाकी रह्या तेनु स्वरुप कहु ते सांभल बीजो
स्वभाव वस्तुत्व एवे नामे एटले वस्तुनो जे स्वभाव ते फीटीने बीजी
वस्तु न थाय, एटले घट फीटीने पट न थाय, ने पट फीटीने घट
न थाय, यद्यपि सामान्य विशेष वस्तुनो स्वभाव दिसे, जेम एक
जीव मुक्तिने विषे प्राप्त थयो ने एक जीव ससारमा छे अथवा जेम
एक घटने विषे घी भराय ते घीनो घट कहेवाय, एक घट असुची
प्रमुखनो ते असुचीनो कहेवाय, एम सामान्य विशेष जणाय, परतु
वस्तु धर्म पोतानु छोडीने बीजु धर्म ना आदरे,ए बीजो गुण द्रव्य स्वभाव
केहेतां निज निज पोत पोताना प्रदेशना समुदाये करी अखड वर्त्त-
तो स्वभाव छे एटले जीव सख्यात प्रदेशी द्रव्य छे धर्मास्तिकाय
तथा अधर्मास्तिकाय असख्यातप्रदेशी द्रव्य छे आकाश अनतप्र-
देशी द्रव्य छे ए चारे अखड द्रव्य छे. ए चारे द्रव्य कोइ काले
खडीत थाय नहि, ए द्रव्यत्वस्वभाव कहिये शिष्य वाक्य—स्वामि
पूर्वे छ द्रव्य कह्या छे अने इहा चार द्रव्य केम बताव्या गुरुवाक्य
—जो पुद्गल द्रव्य परमाणुने कहिये छीये तो प्रदेशादिक लाधता
नथी अने जो खधने द्रव्य कहिये छीये तो ए स्वाभाविक द्रव्य छे
नहि ए विभाविक द्रव्य छे, माटे एना द्रव्यना विचारनी चरचा
घणी छे ते इहा जो करवा बेसीये तो ग्रथ गौरव थइ जाय माटे ए
द्रव्य इहां गणाव्यो नहि तथा कालद्रव्य छे ते उपचारे छे ए काइ
वस्तु कशी छे नहि माटे ए पण इहा गण्यो नथी ते माटे चार द्रव्य
अखडीत छे एने विषे द्रव्यत्वस्वभाव रह्यो छे, एने विषे सत्
द्रव्यपणानु लक्षण तादृश्य रूप दीसे छे पोताना गुणपर्यायने विषे
व्यापी रह्यो, ध्रुव सयुक्त तेने द्रव्य कहिये, एटले ए
द्रव्यनु [illegible] त्रीजो गुण ॥ ३ ॥ प्रमेयत्व कहेता जे स्व

परनी वहेंचण तेनु जे प्रमाण तेने प्रमेयत्व कहिये, तथा पोत पोताना स्वभावने विषे परिणमवु, परभावनो त्याग करवो, तेने प्रणम्यत्व कहिये ए चोथो गुण ४ अगुर लघुत्व कहेता सूक्ष्म भाव वचन गोचर नहि प्रत्यक्ष नहि, आगमप्रमाण छे ते पन्नवणा थकी जाणजो ५ प्रदेशत्व कहेता सुक्ष्म जे भाव परमात्मा भाषित तत्वनु जे हेतुपणु जेहने न होय ते, आज्ञा सिद्ध करवु केमके द्रव्य अन्यथा न होय, प्रदेश स्वभाव कहेता खेत्रनो अविभाग तेने प्रदेशत्व कहिये ६ चेतनत्व कहेता चेतनपणु एटले चेतननु अनुभववु यदुक्त–

॥ श्लोक ॥

चैतन्य मनु भुति स्यात् सक्रिया रुप मेवच
क्रिया मनोवच कायेष्व चितावर्तते ध्रुव ॥ ७ ॥

एटले चेतनत्वपणु कह्यु ७ अमूर्तित्व एटले रूपादिके करी रहित ८ ए आठगुणे करीने सहीत तेने जोव कहिये, इत्यादिक बीजा पण जीवनी ओल्खाणना स्वभावादिक छे ते आगल प्रसगे आवशे त्या केटलाएक कहेवाशे एटले एवी रीते जीवनु स्वरूप ओलखवु, शका पखा होय ते काढी नाखवी

तथा जे शास्त्रनी शंका ते पण समजवु के सर्वज्ञना वचन अने छद्मस्थना वचन कांइ छाना रह नहि एटले सर्वज्ञना वचनने आत्मस्वरूपनी रमणता तथा जीवादिक नव तत्व षट् द्रव्य ते पक्ष प्रमाणादिके करीने जाणवा तथा जे नय निक्षेपा प्रमाण प्रमुखे भेद वहेंचवा ते नय शुद्ध व्यवहार कह्यो छे शामाटे जे विकल्पे करीने ए सर्व भग जाउ थाय छे, मूल स्वभावे जोता तो काइ ते स्याद्

वाद पक्षनी खप छे नहि इहा तो अभेदज्ञान मुख्यपणे खप लागे छे शिष्य वाक्य–स्वामी स्याद्वादनी खप नथी त्यारे तो एकांत वचन थइ जाय–गुरुवाक्य–जे स्याद्वाद वर्णवबु तेज व्यवहार छे–तथा खटदर्शन समुचय ग्रथनी टीकामा एमज कह्यु छे

॥ उक्तंच ॥ वाद इति विकल्प ॥

ते माटे एक आत्मस्वरूपनु रमण तथा आत्मानी वार्त्ता तेज सत्य छे–शिष्यवाक्य–त्यारे एटला बधा भेद करवानु शु कारण–गुरुवाक्य–जे ए भेदादिक वहेंचवा थकी सामाने घणो खुलासो थाय एटला वास्ते करीने भेदनु वहेंचवु थाय छे माटे एवा शास्त्र जे छे ते सर्व जाणवा–शिष्यवाक्य–स्वामि जे गणिताणुजोग मुख शास्त्र छे ते शा कारणे कह्या हशे–गुरुवाक्य–जे गणिताणु जोग छे ते जाणवारूप छे तथा धर्म कथानुजोग छे ते पण जाणवारूप छे अने जे चरणकरणानुजोग छे–ते एक आदरवा जोग छे शिष्यवाक्य–स्वामि ए तो पुद्गलनी करणी छे तेने आदरवानु शु कारण ? गुरुवाक्य–जो ए चरण करणानुजोग नहि आदरे तो शासननी ओलखाण रहेशे नहि अने ओलखाण नहि रहेतो शासननो उच्छेद थइ जशे एटला वास्ते ए चरणकरणानुजोग बाधेलो छे

॥ गाथा ॥

जइजिणभइयंपवजहंतो ॥ मावबहारनयमयंमयह ॥
विवहारपरीवाये ॥ तिथुछेओजउवश ॥ १ ॥

इत्यादिक वचन भद्रबाहु स्वामिना पण छे माटे ए शासननी [illegible] शासनने राखवा माटे ए अनुजोग छे

हवे पाचमु अणाभोग मिथ्यात्व कहिये छीये एटले अणाभोग कहेतां अजाणपणु एटले तेने धर्मनी तथा वस्तुनी कशी मालम नथी तेने अणाभोग मिथ्यात्व कहिये ५, एटले द्रव्य मिथ्यात्वना पांच ए निश्चयमिथ्यात्व थयु शिष्यवाक्यः–स्वामि, व्यवहारमिथ्यात्वना छ भेद कह्या, तथा निश्चयमिथ्यात्वना पदर भेद कह्या तेमां फेर शो छे

गुरुवाक्य–व्यवहार मिथ्यात्वना छ भेद कह्या ते करणीरूप लोकना जोवामा आवे माटे एने व्यवहार कहीए अने निश्चय मिथ्यात्वना १५ भेद ते मनमा धारवा समजवाना छे, ए नाव लोकना जोयामा थोडा आवे माटे एने निश्चय मिथ्यात्व कह्यु, एटले द्रव्यमिथ्यात्वनु स्वरूप कह्यु हवे भावमिथ्यात्वनु स्वरूप कहिये छीये एटले भाव केहता आत्मानो स्वभाव जे धर्म धर्म करे ते प रभावमां रमे तेने भावमिथ्यात्व कहीये शिष्यवाक्य–स्वामि अमने खुलासो करीने समज पाडो, सक्षेपथकी अमारी नजर पहों चे नहि गुरुवाक्य–जे परभाव कहेता जे जडनी दशा तेने परभाव कहीए एटले जडना जे जे काम छे तेने धर्म करीने माने छे, कहेतां मन वचन कायाथकी जे करणी करवी ते सव आश्रव छे, तेने सवर करी मान कहेतां जे जडनी क्रियाना बे भेद छे, शुभ तथा अशुभ, एटले ससारादिक करणी ते अशुभकरणी, तथा शुभना अनेक भेद छे एकेंद्रियादिकनी दया, तेनु पालण पोषण, ए सर्व पापानुबधीया पुन्यने विषे छे, यथायोग तरतम योग छे, तथा जे बीजी शुभकरणी सघ तीर्थ यात्रा प्रमुख करवा करावर्वा ते पण सर्व शुभकरणी छे, तथा जस विजयजी उपाध्याये समकितना सडसठ बोलनी सझायने विषे एवु कहयु छे, जे आठ प्रभावक साधु न होय तो तीर्थयात्रा प्रमुखवाला छेक प्रभावक छे, एटले

ए कइ आठ प्रभावकमा छे नहि. तथा तेने समकितनो पण नियम छे नहि, तथा करणी पण शुभनीज छे, पछी तत्व तो केवलीगम्य तथा जे व्रत नियम प्रमुख ते पण शुभकरणी छे, परन्तु देशविरति सर्व विरति छठ्ठा सातमा गुणठाणाना यावत् अगियारमा सुधीना छे, तथा तप छे ते सर्व पुण्यानुबंधी पुण्यमा पण छे तथा निर्जरामा पण छे तेनो विवरो कहिये छीये एटले पाचमा छठ्ठा गुणठाणा सुधी प्रमादभाव छे, तीहा सुधी क्रिया आचार पण छे, सातमे गुणठाणे अप्रमादी छे, तेमा काइ क्रिया आचार छे नहि, ते छठ्ठा सातमा सुधी जेने आत्मउपयोग छे, तेने निर्जरा पण छे तथा शुभाश्रव पण छे अने जेने आत्मउपयोग नथी, तेने एकलो शुभाश्रव छे, अने जे सातमा उपर अगियारमा सुधी आत्मउपयोग विना होय नहि, तेने तो निर्जरा होय, तथा पुण्यानुबंधी पुन्य होय ए बने वाना लाधे, माटे एम विचारी जोवु, ए आश्रवने धर्म करी माने, तेने भाव मिथ्यात्व लागे, माटे जे धर्मने धर्म करी जाणे अने आश्रवने आश्रव करी जाणे, एवा जीव तो अल्प छे अने शुभाश्रवने धर्म करी मानवावाला जीव घणा दिसे छे, तेन भावमिथ्यात्व कहिए, तथा अनादि मिथ्यात्वादिक भेद गुण स्थानक क्रमारोहनी टीकाथकी जाणजो, ते कारण माटे ए जे द्रव्यभाव मिथ्यात्व गया विना समभाव थाय नहि ने समभाव थया विना श्रद्धा स्थिर थाय नहि, श्रद्धा विना समकित होय नहि, समकित विना तप जप क्रिया भण्यु कशुपे लेखामा गणाय नहि, अने ज्ञान विना तो धर्म तथा मुक्ति छेज नहि, शा माटे के आत्मस्वरूपना उपयोग विना तो समकित कहेवातु नथी, उपयोग छे ते तो ज्ञानमा छे, ते कारण माटे ज्ञाननो खप करवो, शा माटे के ज्ञान छे, तेहिज समकित तथा चारित्र तथा मुक्ति कहीए, ते श्री जसविजयजी उपाध्याये

सवासो गाथाना स्तवनमां कह्यु छे जे ज्ञाननो तिक्ष्ण उपयोग तेने चारित्र कहीए ते माटे ज्ञान छे तेज चारित्र तेज मुक्ति छे

॥ उक्तच सवैया एकतीसा ॥

कोइक्रूरकष्टसहे तपसों शरीर दहे धुम्रपान करे अधोमुख व्हेके झुले है केइ महाव्रत गहे क्रियामें मगन रहे वहे मुनिभारमें पयारकेसे पुले है इत्यादिक जीवनकों सर्वथा मुगति नांहि फिरे जगमाहि ज्योंवयार के वधु लहे जिनके हियेमें ज्ञान तिन्हहिकोनिरवान करमकें करतार भरममें भुले है १

ते कारण माटे ज्ञान छे एहिज मुख्य छे, माटे ज्ञानवडे करीने सर्व द्रव्यनु जाणपणु करीने पांच द्रव्य हेय जाणीने छांडवा, एक चेतना ज्ञानरूप उपादेय जाणीने आदरवो, तेथकीज आत्मानि॰कर्म थाय, माटे आत्मानु भासन करीने माहे व्यापकपणु करवु ने रमण करवु त्या भेदपणु न लाववु, एटले आत्मा तेज परमात्मा छे, एवी रीते तद्रूप स्वसत्तागवेषी अने शक्तिभावे गुण छे ते व्यक्तिभाव मां रमण करे तेने जीवनमुक्त कहिए तनो आत्मा कर्म रूप रज थकी निर्मल थाय, तेना असंख्याता प्रदेश निर्मल करीने सिद्ध-सेत्रमां जइने सिद्धपणे रहे, तेने फरीथी जन्म मरण करवा न पडे, अनंता काल सदाए सुखमां रहे, ते विना कोइ मुक्ति चाहे छे, जे केटलाएक तो एम जाणे छे, के तपथकी मुक्ति लेइशु, केटलाएक जाणे छे के क्रियाथकी मुक्ति लेइशु, केटलाएक जाणे छे के प्रभु पूजावाथकी मुक्ति लेइशु पण ते वात मिथ्या छे, इहा कोइ

कहेशे के प्रभु पूजवामां मुक्ति ठाम ठाम कही छे, अने तमे ना केम कहोछो ? तेनो उत्तर—के मुक्ति तो आत्म स्वरूपमां छे, तथा जसविजयीकृत साडि त्रणसें गाथाना स्तवनमां वादीनु एवु वचन छे के अमे प्रभु पासे मुक्ति मागी लेइशुं, ते ना उत्तरमां एवु कह्यु छे जे कोण मूले करीने प्रभु पासेथी मुक्ति वेचाथी लेशो. एटले गोध बीज काइ दीधु आवतु नथी तथा श्री हरिभद्र सूरिजिकृत पद् दर्शन समुचय ग्रंथने विषे एवु कह्यु छे के रागद्वेषना तजवाथकी, तथा ज्ञानदर्शन चारित्रना आराधन थकी मुक्ति मले.

॥ उक्तंच ॥

जिनेंद्रो देवता तत्र ॥ रागद्वेषविवर्जित॰ ॥ हत मोह महामल्लः ॥ केवल ज्ञान दर्शनः ॥ ४७ ॥ सुरा सुरेंद्र सपूज्यः ॥ सद्भूतार्थ प्रकाशक॰ ॥ कृष्ण कर्म क्षयं कृत्वा ॥ संप्रासः परमं पद ॥ ४८ ॥ जीवा १ जीवौ २ तथा पुण्य ३ ॥ पाप ४ माश्रव ५ संवरौ ६ ॥ बंधो ७ विनिर्जरा ८ मोक्षौ ९ ॥ नवतत्वानि तन्मते ॥ ४९ ॥ तत्र ज्ञानादि धर्मेभ्यो ॥ भिन्नाभिन्नो विवर्त्तिमान् ॥ शुभाशुभ कर्म कर्त्ता ॥ भोक्ता कर्म फलस्यच ॥ ५० ॥ चैतन्य लक्षणो जीवो १ ॥ यश्चै तद्विपरीतवान् ॥ अजीवः २ ससमाख्यात॰ ॥ पुण्यं ३ सत्कर्म पुद्गला॰ ॥ ५१ ॥ पापं ४ तद्विपरीतंतु ॥ मिथ्यात्वाद्यास्तु हेतवः ॥ यस्तैर्बंध॰ सविज्ञेय ॥ आ-

श्रवोसौ ५ जिनशासने ॥ ५२ ॥ संवर ६ स्तन्निरो-
धस्तु ॥ बधो ७ जीवस्य कर्मण ॥ अन्योन्यानु ग
मात्माच ॥ यः सबधो द्वयोरपि ॥ ५३ ॥ बद्धस्य क
र्मण साटो ॥ यस्तुसा निर्जरा मता ८ ॥ आत्यति
कोवियोगस्तु ॥ देहादेर्मोक्ष ९ उच्यते ॥ ५४ ॥ ए-
तानि नव तत्वानि ॥ य श्रद्धत्ते स्थिराशय ॥ स-
म्यक्त ज्ञान योगेन ॥ तस्य चारित्र योग्यता ॥५५॥
तथा भव्यत्व पाकेन ॥ यस्यैतत्त्रितयं भवेत् सम्यग्
ज्ञान क्रिया योगा ज्जायते मोक्ष भाजनं ॥ ५६ ॥
प्रत्यक्षच्च परोक्षच ॥ द्वे प्रमाणे तथा मते ॥ अनत
धर्मक वस्तु ॥ प्रमाण विषयस्त्विह ॥ ५७ ॥ अपरोक्ष
तयाऽर्थस्य ॥ ग्राहक ज्ञान मीदृश प्रत्यक्ष मितरज्ञेय ॥
परोक्ष ग्रहणे क्षया ॥ ६८ ॥

एटले जीनशासनु मूल कह्यु, एटले जननादेव केवा छे ? जिनें-
द्रो केहेतां जीननाम सामान्य केवली ते मांहे इद्र समान एवी तीर्थ-
कर परमात्माते देव छे ते रागद्वेषे करीने वर्जित छे, महामोहमल्ल
केहेतां मोहराजाने हणीने केवलज्ञान केवल दर्शन पाम्या छे, माटे
मोह तथा रागद्वषने जीते तेनी मुक्ति थाय पण ते विना कांइ
मुक्ति होय नहि, तथा सुरासुर इद्रे पूजित ते शामाटे के सद्भूतार्थ
केहेतां यथार्थ प्ररूपक छे, तथा कृत कर्म केहेतां पूर्व शुभाशुभ कर्म
करेलां तेनो क्षय करीने समाप्त केहेतां पाम्या छे, परमपद केहेतां

मुक्ति मरथे एटले कर्या कर्म भोगव्या विना छूटे नहि. अने शुभाशुभ कर्म क्षय कर्या विना मोक्षे जाय नहि माटे कोइनाथी कोइनी मुक्ति थती नथी, तथा मुक्ति तो ज्ञानने विषे छे, तत्रज्ञानादि धर्मेभ्यो कहे तां ज्ञानदर्शन चारित्र आदे धर्म कह्यु ते धर्म भिन्नाभिन्न कहेतां भेद तथा अभेद एटले जीवादिनव तत्वनु वर्णवनु ते भेद धर्म कहिये तथा आत्मद्रव्यनु जे गुण पर्याय सहित कहेवु ते अभेद धर्म कहिये, तथा पचला श्लोकोमा ए नव तत्वनो विवरो छे ते नवे तत्वजीन शासनने मते कह्यां छे, एटले नव तत्वनी श्रद्धा करे तेने समकिती कहिये, ते मध्ये पांच तत्व तजवा कह्यां छे अजीव १ पुन्य. २ पाप ३ आश्रव ४ बंध. ५ कोइ कहेशे के पुन्य ने तजवु केम कहो छो तेने कहिये के अमे कहेता नथी ते उपर लखेला श्लोकने विषेज पुन्य ने पुद्गल कहीने बोलाव्यु छे

॥ उक्तंच ॥ पुण्यं सत्कर्म पुद्गलाइति वचनात् ॥

एटले पुन्य छे ते सत कहेतां शुभ कर्मना पुद्गल छे, पुद्गल तज्याविना तो मुक्ति थायज नहि, शामाटे के एज उपर कहेला, श्लोकने विषे कह्यु छे

॥ उक्तंच. ॥

आत्यंतिको वियोगस्तु ॥ देहादे र्मोक्ष उच्यते ॥ श्लोक ५४ मो टीकाः ॥ तथेत्युपदर्शने ॥ परिपक भव्यत्वेन तद भावात् ॥ अवस्यक मोक्ष गतव्येन ॥ पुंसस्त्रियो वाज्ञानदर्शन चारित्रत्रयं सपुमान् मोक्ष भाजनं ॥ मुक्तिश्रियं भुंक्ते सम्यगिति ॥ सम्यक्त ज्ञा-

नमागमा ऽवबोध· क्रिया चरण करण चरणात्मिका ॥ तासांयोग संबधः नकेवल ज्ञान दर्शन चारित्रं वामो क्षहेतु किंतु समुदितं त्रय ॥

एटले ए चोपनमा श्लोकनी टीका छे तेने विषे पुरुषादि वे दने विषे मुक्तिनी ना पाडी छे, तथा चरण सित्तरी करण सित्तरी थकी पण केवलज्ञान कवल दर्शननी ना पाडी छे माटे परमेश्वर पूजवामां तो मुक्ति क्यां थकीज होय मुक्ति तो ज्ञानदर्शन चा रित्रने विषे कहि छे ते टीका थकी जाणजो इहां कोइ कहेशेके चारित्र तो पच महाव्रतादिक व्यवहारज छे के नहि, तथा ए पुन्य बधाय खरुके नहि ? तेनो उत्तर ए उपरना श्लोकने विषे पचावनमो श्लोक छे तेने विषेज ए नव तत्वनी श्रद्धा करे तेने स मकितीं कहीये, तेज सम्यक्त ज्ञान, तेने जोगे रमणता तेने चारित्र कह्यु छे अने साध्यसाधन जोग जे व्यवहार चारित्र तेनु प्रयोजन, तथा फल आकाश कुसुमवत कह्यु छे, ते श्लोकनी टिका थकी जा णजो जे समकित, ज्ञान, चारित्र, तेज मोक्ष छे शामाटेके

सम्यक्त ज्ञान क्रियायोगा

कहेता तत्वनीजे श्रद्धां कहेता जे द्रव्य गुण पर्याय ज्ञानादि रत्नत्रयीनु सद् भासन प्रत्यक्ष वस्तुनु विचारवु तेने ज्ञान कहीए ने सद् वस्तुनी श्रद्धा करवी तेने सम्यक्त कहीए एटले श्रद्धा ते स- मकित जाणवु, ते ज्ञान विचारवु ते क्रिया एटले

सम्यक्त ज्ञान क्रिया योगा जायते मोक्ष भाजन

एटले एवु समकित ज्ञान क्रिया होय ते मोक्षनु भाजन थाय, तथा

प्रत्यक्षंच परोक्षंच द्वे प्रमाणे तथा मते

ते प्रमाणनुं स्वरूप टिका थकी जाणजो, तथा

अनंत धर्मक वस्तु प्रमाण विषय स्त्विह ५७
यस्य टिकायेन कारणेन यदूत्पादव्यय ध्रौव्यात्मकं
ततसत् सत्वरूप मिष्यते तेने कारणेन अनंत धर्मा-
त्मक वस्तु प्रमाण गोचर सर्वे वस्तुषु उत्पत्यादित्रय
युक्तास्यैवा अनत धर्मता ते नैव पुनरनंत धर्मात्मक-
त्व मुक्तंन पौनरुक्त्यं ५७

ए टिकाने विषे उत्पाद व्यय ध्रुव्यात्मीक ते सत तेने सत स्वरुप कहिए तेनी जेने इच्छा छे तेने अनत धर्म आत्मिक वस्तु प्रमाण जाणीने सर्वे वस्तुनु उत्पादादिक त्रिय युक्त सेवे तेने अनत धर्म आत्मक कहीए तेनीज मुक्ति कहीए, ते विना मुक्ति छे नहि, ए जिन शासननु सार छे, माटे ए आत्म स्वरूपने विषे भेद अभेद ज्ञाननु विचारनु एटले शुद्ध व्यवहार ते भेद ज्ञान छे, अने शुद्ध निश्चय कहेतां अभेद ज्ञान छे, हवे भेद ज्ञान कहेतां जे ज्ञान दर्शन चारित्र आत्माना धरनु छे, एम जे बोलवु ते व्यवहार थयो पनु जे ध्यान तेने भेद भाव रह्यो पोते ने पोताना गुणमां जुदापणु रह्यु आत्मा एक हतो तेना त्रण भेद थया एटले व्यवहार नय कह्यो, जो अभेद ज्ञान विचारीने जोइये त्यारे तो आत्मा एकज देखाय छे एकज जाणीए छीए तेनेज विषे रमण करीए, इहा ज्ञानादिक गुण जुदा नथी आत्मा ते ज्ञानादिक गुण तथा ज्ञानादिक गुण ते आत्मा यथा दृष्टांते सुवर्णनु भारेपणु स्निग्धपणु पिंगाशपणु, ते

नमागमा ऽवरोध' क्रिया चरण करण चरणात्मिका ॥ तासांयोग संवधः नकेवल ज्ञान दर्शन चारित्र वामो क्षहेतु किंतु समुदित त्रय ॥

एटले ए चोपनमा श्लोकनी टीका छे तेने विषे पुरुषादि वे दने विषे मुक्तिनी ना पाडी छे, तथा चरण सित्तरी करण सित्तरी थकी पण केवलज्ञान केवल दर्शननी ना पाडी छे माटे परमेश्वर पूजवामां तो मुक्ति क्यां थकीज होय. मुक्ति तो ज्ञानदर्शन चारित्रने विषे कहि छे ते टीका थकी जाणजो इहां कोइ कहेशेके चारित्र तो पच महाव्रतादिक व्यवहारज छे के नहि, तथा ए पुन्य वधाय खरुके नहि ? तेनो उत्तर ए उपरना श्लोकने विषे पचावनमो श्लोक छे तेने विषेज ए नव तत्वनी श्रद्धा करे तेने स मकिती कहीये, तेज सम्यक्त ज्ञान, तेने जोगे रमणता तेने चारित्र कह्यु छे अने साध्यसाधन जोग जे व्यवहार चारित्र तेनु प्रयोजन, तथा फल आकाश कुसुमवत कह्यु छे, ते श्लोकनी टिका थकी जा णजो जे समकित, ज्ञान, चारित्र, तेज मोक्ष छे शामाटेके

सम्यक्त ज्ञान क्रियायोगा

केहेता तत्वनीजे श्रद्धा कहेतां जे द्रव्य गुण पर्याय ज्ञानादि रत्नत्रयीनु सद् भासन प्रत्यक्ष वस्तुनु विचारवु तेने ज्ञान कहीए ने सद् वस्तुनी श्रद्धा करवी तेने सम्यक्त कहीए एटले श्रद्धा ते स-मकित जाणवु, ते ज्ञान विचारवु ते क्रिया एटले

सम्यक्त ज्ञान क्रिया योगा जायते मोक्ष भाजन

एटले एवु समकित ज्ञान क्रिया होय ते मोक्षनु भाजन थाय, तथा

जाणवो, तेज जोती जेने विषे देदिप्यमान थइ रही छे तथा व्यवहारमां यद्यपि कहेतां जे त्रिविधरूप छे बहीर आत्मा अतर आत्मा तथा परमात्मा एवी रीते त्रिविधरूप छे, तथापि कहेतां तोहे पण नियत अग कहेतां निश्चय नयनी अपेक्षाये तो अक्यता तजे नही तथा एकरूपज कह्यो ते तो एवो पदार्थ एक जीव कह्यो हवे केशे हू जुक्ति कर कहेतां ते जुक्ति आगल कहीये छीये ते सदीव कहेतां निरतर मारा मननी उमेद थइ रही छे वली जाईके ध्यान ते अपनी रिद्धि कहेतां ज्ञान दर्शन चारित्ररूप अविचल थाय एवी रीते करीने सिद्ध थाय पण बीजी कोइ रीते करीने सिद्ध थाय नहि, एवु ग्रणवार कह्यु छे ए छाती ठोकीने निश्चय वचन कह्यु छे वली कह्यु छे के ए वातमा धोखो नहि एटले ए वात जुठी नथी, एटले ए वात सत्य छे माटे हे भव्य जीवो जो तमारा आत्माने सुख वांछो तो भेद ज्ञान विचारो ने विभावनो त्याग करो, स्वभावनो ध्यान करो पछी अभेदज्ञाने करीने ध्यान करो एटले आत्मा एज परमात्मा थशे ते थकी सर्व कर्मनो नाश थाशे; ते थकी अनती ऋद्धि सत्ताए छे ते प्रगट थशे जन्म जरामरणना फेरा टलशे अक्षय अव्याबाध सुखनो विभागी थइने शीवपुरमा जइ रहेशे, माटे एज अभ्यास करो एज अमारो उपदेश छे, तथा सर्व ज्ञानी पुरुषोनो एज उपदेश छे

॥ दुहा ॥

एह ग्रथ पूरण हुवो, पूर्ण हुइ अब आश ॥
श्रोता सूणजो कान देइ, ग्रंथ गुणकी राश ॥ १ ॥
मिथ्याविध्वसननाम ए, भाख्युं ते सुखकार ॥

कोई सुवर्ण थकी जोखु नथी, तेम सुवर्ण छे, एवी रीते आत्म स्व रूपनी श्रद्धा करवी तेने समकित दर्शन कहीए, ते जाणवुं तेने ज्ञान कहीए एनेज विषे स्थिर थइने रमण करवु, तेने चारित्र क हीए, एज स्वरूपने उपयोग देइने जुए तो सिद्ध परमात्मा रूपज छे एवी रीतेज ध्यान करतां मुक्ति थाय पण बीजी रीते सर्वथा मुक्ति थाय नहि उक्तंच

दुहा—एक देखीये जानिये ॥ रमिरहिये एक ठोर ॥ समल विमल न विचारीये ॥ यह सिद्धि नहि और १

सवैया एकतिसा ॥ जाके पद सोहत सुलच्छन अनत ज्ञान विमल विकास वत ज्योती लह लही है ॥ यद्यपि त्रिविधरूपववीहारमें तथापि एकतान जेयोंनियस अग कही है ॥ सोहे जीव कैसी हु जुगतीके सदविताके ध्यान करी बेकों मेरी मनसा उमही है ॥ जाते अवीचल ऋद्धि हो तु ओर भांति सिद्ध नांहि नांहि नांहि यामें धोखो नाही सही है. १

अर्थ—हवे ए स्वरूपनो अनुभव स्थिर रहेवो दुर्लभ छे, परन्तु ज्ञाता पुरुष छे ते मनोरथ तो करे ते प्रमाणे अनुभव करे तेनु का रज सिद्ध थाय ते कहीए छीए, जाके पद कहेतां जे पोताना पदने विषे अनत ज्ञान स्वरूप स्वलक्षण कहेतां वस्तुनु लक्षण एहीज छे तथा विमल विकाश वत जोती कहेतां आपणो तथा परनो स्वरूप

कहुंछु ॥ मित्र कहेतां पोतानो आत्म उपयोग ॥ ते शुद्ध भावमां म-
वर्त्तवु ते शुद्ध उपयोग कहीए ॥ अशुद्ध भावमा परिणमवु ॥ ते अ
शुद्ध उपयोग कहीए ॥ ते अशुद्ध उपयोगनो विचार कहुछु ॥ अशु-
द्ध कहेता आत्म स्वरूपना रमण विना पर परिणतिमा मवर्त्तवु ॥
तेने अशुद्ध उपयोग कहीये ते उपयोग निगोदथी मांडी ॥ गर्भज
पचेंद्रि जीव सुधी ॥ अशुद्ध उपयोग छे ॥ शिष्य वाक्यः—स्वामी
निगोदादिक ॥ स्थावरने विषे शु रमणता परपरिणतिमां करे छे ॥
एतो अव्यक्तव्यभाव छे ॥ गुरुवाक्य ॥ प्रथम तें जे कह्यु ते नि
गोदमां पर परिणतिमां शु रमे छे ॥ ते ए जीवतो अनादि मिथ्या-
त्वी छे अने स्वस्वभावतो तेने शेनो होय ॥ शा माटे जे स्वस्वभा-
वतो गर्भज पचेंद्रिने पण घणो दुर्लभ छे ॥ कोइक जीवने प्राप्ति
थाय छे ॥ माटे ए सदाए अशुद्ध परिणतिमांज छे ॥ ते माटे एने
सदाए अशुद्ध उपयोग कहेवाय ॥ ए वातमां कांइ सदेह नहीं ॥
शिष्य वाक्य ॥ स्वामी एतो अव्यक्तव्य छे एने उपयोग शी रीतथी
कहोछो ॥ गुरुवाक्य ॥ भाई अव्यक्तव्य छे पण पोत पोतानी
क्रिया करे छे, पण छद्मस्थना समजवामा न आवे जेम कोई पु-
रुषने झोवो आवे ने असाध्य थई जाय छे ॥ ते वखत ते पुरुषने
॥ अथवा जोडे होय ॥ ते माणसने एनी वेदना काइ देखाती
नथी ॥ तो शु ए पुरुषने वेदना छे के नहीं ॥ अपितु वेदना छेज
॥ तेमज ते निगोदादिक ॥ जीव आप आपणी क्रिया शुद्ध
अशुद्ध जे जे थानकने विषे ते करे छे तेथी ते जीवने ॥
अशुद्ध उपयोग लागु छे पण समजवामां न आवे ॥ एम जाणवु ॥
हवे ते अशुद्ध क्रियाना बे भेद छे ॥ एक शुभ ने बीजो अशुभ ते
मध्ये निगोदादिक स्थावरने विषे अशुभ क्रिया छे शामाटे जे ए
जीवोने कायिकी प्रमुख पांचे क्रिया लागे छे ॥ तेथी ए सदाए

॥ मित्रपरीक्षा ग्रंथ लिख्यते ॥

॥ श्लोक ॥

नत्वा चिदानद सत्य स्वपरानुग्रहानिच ॥
वक्ष्यामी मित्र परीक्षाय सुधासुध तथैवच ॥ १ ॥

॥ अत्र भाषा लिख्यते ॥

हवे जे आससारनी माहेलीकोरे जीवमात्र मित्र करे छे॥पण ते मित्र बे प्रकारना छे ॥ एक शुद्ध ने बीजो अशुद्ध, ते बे प्रकारना मित्रने चार प्रकारे करी जीवमात्र सेवे छे तेथी ते जीव पण चार प्रकारनाज कहेवाय ते उपर चौभंगी लखीए छीए ॥ अनादी अनंत ॥ १ ॥ अनादि सांत २ ॥ सादि सांत ३ ॥ सादि अनं. ४ ॥ ए चार भांगानो प्रथम विचार कहु छु ॥ अशुद्ध मित्र साथे मित्राई ससारी जीवने सर्वने छे॥ ते मध्ये अभवी जीवने ॥ अनादि अनत ॥ पेहेलो भांगो छे ॥ भवी जीवने अनादि सात बीजो भांगो छे ॥ परावर्त्तन काले मित्र साथे ससारी जीवने सादि सांत भांगो छे ॥ चोथो भांगो ससारी जीवने अथवा कोई जीवने आवे नहीं ॥ हवे जे शुद्ध मित्र छे ते सिद्ध परमात्मा अनादि अनत भांगे छे॥ अने अनादि सांत भांगो शुद्धमां आवे नहीं ॥ अने सादि सांतभांगो उपशमादिक समकिती जीवने ॥ शुद्ध मित्र सादि सांतभांगो छे ॥ अने जे जीव ससार छाडी मोक्षे गया तेने सादि अनत भांगो शुद्ध मित्र साथे छे, हवे ते भांगानो विवरो करीने कहु छु ॥ हवे मित्र कहेता कोण छे तथा शुद्ध अशुद्ध ते शु छे ते

कहुं ॥ मित्र कहेतां पोतानो आत्म उपयोग ॥ ते शुद्ध भावमां प्रवर्त्तवु ते शुद्ध उपयोग कहीए ॥ अशुद्ध भावमा परिणमवु ॥ ते अशुद्ध उपयोग कहीए ॥ ते अशुद्ध उपयोगनो विचार कहुछु ॥ अशुद्ध कहेता आत्म स्वरूपना रमण विना पर परिणतिमा प्रवर्त्तवु ॥ तेने अशुद्ध उपयोग कहीये ते उपयोग निगोदथी मांडी ॥ गर्भज पचेंद्रि जीव सुधी ॥ अशुद्ध उपयोग छे ॥ शिष्य वाक्यः—स्वामी निगोदादिक ॥ स्थावरने विषे शु रमणता परपरिणतिमां करे छे ॥ एतो अव्यक्तव्यभाव छे ॥ गुरुवाक्य ॥ प्रथम तें जे कह्यु ते निगोदमां पर परिणतिमां शु रमे छे ॥ ते ए जीवतो अनादि मिथ्यात्वी छे अने स्वस्वभावतो तेने शेनो होय ॥ शा माटे जे स्वस्वभावतो गर्भज पचेंद्रिने पण घणो दुर्लभ छे ॥ कोइक जीवने प्राप्ति थाय छे ॥ माटे ए सदाए अशुद्ध परिणतिमांज छे ॥ ते माटे एने सदाए अशुद्ध उपयोग कहेवाय ॥ ए वातमां काइ सदेह नहीं ॥ शिष्य वाक्य ॥ स्वामी एतो अव्यक्तव्य छे एने उपयोग शी रीतथी कहोछो ॥ गुरुवाक्य ॥ भाई अव्यक्तव्य छे पण पोत पोतानी क्रिया करे छे, पण छद्मस्थना समजवामा न आवे जेम कोई पुरुषने झोलो आवे ने असाध्य थई जाय छे ॥ ते वखत ते पुरुषने ॥ अथवा जोडे होय ॥ ते माणसने एनी वेदना काइ देखाती नथी ॥ तो शु ए पुरुषने वेदना छे के नही ॥ अपितु वेदना छेज ॥ तेमज ते निगोदादिक ॥ जीव आप आपणी क्रिया शुद्ध अशुद्ध जे जे थानकने विषे ते करे छे तेथी ते जीवने ॥ अशुद्ध उपयोग लागु छे पण समजवामां न आवे ॥ एम जाणवु ॥ हवे ते अशुद्ध क्रियाना बे भेद छे ॥ एक शुभ ने बीजो अशुभ ते मध्ये निगोदादिक स्थावरने विषे अशुभ क्रिया छे शामाटे जे ए जीवोने कायिकी प्रमुख—पांचे क्रिया लागे छे ॥ तेथी ए सदाए

अशुभ क्रियामांज छे ॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी सर्व जीवने सरखी पाच क्रिया लागे के वत्ती ओछी लागे अने सदाए अशुभ उपयोगे ए जीव सर्वे छे ॥ तो माहेथी ए जे जीव उचा आवे छे ते शा वडे आवे छे ॥ गुरुवाक्य ॥ हे भद्र ते जीवोने सदाए सरखी क्रिया न होय ॥ ते हु विवरो करीने कहु छु ते सांभळ ॥ पांचे स्थावरना सूक्ष्मनी क्रिया छद्मस्थना जोवामां आवे नहीं ॥ ए तो केवलीगम्य छे हवे जे पाच स्थावर बादर रह्या ॥ तेनी क्रिया छद्मस्थना जोवामा आवे, ते हु कहु छु के कायिकी क्रियाके कायाए करीने जे करवु ॥ तेने कायिकी क्रिया कहीए ॥ ते मृतिकादिक पाचे स्थावर कायाए करीने करे छे ॥ ए थकी अनेक जीवनी हानि पण थाय छे ॥ शामाटे जे ॥ भेखड प्रमुख पडवाथी अनेक जीव मरे छे ॥ एम जलथकी पण अनेक जीव, तथा अग्नि थकी ॥ तथा वायु थकी ॥ तथा ॥ वनस्पति थकी अनेक जीव मरे छे ॥ एम पांचे क्रिया समजी लेवी तथा तें जे कह्यु के ॥ ए जीव उचा केम आवे छे ॥ ते अकाम निर्जरा वडे आवे छे जेम पाहाडमांथी नदीमां पथ्थर पडया ॥ तेमाथी कोइक पथर घाटवध तथा गोळ तथा तोलमा आवे छे ॥ बीजा सर्व अघडाय छे तेमज कोइक जीव उचो आवे छे ॥ हवे जे बेइंद्रियी असन्नि पचेंद्रि सुधी पण अशुभ क्रिया तथा ॥ अशुभ उपयोग प्रवर्त्ते छे ॥ जे सन्नि पचेंद्रि ते मध्ये तिर्यंच पचेंद्रि ॥ तथा नारकी पचेंद्रि ते बो छतां ए अशुभ उपयोगी तथा अशुभ क्रिया करे छे ॥ तथा मनुष्य॥ पचेंद्रि तथा देव ए मध्ये पण अशुभ उपयोगने अशुभ क्रिया प्रवर्त्ते ॥ तथा शुभ क्रिया तथा शुभ उपयोगमा कोइक जीव प्रवर्त्ते छे॥ ते मध्ये केटलाएक तो आप आपणा दर्शननी रीते प्रवर्त्ते छे ॥ केटलाएक लोकनी देखादेख प्रवर्त्त छे ॥ केटलाएक सेहेज स्वभावे

पण प्रवर्त्ते छे ॥ ते मध्ये कोईक जीवने समकितादिक ॥ गुणनी प्राप्ति थइ होय ते जीव किंचित् ॥ शुद्ध उपयोगे प्रवर्त्ते ॥ हवे जे अनादि अनत भांगो ॥ अशुद्ध मित्र साथे अभव्य जीवने लागे छे ॥ ए जीव कोइ काले शुद्ध मित्रनो सग पामवानो नथी ॥ माटे ए सदाए ॥ अशुद्ध मित्रनो सगी छे ए पेहेलो भागो ॥ बीजो भांगो अनादि सांत नामे भव्य जीवने छे ॥ ते जीव ज्यारे त्यारे अशुद्ध उपयोगने टाळीने शुद्ध उपयोग पामशे ॥ ए फरीथी अशुद्ध उपयोग पाववानो नथी ॥ त्रीजो सादि सांत भांगो जे संसारी जीव ॥ समकितादिक गुण पाम्या पछी पाछा पडे ॥ तेने अशुद्ध उपयोग थाय तेने त्रीजो भांगो कहीए ॥ अशुद्ध उपयोगनो चोथो भांगो जीवनी साथे लागु नथी ॥ माटे ए अशुद्ध मित्र आ जीवने अनादिकाळनो दुःख-दाई छे ॥ ते मित्रने छोडे थकेज सुख आवे ॥ हवे शुद्ध मित्रनां ए भागो कहु छु ॥ जे प्रथम अनादि अनत भागो सिद्ध भगवानने कथो ॥ ते सिद्ध भगवानने आदि पण नथी ने अंत पण नथी ॥ अने त्या उपयोग पण शुद्धज छे ॥ माटे ते पन अनादि अनत मित्र ठरयो ॥ हवे जे बीजो भागो सादि सांत शुद्ध मित्रनो संसारी जीवने लागे छे ॥ शामाटे जे उपशमादिक समकितादिक पामे थके किंचित् शुद्ध उपयोग होय ते समकितनु जवु आववु थाय ॥ तेवारे आद्य अत पण लाधे ॥ ते वारे सादि सांत भांगो कह्यो ॥ हवे सादि अनत भांगो त्रीजो ॥ जे जीव करम खपावी केवळज्ञान पाम्यो ॥ अथवा मोक्षे गयो ते जीवनो अशुद्ध उपयोग रूपी मित्र हतो ॥ ते नोखो थइ गयो ते वारे शुद्ध उपयोग मित्र ॥ तेनी प्राप्ति थई ते कोई काळे मटवानी नथी पण मित्रनी थई तेनी आदि [illegible] माटे सादि [illegible] ॥ हवे चोथो भांगो अनादि [illegible]

शुद्ध उपयोगमां होय नहीं ॥ माटे ए शुद्ध उपयोग तथा ॥ अशुद्ध उपयोग ॥ ए बनेमा त्रण भागा लाधे, एव समजवु ॥ हे मित्र तु मारो परम हेतु छे मारु कोई काले पण तु अशुभचिंतक नथी ॥ एवो तु मारो परम हेतु थइने घडी घडी रीसामण करे छे ॥ ए वाततु दु ख मने घणु थाय छे माटे तारे ॥ सदाए काल स्थिरप णे मारी पासेज रहेवु ॥ ए विजोग माराथी खमाशे नहीं ॥ मित्रो वाच'-॥ हे मित्र तु कहे छे के सदाए मारी पासे रहेजे पण तु मति पक्षी साथे वात विचार करे ने वारे॥ माराथी तिहां केम बेशी रहे-वाय ॥ त्यारे मारे जबु पडे छे ॥ लाकिकमां पण एम कहे छे के बे जण वात करे त्यां त्रीजाने उभु रहेवु नहि ॥ तो हु उत्तम कहेवाउ ॥ ने माराथी तीहां केम बेशी रहेवाय ॥ चेतनो वाच ॥ हे मित्र हु तने रात दीन समरु छु ॥ अने तारी आजीजी करु छु ॥ ने हु कोण प्रतिपक्षी साथे वात करु छु के ॥ उलटो मारे माथे दोष मुके छे ॥ मित्रोवाच ॥ हे मित्र ! तु अशुद्ध परिणतिने छोडतो नथी ॥ तथा एना पक्षना परिवारने पण छोडतो नथी ॥ अने मारु वचन पण यथार्थ अगीकार करतो नथी ॥ तेथी मने बहु दुःख लागे छे॥ त्यारे हु उठीने जाउ छु पण कांइ मने तारी पासेथी ॥ जवु सारु लागतु नथी ॥ चेतनोवाच ॥ हे मित्र तारे वास्तवोमें ॥ बाह्यथकी ससार छोडयो छे ॥ सचित अचित्तमा परिग्रह छांडयो ॥ तथा अभ्यतर थकी मदनसेनने घणो दुभव्यो ॥ तथा मान स-गजीने पण विशेषे करी परिताप उपजाव्यो ॥ अने राग केसरी ॥ तथा द्वेष गजेंद्र ॥ रूप मोटा जे राजा ॥ तेने प ण में बहु तिरस्कार करयो ॥ अने तेनो में मारा देशमांथी ॥ हक घणो काहाडयो तथा जे ॥ सर्व लोकाधीश मोह राजा े पण केटलोएक हक उठाडी दीधो ॥ तोए पण हे मित्र ! सारु

मन मान्यु नहीं ॥ अने हे मित्र ! ए लोको साथे में मोहोटो दावो बांध्यो छे माटे जे वारे तारु जन्नु थाय छे ते वारे ए लोको मने बहु दुःख दे छे ॥ ने तें जे बहु के ॥ अशुद्ध परिणतिना परिवार साथे वातचित करोछो ॥ ए वात साची छे पण शुं करु जे अनादि कालनी ॥ अशुद्ध परिणति वलगी छे ॥ तेनी साथे प्रीति पण अनादिकालनी लागेली ॥ ते प्रीति तो हवे मने जेहेर जेवी थइ छे ॥ ते तो तारा समज्यामां छे ॥ पण घणा कालना स्नेह तेथी फ॰ रीने ए आवे ते वखत ॥ माराथी सनस तुटती नथी ॥ तेथी तेनी साथे तथा तेना परिवार साथे वात करुछु ॥ तो पण मारा मनमां तो हेत तारा उपर ज छे ने मारा मनमा तो तुंज वशी रह्यो छे ॥ अने तु सेज सेज ॥ एवा दोष शोधीने वेगलो खसे छे ॥ ए तने कोइ योग्य नथी ॥ शा माटे जे तुं जो ॥ खडाधरी स्वतंत्रपणे रेहेतो ॥ ए अशुद्ध परिणति तथा एनो परिवार कोई आवी शके नहि ॥ पण एने आवता देखीने खशी जाय छे ॥ त्यारे ए लोकोनु जोर फावे छे ॥ माटे हे मित्र ! तारे मारी पासेथी खसवु न जोइए ॥ उत्तम मित्रनी तो एज रीत छे ॥ जे पोताना मित्रने कष्ट आवतु देखीने आडो उभो रहे पण उपद्रव थवा न दे अने तु तो उपद्रव थतो देखीने पेहेलेथीज सामो खशी जाय छे ए तने घटतु नथी ॥ मित्रोवाच॥ हवे मित्र कहे छे के हे मित्र ! आवते उपद्रवे उभु रहेवु ते तो बरोबरीआ होय ताहा उभा रहीए ॥ नहीं तो उभा रहेवाय नहीं ॥ जेम कोई राजा प्रमुख लडवा उभा थाय ते पण कांइ चंडाल साथे ॥ लडवा उभा रहेता नथी ते लडा इथी पाछाज खशी जाय छे ॥ तेम ए अशुद्ध परिणति प्रथम तो स्त्री [illegible] तेनो एनो परिवार पण सर्व स्त्रीज कहेवाय ॥ अने ते [illegible] दुर्गंधनाज भरेला छे ॥ अने महा अपवित्र

हेनी साथे माराथी उभा रहेवाए नहीं ॥ अने तु तो अनादिनो अपवित्र साथे रगाणो अने तारी जात पुल वधुए तें लजव्यु ॥ अने हजी सुधी तने एनी सगन मटती नथी ॥ हजी एना उपर प्रीतिभाव राखे छे ॥ अने मने ठपको दे छे पण हे मित्र ! भूलतो तारी छे ॥ जे तु अशुची अपवित्र वाल्लानी सगत छोडतो नथी ॥ ने ए दुरगधमा तु जईने बेसे छे ॥ ए माराथी तो उभु रहे वाय नहि माटे हे मित्र ! जो मारी ॥ मित्राई स्वतत्रपणे जो चाहे ॥ तो तु ए दुर्गधानो सग छोड अने तुं कहेछे के ॥ एनी सनस नथी छूटती ॥ तो हजी पण तु काइ विचार करतो नथी जे ए दुर्गधाए अनतो काल थयां ॥ अनेक रीतनां दुख दीधां ॥ अने अनतु धन ए खाई गई ॥ ते पण तु सब जाणे छे ॥ अने तो पण तु एनी सनस छोडतो नथी ॥ तो तारा जेवो मूरखो कोइ दीसतो नथी माटे जो मारु कीधु माने तो ए दुर्गधानो सग छोड ॥ अने मारी मित्राइ स्वतत्र थशे ॥ एक समय मात्र पण अलगो नहीं रहु ॥ ए वात में तने ॥ सत्य कही छे. फरी फरीने कहेवु ए वांइ ठीक नथी ॥ उत्तम तो एक अक्षरमांज समजे ॥ चेतनो वाच ॥ हे मित्र तें जे वात कही ते मारा हृदयमां सत्य भासन थइ छे ॥ हवे हु ए वचन भूलवानो नथीज । पण हे मित्र । हु शु करु, अनादिनी दुर्गंध पेशी गइ छे ते कहाडतां बहु मुश्केल पडे छे; तारा उपदेशथी एने कहाडवाना उपायमां अहोनिश रहीश ॥ पण तु मारी पासेथी खशीश नही ॥ इति सविकल्प विचार ॥

॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी शुद्ध उपयोग ते शु हशे ? ॥ अने शुद्ध उपयोग शा थकी थाये ॥ गुरुवाक्य ॥ हे देवाणु प्रिय ॥ जे वस्तुनो मूल स्वभाव ॥ चिदानदरूप छे ॥ ते स्वभावमांजे उपयोग स्थिर थइने रहे ॥ तेने शुद्ध उपयोग कहीए ते

शुद्ध उपयोगना बे भेद छे ॥ सपूर्ण शुद्ध उपयोग ते मगट पणे ॥ सिद्ध परमात्माने छे ॥ एवभूत नये छे ॥ अने ससारी जीवने सपूर्ण शुद्ध उपयोग सत्ताए शक्ति पणे छे ॥ ए सग्रह नये छे ॥ अने केवली जे ॥ तेरमे गुण ठाणे छे ॥ तेने सपूर्ण ॥ शुद्ध उपयोग कहेवाय नहीं ॥ शामाटे जे वेदनी आदिकर्म चार बाकी छे ॥ तथा उपयोग अस्थिर पण कहेवाय ॥ जेम ॥ श्री वर्द्धमान स्वामीने लोही खडवाडो थयो ते वातथी ॥ श्रीया अणगारने बहु दुःख लाग्यु ॥ ते श्रीया अणगारने पोते तेडावीने ॥ पाक वहोरवा मोकल्या इत्यादिक विचारी जोज्यो ॥ तेथी सपूर्ण स्थिर उपयोग सभवतो नथी ॥ पछी तत्व तो केवली गम्य छे हवे जे चोथा गुणठाणाथी मांडीने बारमा गुणठाणा सुधी ॥ शुद्ध उपयोग देशे देशे छे ते हाणी वृद्धि गुणठाणानी ॥ परिणति प्रमाणे समजी लेवी ॥ ते शुद्ध उपयोग तो ॥ स्व स्वभावनु नामज छे ॥ हवे शुद्ध उपयोग शा वडे थाय ते बहु ते साभल ॥ प्रथम तो सुगुरु स्व उपयोगी ज्ञाना नदी ॥ सत्य भाषी बहु श्रुत अनुभवी होय ॥ तेनी सगत थकी शुद्ध उपयोगनु ॥ जाणपणु थाय ॥ ते वारे बे द्रव्य जीव तथा अजीव जूदा जाणे अने पछी ते ॥ जूदा करवाने ॥ अनुभव करे॥ लक्षण गुण स्वभाव ॥ ओलखीने पोतानो द्रव्य पोतामा राखे ॥ पर द्रव्य दूर करे ॥ ते वारे जे अश उपयोग ॥ स्व द्रव्यने स्वभाव आवी जाय ॥ तो शुद्ध उपयोग किंचित् ॥ मगट थाय पछी अनुक्रमे वृद्धि थतो सपूर्ण थाय ॥ तो ए परमात्मा पण थइने वेसे ॥ शिष्य वाक्य ॥ स्वामी अशुद्ध परिणति शु छे॥ अने शावडे थाय छे ॥ गुरुवाक्य ॥ अशुद्ध परिणति शु हशे ॥ ते तो राग द्वेष परिणति [illegible] ते अनादिनी छे ॥ अने शाथकी थाय छे ते कहु ते [illegible] असंज्ञि ॥ पचेंद्रि सुधी तो मूल प[illegible]

ए चाल्यो आवे छे ॥ अने सज्ञा अहींयां मत्यक्षपणामां जोवामां पण आवे छ ॥ हवे सज्ञी पचेंद्रि जे रह्या ॥ ते चारे गतिने विषे ॥ विषयकषायना भरेला छे तेथी अशुद्ध परिणतिज छे॥ मनुष्य तथा देवगतिमां जेने जेवी सगत तेने तेवो उपयोग मवर्त्ते छे ॥ ते पण अशुद्ध उपयोगज छे तथा मनुष्यगतिने विषे जे धर्म करे छे ने ते ॥ मार्गे मवर्त्ते छे ॥ ते पण सर्वे अशुद्ध उपयोगज छे ॥ ते खटदर्शन ॥ आ हिंदुस्थानमां कहेवाय छे अन्यशास्त्रे पण ॥ ए छ दर्शननु मवर्त्तन चाल्यु छे ॥ ए छए दर्शननु किंचित् मात्र ॥ ओलखाण करावुछु ॥ ॥ तेना नाम ॥ जिन ॥ सांख्य ॥ जैमिनीय ॥ योग ॥ सोगत ॥ विशेषक ॥ ए छ दर्शन जाणवां ॥ ते मध्ये मथम जिन दर्शन ॥ तेना बे भेद जाणवा ॥ श्वेतांबर ॥ दिगंबर ॥ हवे श्वेतांबरना मतनु ओलखाण कहुछु ॥ रजोहरण राखे ॥ मुखवस्त्र राखे तथा चोलपट्टादिक लिंग होय ॥ रूषभादिक चोवीस तिर्थंकरने माने ॥ निग्रंथ होय तेने गुरु करी माने ॥ अने सर्वे कर्म क्षय करे तेने मुक्ति माने ॥ अने भोजन विधान विषे शुद्ध मान मधुकर द्वत्तिए लेवो कह्यो तेने माने ॥ तथा ममाण पण ब माने ॥ मत्यक्ष ममाण ॥ ने परोक्ष ममाण ॥ स्याद्वाद शैलिए सहित सर्व धर्मने माने तथा खट द्रव्य माने ॥ धर्मास्तिकाय ॥१॥ अधर्मास्तिकाय ॥ २ ॥ आकाशास्तिकाय ॥ ३ ॥ पुद्गलास्तिकाय ॥ ४ ॥ जीवास्तिकाय ॥ ५ ॥ अने काल ॥ ६ ॥ ए छ द्रव्य माने, तथा बीजो दिगंबर मत ॥ तेनो विचार कहुछु ॥ पहले दिगंबरना चार भेद छे ॥ काष्टासंगी ॥ १ ॥ मूलसंगी ॥ २ ॥ मथुरासंगी ॥ ३ ॥ अने गोप्य ॥ ते मध्ये काष्टासंगी ॥ चमरी गायना पूछडाना केसनी पीछी राखे ॥ अने मूलसंगी मोरनी पीछी राखे ॥ अने मथुरासंगी ॥ कोइ पीछी माने छे ने कोई नथी

मानता ॥ अने गोप्य ॥ मोरपीछी माने अने गोप्य विनाना त्रण रह्या ॥ ते स्त्रीने मुक्ति न माने अने गोप्य स्त्रीने मुक्ति माने अने भिक्षाए बत्रीसे अतराय टाले शेष सर्व आचार ॥ श्वेतांबरनी पेठे जाणवा इति जिन दर्शनविचार ॥ अथ सांख्य दर्शन विचार त्रिदंडी धारण करे कोपिन धारण करे, धातु रक्त वस्त्र धारण करे, खुरमुंडन करावे अने मृगचर्म धारण करे ॥ अने भिक्षा द्विजग्रहे करे, पंचग्रामी भिक्षा ले ॥ परमात्माने देव माने ॥ कपिलादिने गुरु माने ॥ आत्माने सर्वव्यापी नित्य अक्रीयमाण माने छे ॥ अने प्रकृतिने वीर्य मोक्ष माने ॥ प्रमाण त्रण माने छे ॥ प्रत्यक्ष ॥ १ ॥ अनुमान ॥ २ ॥ शब्द ॥ ३ ॥ इति सांख्य दर्शन विचार ॥ मिमांसक ॥ तथा जैमिनीअ ॥ ए नाम छे ॥ पण दर्शन ॥ एकज छे तेनो विचार कहुछु ॥ एक दंड धारण करे ॥ अथवा त्रण दंड पण धारण करे ॥ सांख्यनी पेरे धातु रक्त वस्त्र धारण करे ॥ मृगचर्म उपर बेसे, कमंडल धारक होए भादरा परभाकरा ॥ प्रमुख अनेक भेद छे ॥ वेदने गुरु करी माने ॥ तथा वेदांतवादी ॥ सर्व ज्ञानादिक देव कोई न माने ॥ विद्या अविद्या ॥ ए बे तत्त्वने माने ॥ तथा प्रमाण छने माने ॥ ते कहीये छीए ॥ प्रत्यक्ष ॥ अनुमान ॥ ओपमान ॥ शब्द ॥ अर्थापती ॥ अभाव ॥ ए छ प्रकारना प्रमाणने माने छे ॥ मुक्ति सांख्यनी पेरे माने ॥ इति मिमांसक दर्शन विचार ॥ अथ जोग दर्शन कहीए छीए ॥ अईएनिआ ॥ एक एनु बीजु पण नाम छे ॥ तेनो आचार कहुछु ॥ गोपीनवंत होय ॥ कंदमूल फलादि भक्षी होय ॥ जटाधारी होय ॥ प्राए वनवासी होय ॥ शिवना ध्यानवंत होय ॥ असृष्टिसंहारकारक होय शंकर देवताने माने ॥ अक्षपादा गुरुने चार प्राए माने ॥ तेना नाम ॥ प्रत्यक्ष ॥

अनुमान ॥ ओपमान ॥ शब्द ॥ ए चार प्रमाण माने ॥ तथा प्र माण प्रेमी आदिक सोल पदार्थने माने सकल दु ख क्षय मोक्ष माने ॥ ए उना पण अनेक भेद छे ॥ इति जोग दर्शन विचार ॥ अथ बौद्ध दर्शन विचार ॥ सुगत नामे देव माने ॥ धर्मकीर्ति ॥ प्रमुख गुरु माने ॥ प्रत्यक्ष प्रमाण ॥ अनुमान प्रमाण ए बे माने ॥ पच सबध माने पचेंद्री रूपादिक इतिरूप सबध ॥ अहमति विज्ञान सबध ॥ दुख धर्मादी वेदना ॥ शब्दो लेखा सज्ञा सबध ॥ राग द्वेष धर्म सस्कार सबध ॥ एम पाच सबध जाणवा ॥ ज्ञाननी निर्मलताए मुक्ति माने छे ॥ ए क्षणेक वादीनो मत छे ॥ इति सोगत दर्शन विचार ॥ अथ विशेषक दर्शन विचार लखीए छीए ॥ परमात्मा अने ईश्वर देवने माने छे ॥ काश्यप गुरुने माने छे ॥ खट पदार्थ माने छे ॥ द्रव्य १ ॥ गुण २ ॥ कर्म ३ ॥ सामान्य ४ ॥ विशेष ५ ॥ समवाय ६ ॥ ए खट पदार्थ जाणवा ॥ प्रत्यक्ष प्रमाण तथा अनुमान ॥ ए बे प्रमाणने माने ॥ सकल दु ख क्षय मोक्ष माने ॥ ईत्यादिक छ दर्शनना ॥ लोको धर्म धर्म पोकारी रह्या छे पण ते सर्वे अशुद्ध उपयोगी छे ॥ अहीआ कोइ कहेशे के मुसलमाननु ॥ तथा क्रिस्तिनु धर्म काइ लखायु नहीं ॥ तेनो उत्तर के॥ तदा काले ते धर्म हता नही ॥ तेथी पूर्वना आचार्योए एनो विचार लख्यो नथी ॥ तो आपणे लखवानी काइ जरुर नथी ॥ इत्यादिक सर्वे ॥ अशुद्ध उपयोगना कारण छे ॥ अहीआ कोई कहेशे जे कोईक माहे पण ॥ शुद्ध उपयोगी हशे तेनो उत्तर जे ॥ वादानी वृत्ति ॥ ए वधी परभाव भणी छे माटे ए छए दर्शन ॥ परभावने झालीने बेठा छे ॥ एने विषे स्वभाव ग्रहण छे नही जे वादानो ॥ विचार परभाव जाणीने चार गति रखडावे ॥ कर्मबध करावे एवु जाणी पथी ॥ अलगोखमे तेमा कोइक जीवने ॥ शुद्ध उपयोग आवे

अहींआ कोइ कहेशेके ॥ वाडामां रहीए ने पोत पोतानु साधीए ॥ ए पण वात मिथ्या छे शामाटे के ॥ चारेकोर अग्नि लागे अने वचे बेसे ॥ अने कहेशेके टाढी हवा मने आवे ॥ ते कोइ काले आवे नही ॥ शा माटे जे वाडाना ॥ अधिकारीओ तथा ते वाडाने विषे प्रवर्त्तन करवावाला लोको प्राये मिथ्यादृष्टी महा अज्ञानी छे शामाटे के ॥ एना प्रवर्त्तन प्रमाणे न चाले तो जीवथी मारी नाखतां पण डरे नहीं ॥ पूर्वे एवा सत् पुरुष होय ॥ तेने पण मारी नाखता डरे नहीं ॥ माटे ए वाडाना धर्म तो एवा छे ॥ अहींआ तमे शुद्ध उपयोगने खोळशो तो क्यांथी लावशो ॥ एटले ए अशुद्ध उपयोगनाज लक्षण तथा कारण कह्यां ॥ हे मित्र-तु छे ए सत्य छे ॥ बाकी सर्वे असत्य छे ॥ शामाटे के ए अशुद्ध मित्रनी मित्राई यकी हु अनादिकालनो आ ससारमां भटकु छु ॥ अने क्षण एक सुख न पाम्यो ॥ जे दहाडेथी तारी मित्राई यई ॥ ते दहाडेथी काईक टाढी हवा मने आवे छे ॥ जे अवसरे तु माहारी पासे होय छे ते वखत मने शीतलता वले छे ॥ अने ज्यारे तु मारी पासेथी कोरे खसे छे ते वखत हु ॥ बळु बळु थई रहु छु माटे तु माहारी पासेथी खशीश नहीं ॥ एज मित्राईनो हक छे हवे हु मारा अशुद्ध चेतनने समजाउ उ ॥ हे चेतन तु घणो निर्मळ छे पण अशुद्धनो सग करवाथी तु मलीन केहेवाणो ॥ एथी ए पदने पामीने तारु जाणपणु काइ पुरु थयु नहीं ॥ तथा तु पण दुःखी थयो ने मने पण दु खी कर्यो ॥ माटे तु अशुद्धनु जाणनु छोडी दे ने आपणा शुद्ध स्वरूपनु जाणपु कर ॥ अने तेमा रमणता कर तेथी तारु जाणपणु वधशे ॥ शुद्ध कहेवाशे अने सुखी थईश ने मने पण तु सुखी करीश ॥ ते माटे तने जो लाज होय ॥ तो परस्वभावमां पेशीश नहीं ॥ ए मारो हेत उपदेश हैए धरीने तु पोताना शुद्ध

स्वभावमां रहेजे ॥ तो ताहारी ने मारी अनादिकालनी प्रीति सारे छेखे आवशे ॥ नहीं तो ताहारी प्रीति यथी अलेखे छे ॥ एम स मजीने पोताना घरमा पेसजे एज मारो हेतु उपदेश छे ॥ इति मित्रपरिक्षा सपूर्ण

॥ दुहा ॥

मित्र परिक्षा ग्रंथ ए, शुद्धा शुद्ध विचार ।
स्वआतम उपगार ए, रचना अनुभवसार ॥ १ ॥
परने पण हितकारण, एज होवे भव्यजीव ।
मारगानुसारी जे थयो, तेने उपगार सदीव ॥ २ ॥
शुध मित्र ते स्वस्वभाव छे. अशुध मित्र परजाण ।
परस्वभावे जे फरे, तेनां अशुध वखाण ॥ ३ ॥
जे माने हुकम अरिहतनो, अथवा मुनीनोसार ।
तेने तो वहु उपगार छे, तुटशे करम प्रचार ॥ ४ ॥
अशुध उपयोगने टाळीने, आदरजो शुद्ध उपयोग ॥
कारज थशे आतम तणु, नही रहे रोग ने शोक॥५॥
आगे अनत मोक्षे गया, वर्त्तमान जे जाय ॥
आगे पण मोक्षे जावशे, ते अशुध उपयोग पाय॥६॥
ते कारण भव्य जीवतमे, तजी अशुद्ध उपयोग ।
शुद्ध उपयोगनो खप करो, जेथी जाय भवरोग ॥७॥
हुकममुनीने एह छे, ते ध्यावो सदा काल ।
तेथी सुख सपति लहो, शीव वहु घर वरमाल ॥८॥

संवत ओगणीसें संवत्सरे, साडत्रीस अश्विनमास ।
सुद सातमे ते रच्यो, वार भृगुए आश ॥ ९ ॥
जांहां लगे रवीशशी रहो, त्या लगी रहो ए ग्रथ ।
ज्ञानीने मुख मुख होवो, उत्तम ए निग्रथ ॥ १० ॥
मुनी हुकम रचना करी, स्वपरने हितकार ।
चोमासुं अहींआं रह्या, सुरत शेहेर मोझार ॥ ११ ॥
ते कारण भव्य प्राणीया, आदरजो ग्रथ एह ।
जो चाहो निज सुखने, क्षणु न तजसो तेह ॥१२॥
ए ग्रथ पूरण थयो, पूरण संघ आणद ।
मुनी हुकम एम भाखीआ, एहीज सुखने कंद॥१३॥

॥ इति मित्रपरिक्षा ग्रथ ॥

॥ समास ॥

अथ सिद्धांतसारोद्धार.

॥ दुहा ॥

प्रणमु परमानदमय, सिद्धस्वरूप भगवंत ॥
तासपसाय कविता करु, रीझे देखी संत ॥ १ ॥
सेहेज स्वरुपी साहेबो, चिदानंद भगवन ॥
वास वसे पुदगळ विषे, छे जुदो ए तंन ॥ २ ॥
आप स्वरुपी आपमां, वरते सदा एक तान ॥
काम करे ते जडतणा, जूदु छे तसध्यान ॥ ३ ॥
ध्यान गोचर देखता, भासे वस्तु अनुप ॥
वेहेवारी लख दोडतां, कांइ न बांधे रूप ॥ ४ ॥
अरूपीने रूपी करी, माने छे जे जीव ॥
बोध तेहनो निष्फळ कह्यो,क्यम होशे ते शीव ॥५॥
शीव स्वरूपी आतमा, ध्यावो गाव्रो सार ॥
जेम चेतन प्रगट होवे, होए अक्षयभंडार ॥ ६ ॥
अक्षय पदवी जो चाहीए, तो तजजे मिथ्यात ॥
नीराकारने रुपी कहो, ए खोटी तजजे वात ॥ ७ ॥
नीराकार अरुपी छे, रुपी कह्यो साकार ॥
चेतन जेम एम जाणीए, भीन उपयोगी धार ॥ ८ ॥

उपयोगवंत ते चेतना, साकारने नीराकार ॥
वेहु चेतनना कह्या, समजो हृदय मोझार ॥ ९ ॥
जडनो उपयोग जड छे, तेमां नहि चेतनरुप ॥
अज्ञानदशा वरते सदा, तेतो कहीए अघभुप ॥१०॥
इत्यादिक बहु वारता, कहीशु ग्रंथ मोझार ॥
श्रोता सुणजो कान दइ, तजी वीकथा वीचार ॥११॥
चींतामणी रत्न समो, ग्रंथ ए गुणभाण ॥
उद्योत करे भव्य जीवने, कल्पवेल सम नाण ॥१२॥
ग्रंथ एह भणतां थका, टळे मिथ्यात्व दूर ॥
समकित सहज आवे सही, वरते आणदपूर ॥ १३ ॥
सिद्धांत सारोद्धार ए नाम एनुं मनोहार ॥
सर्व सिद्धांतनु सार ए, भवी सुणजो अविकार॥१४॥
निद्रा वीकथा परीहरो, परहरो विपयकपाय ॥
एकण चित्तथी सांभळो, सेहेजे सिद्धि थाय ॥ १५ ॥

॥ हवे भापा लखी छे ॥

॥ हवे श्री वीतराग परमात्माना मार्गने विपे द्वादश अंगी सिद्धांत छे, ने आकाळे तो पीस्ताळीस छे, परतु सर्वनु सार ए के अनुयोग चार कह्या छे ते मध्ये त्रण तो व्यवहार कह्या छे अने एक निश्चय कह्यो छे, तेना नाम. धर्म कथानुयोग, ते ज्ञाता प्रमुख जाणवा ॥ १ ॥ गणितानुयोग ते चंदपन्नति सुरपन्नति प्रमुख जाणवा ॥ २ ॥ चरण ते आचारांग दसवै-

व्यवहार छे, अने ज्यांही सुधी व्यवहार त्यांही सुधी विवाद छे केमके व्यवहारना कर्तव्यमां एक एकनु निसदेह करवु रह्यु अने आपणा पक्षने वास्ते सामानी साची जे वात होय ते पण जूठी ठराववी मगर सिद्धातमा अक्षर देखीए अने आंधळा थइने चालीए अने खोटी युक्तियो करीने सामाने जुठा पाडीए अने मुख थकी एवु कहीए के सूत्रनो कानो मात्र उथापशे तो अनतससारी थशे, अने आपणो मतलब आवे त्यारे सर्वे सूत्र उथापीने कोरे मूकीए अने आपणो मतलबने मळतु स्तवन तथा सझाय होय तो ते लेइने आडु धरीए इत्यादिक विचारीने जोता ए व्यवहार महा रागद्वेषनु घर विखवादे भरेलो अने ते मार्गना चलावनारा मायें बहुल संसारी मालुम पडे छे माटे ए व्यवहार थकी वेगळो रहीने आत्मानु साधन करे तेहनु कल्याण थाय पण ज्यांहा सुधी ए व्यवहारले वळगी रहे त्यांहां सुधी विखवाद मटे नहि, अने सिद्धांतने विषे तो एवु कह्यु छे के आत्माने भावतां विचरवु ज्यांहा श्री भगवतीजीना पेहेला सतकने नवम उदेशे स्थविर मुनिने पार्श्वनाथजीना सतानी या काळे सवी पुत्र अणगार मळ्या ते वारे स्थविर मुनिने सामायक आदे लेइने प्रश्न पूछ्या ते वारे स्थविर मुनिए प्रश्ननो उत्तर आप्यो के सामायक पण आत्मा छे तथा संवर ते पण आत्मा छे तथा तप चारित्र निर्जरा ते सर्वे आत्मानु नाम छे तेनो विस्तार अर्थ सहित त्यां जोजो, तथा श्री उत्तराध्ययनजीमा तेज चारे कारण मुक्तिना कह्यां छे, ते ज्ञान तथा दर्शन तथा चारित्र तथा तप ते आत्माज छे, एमा कांइ फेर छेज नहि, ते अट्ठावीशमा अध्ययनमां जोजा, तथा त्यांहाज वस्तुनो स्वभाव तेने धर्म कह्यो छे, तथा त्यांहाज पाच ज्ञान तथा खटद्रव्य तथा खटद्रव्यना गुण पर्याय जाणे तेने समकिती कह्या छे, तथा तेमा सत्तावीशमा अध्ययनमां

पण कह्या छे तथा छत्रीशमा अध्ययनमां पण आत्मस्वरूपमा रमे तेने मुनि कह्या छे, तथा त्रेवीशमा अध्ययनमां गौतम स्वामीने केशी श्रमण मल्या त्यां पण मनने जीततु, रागद्वेषने जीततु, तेमां मुनिपणु दाख्यु छे इत्यादिक ए उत्तराध्ययनमां अध्ययन अध्ययन-मध्ये जोशो तो आत्मानी मुख्यता छे तथा दश वैकालिक सूत्रना चोथा अध्ययनमां प्रथम ज्ञान छे पछी दया कही छे तथा आचा रांगजीमां पण एमज कह्यु छे, तथा सुयगडांगजीमां तो ज्ञाननी मुख्यता प्रथमज छे, तेमज सुयगडांगजीना एकवीशमा अध्ययनमां पण कल्पने लोपवा थकी कर्म बधाय एवो निश्चय थयो नहि, ते जोतां ज्ञानीने कर्म लागतां नथी एवु भासन थाय छे, तथा भगवतीजीना आठमा शतकमा ज्ञानीने आराधक कह्या छे पण क्रियानु बहु मान त्यां कइ दीसतु नथी, तेमज भगवतीजीना पेहेला शतकमां भव स्थिति पाक्या विना कोइ मोक्षे जाय नहि एवु कह्यु छे ए जो तां पण व्यवहार क्रिया शा खप लागे छे तथा श्री पन्नवणासूत्रमां आत्माना आठ गुण आठ कर्मे दाब्या छे ते आठ कर्ममां व्यवहार कर्म किंयु छे के ते व्यवहारथकी दूर थाय अने कर्म तो आत्माथकी निश्चय धारापर्ला छे, तो आत्मा निश्चयमां रमे तोज छुटे, काइ व्य-वहारथकी छुटे नहि, तथा तेज पन्नवणाने विषे पंदर भेदे सिद्ध क-ह्या छे, ते मध्ये अन्य लिंगी सिद्ध, तथा ग्रहस्थलिंगे सिद्ध इत्यादि-क भेद छे, तो त्यां आ कल्पनो व्यवहार क्रिया कह्यु दीसतु नथी, अने ते घणी मोक्षे गया ने घणी जाशे. ए जोतां पण कइ व्यवहार क्रियामां धर्म दीसतुं नथी, तथा श्री भगवतीजीमां आठ आत्मा गणाव्या छे, तेनां नाम द्रव्य आत्मा ॥ १ ॥ कषाय आत्मा २ ॥ जोग आत्मा ३ ॥ उपयोग आत्मा ४ ॥ ज्ञान आत्मा ५ ॥ दर्शन ... रित्र आत्मा ७ ॥ वीर्य आत्मा ८ ॥ ते मध्ये ...

चार आत्मानें अशुद्ध कह्या छे अने पाछळना चार आत्मान शुद्ध कह्या छे, तो जुवो के द्रव्य आत्मा तथा उपयोग आत्मा ए बंने अशुद्धमां गण्या छे, अने व्यवहार क्रिया जेटली करवी, तेटली द्रव्य आत्मामां थाय, अने व्यवहार क्रियानो जे उपयोग तेने उपयोग आत्मा कहीए, पण ते कांइ भाव आत्मामां छे नहिं भाव आत्मा तो पोताना स्वरूपमां रमे ते अधिकार श्री अनुजोगद्वारमां जो जो, के भाव आत्मा थी करणी थर्थ ? एटले तमारी समजमां आवशे, तथा पंच वस्तुभासनने विषे आधाकर्मादिक आहारनुं दूषण ज्ञानीने थयुं नथी तथा उपदेशमाळाने विषे जे कइ पडितजन स्व आत्मानी रमणतामां होय अने पोताना तथा परना शास्त्रनो जाण होय अने चरणसित्तरि ने करणसित्तरिथी हीण होय तो पण दुष्कर करणीनो कर्त्ता कीधेलो छे, तथा प्रवचनसारोद्धारमां जे द्रव्यगुण पर्याय जाणे ने आत्मानो स्वरूप जाणे तेने अरिहंत जाण्या कहीए, पण कांइ बाहेरथकी व्यवहार क्रिया तप तीर्थ जात्रा प्रमुख करे तेणे कइ अरिहंतने ओळख्या कहीए नहि, इत्यादिक बहु शास्त्रने विषे दृष्टी देइने जोतां व्यवहारक्रियाने विषे आश्रवनुं भासन थाय छे, पण कांइ धर्मभासन थतुं नथी ॥ शिष्य वाक्य॥ स्वामी तमे एवुं कोहा छो के व्यवहारमां धरमभासन थतुं नथी, तो परमात्माए तो निश्चय तथा व्यवहार बे नयमरुप्या छे तेनुं केम ? गुरुवाक्य ॥ हे भद्र ! परमात्माए जे बे नय मरुप्या तेना सात भेद छे ते मध्ये चार नय व्यवहारनयमां छे अने त्रण निश्चयमां छे ते मध्ये प्रथम नैगमनय छे ते अणहूती वस्तुने हूती वस्तु माने छे जेम वइशाख शुद १० नो दाहाडो थाय ते वारे एवुं बोले जे, आज भगवान वीरस्वामी केवळज्ञान पाम्या ने केवळ महोच्छव आज कर्यो ते माहे शुं कांइ आज भगवान छे नहीं, केवळज्ञान पण आज

छे नहीं, अने ते केवली आपणने देशना दे ने आपणे सांभळीए ते मा-
हेलु कांइ छे नहीं, अने लोक तेना ओच्छव महोच्छव करे छे ते
सर्वे अतितकाळनुं वर्त्तमान आरोपण करीने करे, तथा अनागत
काळनु आरोपण करीने करे. जे आज श्री पद्मनाभ स्वामी जन्म्या
तथा केवळज्ञान पाम्या, इत्यादिक आरोपण करे ते हाल वर्त्तमा-
नमां वस्तु कांइ छे नहीं अणहूतीवस्तुने वस्तु करी मानवी ए सर्वे
निगमनयनो मत छे, तथा सग्रहनय सत्ताग्राही छे ते वस्तु कांइ
प्रगटमा दीसती नथी तेने वस्तु माने छे तथा आत्माना आठ रुचक
प्रदेश छे ते थकी सिद्ध करीने माने छे, परतु ते जीव तो निगो-
दमां रखडे छे तो ए काम केवु थयु के जेम कोइ पुरुषे मदिरा
पीधो होय अने तेनो छाक चडयो तेथी आवतां रस्तामा केफमां
गडथळ जाणीने पासेथी वस्त्र प्रमुख सर्वे लोको लेइ गया अने
पोते अशुची अपवित्र जगाने विषे पडयो छे अने मनमां घणो आ-
नद माने छे के आज मुज सरखो कोइ छे नहि पण जे वारे केफ
उतरे ते वारे ए महा दुखी थाय, तेम ए सग्रहनयवाळानो ए केफ
जेवो दृष्टांत छे. तथा बीजो दृष्टांत कोइक पुरुष पथ्थरनी काकरीओ
लेइने बजारमा वेचवा गयो लोकने एवु कहे के आकचन छे परंतु
एनु काइ नाणु आवे नहीं एनु नाणु क्यारे थाय के आगळगरा
जे कचन पथ्थरथकी जुदो करे एवा पुरुषने त्या लेइ जाय ने ते
पुरुष जुए जे एने विषे कचन नीकळशे, अथवा नाहि नीकळे एवु
भासन थाय तो कोडी पण नहीं आवे, अगर जो कचन नीकळ
एवु भासन थाय तो मण १ भारनो रु ० ॥ अथवा रू० १ आवे
पण इहा कचननु मूल न उपजे तथा कथीरनु पण न उपजे.
एक मजुरीआनी मजुरी उपजे तेम इहा जे जीव अभवी तथा
भवाभवं ~ ंइ सिद्धि वरवाना नथी तेने जे सिद्धि माने ते

तो सर्व मिथ्या छे, ने जे जीव भवी रह्या तेमां सिद्धपणु मानवुं ते तो विचार जे समकितीथी मांडीने चउदमा गुणठाणा सुधीना जीव तद्भव मोक्षे जाय कोइ ने भवे, कोइ त्रण भवे, कोइ अनंत भवे, मोक्षे जाय परंतु तेनी वासे सद्गुरु मेहेनत करे तो जेम पेले कांकरी वाळे थोडी किंमत आपीने पण कांकरी लीधी तेम तथा मिथ्यादृष्टी होय अने अल्प संसारी होय तेनी वासे पण सद्गुरु मेहेनत करे पण कांइ सिद्ध केहेवाय नहीं शा माटे जे जेम ते कांकरीओ माहेथी कंचन काढता आगळगळाने बहु मेहेनत रही, तेम इहा संसारी जीवने विभाव थकी छुटवु ने सिद्धि वस्तु ते घणी मेहेनते थाय तथा त्रीजा जे जीव रह्या ते तो बिचारा हजु पचेंद्रिपणु पाम्या नथी तथा केटलाएक बादरपणु पाम्या नथी तथा केटलाएक व्यवहारराशीमा आव्याज नथी, तेने सिद्ध मानीए तेमा शु वस्तु ते पण ए कल्पना खोटी दीसे छे एटले ए बीजा नयनो पक्ष कह्यो २ हवे त्रीजो व्यवहारनय तेमा बाह्य जे व्यवहारक्रिया आचार देखीतु तेने धर्म माने छे तेना त्रण भेद छे, उपचरित व्यवहार ॥ १ ॥ अणउपचरित व्यवहार ॥ २ ॥ उपचरिताउपचरित व्यवहार ॥ ३ ॥ हवे उपचरित व्यवहार ते अणहुती वस्तुने वस्तु करी माने जेम पथ्थरनी गाय तथा घोडा प्रमुख अनेक घाट घरो थाय छे तेने ते वस्तु करीने माने परंतु तेमां ते वस्तुपणु छे नहि, उपचारे करीने मानवानु छे, तथा अणउपचरित व्यवहार देखीता गुण होय तेने माने तथा उपचरिता उपचरित व्यवहार कइक वस्तुता छे कइक नथी तेने वस्तु करी माने, तथा बीजे प्रकारे पण त्रण भेद छे सद्भूत व्यवहार १ ॥ असद्भूत व्यवहार २ ॥ सद्भूता सद्भूत व्यवहार ३ ॥ सद्भूत व्यवहार ते आकार सहित वस्तु होय तेने माने जेम

परमेश्वरनी मूर्तिने परमेश्वर माने तथा असद्भूत व्यवहार ते आकार रहितने माने जेम थापनाचार्यने माने तेमां कशो आकार छे नहीं तथा अन्य मतने विषे जेम शारगरामने माने छे, तेमां पण कांइ आकार छे नही तथा सद्भूतासद्भूत व्यवहार ते कांइक आकार छे ने काइक नथी तेवाने माने तेवा रूप देवी प्रमुखनां घणां दीसे छे ते सर्वे व्यवहार नय जाणजो, एटले ए व्यवहार नय देखीती वस्तुने मानवावाळो छे तेने विषे देखवामां तो पुद्गळ दृष्टिगोचर तथा प्रत्यक्ष प्रमाण इंद्रिए करीने थाय तथा ए नय पुद्गल ग्राही छे शामाटे जे बाह्य थकी जोगी सन्यासी प्रमुख, मंत्रजंत्र वादी प्रमुख चमत्कारीपुरुषो तथा तपस्वी क्रिया कर्त्तव्य प्रमुख देखीने तेने सिद्ध करी माने तो ए नय इंद्रि प्रत्यक्ष ग्राही मानवावाळो छे माटे एने विषे कांइ आत्मिक भाव दीसतो नथी शामाटे जे आत्म अरूपी छे तथा आत्माना गुण जे ज्ञानादिक तथा आत्माना पर्याय जे स्व पर्यायादिक ते सर्वे अरूपी छे ते कांइ व्यवहारनयना दीठामां आवे नहीं।

॥ शिष्य वाक्य ॥ स्वामी एवु सांभळ्यु छे के वेहेचे ते व्यवहार तेनु केम ? ते समज पाडो ॥ गुरुवाक्य ॥ हे महानुभाव व्यवहार जे वेंचवानु पूछ्यु ते खरु छे ते जे पूर्वे उपचरितादि भेद वेहेंची देखाडया ते सर्वे अशुद्ध छे तथापि शुद्ध व्यवहार जे छे ते ग्रहण करवा योग छे अने आत्माने बहु गुणकारी छे, परतु अते ते तो छोडवानोज छे, तोय पण ज्यांसुधी यथाख्यात चारित्र नथी पाम्यो अने मोहनीय कर्म क्षय नथी गयु त्यां सुधी शुद्ध व्यवहार अगीकार करवा जोग छे, ने जो शुद्ध व्यवहार अगीकार न करे तो मोहनी कर्मक्षय थायज नहीं। अने मोहनी कर्मक्षय थया विना [illegible] आवे नहीं, अने ए चारित्र विना केवळ

ज्ञान कोइ जीव पामे नहीं अने केवळ विना मुक्ति कोइ काळे थाय नहीं, ते माटे शुद्ध व्यवहार अवश्य आदरवो, ए वातमां शंका राखवी नहीं

॥ शिष्य वाक्य ॥ स्वामी शुद्ध व्यवहार ते शीरीते अमे सम जीए, अने शीरीते थाय ते कृपा करीने अमने समजावो

॥ गुरुवाक्य ॥ हे भद्र निश्चय थकी द्रव्य एवो शब्द छे ते सामान्य वचन छे ते विशेषे करीने समजवु तेने शुद्ध व्यवहार कहीए ते तु सांभळ, हवे हु विवरीने कहुछु द्रव्यना ६ छभेद छे धर्मास्तिकाय १॥ अधर्मास्तिकाय२॥ आकाशास्तिकाय३ ॥ काळ४ ॥ पुद्गलास्तिकाय ५ ॥ जीवास्तिकाय ६॥ ए खट द्रव्य छे द्रव्य ते शु कहीए के जेने विषे उत्पाद ॥ १ ॥ व्यय ॥ २ ॥ ध्रुव ॥ ३ ॥ ए लक्षण लाधे तेने द्रव्य कहीए ते ध्रुवपणाथकी द्रव्यने साधीए तथा उत्पाद व्यय तेथकी पर्यायने साधीए, त्रणे लक्षण एक समे जेने विषे लाधे तेने द्रव्य कहीए हवे ते मध्ये जे जीवास्तिकाय छे तेने चेतन कहीए, ते चेतन एक एवा अनता छे परतु सत्ता स्वभाव जोता एकज छे, केमके असख्यात प्रदेश लोकाकाश प्रमाणे सर्वना सरखा छे तथा ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य, उपयोग ए छ लक्षण सर्वे जीवमां सरखां लाधे, ते आत्माना गुण पण कहीए तथा अव्याबाधपणु, अणअवगाहपणु इत्यादिक आत्माना पर्याय एम आत्माना गुण पर्यायनो विचार करवो ते भेदज्ञान कहीए अने तेनेज शुद्ध व्यवहार कहीए अहिया विचार घणो छे परतु ग्रथ बोहोळो थाय माटे लख्यो नथी एटले ए त्रीजो नय कह्यो ॥ ३ ॥ हवे चोथो नय कहीए छीए तेनु नाम ऋजुसूत्र ते परिणाम ग्राही छे जे समे जेवा जेना परिणाम वर्त्तता होय तेने तेवो करी माने, जेम कोइक साधु तेना परिणाम विषयमां कोइ समे वर्त्तता होय तेवा समयमां ए

नयने पूछीए के ए कोण छे त्यारे ए नयवाळो एवुं बोले जे ससारी छे, अथवा कोइ ससारी पुरुषने कांइ कारणथकी ससार उपर वैराग आव्यो छे परतु कांइ ज्ञानथकी वैराग नथी कारणथकी वैराग छे ते कांइ ससारने छोडवानो नथी ससारमा ज रेहेवानो छे तो पण ते नयवाळाने तेवे समे पूज्य होय तो तेने साधु कहे एवु ए नयने विषे छे परतु एना कीधाथकी काइ पेलानु साधुपणु जाय नहि ने ससारी साधु थाय नहि, शामाटे जे श्री भगवतीजीना पदरमा शतकने विषे सुमगळा साधु आवती चोवीशीमां थशे तथा गोशाळानो जीव विमळवाहनराजा थशे ते विमळवाहन राजा तथा राजानो सारथी तथा राजाना घोडा सर्वने तेजो लेस्या मुकी बाळीने राख करशे तोपण ते साधु सर्वार्थ सिद्धे जशे अने ए नयनो मत तो ए साधु हिंसक ते वखत छे परतु ए नयना मानवाथकी ए साधु कांइ हिंसक थया नहि ने नरके गया नहि इत्यादिक घणीक वात विचारीने जोता ए नय पुद्गळग्राही छे केमके मनना परिणामने ग्रहे छे, ते मन तो पुद्गळ छे अने मनना परिणाम जे शुभाशुभ उठे ते पण पुद्गळीक छे माटे ए नय पण व्यवहारनयमां मेळीए एटले ए चोथो नय कह्यो एटले पूर्वोक्त चारे नय व्यवहारना घरना छे अने चारे पुद्गळग्राही छे पण आत्मा ग्राही कांइ छे नहि ॥

॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी, शुद्ध व्यवहार तो आत्माग्राही छे तेने तमे पुद्गळीक केम कोहोछो ?

॥ गुरुवाक्य ॥ हे भद्र ! शुद्ध व्यवहार छे ते कांइ नयनी गवेषणामां छे नहि ते तो ज्ञाननयना भेद करीए त्यारे ते गणत्रीमां आवे शामाटे के समकित गुणठाणाथी दशमा गुणठाणा सुधी शुद्ध व्यवहार छे ते ज्ञाननयमा गणाय अने आतो व्यवहार कल्प-

आश्रित समजवानो छे ते तो अते विचारीने जोतां पेहेला गुण ठाणामां छे माटे आहिया शुद्ध व्यवहारनयमां गवेल्यो नथी, एटले ए व्यवहारनयनी ओलखाण करावी

॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी, व्यवहारनयतो ओळखाव्यो, ते तो छोडवायोग्य छे पण आदरवायोग्य निश्चयनय छे ते ओळखावो

॥ गुरुवाक्य ॥ हे देवाणुप्रिय ! निश्चय दृष्टि विचारी जोतां शुद्ध निरंजन आत्मा एकज छे, काइ आत्मामां आत्माना गुण पर्याय जूदा नथी जेम सुवर्णने सुवर्ण ना घाट जे मुगट, कुंडळ प्रमुख ते कांइ सुवर्णथकी नोखा नथी, तेम ज्ञानादिक जे गुण ते कांइ आत्माथकी नोखा नथी

॥ गुण पर्यायम्य आत्मा इति वचनात् ॥

माटे आत्माने एकज स्वरूप ध्यायु

॥ शिष्यवाक्य ॥ परमात्मानी वाणी एवी छे के ज्ञान दर्शनादिक आत्माना गुण कह्या छे अने तमे तो आत्मा एकज कहो छो गुण जूदा केहेता नथी तथा सिद्धांतमा एवा पाठ दीसे छे के

तपसंजम अपाणभावे माणे विहर.

इत्यादिक पाठ श्रावक साधुना अधिकारे घणा छे अने तमे तो एकज कहो छो

॥ गुरुवाक्य ॥ जे ज्ञानादिक गुण त जे कह्या ते सत्य छे. परंतु ए भेद ज्ञानने न्याये छे पण मूल स्वरूपने विचारीने जुओ तो ज्ञान दर्शनादिक गुण तेज आत्मा छे जेम दूध अने दूधनी धारा तथा दूधनु श्वेतपणु तथा दूधनु मधुरतापणु इत्यादिक दूधना गुण ते कइ दूधथकी जूदा नथी, दूध ने दूधनी धारा ते कइ जूदी नथी एकज छे तेम ज्ञान दर्शन तेज आत्मा छे कदापि आत्मानु ज्ञानदर्शन कहीए

ते वारे ज्ञान दर्शन जूदु ठरे ने आत्मा जुदो ठरे तो ए मोटो विरोध आवे शामाटे जे ज्ञान दर्शन विनानो जे आत्मा रह्यो तेने पछी शु कहीए ते वस्तुता रहे नहि जेम कचन छे तेने वीपे पीळाशपणु तथा भारेपणु तथा चीकाशपणु ए जो कचनथकी ज्यारे जूदां गणाय ते वारे कचन क्यां रहे माटे भारे पीळो, चीकणो, तेनेज कचन कहीए पण जूदु कहेबु बने नहि, तेमज ज्ञानदर्शन चारित्र, तेहीज आत्मा तथा जे तें सजमतप आत्माने भाववानु कह्यु ते पण कांइ जूदु नथी तपसजम ते पण आत्माज छे, जेम मृतीकानां कोठी, कुडां, घट इत्यादि जे छे ते कांइ मृतिकायकी भिन्न नथी एटले ए सर्वे घाट छे, ते सर्वे मृतिकाने भजे छे, परतु मृतीकाविना घाट होवे नहि तेम अहियां तपसजम ते आत्माने भजे छे पण आत्माविना तपसंजम होय नहि

॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी, तपसयम गुणनो अधीको ओछो दीसे छे अने तेम तो आत्मरूप कहो छो त्यारे तो सरखो जोइए

॥ गुरुवाक्य ॥ जे तपसजम गुण अधिको ओछो छे तेनु कारण सांभळ जेम ते मृतिकाना घाट नाहाना मोटा छे जेमां मृतिका विशेप छे ते घाट मोहोटो छे जेमां मृतिका ओछी छे ते घाट नाहानो छे तमे अहियां जे आत्मानां आवरण वधतां खसी गयां तेनो तपसजम गुण विशेप मालुम पडे छे जेनां आवरण थोडां खस्यां छे तेना गुण ओछा मालुम पडे छे परतु आत्मस्वरूप ते एकज छे, शामाटे जे शुद्ध व्यवहारथकी नयनो पक्ष छे तेहीज आत्मा एवा स्वरूपने परमात्मापणु प्रगट करवाने वास्ते आरोपण करीए एटले आपणा आत्माने परमात्मरूप करीने ध्याइए तो आपण परमात्मा

॥ स्वामी आपणो आत्मा हजु परमात्म

रूप प्रगट थयो नथी अने तेने परमात्मरूप करीने ध्याइए ते तो असत्य कल्पना थाय छे ?

॥ गुरुवाक्य ॥ हे भद्र ! आपणो आत्मा परमात्मा तो छेज प रंतु आवरणना जोरथी आत्मा कहेवाय छे पण मूळ सत्ता जोइए तो आत्माने कइ कर्म लागता नथी आत्माने कर्म केवी रीतना रह्यां छे के जेम सूरजनी आडां वादळां, तेम आत्माने कर्म रह्यां छे माटे आत्माने कर्म वळगता नथी ए अधिकार पन्नवणासूत्र थकी जोजो

॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी तमे तो सूरज वादळानो दृष्टांत ब तावोछो अने अमारा सांभळवामां कर्म खीर नीरने दृष्टाते छे

॥ गुरुवाक्य ॥ महानुभाव ! ए पण एज छे जे दूधनी मांहेली कोरे पाणी नांखीए तो कांइ दूधना प्रदेश मटीने पाणीना प्रदेश थाय नहि आप आपणी सत्तामा सर्वे रहे छे

॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी, दूध पाणी कांइ जूदु तो पडी ज णातु नथी अने तमे तो कहोछो के आप आपणी सत्तामां रहेछे ते केम समजवामां आवे ?

॥ गुरुवाक्य ॥ हे भद्र ! ए दूध लेइने आगे उपर मूकीए ते वारे पाणी होय ते बळे अने दूधनो मावो नरवो रहे त्यारे समजवु के बेउनी सत्ता जूदी छे जो बेउनी सत्ता एक थइ होय तो बेउ ब ळता, माटे सौ सोनी सत्तामां छे तथा बीजे दृष्टांते जे जूवारना डोकाने छोलीने माहेलु जे बोथु ते दूध मांहि नाखीए तो ते पाणी होय ते पीए अने बहार काढी नीचोवीए एटले पाणी होय ते नीकळी जाय, फरीथी नाखीए तो पाणी होय ते पीए वळी का ढीने नीचोवीए, एम ज्यां सुधी पाणी होय त्यां सुधी पीए एकलु दूध रहे एटले पीए नहि तेम अहियां आत्मा तथा कर्म ते बे एक

मेक दीसे परतु एक मेक थाय नहि. आत्मा आत्मानी सत्तामां रहे, पुदुगळ पुदुगळनी सत्तामां रहे माटे ए कर्म ने आत्मा बे जुदां छे. हवे आत्मा छे तेना असंख्यात प्रदेश छे एकेक प्रदेशे अनतु ज्ञान छे तथा अनतु दर्शन छे तथा अनतु चारित्र छे तथा अनंतु वीर्य छे तेम अनत गुण छे ते जेम एक प्रदेशे कह्या तेम असख्याता प्रदेश जाणवा, ते माटे ए आत्मा अनत गुणनो धणी छे, तथा अ-लिप्त छे एटले कर्म साथे लीपाणो नथी तथा अरागी छे तथा अ-द्वेषी छे एटले रागद्वेष ते पुद्गलना घरना छे ते काइ आत्माना नथी ते सदाए सत्तामां एवोज छे आत्मा सत्ताए निर्मळ रह्यो छे माटे जेवु परमात्मानु स्वरूप तेवुज आत्मानु स्वरूप छे माटे एने परमात्मा करीने ध्याइए तेमा असत् कल्पना नथी ए तो सत्यज छे

॥ शिष्य वाक्य ॥ स्वामी पूर्वे सग्रह नयना अधिकारमां त-मोए सत्तानु स्वरूप निषेधी नाख्यु हतु अने अहियां सत्तानुं स्व-रूप तमे देखाडयु ते केम ?

॥ गुरुवाक्य ॥ हे भद्र ! सग्रहनयने विषे जे सत्तानु स्वरूप निषेध्युं ते त्यां काइ प्रगट दीसतु नथी, अने अहियां तो पण प्रगट दीसे छे जेम घासने विषे घी मानीए पण तेथी कांइ हाल दीसतु नथी एतो एक ओघशक्ति छे शु जाणीए के ए घास बळी जशे अथवा ऊभी सडी जशे अथवा सहज वनना जनावर छे ते खाशे अथवा हाथी घोडा प्रमुख जनावर खाइ जशे ? तो एटली जातमां तो काइ घी थवानु नथी, जे वारे गाय तथा भेंश तथा बकरी तथा गाडर ए चार जनावरना खावामां आवे तो घीनी आशा थाय ते मध्ये पण वाखडां जनावर खाइ जाय ते तो काइ लेखामां आवे नहि दुझणु खाय त्यारे लेखामा आवे एटले घासनु घी तें कीधु ते प्रमाण न [illegible] सग्रहनय नाम ते पण निगोद प्रमुख सर्वेने

परमात्मपदे माने छे तेना व्याघात पूर्व कह्या छे, तथा दूषणो जे थी कहीए ते कोइथी ना न कहेवाय अने तरत दूषणोथी यी नीकळे पण खरु, तेम आहियाँ अतर आत्मा तेने परमात्म स्वरूप करीने ध्याइए तेने कोइ जातनु दूषण छे नहि, एटले दूर जेम कह्यु तेम अतरआत्मा छे ते समुचित शक्ति पामेलो छे ते अधिकार विस्तार थी जोवो होय तो सुमतिग्रथमां जोजो. एवी रीते आत्माने परमा स्वरूप करीने ध्यातायका पोतानो आत्मा प्रगट थाय ते वातमां संदेह राखवो नहि

॥ दुहा ॥

निश्चय व्यवहार रचना कही, संक्षेपे सुखकार ॥
सारसार वचन उधरी, सिद्धांतना आधार ॥ १ ॥
निश्चय स्वरुप वखाणीउ, सिद्धांतमांही जेह ॥
तेमाथी प्रगट करुं, किंचित् मात्र एह ॥ २ ॥
व्यवहारमां विखवाद घणो, ते देखाडयो आज ॥
ते समजीने छोडजो, जेम सरे आतमकाज ॥ ३ ॥
पापकर्म दूरे करी, भजे आतमराम ॥
द्रव्यगुण पर्यायने, समजवानु काम ॥ ४ ॥
अमरीत रस एह छे, आपे अमर अवतार ॥
जन्ममरण टळे सही, साचो ग्रथ विचार ॥ ५ ॥
भणशे गणशे जे नर, सांभळशे धरी प्रेम ॥
संवरधारी ते सही, साचो तेहनो नेम ॥ ६ ॥
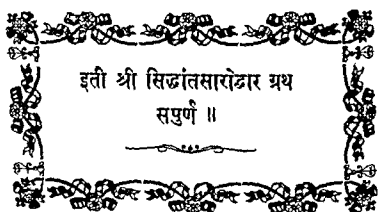
देवलोक नरलोकनी सही, ऋषितस आगळ दास ॥
ते नर कर्म दूरे करी, वेगे ले शीववास ॥ ७ ॥
एह वात खोटी नहि, मत कोइ धरो संदेह ॥
शास्त्र अनुमाने कहुं, साचो गुणनो गेह ॥ ८ ॥
संवत ओगणी ओगणीसमे श्रावण परथम मास ॥
तीथी अष्टमी जाणीए शुकल पक्ष नीवास ॥ ९ ॥
बुधवारे बुद्धि वधे रचनाए सुखकार ॥
सिद्धांत सारोद्धार ए नामे जे जे कार ॥ १० ॥
शुद्धाशुद्ध वचन जे साधजो चतुर सुजाण ॥
अपमान कोइ करशो नहि ग्रंथ तणु ते जाण ॥११॥
रचना छद्मस्थ भावथी तेथी दूषण कोइ ॥
देखे ते शोधे सही पंडित ज्ञाने जोइ ॥ १२ ॥
ए ग्रंथ अविचळ रहो, नभमु पेरे सोय ॥
विस्तरजो पृथ्वी विषे सुख सुख ग्रंथ ए होय ॥१३॥
एहमां ज्ञान अगाध छे गुण पण एहना अगाध ॥
स्वयंभूरमण पेरे गभीर छे, सुगुरु संगे साध ॥१४॥
मुनि हुकम अनुभव करी, चिदानंद महाराज ॥
आळ [illegible] करी, सारयु नीज आतमकाज ॥१५॥

आत्म रमण एह छे, ग्रंथ एह विनाण ॥
रमतां सुख सपति लहे निज स्वरूप सुख मान ॥१६॥
शीव रमणी आवे तेडवा केवळ श्री ले साथ ॥
ग्रथ ए जेह रुदीए धरे तेनो झाले हाथ ॥ १७ ॥

तत्वसारोद्धार.

श्री गुरुभ्योनमः

॥ दुहा ॥

अविनाशी अकलकतुं, नीरंजन नीराकार ।
हु वदु ते आत्मा, निज अनुभव उदार ॥ १ ॥
तत्व तत्व ग्रहण करी, ठवु वचन मनोहार ।
श्रोता सुणजो कान देइ, जेथी भवनो पार ॥ २ ॥
तत्व सारोद्धार ए, ग्रंथ ज्ञान उद्योत ।
भणतां नीपजे, नीज आतम गुण श्वेत ॥ ३ ॥

हवे भाषा लखीये छीये–हवे जगतने विषे अनेक पदार्थ छे ते सर्वेनुसार बीचारीने काढीये त्यारे तत्व ने छे, जीवतत्व १ अजीव तत्व २ ए बेज तत्व छे ए बे विना बीजो कोइ पदार्थ दीसतो नथी शिष्यवाक्य–स्वामी पुर्वे अमे तत्व सात तथा नव सांभल्यां छे तेनु केम ? गुरुवाक्य–हे भद्र ए बे तत्वना सात पण थाय, तथा नव पण थाय. ते कल्पना छे, परतु तेने भेद करीने देखाडु ते सांभल. हवे जीव द्रव्यना चार तत्व छे. जीवतत्व १ संवरतत्व २ निर्जरातत्व ३ मोक्षतत्व ४. तथा अजीवतत्वना पाचतत्व छे अजीवतत्व १ पुन्यतत्व २ पापतत्व ३ आश्रवतत्व ४ बंधतत्व५ एटले ए जीव अजीव मलीने नव तत्व थयां तथा पुन्य पाप न गणीये तो सात तत्व थाय

विभावीक नहीं विभाविक ते केनु नाम के जेम अग्नि छे ते काष्टादिकना सजोग थकी सामी वस्तुनो नाश करे ते विभाविक कहीये

शिष्य—स्वामी अग्निमां तो दाहक स्वभाव छे एने विभाविक केम कहो छो ?

गुरु—दाहक स्वभाव छे ते काष्टादिक वस्तुजोग छे तेने बाले, परतु पथ्थरने कइ बालवानो स्वभाव छे नहीं पण विभावना जोरथी पथ्थरने पण बाले, तथा पाणी छे ते अग्निनु शस्त्र छे शा माटे के पाणीथकी अग्निनो नाश थाय, परतु विभावना जोरथी अग्नि पाणीने पण बाले. एटले विभाव ते शु जे पोतायकी बीजा अपरनु भलवु, ने मलीने जे कार्य करवु तेनु नाम विभाव कहीये अने विभाव तेनेज क्रिया कहीये एटले ते विभाव दशा ते धर्मास्तिकायमा नथी शा माटे जे एकथी बीजो मले नहीं एटला वास्ते अमे क्रियानी ना पाडी, तथा जे चेतनने चालता साहाय आपे छे ते शा दृष्टाते के जेम माछलां जलने विषे चाल्या जाय छे ते जलना साहायथकी चाले छे तेम जड चेतन धर्मास्तिकायनी साहायथकी चाले छे १ तथा अधर्मास्तिकाय बीजो द्रव्य ते पण अरूपी छे तेने विषे आकार नथी, तथा क्रिया पण नथी ते जड चेतनने थीर रहेवु होय तेने साहाय आपे छे कया दृष्टाते के जेम कोइ पुरुष पथे चाल्यो जाय छे अने ते धरती एवी छे जे ज्यांहां झाड झाडु छे नहीं अने ग्रिष्मरुतु छे एटले जेठ महीनाना दाहाडा छे अने लु पण घणी वाय छे ताप पण घणो आकरो छे तेवी वखते ते चालता पुरुषने मारगमा चालतां कोइक झाड आव्यु, ते झाड केवु छे के महा विस्तारवत जेनी छाया छे एवु झाड देखीने ते [illegible] तापमाथी दाझ्यो आवतो थको ते झाड हेठल

बेसे के न बेसे आवे तु बेसे ए द्रष्टनी साहायथकी त पणी तेम तेम जीव अजीवने थीर रेहेवु ते अधर्मास्तिकायनी साहायथकी रहे २ हवे त्रीजो आकाशास्तिकाय द्रव्य एक लोकालोक प्रमाण छे, ते पण अरूपी छे तेने विषे पण कशो आकार नथी तथा क्रिया पण कशी छे नहीं, परंतु जड चेतनने अवकाश आपे शा दृष्टांते के जेम कोइए चुने करीने इंटो चणी होय पछी ते भींतमा माहे कश्यो ए होय नहीं एवी साफ करेली छे तो पण तेने विषे खीली मारीए तो माहीं पेसे तथा जेम काष्टना मोम प्रमुखने विषे जेटली खीलीओ मारीये तेटली माहे समाय परंतु ते काष्टनु ढगलु ते खी लीना भागनु वधारे थतु नथी ते जेम ए काष्ट तथा भींतना स्वभाव छे ते जेम खीलीने मारग आपे तेम आकाश द्रव्य जीव पुद्गलने मारग आपे २ हवे चोथो द्रव्य जे काल.

शिष्य--स्वामी, पूर्वे धर्मास्तिकाय प्रमुख द्रव्यने अस्तिकाय कह्यो अने काल द्रव्यने अस्तिकाय केम न कह्यो ? एकलो काल कहिने बोलाव्यो तेनु शु कारण ?

गुरु--हे देवाणु प्रीय! धर्मास्तिकाय प्रमुख जे द्रव्य छे ते बहु प्रदेशी छे शामाटे के धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय तथा जीवास्तिकाय ए त्रण द्रव्य असंख्यात प्रदेशी छे तथा आकाशास्तिकाय अनंत प्रदेशी छे अने पुद्गलास्तिकायना खध अनंता छे ते कोइ द्वी प्रदेशी छे कोइ त्रण प्रदेशी छे यावत् संख्यात प्रदेशी छे तथा असंख्यात प्रदेशी तथा अनंत प्रदेशी छे, तथा अनंता परमाणु जूदा छे, तेमां पण खध मलवानी शक्ति रही छे माटे एने अस्तिकाय कह्यो अने काल द्रव्यने विषे एक समयथी बीजो समय मळे नहीं माटे तेने अस्तिकाय कह्यो नहीं

शिष्य—स्वामी ! एक समयथी बीजो समय मळे नहीं त्यारे एने द्रव्य केम कहो छो.

गुरु—हे भद्र ! सर्वे शास्त्रने विषे पचास्तिकायनी व्याख्या छे अने द्रव्य छनी व्याख्या छे, पण छट्टो द्रव्य जे काल ते कांइ पदार्थ नथी पण सर्वे द्रव्यने नवानु जुनु करे एटला माटे तेने द्रव्य कह्यो परतु प्रथम समयनो नाश थाय अने बीजो समय आवे माटे काल द्रव्यने उपचारे करीने द्रव्य कहीये छीये ते द्रव्य अरूपी छे, आकार पण कश्यो ए छे नहि क्रिया पण छे नहि, नवी वस्तुने जुनी करे एवु परावर्त्तन धर्म छे ४ हवे पुद्गलास्तिकाय तेने विषे रूपीपणु छे, आकार पण छे तथा क्रिया पण छे, मळण वीखरण स्व भाव छे ५ एटले ए अजीवना पाचे भेद ते म ये चार भेद अरूपी अने एक रूपी ए सर्वे मळीने पांचनी ओळखाण करावीए सर्वे व्यवहार नयना पक्ष छे हवे जे ५६० भेद एना कहीशु ते अशुद्ध व्यवहार नयना पक्ष छे, शामाटे के कल्पना करीने भेद उठाववा तेनु नाम अशुद्ध कहिये, अने वेहेंचवु ते व्यवहार एटले अशुद्ध व्यवहार थया

शिष्य—एवा अशुद्ध भेद वेहेंचवानी शी जरुर छे ? एवा कल्पीत भेद करवाने वस्तुता कइ जूदी पडती नथी ते तो ते पांचमांने पांचमां छे, तो शा वास्ते कल्पीत भेद करोछो

गुरु—हे भद्र ! ए तें कह्यु ते खरु, परतु बाल जीवने भेद वेंहेंच्याविना समजण आवे नहि ते वास्ते ए भेद वेंहेचवा पडे छे जेम कोइ पुरुष पोताना घरना माणसने केहे जे दातण लाव ते वारे ते पुरुष डाह्यो समजु होय तो दातण, पाणीनो लोटो, रुमाल, तमाकु प्रमुख ... प ते सर्वे लावे, एटले ते जाणे के तखप जोइशे

पण अणसमजु होय अथवा बालक छोकरु होय तो तेने जेटली वस्तु कहिये तेटली लावे माटे तेने सर्व विवरीने कह्यु जोइये, तेमज समजु पुरुष होय ते संक्षेपथी कीधा थकी समजे एवा विस्तार बुद्धि वाला जीव थोडा होय अने थोडी बुद्धिवाला जीव घणा होय तेने विस्तारे करीने समजावीये त्यारे समजे, ते माटे भेद विवरीने कहिये छीये द्रव्ये धर्मास्तिकायना आठ भेद छे तेनो खंध लोकाकाश प्रमाण एकज छे १ धर्मास्तिकायना देश जे अधो लोक उर्ध्व लोक तिर्च्छा लोक इत्यादिक जे कल्पीये ते देश कहेवाय २ तेना प्रदेश असंख्यात छे, जेटला लोकाकाशना प्रदेश छे, तेटला एना छे ३ ते द्रव्यथकी एकज द्रव्य छे ४ खेत्रथकी लोकाकाश प्रमाण छे ५ अने कालथकी अनादिअनंत छे, एटले आदिअंत नथी ६ भाव थकी वर्ण, गंध, रस, फरस, तथा स्वस्थान नथी ७ गुणथकी जीव पुद्गलने चालतां साहाय आपे ८ तेमज अधर्मास्तिकायने विषे जाणवा, परंतु एटलो विशेष के धर्मास्तिकाय चालताने साहाय आपे, ते नहि अने थीर रहेते ने साहाय करे ते गुण आठमो लेवो २ आकाशास्तिकायने विषे खंध जे छे ते लोकालोक प्रमाण १ देश ते चउद राज्यलोक प्रमाण, तेने देश कहिये कदापि ओछो अधिको कल्पिये तो पण तेने देश कहिये २ प्रदेश अनंता छे, ३ द्रव्यथकी एक द्रव्य छे, ४ खेत्रथकी लोकालोक प्रमाण छे, ५ काल ६ तथा भावथकी पूर्ववत् ७ गुणथकी अवगाहना गुण जड चेतनने मार्ग आपे ८–३ चोथो काल द्रव्यना ६ भेद ते मध्ये काल द्रव्य विषे खंध देश छेज नहि, शा माटे जे अछतो पदार्थ छे सदाये एक समय लाधे, १ द्रव्यथकी काल द्रव्य एक छे २ खेत्रथकी अढी द्वीप प्रमाण ३ काल ४ तथा भावथकी पूर्ववत् ५ गुणथकी नवा पुराणावर्त्तना लक्षण ६ ए काल द्रव्य उपचारथकी छे एटले अजीव

अरूपी द्रव्यना चार भेद धर्मास्तिकाय आदे दइने कह्या ते सर्वे अरूपी छे ते ज्ञानीना दीठामा आवे परतु चर्म दृष्टिवालाथी देखाय नहिं एम सद्दहुं. हवे रूपी द्रव्य काहये छीये, पुद्गल द्रव्य जे रुपी तेना भेद कहिये छीये वर्ण ५, रातो १, पीलो २, लीलो ३, धोलो ४, कालो ५; गध २, सुरभी तथा दुरभी. रस ५, कडवो कशायलो, खाटो, तीखो, मधुरो फरस ८, टाहाडो १, उनो २, लुखो ३, चोपटो ४, भारे ५, हलवो ६, खरसट ७, सुकोमल ८, सस्थान ५, लाबु १, गोल २, त्रिखुण ३, चोखुण ४, वलीयाने आकारे ५, हवे पाच वर्णना २०० भेद थाय ते कहिये छीये प्रथम जे रातो वर्ण छे तेने विषे सुरभी तथा दूरभी बे गध होय, रस पाचे लाधे, फरस आठ लाधे, सस्थान पाचे लाधे, तेना स्वामी कहिये छीये राते वर्णे कुसुम, गुलाब, तथा कमल प्रमुख छे; तेने विषे गध सुरभी छे, फरस सुकोमळ हलको तथा शीतल छे, तथा स्निग्धपणु छे सस्थान गोल छे रस मधुरो छे, एम एक एक वर्णमा गध प्रमुख ज्याहां यथा योग जोडये तेवा गणी लेवा एटले ए राता वर्णना वीश भेद थया, तेम लीला वर्णना वीश, पीला वर्णना वीश, श्याम वर्णना वीश धोला वर्णना वीश एटले ए पांच वर्णना मलीने १०० थया, एटले ए एक वर्णमा बीजो वर्ण नहिं आवे केमके तेनो ते प्रति पक्षी छे, माटे वर्णना न गणीये त्यारे एक एक वर्णे वीस वीस आवी रहे, तेमज रसना पण गणवा, परतु ज्या मधुर अथवा हरेक कोइ रस होय त्या बीजा प्रतिपक्षी चार रसना होय ने वारे एक रसमाहे वीस भेद लाधे तेनी विगत वर्ण ५, गध २, फरस ८, स्वस्थान ५, एटले वीश थया, एम पाच रसना थइने सो थाय तेमज स्वस्थानना विषे पण २० भेद लाधे तेनी विगत उपर प्रमाणे पाच स्वस्थानना थइने सो भेद थया तेमज

गवर्ने वीजे ने वीस भेद थावे, तेनी विगत, वर्ण ५, रस ५, फरस ८, संस्थान ०, ए २३ सुर्ग्मी गंधना अने दुर्गमी गधना ए मलिने ४६ थाय हवे फरसना प्रथम ८, फरसने विषे प्रति पक्षी ए गुण फरस न होय, बाकीना ६ ए फरस लावे वरण ५, रस ५ गंध २, संस्थान ५ एटले ते वीस थया ए एक फरसना वीस भेद आठ फरसना नेवीस तेवीस गणतां १८४ भेद थया एक वर्णना १००, रसना १००, सस्थानना १००, गंधना ४६, तेज रसना १८४, सर्वे मलीने ५३० थया एटले रूपी अजीवद्रव्यना ५३०, भेद थया अने अरूपि द्रव्यना ३० भेद एटले सर्वे अजीव मलीने ५६०, भेद थया ए सर्वे अशुद्ध व्यवहार नयना पन्न ए एटले अजीव त त्व कह्यो, हवे आश्रव तत्व ओलखावीये छिये एज आश्रव कहेता जे कर्मनु आववु थाय छे तेने आश्रव कहिये अने ते आश्रव शा थकी आवे छे अने तेनो हेतु कोण छे तेनु कारण दे खाडिये छिय हवे ए आश्रवने आववाने मूल हेतु च्यार छे उत्तर हेतु ५७ छे ते मूळ हेतुनां नाम, मिथ्यात्व १ अव्रत २ कषाय ३ जोग ४ तेमां मिथ्यात्वना ५ भेद छे, तेमा पहेलु अभिग्रहि मि थ्यात्व ते केने कहीए जे पूर्वे अज्ञानपणाने विषे कोइ अज्ञानी मत अथवा अज्ञानी गुरुना उपदेश थकी जे सांभल्यु छे, अने जे वस्तु ग्रहण करी छे, ते छोडे नहि कदापि कोइ सुगुरु मले ने घणी रीत करीने समजावे तो ए पण पोतानी हठ छोडे नहि लोह वाणियानी पेठे अहियां लोह वाणिआनो द्रष्टांत लखीये छीये.

वसतपुर नगरीने विषे धनदत्त १ धनसार २ धनवल्लभ ३ वसुहेण ४ एवे नामे चार वाणीया वसे छे ते चारे ने दोस्त दारीनो हक घणो छे, परंतु [illegible] ते ऐवा [illegible] यह विचार करयो के [illegible]

मीये नहि ने सुख पण होय नहि. माटे परदेश धन कमावा जइ
ये एम विचारीने चारे जण परदेश गया आगल जता एक दी-
वसना समाजोगे एक अटवीमा जतां रस्तो भूल्या ने आडा
मार्गे जाय छे, त्यां आगल जता एक लोढानी खाण आवी ते
वारे चारे जणे विचार करयो के लोढु ल्यो, आपणने खरची
मां खप लागशे एम विचारी चारे जणे लोढु लीधु, त्यां थकी
आगल चाल्या, त्यां कलाइनी खाण आवी ते वारे माहो माहे
केहेवा लाग्या के कलाइ ल्यो अने लोढु पडयु मुको, ते वारे त्रण
जणे लोढु पडयु मुकी कलाइ बांधी पण चोथो जे वज्रहिंग तेणे
कलाइ न लीधी, त्यारे त्रणे जणा केहेवा लाग्या के तु कलाइ ले
एटले आपणे जइये तोपण ते बोल्यो नहि एम घणीवार क
ह्यु त्यारे ते बोल्यो के तमारी रीत जोइने हु तो भेचक थयो छु
त्यारे त्रणे जणे पुछयु के तु शा माटे एवडु बोले छे ? ते बोल्यो
के तमे दगाखोर आदमी छो तेओ कहे तारी साथे शो दगो करयो ?
तेणे कह्यु के तमे लोढाना सगा न थया तेने त्यांथी लावीने अध-
वच नांखी दीधु तो तमे तेना भला न थया तो बीजाना शु भला
थशो ? ते वारे तेओ कहे के एमां काइ जीव नथी, के दगो करयो
एम घणी रीते कह्यु के तु कलाइ लाय पण कोइनो समजाव्यो स-
मज्यो नहि त्यांथकी आगल चाल्या एटले त्रांबानी खाण आवी
त्यां पण ते समज्यो नहि, पूर्वनी पेरे लोढु राखी रह्यो ने त्रांबु
लीधु नहि तेमज आगल जता रुपानी तथा सोनानी तथा सोले
जातना रत्ननी खाण आवी त्यां पण एणे कोइनु कह्यु मान्यु नहि
त्यारे सोलमी जे मणी रत्ननी खाण छे त्यां बेशीने धनमार प्रमुखे
कह्यु जे अमारे हवे आगल कमावा जवु नथी, केमके जे जोइये
ते धन [illegible] माटे अमे पाछा घेर जइशु, वास्ते समजीने

मणीरत्न ले ने लोह्नु मारवी दे एटले आपणे घेर जइये तो सर्व सुखीया यइये परन्तु ते वसुहिणे काइन्तु कह्यु मान्यु नहीं उलटा अवगुण बोल्या करयो. वली तेमणे कह्यु के घेर गया पछी तु मागीश तो अमथी अपाशे नहीं. इत्यादिक घणी तरेहथी समजाव्यो पण ते समज्यो नहीं. पछी चारे जण घेर आ वा तेमां त्रण जण मणीरत्न वेचाने करोडो सोनइयानो व्यवसाय करवा माडयो पालखी, मेना, घोडा, गाडी, चाकर वीगेरे मोटी ठकरात करीने वेठा ने वसुहिण तो हता तेवाने तेवा रह्या ते वारे गामना लोक तेने पूछे जे तमे चारे मित्र साथे गया हता ने त्रण धनवान थया ने तु कइ न लाव्यो ते शु ? त्यारे मोसम उत्तर आपे के ए त्रण दगाखोर छे कुशील माणस छे, विश्वास करवाजोग नथी एवो उत्तर करे तेथी गाममा एवी वार्त्ता प्रसिद्ध थइ के केटलाक कहे छे के एनो भाग त्रणे जणे आप्यो नहीं, केटलाक कहे छे के एण कमायो हतो ते त्रणे जणे मलीने वसुहीणनु पाडी लीधु, एम मुखे मुखे नोखी नोखी वार्ता प्रवर्त्ते, त्यारे गामना वे डाह्या समजु हता तेणे वसुहीणना सगा वाहालाने ठपको दीधो जे तम जेवा सगा अने ते बिचारा गरीबनु पेला त्रण जण खाइ गया तेनी तमे मदद करता नथी ए ठीक नहीं सारा सगा शा कामना छे ते वारे ते सगा वाहाला बोल्या जे शेठजी तमे अमने ठपको आप्यो ते ठीक छे पण अमने कह्या वगर शी मालम पडे त्यारे तेमणे कह्यु के ए गरीब शु केहवा आवे तमारे बोलावीने पुछवु जोइये ते वारे ते सगावाहाला भेगा थइने वसुहिणने बोलावीने पुछवा लाग्या के ताहारे शी हकीकत थइ तेणे जवाब दाधो के ए लुच्चा, दगाखोर, एवा आदमीनी वात करवामां काइ माल नथी सगाए कह्यु के लुच्चा प्रमुख जेवा हशे तेवाने अमे पोंहोचीशु पण तु अमने वात

कहे पण ते वात केंइ नहि घणो आग्रह करीने तेनी पासे वात कहेवडावी त्यारे माहेथी सार एवो नीकल्यो के एणे जे पूर्वे लोढु झाल्यु हतु ते छोडयु नहीं अने पेलाओए जे सार वस्तु दीठी ते लीधी असार दीठी ते नाखी दीधी एवु साभलीने जे सगा मल्या हता ते बोल्या के भाइ तारा कर्मनो वाक छे एमनो वाक नथी नाहक एमनो वाक शा वास्ते काढाडे छे जे तें लोढु झालीने हठ न मुकी तो तु दुखीयो थयो एमणे तो तने घणु समजाव्यो पण ते ना मान्यु एमा एमनो कांइ वाक नथी एटले जेम ते लोहवाणियो दुखियो थयो तेम प्रथम अज्ञानपणामा जे वस्तु झाली ते कोइ सुगुरु मलेथी ना छोडे तो ते चार गती ससारमा अनताकाल रखडे तेने अभिग्रही मिथ्यात्व कहिये. १

बीजु अणाभिग्रहि मिथ्यात्व कहेता तेने विषे हठवाद नहि तम श्रद्धा पण स्थिर नहि, सर्वेने देव जाणे कोण सरागीने कोण वीतरागी तथा कोण देवी देवला तथा सवने गुरु जाणे कोण निग्रथने कोण सग्रथ कोण आरभी, कोण अणारभी ए सवने वादे पूजे पण एने विषे सारा नरसानी खबर नहि गुण अवगुणनी परीक्षा नहि मुक्ति दायक सुगुरु तेने पण सरखा गणे सआरभि कुगुरु कुगति ना दातार तेने पण सरखा जाणे एटले तेने विषे जाणपणु कशु ए नहि एज मोटु अज्ञान ए बीजो भेद मिथ्यात्वनो जाणवो२ त्रीजो अभिनीवेशि मिथ्यात्व तेने विषे जाणीने खोटी हठ करवी केमके काइ प्रथम अज्ञानपणामा मृषा वचन नीकली गयु पछी समज्यामा आव्यु के आपणे वचन बोल्या ते मिथ्या छे परतु आपणे बोल्या ते काइ पाछु फरे नहि एम विचारीने वचन उपर अनेक युक्ति लगावीने तेने साचु करे कोनी पेठे के जेम आ गच्छ समाचारियो वाला नोखी नोखी समाचारियो बाधीने बेठा छे अने शास्त्रमा प-

ोपांग १५ वज्र ऋषभनाराच संघयण १६ सम चतुरस्र संस्था १७ शुभवर्ण १८ शुभगंध १९ शुभरस २० शुभफरस २१ अ लघुनामकर्म २२ पराघात नाम कर्म २३ उत्स्वास नामकर्म २ आताप नामकर्म २५ उद्योत नामकर्म २६ शुभ विहायो ग २७ निर्माण नामकर्म २८ देवतानु आवखु २९ मनुष्यनुं आ ३० तिर्यचनु आवखु ३१ तीर्थंकर नाम कर्म ३२ त्रसपणु बादरपणु ३४ पर्याप्तापणु ३५ प्रत्येकपणु ३६ स्थिरपणु ३७ शुभ ... कर्म ३८ सौभाग्य नामकर्म ३९ सुस्वर नाम कर्म ४० आदेनाम कर्म ४१ जस नामकर्म ४२ ए पुन्यना भेद कह्या

हवे पापना भेद लखीये छिये मतीज्ञानावरणी १ श्रुत ज्ञाना वरणी २ अवधि ज्ञानावरणी ३ मनः पर्यवज्ञानावरणी ४ केवलज्ञानावरणी ५ दानाअतराय ६ लाभा अतराय ७ भोगाअतराय ८ उपभोगाअतराय ९ वीर्यअतराय १० चक्षुदर्शनावरणी ११ अचक्षुदर्शनावरणी १२ अवधि दर्शनावरणी १३ केवलदर्शनावरणी १४ निद्रा १५ निद्रानिद्रा १६ प्रचला १७ प्रचलाप्रचला १८ थीणद्धी १९ अशातावेदनी २० नीचगोत्र २१ मिथ्यात्व २२ नरकनीगती २३ नरकनीआनुपूर्वी २४ नरकनु आवखु २५ कषाय २५ पूर्वे कह्या ते समजजो ५०, तिर्यचनीगति ५१ तिर्यचनी आनुपूर्वी ५२ एकेद्रीनीजाति ५३ बेरद्रीनी जाति ५४ तेरद्रीनीजाति ५५ चउरद्रीनीजाति ५६ अशुभविहायोगति ५७ उपघातनामकर्म ५८ अशुभवर्ण ५९ अशुभगंध ६० अशुभरस ६१ अशुभ फरस ६२ ऋषभ नाराच संघयण ६३ नाराच संघयण ६४ अर्धनाराच ६५ किल्का संघयण ६६ छेवट्ठ संघयण ६७ न्यग्रोध संस्थान ६८ सादी ...न ६९ वामन संस्थान ७० कुब्ज संस्थान ७१ हुडक संस्थान ... स्थावर नाम कर्म ७३ सूक्ष्म नाम कर्म ७४ अपर्याप्त नाम कर्म

७१ साधारण नाम कर्म ७६ अस्थिर नाम कर्म ७७ अशुभ नाम कर्म ७८ दुर्भाग्य नाम कर्म ७९ दुस्वर नाम कर्म ८० अनादेय नाम कर्म ८१ अजस नाम कर्म ८२ इति पाप तत्वना भेद एटले ए बे मलीने १२४ थया ते मध्ये वरणादिक ४ पुन्य तथा पाप बेमां गणाय छे माटे १२० प्रकृती थइ ते मध्ये तीर्थंकर गोत्र पण नाम कर्ममा आवी गयु अने अरिहत तो कर्म हणे तेने अरिहत कह्या छे पण कांइ कर्म बांधे तेने अरिहत कह्या नथी अने ए कर्मनु ज्यांहां आववु तेने आश्रव कहीये शुभ कर्म आवे तेने शुभ आश्रव कहिये तथा अशुभ कर्म आवे तेने अशुभ आश्रव कहिये एटले ए बने आश्रवज छे माटे तिर्थकर नामकर्म बांधवु ते पण आश्रवमां छे अने आश्रव छे ते सदाय तजवा जोग छे एटला माटे पुन्य पाप बने निपज्यां माटे समजु पुरुषने पुन्य पाप एके बछवा जोग नथी शादृष्टांते के जेम एक लींमडाने विषे लिंबोलीनो ठलियो छे ते कडवो छे अने लिंबोलीनो रस कांइ मिठाश सहित छे परतु बेमां दुर्गंध छे माटे समजु पुरुष खाता नथी तेम पुन्य अथवा पाप ए बने आश्रवज छे ते ज्ञानी पुरुषने आदरवाजोग न होय एटले पुन्य पापनु स्वरूप कह्यु

हवे बध तत्व ओलखावियें छिये, तेना चार भेद छे प्रकृतिबध १ स्थितिबध २ रसबध ३ प्रदेशबध ४ तेने लाडवाने दृष्टांते कहिये छिये प्रदेश छे ते लोटने ठेकाणे छे रस छे ते घीने ठेकाणे छे प्रकृति छे ते खाड तथा गोळ ने ठेकाणे छे, स्थिति छे ते तेनी मर्यादा छे, मर्यादा कहेतां आ लाडु आटलाकाल सुधी रहेशे, हवे गोळनो लाडु होयतो वायु हरता होय खाड तथा साकरनो लाडु होय तो गरमी हरता होय, तेम अहियां जेवो [illegible] बध तेवी तेवी शुभाशुभ प्रकृति उदय आवे

तथा जे रस छे तेनु कारण एउ छे के रस वधतो होय तो लाडवो न भावे तेना चार भेद छे एकठाणियो १ बेठाणियो २ त्रण ठाणियो ३ चारठाणियो ४ हवे ठाण कहेतां शु कहिये के जेम जे लिंमडानो रस छे ते स्वभावे तो कडवो छेज पण ते रस पांचशेर लेइने उकालिये ते चारशेर रहे त्यारे उतारीये त्यारे तेनी कडवाश घणी वधे तेज रस त्रणशेर रहे त्यारे उतारीये तो कडवाश अत्यत वधती जाय ने बशेर रहे त्यारे उतारिये त्यारे तेथी पण घणी वधे तथा शेर एक रहे ने उतारीये त्यारे कडवाश घणी वधी जाय, ते रसनी पासे पण जवाय नहि तेम अहियां एक ठाणिया रसनां जे कर्म छे तेनु तोडवु सुलभ पडे अने जे बे ठाणिया रसनां कर्म छे ते तोडवा दूर्लभ पडे ते थकी पण त्रण ठाणिया रसनां जे कर्म छे ते छेदवां अतिदुर्लभ पडे, तेथकी चउठाणिया रसनां जेकर्म छे ते छेदवा महा दूर्लभ थइ पडे अहियां रसपली छेदादिक विचार एकठाणियाथी चउठाणिया सुधि अनंता भेद छे तेनो विस्तार कर्म ग्रथनी टिकाथकी जाणजो हवे जे लाडवामा लोट एक शेर छे अने घी अडधो पाशेर छे ते लाडवाने भागता कांइ वार लागे नहि लाडवो बांधता वेराइ जाय तेम केटलाएक कर्म तो आवे छे तेम जाय छे तथा जे लाडवामां पाशेर घी छे ते लाडवो वले परतु हाथ अराडताज भागे तेम केटलाएक कर्म सहेज स्वभावथी अथवा सहेज कष्टथकी क्षय थाय, तथा जे लाडवामा अडधो शेर घी छे तेने हाथे करीने ज्यारे भागीये त्यारे भागे तेम एवां जे कर्म छे ते बाह्य तपादि कष्ट अथवा अल्पज्ञान थकी क्षय थाय तथा जे लाडवामा शेर पोणो घी छे ते लाडवो भागतां कठण पडे तेम तेवां जे कर्म छे ते सर्वथा ज्ञान ध्यानाविना अथवा अगे भोगवाविना जाय तथा जे लाडवामां शेरेशेर घी पडेलु छे ते लाडवो भागवो तो

वहूज कठण थइ पडे तेम तेवी जातनां जे कर्म तेने खरी शुकल ध्यानरुपी अग्नि लागे तोज बले अथवा अगे भोगवे ते द हाडेज जाय

गुरु—हे भद्र अमे जे निर्जरा कहि तेनु कारण सांभल के त्या अल्पज्ञान ध्यान कह्यु छे तेतो आत्म उपयोग होय तेने होय अने ज्यांहा आत्म उपयोग छे तेनां सर्वे कारज निर्जरामां कह्यां छे ते अपेक्षाए कह्यु छे बीजे प्रकारे वली जे सर्व जीवपूर्व कृतकर्म पोते भोगवीने खेरवे छे ने अकाम निर्जरावाळा अज्ञानपणे तप कष्ट करीने पूर्वकर्मने छेदे ने नवां कर्म बाधे ते श्री भगवतीजीमां कह्यु छे माटे ए अपेक्षा लेइने कह्यु छे परतु कइ आदरवा जोग नथी पूर्वे जे आश्रवमा कह्यु छे ते सत्य छे हवे जे कर्मनु बांधवु तेनी वर्गणा केटली थाय छे अने केटलां कर्म भेगा थयेथी लेवाजोग थाय छे तेनो विचार कहियें छीये तेनी विगतः—वर्गणाओ आठ छे तेना नाम उदारिक १ वैक्रिय २ आहारक ३ तेजस ४ भाषा ५ श्वासोश्वास ६ मन ७ कार्मण ८ हवे ते वर्गणानु मान कहिये छिये जेटला छुटा परमाणुआ छे ते अनता छे ते गणवा नहिं जे बे परमाणुआ भेळा थाय तेने द्वीप्र देशीखध कहिये जेना त्रण परमाणुआ भेळा थाय तेने त्रणुक खध कहिये एम एक वधते परमाणुए सज्ञा पण ते प्रमाणे नामनी कहेवी जेवारे नवपरमाणुआ भेगा थये सख्यात प्रदेशी खध कहिये ते यावत् अट्ठाणु आक उपराउपरिचडे तेनु नाम सिहरपलीका कहेवाय एटला परमाणुआ भेगा थाय तेने सख्यात प्रदेशी खध कहिये एटले जघन्य सख्याती खध नव प्रदेशी जाणवो उत्कृष्टो सख्याती खध सिहरपलीका प्रदेशी खध जाणवो मध्यस्थ सख्याती ... ख्याती भेद जाणवा जे उत्कृष्टो सख्याती खध

छे ते माहे एक परमाणुओ बीजो भले ते वारे असख्याती खध कहिये ते यावत् अनतामां एक उणो होय त्यां सुधी असख्यात प्रदेशी खध कहिये एटले असख्यात प्रदेशी खध मध्यस्थना अ सख्याती भेद छे तथा असख्याताना नव भेद पण करेला छे ते श्री विशेषावश्यक ग्रथ थकी जोजो तथा ते माहे एक प्रदेश भले थके अनत प्रदेशी खध कहिये ते अनत प्रदेशी खधना जघन्य थकी उत्कृष्टा सुधी जतां वचे जे रह्या मध्यस्थ तेना अनता भेद छे तथा नव भेद पण अनताना करेला छे ते पण विशेषावश्यक थकी जाणजो तथा ससारनी मांहिलीकोरे अभवी जीव अनता छे ते थोथे अनते छे ते थकी अनतगुणा प्रदेश मलीने खध बधाणो ते खध अनत प्रदेशी मध्यस्थमां गणाय एवो जे खध होय पण जीवने लेवा जोग न थाय शामाटे के अतिशे सूक्ष्म छे माटे जीव ग्रही शके नहिं ते ज्यारे बादरनी वर्गणामां होय त्यारे उदारिक वर्गणामां लेवा योग्य थाय एटले ए खध पण उदारिक वर्गणानो जाणवो ते थकी अनतगणा प्रदेश मलीने जे खध थाय ते वैक्रिय अने लेवा जोग थाय शामाटे के उदारिक करतां वैक्रियनी वर्गणा सूक्ष्म छे २ ते थकी अनत गणी आहारकनी वर्गणा एम अनुक्रमे एक एक थकी अनत गणी करतां सातमी मनोवर्गणा अनत गणी थइ जाय ते मनोवर्गणा क रतां अनत गणी कार्मण वर्गणा आठमी छे हवे ते वर्गणामां चार वर्गणा सूक्ष्म छे ने चार वर्गणा बादर छे तेमा प्रथम बादरनी व र्गणानां नाम गणाविये छीये उदारीक १ वैक्रिय २ आहारक ३ तेजस ४ सुक्ष्मनां [illegible] १ श्वासोश्वास २ मन ३ कार्मण ४ हवे ते बादर सू[illegible] एटले बादर वर्ग [illegible] बादरना

२० गुण ते वर्ण ५ गध २ रस ५ फरस ८ ए २० वीस, सूक्ष्मना १६ गुण ते वर्ण ५ गध २ रस ५ फरस ४ एसोल एवी रीते जे वर्गणाओ कर्मनी आवी जीवने मले छे तेनो वध पडे तेने वधतत्व कहिये तेनो विस्तार विचार कर्म पयडी ग्रथनी टीका थकी जाणजो एटले ए सर्वे अजीवतत्वछे शामाटे के अजीवना पांच भेद पूर्वे कह्या छे ते मध्ये पुद्गलास्तिकायरूपी द्रव्य एक कह्योछे ने वाकीना चार अरूपी अजीवने कइ नडता नथी अने एक पुद्गल द्रव्य जीवने नडे छे त्यारे ते पुद्गलनु जीवने आवीने मलवु तेने आश्रव कह्यो तेमां शुभ पूद्गल आवे तेने शुभ आश्रव कहिये तेने लोकमां प्रसिद्ध-पणे पुन्य एवु नाम छे अशुभ आवे तेने अशुभ आश्रव कहिये ते लोकमां प्रसिद्ध पाप एवु नाम छे ते जीव साथे ते कर्मने वधावुं तेने वध कहिये ते जे कर्मनो वध जीव साथे थयो तेनी स्थि-तिनु मान कहिये छीये ज्ञानावरणीनी त्रीस कोडा कोडी सागरोपमनी स्थिति छे तथा मोहनी कर्मनी सीतेर कोडा कोड सागरोपमनी स्थिति छे तथा दर्शनावरणी तथा वे-दनीनि त्रीश कोडाकोड सागरोपमनी स्थिति छे तथा आयु-कर्मनी तेत्रीस सागरोपमनी स्थिति छे तथा तेत्रीस लाख तेत्रीस हजार त्रणसें ने तेत्रीस एटला पूर्व तथा तेवीस लाख करोड अने वावन हजार करोड वरसनी स्थिति उत्कृष्टी छे अने नामकर्म तथा गोत्रकर्म ए वेनी वीसकोडाकोडी सागरो पमनी स्थिति छे तथा अंतराय कर्मनी त्रीसकोडाकोड सागरो पमनी स्थिति छे इत्यादिक अजीव द्रव्यना विचार भगवती प्रमुखने विषे थकी जाणजो एटले ए जीवना पांचे तत्व कह्यां, हवे जीव (कहिये छीये जीव केहेनां जेहेना विषेचेतना तेना छ लक्षण छे तेनां नाम ज्ञान

चारित्र ३ वीर्य ४ तप ५ उपयोग ६ ए छ लक्षण सहित सर्व जीव छे कोण सिद्ध अथवा ससारी एटले जीवनी सत्ता जोतां सिद्ध तथा ससारी एकजरूप छे तोप पण अशुद्ध व्यवहारनयनो पक्ष लेइने जीवना भेद कहु छु ते जीवना ५६३ भेद छे ते चार गतिना मलीने प्रथम तिर्यंचनी गतिना ४८ भेद छे, नरकनी गतिना १४ भेद देवतानी गतिना १९८ भेद छे मनुष्यनी गतिना ३०३ भेद ए सर्वे मलीने ५६३ भेद थया ते प्रथम तिर्यंचनी गतिना ४८ भेद विवरिने कहिये छीये, पृथ्वीकाय सूक्ष्मने बादर, एटले सूक्ष्म केहेता चरम चक्षुए दीठामां ना आवे एतो ज्ञानीना दीठामां आवे पण ए सूक्ष्म चउद राजलोकमा व्यापीने रह्या छे, ते जेम पृथ्वीकायना सूक्ष्म कह्या तेम पाचे स्थावरना समजजो बादर पृथ्वीकाय जे आ धरती तथा पाहाड पर्वत सोनु रुपु प्रमुख ते सव बादर पृथ्वी कहिये ए सूक्ष्म बादर बे पृथ्वीना पर्याप्ताने अपर्याप्ता गणीये एटले चार भेद थया

शिष्यवाक्य'—पर्याप्ता अपर्याप्ता एटले शु ?

गुरुवाक्य—हे भद्र जीव मात्र पर्याप्ति तथा प्राणने धारण करे तेना नामने विवरा सहित कहु ते सांभल प्रथम पर्याप्तिना नाम आहार पर्याप्ति १ शरीर पर्याप्ति २ इद्रि पर्याप्ति ३ श्वासोस्वास पर्याप्ति ४ भाषा पर्याप्ति ५ मन पर्याप्ति ६ ए छ पर्याप्ति हवे तेनो अर्थ, आहार पर्याप्ति केहेतां जे गतिने विषेथी चवीने आव्यो तेज समे पोत पोतानी गतिमां जइने उपजे कदापि वक्र गति होय तो बे समये अथवा त्रण समये तथा चोथे समये जइने उपजे तेनु कारण आकाशनी श्रेणीना विभागनु छे ते बहु श्रुतना मुख थकी धारी लेजो हवे ज्यां सुधी रस्तामां ` त्यां सुधी आहार पामे नहिं जे वारे पोतपोतानी गतिमां जइने

उपजे तेज समे आहार ले १ ते आहार लेइने शरीरपणे परिणमावे एटले इहां एक अतरमूहूर्त्ते शरीरपर्याप्ति बीजी थाय, एमज समे समे आहार करीने शरीरनी पुष्टी करतां इंद्रि प्रगट करे त्यांहां पण एक मुहूर्त्त थाय तेने इंद्रीपर्याप्ति कहीए ३ पछी अतर मुहूर्ते श्वासो श्वास पर्याप्ति बधाय एटले श्वास उचो लेइ नीचो मुकवो तेने श्वासोश्वास पर्याप्ति कहीए ४ त्यारे पछी अतर मुहूर्त भाषा पर्याप्ति थाय एटले भाषानु उचारण थाय ५ त्यारपछी अतर मुहूर्ते मन पर्याप्ति थाय एटले मनथकी विचारवु तेने मन पर्याप्ति कहीए ६ ए छ ए पर्याप्ति मलीने एक अतरमुहूर्त कहीए

शिष्यवाक्यः—के उएमां अतर मुहूर्त अतर मुहूर्त्तनो आंतरो कह्यो ने छ नु मलीने पण अतरमुहूर्त कह्यु तेनु शु कारण

गुरुवाक्यः—मुहूर्त एवो शब्द बे घडीनो छे तेमां थकी उणु तेने अतरमुहूर्त कहीए जयणाथकी नवसमयना कालने पण अतर मुहूर्त कहीए उत्कृष्ठ बे घडीमां समय उणु तेने पण अतरमुहूर्त कहीए एटले मध्य अतर मुहूतना असख्याताभेद छे ते माटे पेहेला अतरमुहूर्त जे पर्याप्तिना बांधवाना एकएक जे कह्या ते सर्वे जघन्यथकी तथा मध्यस्थ लीजीए तथा पछाडी छ ए मलीन एक जे कह्यु ते उत्कृष्ठ कहीए हवे ए पर्याप्ति जेने जेटली छे ते कहीए छीए एकेंद्री केहेतां पांचे थावरने प्रथमनी चार पर्याप्ति होय बेरद्री, तेइंद्रि तथा चोरद्री तथा असन्नि पचेंद्री एटलाने पांचे पर्याप्ति होय तथा सन्नि पचेंद्रीने छ पर्याप्ति होय–हवे प्राणदसनां नाम श्रोतइंद्रीः १ चक्षुइंद्री २ घ्राणइंद्रीः ३ रसइंद्री ४ फरसइंद्रीः ५ मनबलः ६ वचनबल ७ कायबलः ८ स्वासोस्वासः ९ आवखु' १०

शिष्यवाक्य —श्वासोश्वासने पर्याप्तिमां गण्यो हतो ने प्राणमां केम गणोछो

गुरुवाक्यः—तिहा श्वासोश्वास पर्याप्ति बांधवा आशरे गणी हती अने इहां भोगववा आश्रित कही छे जेम कोइ पुरुष आवी रीते करी लाख रुपैया कमाणो, अने ते धणीए आवी रीते करी लाख रुपैया भोगव्या ते कमायानो ने भोगव्यानो जेम फेर छे तेम इहां पर्याप्ति प्राणनो फेर समजवो एकेंद्रीने चार प्राण फरस इंद्री १ कायबल २ श्वासोश्वास ३ आवखु बेइंद्रीने छ प्राण, फरस इंद्री १ रस इंद्री २ वचनबलः ३ कायबल ४ श्वासोश्वास ५ आवखु ६ तेरंद्रीने सात प्राणः फरस इंद्री १ रस इंद्री २ घ्राण इंद्री ३ वचनबल ४ कायबल ५ श्वासोश्वास ६ ने आवखु ७ चौरंद्रीने आठ प्राण, फरस इंद्री १ रस इंद्री २ घ्राण इंद्री ३ चक्षु इंद्री ४ वचनबल ५ कायबल ६ श्वासोश्वास ७ ने आवखु ८ समुर्च्छीम् पचेंद्रीने नव प्राण. फरस इंद्री १ रस इंद्री २ घ्राण इंद्री ३ चक्षु इंद्री ४ श्रोत इंद्री ५ वचनबल ६ कायबल ७ श्वासोश्वास ८ आवखु ९ सन्नि पचेंद्रीने दस प्राण ५ इंद्री मनबल ६ वचनबल ७ कायबल ८ श्वासोश्वास ९ ने आवखु १० हवे जे अपर्याप्ता छे तेना बे भेद करण अपर्याप्ता १ लब्धि अपर्याप्ता २ एटले करण अपर्याप्ता कहेतां ज्यां सुधी त्रीजी इंद्री पर्याप्ति पुरी न थइ होय त्यां सुधी करण अपर्याप्ति कहीए ने जेने इंद्री पर्याप्ति पूरी थइ तेने करण पर्याप्ति कहीए अने लब्धि अपर्याप्ती केहेतां चार तथा छ जेने जेटली पर्याप्ती लाधी छे तेने तेटलीमां अधुरी होय तेने लब्धि अपर्याप्ती कहीए अने गतिनी मर्याद प्रमाणे जेने जेटली हती तेटली पर्याप्ती पुरी थइ तेने लब्धि पर्याप्ती कहीए जे जे करण अपर्याप्ती क्ह्यो ते जीव इंद्री पर्याप्ति बांध्या वगर कोइ जीव मरेज नही जे जीव मरे ते करणपर्याप्ति पुरी कर्या पछी जे अपर्याप्ती मरे ते लब्धि अपर्याप्ती कहेतां चार बालाने चारमांथी

उणी तेथी पांचवालाने पाच थकी उणी तथा छ वालाने छ थकी उणी होय ने जे मरे तेने लब्धि अपर्याप्ती कहीए तथा ज्यां सुधी जेने जेटली पर्याप्ति छे ते बाधी नथी रह्यो, त्यां सुधी पण तेने अ-पर्याप्ती कहीए जेने जेटली पर्याप्ति छे तेटली बांधी रह्यो तेने प-र्याप्तो कहीए

शिष्यवाक्य—के स्वामी मने पूर्वे एक वचनमां शका रही छे के तमो ए विगलेंद्रिने विषे वचनवल कह्यु ते बेंद्रि तथा तेंद्रिने विषे कांइ शब्दपणु जणातु नथी.

गुरुवाक्य —हे भद्र ! बेंद्रि तथा तेंद्रिमा वचनवल कह्यु ते सत्य छे परतु तने सांभल्यामा ना आवे, तथा तने शका पडी परतु जेने रस इद्रि थइ तेने वचनवल होयज तथा तने प्रत्यक्ष प्रमाणथी बतावु छु के शखला जलो एल प्रमुख ए जीव सर्वे बेंद्रि छे, तथा कीडी मकोडी कानखजुरा प्रमुख जीव तेंद्रि छे तथा भमरा भमरी वींछी प्रमुख जीव चौरेंद्रि जे त मध्ये भमरा भमरी तो प्रत्यक्ष बोले ते समजाय छे. बेंद्रि तथा तेंद्रिनी भाषानी शक्तिमद छे तथा सांभलवामां नहि आवे शा द्रष्टाते के जेम कोइ गर्भने विषे आवीने उपन्यो जे जीव ते जन्म अवस्थर पेहेलां तेने वचन वलनी शक्ति छे तो जन्मीने तरत बोले छे जो पूर्वे शक्ति न होत तो अहिंआं पाधरी शक्ति आवत नहि अने तेने वचनवल गर्भमां आव्यो त्या एक अतर मुहूर्तमा बधाणु छे परतु नव महीना सुधी उच्चारणनी शक्ति ना आवी तेम इहा बेंद्रि आदिक जीवने वचनवलनी शक्ति छे परतु उच्चारण स्वरूप शक्ति नथी हवे जे पृथ्विकायना जे सूक्ष्म तथा बादर तथा पर्याप्ता तथा अपर्या-

४ तथा कहेवां पाणी वना बादर ८ तथा सूक्ष्म

बादर आब प्रमुख सूक्ष्म ते चौदराज लोक

पर्याप्ता ७ अपर्याप्ता ८ तथा तेउकाय केहेता जे अग्निकाय तेना बादर ९ तथा सूक्ष्म १० बादर अग्नि जे काष्टादिकनो अढी द्वीपने विषे सूक्ष्म अग्निकाय केहेता चौदराज लोक व्यापी पर्याप्ता ११ अपर्याप्ता १२ वायुकाय केहेतां जे वायरो वाय छे ते बादर १३ तथा सुक्ष्म १४ पर्याप्ता १५ अपर्याप्ता १६ तथा वनस्पतिकाय तेना बे भेद प्रत्येक १ साधारण २ प्रत्येक केहेतां एक शरीरे एक जीव होय तेने प्रत्येक कहिए एटले आंबा लींबडा प्रमुख झाड वेल गुच्छा प्रमुखने विषे थडनो तथा डाला तथा त्वचा तथा पान फल फूल एक एको जीव होय ते मध्ये फुलनी जेटली पांखडी तेटला जीव गणवा तेनो विस्तार पन्नवणा सूत्रथी जाणजो ते प्रत्येक वनस्पतिना पर्याप्ता १७ अपर्याप्ता १८

हवे साधारण वनस्पतिना बे भेद बादर तथा सूक्ष्म बादर जे बत्रीश अनतकाय एटले जेम कद प्रमुख सर्व जाणवा तेमां एक शरीरे अनता जीव रह्या छे ते दृष्टिगोचर दीठामां आवे माटे तेने बादर कहीये तेनु नाम बादरनिगोद पण कहिये तेना पर्याप्ता १९ ने अपर्याप्ता २० हवे सूक्ष्म साधारण वनस्पतिनो विचार कहीये छीये तेनु नाम सूक्ष्म निगोद पण कहीये ते चौदराज लोकमां व्यापीने रहेल छे, तेनु स्वरूप किंचित् मात्र कहिये छीये, एक आगलने मान आकाशनु ग्रहण करिये तेटला आकाशना असख्याता भाग करीये ते माहेला एक भागने विषे असख्याता आकाश प्रदेशे छे ते माहेला एक आकाश प्रदेशे एक गोलो छे एक गोलामां असख्याता निगोद छे एक निगोदमा अनताजीव छे ते जीवनां मान केटलां छे के अतित कालना समय गया, अनागत कालना जेटला समय आवशे तेथकी अनतगुणा जीव एक निगोदमां छे अतित अनागत कालना समयनो काइ पार पामीये नहिं ते

पण अनता छे तेथकी पण अनताजीव एक निगोदमां छे ते कोइ काल ते निगोदनो पार पामिये नहिं

शिष्यवाक्य–हेस्वामी! ते निगोद खाली केम न थाय सदाप-काल मोक्षनो मार्ग तो चालतो छे माटे ए नीगोद कोइ काले पण खाली थइ जवी जोइये काइ नवा जीव तो उत्पन्न थताज नथी अने जे जीव मांहिथी गया ते पाछा आवता नथी तो घणा जी-व छे ते घणेकाले खाली थशे जेम एक बाजरीनो कोठार भरे-लो छे ते मध्ये नवी बाजरी भरश नहि अने शांणेथी काढवा मां डीशु तो ते कोठार खाली थशे के नहि अपितु थायज, अथवा मोट्ठ एक सरोवर पाणीए भरेलु छे अने नवी आवक आववानु बध कर्यु छे ने तेमांथी माणस तथा जानवरे पीवा मांडयु ते खाली थाय के नहिं अपितु खाली थायज तेम ए निगोदना जीव घणे-काले खुटया जोइये.

गुरुवाक्य–हे भद्र! जे अनागतकालना समय ते थकी तथा अतितकालना समय थकी अनत गणा जीव एक निगोदमां छे एटले समये समये अकेको जाय तोपण खाली न थाय तथा बे तथा त्रण तथा सख्याता अकेके समे मुक्ति जाय तोपण ए नि गोद खाली थाय नहि अने अकेके समये राश बधी अकेको तो मोक्षे जाय नहिं केमके वच्चे विरह काल पडे अथवा एक समे एक-सोने आठ मोक्षे जाय ए थकी अधिक तो मोक्षे जवानो अधि-कार छेज नहि अने एटला मोक्षे जायतो छ मास सुधी कोइ मोक्षे जाय नहिं एवो विरहकाल कह्यो छे तेथी एक निगोद पण खाली थाय नही तथा जे कोठार तथा सरोवरनु द्रष्टांत दीधु ते इहां युक्त नथी इहां हु दृष्टांत देउ ते सांभल. जेम समुद्रनु पा-णी दिन-मध्ये लाखो करोडो माणस जानवर भरे ढोले वावरे

तो पण समुद्रनु पाणी कोइ दिन आछु थवानु छे ? तेम ए नि
गोदना जीव पण कोइ दिन ओछा थवाना छे नही एवा एक नि
गोदमां एटला जीव छे के खुटे नही तो एवी असख्याती निगोदो
एक गोलामां छे एवा गोला चौदराजना जेटला आकाश प्रदेश
तेटला ए गोला छे तो ए जीवनु थालु के दहाडे खाली थाय हवे
जे ए निगोदना जीवने अत्यत मांहो मांहे सकडाशथी महाकष्ट
भोगवता थका मरे छे एक श्वास उचो लेइने नीचो मुके एटला
मां सत्तरवार जन्मीने मरे अढारमी वारनो जन्मे एटले २५६ आ
वळीनु एनु आवखु छे एम जन्म मरणनां महा दुःख ते भोगवे छे
ते दु खनु मान सक्षेप थकी कहिये छिये

जे सातमी नर्कने विषे महा दु ख छे तेमां पण अपयठाणना
मा वचलो नरकावासो छे तेनु दु'ख अत्यत आकरु कह्यु छे
त्यां आवखु तेत्रीश सागरोपमनु छे ते तेत्रिश सागरोपमना
जेटला समय थाय एटला फेरा तेत्रिश सागरोपमने आवखे सा
तमी नरकने विषे एक जीव उपजे ते दु ख सर्वे भेगु करिये ते
थकी अनतगणु दु ख एक समये निगोदना जीवने छे, इत्यादिक
विस्तार सर्वे पन्नवणा तथा भगवती थकी जाणजो एटले ए सा
धारण वनस्पतिना बे भेद सूक्ष्म १९ बादर २० पर्याप्ता २१
ने अपर्याप्ता २२ एटले ए एकेंद्रिना बावीश भेद थया, हवे
विगलेंद्रिना ६ भेद देखाडे छे बेंद्रि १ तेंद्रि २ चौरेंद्रि ३
ए त्रणेना पर्याप्ता अने अपर्याप्ता एटले ए छ भेद थया
एटले एकेंद्रि सुधा २८ भेद थया हवे तिर्यंच पचेंद्रिना
वीश भेद कहीये छीये ते मध्ये प्रथम बे भेद २, गर्भज
१, समुर्छिम २, ते मध्ये गर्भजना पांच भेद जलचर
१ थलचर २ खेचर ३ उरपरि ४ भुजपरि ५ जलचर कहेतां मच्छ

कच्छादिक, थलचर कहेतां पारेवु तथा समली प्रमुख उरपरि क- हेतां सर्प प्रमुख, भुजपरि कहेतां नोलिया प्रमुख, ए पांचेना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता ए दश भेद गर्भजना कह्या गर्भज कहेतां माता पिताना जोगथी पेदा थाय तेने गर्भज कहिये तेथकी वि- परित माता पिताना जोग विना माटी पाणी प्रमुखथकी उत्प- न्न थाय तेने समूर्छिम कहिये ते समुर्छिमना पण दश भेद जेम गर्भजना कह्या तेम जाणवा एटले तिर्यंच पचेंद्रिना वीश भेद थया, पूर्वेना माहे घालिये एटले ४८ भेद थया एटले तिर्यंचनी एक गति कहेवाणी. हवे नारकीना १४ भेद ते कहिये छिये ते ना- रकीना नाम, घमा १ वशा २ सेला ३ अजन ४ रिट्टा ५ मघा ६ माघवति ७ ए सात नरकना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मलीने १४ भेद थया नरक तिर्यंच बन्ने गति मलीने ६२ भेद थया

हवे देवताना १९८ भेद कहिये छिये, तेनां नाम भुवनपति १ व्यंतर २ ज्योतिषी ३ वैमानिक ४ ते मध्ये प्रथम भुवनपतिनां नाम कहिये छिये, असुर कुमार १, नाग कुमार २, सुवर्ण कुमार ३, अग्नि कुमार ४, द्वीप कुमार ५, उदधि कुमार ६, दिशी कुमार ७, वायु कुमार ८, विद्युत कुमार ९, स्तनित कुमार १०, तथा परमाधामी १५

शिष्यवाक्य—स्वामि ए परमाधामी देव ते देवनी चार जाति- मां कइ जातिना छे ?

गुरुवाक्य—भुवनपतिनी दश निकाय महिली प्रथम असुर कुमार निकायना छे हवे ए भुवनपतिना २५ भेद थया हवे व्यंतर तथा वाण व्यंतरना सोल भेद कहिये छिये तेनां नाम अणपन्नि १, पणपन्नि २, इसी वादी, ३, भूतवादी ४, कंदित ५, कोहंड ६, महा [illegible] ८, जक्ष ९, पिसाच १०, भूत ११, राक्षस

१२, किन्नर १३, किंपुरुष १४, गधर्व १५, शाम १६, ए सोळे व्यतरनी काय. हवे तिर्यंच जृभक देवना दश १० भेद कहिये छिये तेनां नाम अणजृमक १ पानजृभक २ वस्त्रजृभक ३ लेणजृभक ४ पुप्पजृभक ५ फलजृभक ६ पुप्पफलजृभक ७ सयणजृभक ८ विद्या जृभक ९ अवियतजृभक १०

एटल ए तिर्यचजृभकनां दश नाम कह्यां ए भेद व्यतरनि काय माह जाणवा एटले भुवनपति तथा व्यतरमलीने एकावन ५१ भेद थया हवे जोतिषीना दश भेद कहीए छिए चद्र १ सूरज २ ग्रह ३ नक्षत्र ४ तारा ५ ए पांच अढीद्वीप माहे छे ते चल छे ने अढीद्वीप बहारला ते पांच स्थिर छे एटले जोतिषी बे ए मलीने दश भेद थया, एटले भुवनपति तथा व्यतर तथा जोतिषी मलीने ६१ एकसठ भेद थया, हवे कल्पवासी तथा कल्पातित ए बेना ३८ भेद कहिए छीए ते मध्ये कल्पवासी देवना ३ भेद छे किल विषिया १ देव लोक २, ने लोकांतिक ३, ए त्रण भेद, ते मध्ये प्रथम किल विषिया कहिये छिये प्रथम त्रण पल्योपमना आवखाना सुधर्म कल्प नीचे रहे छे १, बीजो त्रण सागरोपमना आवखा नो धणी त्रीजा देव लोकनी नीचे रहे छे २, तथा त्रीजो तेर सा गरोपमना आवखानो धणी छठा कल्पना नीचे रहे छे ३, एटले किलविषिया कह्या हवे बार देव लोकनां नाम कहिये छिये सु धर्म दवलोक १, इशान देवलोक २, सनत् कुमार देवलोक ३, माहेंद्र दवलोक ४, ब्रह्म देवलोक ५, लन्तिग देवलोक ६, महा शुक्र देवलोक ७, सहस्रार दवलोक ८, आनत देवलोक ९, प्राणत देवलोक १०, आरण देवलोक ११, अच्युत देवलोक १२, एटले ए देवलोकनां नाम कह्यां हवे नव लोकांतिकना नाम सारस्वत १ आदित्य २ वन्हि ३ अरुणा ४ गदतोय ५ तुषित ६ अव्याबाध ७

आग्नेय ८ रिठाय ९ ए लोकांतिक कह्या एटले किलविखिया ३, देवलोक १२, लोकांतिक ९, ए त्रण मलिने चोविश भेद थया ?

शिष्यवाक्य—भगवान किल विषिया ते शु कहिये.

गुरुवाक्य—हे भद्र ! जेम मनुष्यलोकने विषे चंडाल भंगिया प्रमुख जाति छे तेम देवलोकने विषे किल्विषियानी जाति छे जे कोइ अहिया चारित्र धर्म थकी तथा आत्म धर्म थकी भ्रष्ट थइने पोतानो मत चलावे तथा पूजावाने अर्थे कष्ट क्रिया तप जप विशेष करे, मत जूदो पाडे, ते घणी कष्ट थकी पुन्य उपार्जीने किल-विषीयो देव थाय, परंतु आत्म धर्मनो घातक माटे नीचो देवता थाय, जेम जमालि किलविषियो थया तेम जाणवु तथा जे लोकां-तिक छे ते पांचमा देवलोकने विषे नव कृश्नराजि छे तेने विषे कृश्न राजि प्रत्ये विमान छे ते नवे विमानने विषे जे जे उत्पन्न थाय ते देवने लोकांतिक देव कहिये, ते सर्वे भवि होय हवे क-ल्पातित तेना बे भेद ग्रैवेयक तथा अनुत्तर विमान, ते मध्ये प्रथम ग्रैवेयक कहिये छिये, सुदर्शन १ सुमतिबध २ मनोरम ३ सर्वतो-भद्र ४ विशाल ५ सुमणस ६ सुमनस ७ प्रियंकर ८ आदित ९ ए नवे ग्रैवेयकना नाम कह्या

हवे अनुत्तर विमानना नाम कहिए छिए, विजय १ विजयंत २ जयंत ३ अपराजित ४ सर्वार्थसिद्ध ५ एटले ए सर्वे म-लीने कल्पातितना चौद भेद थया तथा कल्पवासीना २४ भेद सर्वे मलीने वैमानीकना ३८ भेद थया पूर्वली त्रणे निकायना देवना ६१ भेद मांहे नाखीए ते चारे चारे नीकाय मली नवाणु भेद थया ९९ ते नवाणु पर्याप्ता अने नवाणु अपर्याप्ता ए १९८ भेद देव गतिना थया पूर्वनी बे गतिना ६२ भेद माहे घालीए एटले त्रण गतिना २६० भेद थया हवे मनुष्यनी गतिना भेद कहिए

ने अडधो द्विपमांहे रह्यो, तथी पुखरार्ध कहेवाणो एटले मनुष्य लोकने रहेवाना अढीद्विपछे जंबुद्विप १ धातकीखंड २ पुखरार्ध ते अडधो एटले ए मानुष्योतर पर्वतेसिमा मनुष्यनी जन्म मरणनी थइ चुकी, ते थकी बहार मनुष्यनु जन्म मरण न होय हवे अकर्म भूमिना क्षेत्रनां नाम हेमवत ५ हरिवर्ष ५ देवकुरु ५ उत्तरकुरु ५ रमणिकवास ५ अरणकवास ५ ए त्रीश क्षेत्र ते मध्ये जंबुद्विपमा छ क्षेत्र, ए क्षेत्र अकेका लाधे धातकी खंडना पूर्व पश्चिम थइने बबे क्षेत्र एटले १२ क्षेत्र लाधे पुखराअर्धना पूर्व पश्चिम थइने बबे क्षेत्र एटले १२ क्षेत्र लाधे एम अढी द्विपना थइने ३० क्षेत्रलाधे एटला अकर्म भूमिना कह्या हवे अंतरद्विपना ५६ क्षेत्र बतावीये छिये, जे जंबुद्विपनोलघुहिमवंत पर्वत भरतक्षेत्रनी सिमाए छे तेनी बेदाढाओ पूर्वदेशमा गइ अने बेदाढाओ पश्चिम देशमा गइ तेम ऐरव्रतक्षेत्रनी सिमानोशिखरि नामापर्वत तेनी पण बेददाढोपूर्वे गइ तथा बेदाढाढो पश्चिमे गइ, ते बन्नेपर्वत सोसोजोजन उंचा छे हेमवतपर्वतनी इशान कोणनी दाढा उपरे ते जगतिना कोट थकी ३०० जोजन जइए त्यारे पेहेलोद्विप एकरुकनामा आवे, ते समुद्र थकी अधर ते दाढाउपर छे ते द्विप त्रणसें जोजन लांबोपोहोलो छे ते द्विपनीज गतिथकी आगल ४०० जोजनजइए त्या बीजोद्विप हेकरणनामाआवे, ते द्विप चारसें जोजन लांबोपोहोलो छे, तेनी पेली कोरनी जगतिथकी ५०० जोजनजइए त्यारे त्रीजोद्विप आदरसमुखनामा आवे, ते ५०० जोजन लांबोपोहोलोछे, तेनी पेहेलीकोरनी जगतिथकी छसेंजोजन ६०० जइए त्यारे चोथोद्विप हेकरणनामा आवे, ते छसें ६०० जोजन लांबोपोहोलोछे, तेनी पेहेलोकोरनीज गतिथी सातसें ७०० जोजनजइए त्यारेपांचमोद्विप असवकरणनामे आवे, एद्विप ७०० जोजन लांबोपोहोलोछे, तेनीपेलीकोरनी जगतिथी

८०० जोजनजइए त्यारेउहांद्विप उल्कमुखनामाआव, ने आउसें ८०० जोजन लांबोपोहोलोछे, तेनीपेलीकोरनी जगीतथी ९०० जोजन जइए त्यारेसातमोद्विप घणदंतनामेआवे ते ९०० जोजन लांबोपोहोलोछे, ते सर्वेनीपरथी त्रणगुणीझझेरीजाणवी, जेम ते इशानकोणनी दाढाउपरसातद्विपकह्या, तेम हेमवतपर्वतनी अग्निकोणनीदाढाउपर सातद्विपजाणवा तेनां नाम अभासी १ गजकरण २ मेढमुख ३ गजमुख ४ सीहकरण ५ मेघमुख ६ लुसदंत ७ ए साते द्विपनो विचार बाकी पूर्ववत जाणवो, तथा हेमवतपर्वतनीपश्चिम दिशाना समुद्रमाहे नेरत्यकोणनी दाढाउपरे जे सातद्विप छे तेनां नाम कहीए छीए, तेसाणी १ गौकरण २ गोमुख ३ सीहमुख ४ अस्करण ५ वीजुतमुखकरण ६ नीगुढदंत ७ बाकीसर्वपूर्ववत तथा तेहीज हेमवतपर्वतनीदाढा पश्चिमना समुद्रेवायव्य खूणे, ते उपरसात द्विपछे, तेनां नाम लांगुलीक १ सकुलीकरण २ गोमुख ३ आधरमुख ४ करणपरवारण ५ वीदुदंत ६ सुधदंत ७ एसातद्विप हेमवत पर्वतनी पश्चिमदिशानी वाव्यकोणनीदाढाउपरे एटले हेमवतपर्वतनी चारदाढाउपरे सर्वे मलीने २८ द्विप थाय तेम सिखरीपर्वतनी पूर्व पश्चिमनी चारदाढाउपरे एने एज नामना २८ द्विपछे एटले ए बे मलीने उप्पन द्विप थया तेने अतरद्विपकहीए एटले ए सर्व मलीने मनुष्यने उपजवानां १०१ क्षेत्र थया, ने एकसोने एक क्षेत्रना मनुष्यना गर्भजना बे भेद पर्याप्ता १ अपर्याप्ता एटले २०२ भेद थया तथा १०१ असज्ञि मनुष्य अपर्याप्ताज मरे माटे तेनो एकज भेद लाधे एटले ३०३ भेद मनुष्यना थया ने २६० पूर्वे त्रण गति कही तेना ए चार गति मलीने सर्वे भेद ५६३ थया एटले ए अशुद्ध व्यवहारथकी जीवना भेद देखाड्या हवे जीवत्वपणानो भाव देखाडे छे एटले जीवत्व ते चेतना लक्षण कहीए

एटले चार सज्ञा सर्वे जीवने विषे लाधे तेना नाम, आहारसज्ञा १ भयसज्ञा २ मैथुनसज्ञा ३ परिग्रहसज्ञा ४ ए चार सज्ञाथकी रहित कोइ ससारी जीव होय नहि

शिष्यवाक्य —हे प्रभु एकेंद्रीने विषे सज्ञा चार क्या दीसे छे

गुरुवाक्य —हे भद्र उपयोग दइने जुवे तो एकेंद्रीमा पण चार सज्ञा लाधे, जेम वनस्पति छे ते पाणी मूलथकी लेइने शिखाए पहोंचाडे छे, तो ए प्रत्यक्ष आहार लीधो के नहि ? तथा भयसज्ञा लज्जालु झाडने विषे छे के कोइ पुरुष हाथ अराडे तो सकोचाइने नमी जाय, तथा मैथुनसज्ञा खजुरी प्रमुखने विषे छे जे नरनो गेर चढे त्यारे खजुरी फले त्या सुधी खजुरी फले नहि, तथा परिग्रह सज्ञा जे काकडी प्रमुखना वेला पोताना फलने पोते ढाकीने रहे छे, तथा राता पुवाडीयाना मूल ज्या धरतीमा निधान होय त्या वींटाइने रहे तेम एकेंद्रिने विषे पाच थावरने ए चार सज्ञा होयज, बादर द्रष्टि गोचर कोइकनु आवे, शाथकी के ए थावरने तेनु कर्त्तव्य पोतानी ज्ञान बुद्धियकी समजवामा आवे पण ए चार सज्ञा विना कोइ ससारी जीव छे नहि

शिष्यवाक्य—स्वामी सिद्धने विषे ए चार सज्ञा पामीये के नही

गुरुवाक्य—सिद्धने विषे ए सज्ञा न होय शा माटे के सिद्ध छे ते आत्मस्वरूपी छे सज्ञा छे ते पुद्गलिक छे

शिष्यवाक्य—भगवतिजीमा चार सज्ञा आत्मीक कही छे ने तमे पुद्गलीक केम कोहोछो ?

गुरुवाक्य—जे आत्मीक सज्ञा कही छे ते व्यवहार वचन शा माटे के ते ठेकाणे आत्माने कर्म सहित मान्यो छे माटे ए ठेकाणे आत्मीक कही पण आत्मीक छे नहि

शिष्यवाक्य—स्वामी कोइ ठेकाणे पुद्गलीक कही छे ?

गुरुवाक्य—के एहीज भगवतीजीने विषे तथा पन्नवणा प्रमुख घणा शास्त्रमा सज्ञाने पुद्गलीक कही छे, तथा सज्ञाओ १६ कही छे ते मध्ये क्रोधादिक सज्ञामा गणी छे माटे सर्व पुद्गलीक छे एटले सज्ञा ससारी जीवने होय, सिद्ध परमात्माने न होय एटले एवी सज्ञा सहित होय तेने जीव जाणवो हवे ते ससारी जीवनु आवखु लखीये छीये पृथ्वीकायनु २२००० बावीसहजार वर्षनु आवखु, अपकायनु ७०००, सातहजार वर्षनु आवखु, तेउकायन त्रण अहोरात्रिनु, वायुकायनु ३००० त्रणहजार वर्षनु आवखु, वनस्पतिकायनु १०००० दसहजार वर्षनु आवखु, थावर पाचेनु आवखु जाणवु, हवे त्रसनु आवखु कहीये छीये बेरद्रीनु १२ वर्षनु आवखु, तेरद्रीनु ४९ दिवसनु, चौरद्रीनु ६ महीनानु तथा तिर्यंच पचेंद्रि जळचरनु पुर्व कोडनु जाणवु, खेचरपखीनु पल्योपमनो असख्यातमो भाग जाणवो, तथा थलचर तिर्यंचनु त्रण पल्योपमनु आवखु जाणवु, तथा उरपरि सर्पनु पूर्वकोडनु जाणवु, भूजपरि सर्पनु क्रोड पूर्वनु जाणवु सर्वनु जघन्य अतर मुहूर्त जाणवु हवे जळचर समूर्छिमनु पूर्व क्रोडनु आवखु, थलचर समूर्छिमनु ८४००० चोराशि हजार वर्षनु, खेचर समूर्छिमनु, ७२००० बहोतेर हजार वर्षनु, उरपरि समूर्छिमनु ५३००० तेपन हजार वर्षनु, भूजपरि समूर्छिमनु ४२००० बतालीस हजार वर्षनु जाणवु, हवे सात नर्कनु आवखु कहिये छिये पहेली नर्कनु एक सागरोपमनु आवखु जाणवु ने बीजी नरके त्रण सागरोपमनु आवखु जाणवु,त्रिजी नर्के सात सागरोपमनु आवखु जाणवु, चोथी नर्के दश सागरोपमनु आवखु जाणवु, ने पाचमीनर्के सतर १७ सागरोपमनु आवखु जाणवु, छठी नर्के बावीश सागरोपमनु आवखु जाणवु, सातमी नर्के ३३ तेत्रिश सागरोपमनु आवखु जाणवु पहेलीनर्के

जघन्य १०००० दश हजार वर्षनु आवखु, पहेलीनु जे उत्कृष्ट ते बीजीनु जघन्य, एम यावत् छठ्ठीनु उतकृष्ट ते सातमीनु जघन्य, तथा सातमी नर्के अपेठाण नर्कावाशे जघन्य तथा उत्कृष्ट ३३ सागरोपमनु तथा हवे भुवनपतिनु आवखु कहिये छिये असुर कुमार निकायमा दक्षण दिशाना चमरेंद्रनु एक सागरोपमनु आवखु तेनी देवीनु साडीत्रण पल्योपमनु आवखु उत्तर दिशाना बली इद्रनु एक सागरोपम झाजेर आवखु तेनी देवीनु साडीचार पल्योपमनु आवखु, तथा नागकुमार प्रमुख नवेनिकायनी दक्षिण श्रेणिनु १॥ दोढपल्योपमनु आवखु, तथा उत्तर दिशाना नवेनिकायनु वे पल्योपम माठेरु आवखु ते वे श्रेणिनी देवागनानु आवखु तेनीनिकायनादेवथी अरधु जाणवु तथा सर्व भुवनपतिनु जघन्यथी १०००० दशहजारवर्षनु आवखु जाणवु, हवे यतरनीनिकायनु उत्कृष्ट एकपल्योपमनुआवखु जाणवु अने जघन्य १०००० दश हजार वर्षनु आवखु जाणवु, तेनी देवीनु अरधा पल्योपमनु जाणवु, चद्रमानु एक पल्योपमने १००००० एक लाख वर्षनु आवखु, सूरजनु एक पल्योपमने १००० एक हजार वर्षनु आवखु, ग्रहनु एक पल्योपमनु, नक्षत्रनु ०॥ अडधा पल्योपमनु, तारानु ०। पापल्योपमनु आवखु, तेनी देवीयोनु सर्वे सर्वना देवथकी ०॥ अडधु, जघन्य थकी सर्वेने पल्योपमनो आठमो भाग, हवे विमानिकनु आवखु कहिये छिये सुधर्म देवलोके जघन्य १ एक पल्योपम, उत्कृष्ट वे सागरोपमनु आवखु तेनी देवीनु सातपल्योपमनु आवखु त्या अपरग्रहिता देवीओ छे तेनु ५० पचाशपल्योपमनु आवखु तथा इशान देवलोके वे सागरोपम झाझेरानु तथा तेनी देवीनु ९ [illegible] नु, त्या अपर ग्रहिता देवीओ छे, तेनु ५५ पल्योपमनु [illegible] सनतकुमार देवलोके सात सागरोपमनु

आवखु देवांगना हवे अहिंयायकी छे नहि, जघन्य आवखु नीचला देवलोके उत्कृष्ट होय ते उपले देवलोके जाणवु एटले अहियां थे सागरोपमनु आवखु ते तेम सर्वे देवलोके समजवु चोथे देवलोके सात सागरोपम झाझेरानु, आवखु जाणवु, पांचवे देवलोके दश सागरोपमनु आवखु जाणवु छठे देवलोके चौद सागरोपमनु आवखु जाणवु सातमे देवलोके सत्तर सागरोपमनु आवखु जाणवु, आठमे देवलोके अढार सागरोपमनु नवमे १० सागरोपमनु आवखु दशमे २० सागरोपमनु आवखु अगियारमे २१ सागरोपमनु आवखु बारमे देवलोके २२ सागरोपमनु आवखु हवे नव ग्रैवेयक मध्ये प्रधान हेठेनी ग्रैवेयकनु २३ तेवीश सागरोपमनु आवखु, बीजी २ ग्रैवेयके २४ चोवीश सागरोपमनु आवखु, ३ त्रीजी ग्रैवेयकनु २५ पचीस सागरोपमनु आवखु, हवे मध्य नर्कना पहेली ग्रैवेयकनु २६ सागरोपमनु आवखु, त्रीजी ग्रैवेयकनु २७ सतावीश सागरोपमनु आवखु, त्रीजी ग्रैवयकनु अठावीस सागरोपमनु आवखु हवे उपरली नरकना पहेली ग्रैवेयकनु २९ सागरोपमनु आवखु बीजी ग्रैवेयकनु ३० सागरोपमनु आवखु त्रीजी ग्रैवयकनु ३१ एकत्रीस सागरोपमनु आवखु हवे पांच अनुत्तर विमाननु आवखु कहियेछिये, ते मध्ये चार अनुत्तर विमाननु आवखु जघन्यथी ३१ एकत्रीश सागरोपमनु उत्कृष्ट ३३ तेत्रीश सागरोपमनु आवखु छे, तथा सर्वार्थ सिद्ध विमाने जघन्य तथा उत्कृष्ट ३३ तेत्रीश सागरोपमनु आवखु जाणवु, एटले ए देवनु आवखु कह्यु.

हवे मनुष्यनु आवखु कहिये छीय देवकुरु तथा उत्तरकुरुना जुगलीयानु आवखु ३ त्रण पल्योपम, हरिवर्ष तथा रमणिकवासना जुगलीयानु २ बे पल्योपमनु आवखु छे, हेमवत तथा अरण्यवास क्षेत्रना जुगलीआनु १ एक पल्योपमनु आवखु, अतरद्वीपना जुग

लीभानु पल्योपमना असख्यातमा भागनु छे, हवे कर्मभूमिना मनुष्यनु आवखु एकक्रोडपूर्वनु छे ते महाविदेहक्षेत्रमा जाणवु, तथा पांचमे आरे भरत ऐरव्रतक्षेत्रने विषे ११० एकसोनेदशवरसनु आवखु जाणवु तथा छठ्ठे आरे २० वरसनु आयुष्य जाणवु तथा असंज्ञि मनुष्यनु अंतरमुहूर्तनु आयुष्य जाणवु गर्भज तथा असंज्ञि मनुष्यनु जघन्य थकी अंतरमुहूर्तनु आयुष्य जाणवु एटले मनुष्यनु आयुष्य कह्यु तथा सर्वजीवनु आयुष्य कह्यु शुद्धनिश्चयनये विचारीने जोइये तो जेवा सिद्धपरमात्मा तेवोज चेतन छे चेतनसत्तानेविषे जडसत्ता जूदीछे माटे चेतनचेतनना रूपमांजछे

शिष्यवाक्य—हे भगवान चेतन पोतानाज रूपमां छे तो चार गति ससारमां परिभ्रमण करवु जन्ममरणना दुःख सेहेवां तेवु केम थाय छे ?

गुरुवाक्य—हे मानुभाव जे धणीये पोताना चेतननी भुले जडने पोतानो मान्योछे त्यासुधी दुखी छे पण पोत पोताना स्वरूपने विषे भासन करे पछी व्यापकपणु करे, पछी रमण करे तो तेने कांइये दुख होयनही, अत्रदृष्टांत—जेम कोइ पुरुष महा डाह्यो विची क्षण छे ने तेज पुरुषे मदीरापानकर्यु, तेना केफथी गफलती थयो ते वारे ते अशुचीजग्यानेविषे पडे अने पवित्राइपणु माने रस्तामां पडे अने घर माने परतु ते जीवनो जे वारे केफ उतरे ते वारे ते अशुचीने अशुचीमाने, रस्ताने रस्ता माने, पोते पोताना घरमा जइने बेसे, प्रथम केफमा अशुची अने सुख मानीने पडयो हतो ते भ्रमणा वधीए मटी जाय तेम आ चेतन अज्ञानना जोर थकी मिथ्यात्वरूप भ्रमजालमा पडयोछे ते धणी सर्व पुद्गलनु कर्त्तव्य तेने आत्मा जाणे ते थकी फरीने चारगतिससारमा रखडवानु थाय, जन्ममरणादिक दु खसहे, जे वारे ... न थाय ते वारे जडनु कर्त्तव्य सर्व छोड्ढ जाणे,

पोते मांही प्रवेश करे नहीं, तथा बीजे दृष्टांते जेम फटक रत्ननो एक थम छे, ते थमने एक दीशाये लाल पत्र बांधीये, एक दिशे श्याम बांधीये जे वारे लाल पत्र बांध्या होय ते वारे फटकलाल दीसे, श्यामफटक बांध्युहोय ते वारे फटकश्यामदीसे अपितु फटक तो श्यामे नथी ने लाल पण नथी फटकनो निर्मल स्वभावेजछे तेम आ आत्मा-रागद्वेषरूप जे लाल श्यामरूपपत्रछे,तेथीलोकमां सारो नवलो केहेवाय छे पण आत्मा मूल स्वभावे जोइयेत्यारे तेने कांइरागद्वेष छे नही राग द्वेषनो जड छे आत्मानो निराकार निरजनछे आत्माने विषे तो ज्ञान दर्शन चारित्र रह्युंछे, एवी रीते जे आत्माने ओलखीने जे रमण करे अने जे शक्तिभावे सत्तान विषे अनती ऋद्धि रही छे ते व्यक्ति भाव केहेतां सर्व प्रगट करे तेनु कल्याण थाय ए जीवतत्त्व कह्यो ? हवे सवरतत्व कहीयेछीये, एटले सवर केहेतां आवतांकर्मने रोकवां तेने सवर कहिये ते सवरना त्रण भेद छे मनसवर १, वच नसवर २, कायसवर ३, कायसवरकेहेतां जेथकी आश्रव आवे एवां कामकायाए करीने न करे,तथा वचनसवरकेहेतां जेबोलवाथकी आश्रव आवेतेवु वचन नबोले, तथा मनसवर केहेतां जे मनथकी आश्रव आवे एवु मन न रमाडे ए सवर ते सर्व व्यवहार छे निश्चय थकी आत्मा पोताना स्वरूपमां रहे तेने सवर कहिये

शिष्यवाक्य—स्वामी अमे तो पूर्वे सवरना ५७ बोल सांभल्या छे ते तमे कइ कह्या नही अने तमे तो आत्मानो सवर कह्यो ते तो अमे पूर्वे सांभलेलु नथी.

गुरुवाक्य—हे भद्र सत्तावन बोल जे तें सवरना सांभल्या छे, ते मध्ये केटलाएक बोलतो व्यवहार छे कोइक बोल निश्चय छे ते मध्ये जे व्यवहार सवर छे ते थकी कोइ जीवनी मुक्ति थाय नहीं एतो अते पण, आश्रवज थाय अने जे निश्चय सवर छे ते थकीज धर्म थाय अने मुक्ति पण तेथीज जाय

शिष्यवाक्य—स्वामी तेनो एटलो नथो फेर केम छे तेनी समज पाडो

गुरुवाक्य —हे भद्र ! ए सत्तावन बोलनी रीत छे ते हु तने कहु ते तु सांभल प्रथम सत्तावन नाम छे ते कहिए छीए इर्या समिती १ भाषा समिती २ एषणा समिती ३ आदाननिखेपणा समिती ४ परिठावणीया समिती ५ मन गुप्ति ६ वचनगुप्ति ७ कायगुप्ति ८ क्षुधापरिसह ९ तृषापरिसह १० शितपरिसह ११ उष्णपरिसह १२ डसपरिसह १३ अचेलकपरिसह १४ अरतिपरिसह १५ स्त्रीपरिसह १६ विहार परिसह १७ नीखेदपरिसह १८ सज्या परिसह १९ आक्रोसपरिसह २० वधपरिसह २१ जाचनापरिसह २२ अलाभपरिसह २३ रोगपरिसह २४ त्रणफास परिसह २५ मलपरिसह २६ सत्कारपरिसह २७ प्रज्ञापरिसह २८ अज्ञानपरिसह २९ समकितपरिसह ३० क्षमा ३१ मार्दव ३२ आर्जव ३३ मुक्ति ३४ तप ३५ सजम ३६ सत्य ३७ सौच ३८ अकिंचन ३९ ब्रह्मचर्य ४० अनित्यभावना ४१ अशरणभावना ४२ ससारभावना ४३ एकत्वभावना ४४ अन्यत्वभावना ४५ अशुचीभावना ४६ आश्रवभावना ४७ सवरभावना ४८ निर्जराभावना ४९ लोकभावना ५० बोधिदूर्लभभावना ५१ धर्मभावना ५२ सामायकचारित्र ५३ छेदोपस्थापनीय चारित्र ५४ परिहारविशुद्धचारित्र ५५ सूक्ष्मसपराय चारित्र ५६ यथाख्यातचारित्र ५७ ए सत्तावन बोल सवरना छे ते मध्ये घणा बोल व्यवहार दीसे छे, [illegible] पांच जे समिती छे ते आतमग्राही नथी शामाटे [illegible] इर्या समिती जे साधुने धुसरा प्रमाणे कहेली [illegible] चालवु ते परजीवनी दया आश्रीने छे [illegible] आत्मदया [illegible] तेवी समिती ज्ञान विना [illegible]

भाषा समिती जे छे, ते वचन थकी कोइ जीवने बाधा पीडा थाय एवु वचन न बोल्वु, ते पण परजीव आश्रीने छे, तथा पोतानु मान राखवा आश्रीने छे तथा त्रीजी एषणा समिती छे ते पण एकेंद्रि आदिक जीवने रखोपा आश्रीने छे शामाटे जे गोचरीना जे दोष टालवा ते मुख्यतापणे अपकाय तथा अग्निकाय तथा वनस्पतिकाय प्रमुख जीवनु रखोपु छे तथा चोथी आदान समिती ते जणश भात्र लेवी मेलवी ते पुजी प्रमार्जिने लेवी, तथा मुकवी ते पण परजीवनी दया आश्रीने छे तथा पांचमी परिठावणीआ समिती केहेतां जे आहार पाणी वस्त्र पात्र लघुनीत वडी नीत प्रमुख जे जे परठववु ते सर्वे जग्या पुजी प्रमार्जिने परठववु ते पण परजीवनी दया आश्रीने छे तथा मन गुप्ति केहेतां मनने आर्त्तरौद्रध्यानमां जावा न देवु, जाताने रोकवु, तथा वचन गुप्ति जे वचन विना कारणे उच्चारण न करवु, अने जे उच्चारण ते पण कोइ जीवने बाधा पीडा थाय एवु न करवु तथा कायगुप्ति केहेतां कायाए करीने जीवनी हिंसा प्रमुख नीपजे ते काम न करवां, एटले ए पंचसमिती तथा त्रण गुप्ति ए आठ प्रवचन माता केहेवाय ते जमाली प्रमुख घणा जीवे पाली पण कांइ ते जीवनी कार्यसिद्धि थइ नहि अने भगवाने एने निन्हवमां गण्या ते प्रत्यक्ष सिद्धांत बोले छे माटे एने ते व्यवहारज जाणवो, एने विषे कांइ आत्मानी कारजसीद्धि दिसती नथी.

शिष्यवाक्य —स्वामी ! जो एने विषे आत्मानी कार्यसिद्धि नथी तो सिद्धांतने विषे ठेकाणे ठेकाणे अष्ट प्रवचन मातानी वार्त्ता केम लख्या छे ने एवा देखीने तेने साधु जाणे तेने मिथ्यात्व लागे

गुरुवाक्य —हे भद्र ! ए वस्त्यव्यवहार छे एथकी बाल जीव

धर्म पामे ने साधुना गुण बाह्य थकी देखीने साधु माने माटे एने कांइ मिथ्यात्व लागे नहि, एटले साधु श्रावकनी ओलखाण पण ए थकी थाय तथा साधुनो व्यवहार घणो सारो दीसे तथा पर जीवनी दया पण रहे ते कारण माटे सिद्धांतमा ए वार्त्ता लावेला छे ते करतां सिद्धांतनी माहेलीकोरे व्यवहारनी पुष्टि घणीक छे शामाटे के एथा त्रण नयनी वार्त्ता रही छे नैगम १ संग्रह २ व्यवहार ३ चार नयनी वार्त्ता सिद्धांतमांथी कहाडी नाखी छे ते अधिकार सम्यक्द्वार ग्रंथथकी जाणजो पण ते अष्ट प्रवचन माताने विषे आत्मस्वरूपनी रमणता नथी, अने ज्यां आत्मस्वरूपनी रमणता नहि त्यां कांइ धर्म नहि, अने जो आत्मस्वरूपनी रमणताविना अष्ट प्रवचन मातामा धर्म होत तो जमाली प्रमुखने निन्हव न कहेता माटे आत्मस्वरूपनी रमणताथकी धर्म तथा मुक्ति छे पण ते विना नथी।

हवे बावीस परिसहनी समज पाडु ते सांभल, प्रथम जे क्षुधा परिसह कहेतां जे क्षुधा वेदवी एथकी कांइ आत्मानु कल्याण भासन थतु नथी, शामाटे जे तिर्यंच पचेंद्रि घोडा ढोरां प्रमुख बहु क्षुधा वेदे छे पण कांइ तेनु कार्य थतु नथी ने क्षुधा वेठयाथी कारज थाय तो तेज जीवनु कारज थाय तथा तृषा परिसह कहेतां जे, जलनी तरस भोगववी तेने विषे कांइ आत्मकार्य नथी शामाटे के जो ए थकी कारज थाय तो बपैया प्रमुख जानवर मोक्षे गया जोइये, तथा उष्ण परिसह कहेतां जे ताप सेहेवो ते थकी पण कांइ मुक्ति थाय नहि, केमके बलद घोडा रोझ, खच्चर प्रमुख जनावर सदाय तडकेज रहे छे, पण ए ताप थकी पण कांइ तेनी सिद्धि थइ नहि, तथा सीत परिसह कहेता जे टाढाड सेहेवी ते पण सर्व पखी तथा ढोर तथा भिल्ल प्रमुख घणा मनुष्य ते पण सित सहे छे पण तेनु कांइ कारज सिद्ध थतु नथी तो वीजातुं

वधां थकी थाय, तथा डस परिसह कहेतां जे डस, मच्छर, मांकड, मांकण, इत्यादिक परिसह सेहेवो ते परिसह थकी कारज सिद्धि होय तो सर्वे जानवर तथा पखीने विशेष थकी थाय छे, ने मनुष्यने सामान्य प्रकारे छे, ए परिसह थकी जो मुक्ति थती होय तो प्रथम जानवरादिकनी सिद्धि थवी जोइए पछी मनुष्यनी सिद्धि थाय परतु सत्ता स्वरूप ओलख्या विना कोइ दिन मुक्ति थवानी नथी तथा अचेलक परिसह कहेतां वस्त्रादिक न राखवु, तेना बे भेद, दिगबरने मते बिलकुल न राखवु श्वेताबरना पक्षना बे भेद, सिद्धांतनो तथा आवश्यकनो, सिद्धांतना पक्ष थकी जोतां कोइक साधु वस्त्र राखे तथा प्रश्न व्याकरण सूत्रने मते बधा ए राखे एवु भासे छे परतु बीजा सूत्रना मतथकी भासनथी थतु तथा आचारांगजीवाला एवु कहे छे के, कोइ साधुथी सीत परिसह न खमाय तो एक तथा बे तथा त्रण पछेडी राखे, पछी सीतकाल गयाथी वोसरावे अथवा कोइ न वोसरावे तथा कल्पसूत्रनी टिका प्रमुखने विषे आर्त रक्षितनामा जुगप्रधाने पोताना पिता सोपलनामा ब्राह्मणने दिक्षा दिधी ते वारे तेने सर्व धर्म साधु भास्यु पण चलोटो कहाडवो नहोतो, शाथी के लज्जा परिसह न जिताणो ते थकी होय, पण श्री आर्यरक्षित जुग प्रधाने बहु महेनते जुक्तिये करीने कढाव्यो तो ते जोता वस्त्र भासन थतु नथी. आवश्यकने मते हाथ बेनो कटको बे कुणी वचे दाबीने चाले, इत्यादिक विचारे छे, ए सर्वेने अचेलकज कहिये ते अचेलक परिसह थकी मुक्ति थाय ते पण काइ संभवतु नथी शा माटे जे जानवर बाघ तो सर्वे अचेलक छे तथा मनुष्यने विषे नागरी प्रमुख घणा लोको तुच्छ वस्त्रना धारी छे, तेमना अग पण पुरां ढकातां नथी, तो तेनी मुक्ति प्रथम थवी जोइये, पण ते काइ थती नथी मुक्ति तो पोताना आत्म स्वरूप

थकी छे, तथा अरति परिसह केहेता अशाता एटले शरीरादिकने अथवा मनने मान अपमान प्रमुख आदे देइने अशाता उत्पन्न थाय ए अशाता परिसह सेहेवो ते ठीक छे, समभावे रहेवाय तो आत्मीककार्य छे, जो आत्मा ओलखे तो; नही तोए पण व्यवहार छे केमके एवा घणा जीव मान अपमान समभावे गणे छे ते जो गी वेरागी तथा ओछी समजवाला जीव ते पण सर्व समभावे रेहे छे, परतु तेमां काइ कार्यन मिद्धि थाय नही, जो आत्मस्वरूपने ओलखीने तेने पुद्गलिक भाव जाणीने समभावे रहेतो तेनु कार्य सिद्ध थाय तथा स्त्री परिसह केहेता स्त्रीयादिकना हाव भाव देखीने मन चपल थाय ते परिसह सेहेवो. परतु ते परिसह सेहेवा थकी तो कार्यनी सिद्धि छे नहि शामाटे के खाखीसन्याशी परमहस प्रमुख घणा ए जोगने साचवे छे, तथा घोडा प्रमुख जानवर पण परवश रह्या थकी पाले छे, तथा केटलाक मनुष्यने अणमलते सचवाय छे तथा मलते पण घणा धर्मवाला साचवे छे पण तेनु काइ कारज सिद्ध थाय नहि

शिष्यवाक्य—के स्वामीतेतोजैननुधर्म पाम्या वगर मोक्षे जता नथी पण जैननुधर्मपामे ते मोक्षे जाय के नहि

गुरुवाक्य—के जेननाधर्मना अने अन्यमतना ए धर्ममा शो फेर छे ए व्रत तो सर्वने सरखु पालवानु छे माटे ए व्रत आश्रीने काइ जैनमां अने अन्यधर्ममाकशोफेर छे नहि, परतु जैननो ए फेर छे के जे खटद्रव्यनी ओलखाण, ते मायेथी पाच द्रव्यनो त्याग एक आत्मधर्मनु आदरवु तेना गुण पर्यायसहित ओलखाण करवी तेने भेदज्ञान कहिये तेज अभेदज्ञानपणे थाय, तो मुक्ते जाय माटे ज्ञानमांज मुक्ति रही छे तथा, विहारपरिसह केहेता जे चालवु तेनो श्रम तथा गाम गाम ... शोधवी तथा आहार पाणी सर्व वि

हारमां उत्पन्न थाय ते परिसह सेहेवा थकी कोइ कहेशे के मुक्ति थाय ते वात पण समजे नहि, शा माटे जे आजीवीकाथकी लोको घणा गामागाम फरे छे ने परिसह सहे छे, तथा अन्यमतीना भेख धारी पण सर्व एमज परिसह सहे छे, तथा घोडाप्रमुख विहार ना परिसह सहेछे, पण तेनु काइ कार्य सिद्ध थतु नथी, तथा निखेद परिसह केहेता जे लोकातेनु अपमान करे ते परिसह सेहेवो ते थकी पण कोइ केहेशे के आत्मा कर्मरहित थाय, ते वात सभचे नहि शा माटे जे घणा भिक्षुक लोको घर घर भटके छे ने ते लोको तेने घणु निभ्रछे तथा श्वानने घरघरथी मारीने लोको काढी मूके छे, तो ए परिसह थकी कारज सिद्धि थात तो एटलाने थवी जोइये, परतु कारज सिद्धि तो एक आत्मज्ञानने विषे छे, तथा सज्या परिसह केहेता भूमि तथा पाट प्रमुखनी जोगवाइ सारी मली अथवा नवली मली तो ते परिसह सेहेवो, ते परिसह थकी पण काइ कार्य थतु दिसे नहि कमके जे घणा लोको विषम जग्या ने विषे पण रेहे छे तथा जनावर पण विषम जग्याने विषे बेसे सुवे छे तेथी काइ तेनु कारज थाय नहि, तथा आक्रोस परिसह केहेतां कोइ आक्रोस करी वचन कहे, अथवा मरणनां वचन कहे त परिसह सहेवो तेनो विचार, पूर्व नखेद परिसहमां कह्यो छे ते थकी जाणजो, तथा वध परिसह केहेता कोइ ताडे छेदे भेदे ते परिसह सेहेवो, परतु काइ ते परिसह थकी पण कारज सिद्धि थाय नहि शा माटे जे तिर्जंचनी गतिने विषे एक एकनो छेदन भेदन घणा करे छे तथा मनुष्य पण ते जीवोने छेदन भेदन करे छे तथा मनुष्य मनुष्यने पण छेदन भेदन करे छे तथा वाघरी थोरी प्रमुख नीच जातिने ताडना तर्जना घणी थाय छे तथा उच लोकोमां पण थाय छे ते प्रत्यक्ष जोवामां आवे छे पण काइ तेनी कारज

 थती नथी

शिष्यवाक्य—स्वामी ते लोक छेदन भेदन खमे छे तेने काइ समता परिणाम नथी ने साधु लोको तो समताथकी परिसह सहेते माटे ते लोकोनी कारज सिद्धि न थाय ने साधु लोकोनी कारज सिद्धि थाय.

गुरवाक्य —हे भद्र समता कांइ एक प्रकारनी नथी शा माटे जे कारण कारण जुक्त समता छे एक तो समता कहेता सामो पुरुष बोल्यो तेना सामु न बोले तेवारे पोताना मनमां विचारे के बन्न सरखा बनशु माटे पोतानी मोटम राखवाने न बोले ते पण समता कहिए तथा बीजो भेद सामो पुरुप बोल्यो ते पोतानी समजमांज नहि केवल मुर्खपणे जे कहे तेनी हा, ते पण समता कहेवाय, तथा त्रीजे भेदे राजा प्रमुखना सामु बोलवानी पोतानी प्राप्ति नथी त्यां पण समता राखवी पडे, ना राखे तो उलटु विशेष दुःख पेदा थाय तेने पण समता कहीए. तथा चोथो भेद सामाना बोल्या प्रमुख पेटमा राखे, मुन्नथकी कहे नहि लोकमा घणो समतावान जणाय परतु जेवारे पोतानो अवसर आवे त्यारे ते ए वेर ले ते पण एक समता, तथा पांचमो भेद जे ज्ञानमा समजे नहि अने मर्कट वैरागयकी पापनो भय राखीने समता राखे ते पण एक समता, इत्यादिक बहु प्रकार समताना छे पण तेथकी काइ कारज सरे नहि, जे वारे आत्म स्वरूपनी ओलखाण थइ होय ने पुद्गलना बंध उदय उदिरणाना भाव समजता होय, पछी आत्माथकी एवो विचार थाय के ए आत्मानां बांधेलां कर्म पूर्वेना उदे आव्यां छे ते भोगव्या विना छुटे नहि, ने सामा पुरुपने एवोज कर्मनो उदय छे के उलटां कर्म चीकणां बांधे छे, एम पुद्गलनु स्वरूप विचारतां राग द्वेप न उठे ते वारे आत्मस्वरूपमा स्थिर थाय तेने समभाव कहिए ने तेनु तेथकी अनतां कर्म निर्जरे माटे ए

समता त समतामा गणाय, बाकी समताओ ते वस्तुताए जोतां अ समताज छे, ते माटे वध परिसहथकी कांइ मुक्ति नहि मुक्ति तो पोताना स्वरूप रमणमा छे, तथा जाचना परिसह केहेतां जे घरघर भिक्षा मागवी, ते एक मोटो परिसह छे ते परिसहनु सहन करवु, परतु तेथकी कांइ कारज सरे नहि, केमके घणा भिक्षुक लोको तथा सारा माणस आजीविकार्थी हिण थये थके लज्जा मुकी भीक्षावृती करे छे, तथा अन्य दर्शणना भेख धारीनी पण जाचना वृति एज आजीविका छे तेथकी पण कारज सिद्धि थाय नहि अने जो काम थतु होय तो ते पहेलु थवु जोइए, तथा अलाभ परिसह केहेता जाचना करता पण वस्तु पाम्या नहि, तेने अलाभ परिसह कहिये ते परिसह पण सर्वे जाचक लोको तथा भिक्षुक लोको सर्वे अणमल्वाथी संतोष करीने बेसे छे, तथा गृहस्थ पण एकएकने घेर वस्तु जाचवा जाय ने न मले ता संतोष राखे, तथा जनावर पण घास दाणो मले तो भले, न मले तो संतोष राखीने बेसे छे एम सर्वे जीवनी एज नीति छे, कदापि कोइ जीव उत्पातीया होय, ते हायवराय करे पण ते कांइ परिसहथकी कारज सिद्धि थाय नहि तथा रोग परिसह केहेता शरीरमा रोग आवी उत्पन्न थए थके परिसह सहे परतु ते परिसह सर्वे जीव सहे छे कोण मनुष्य वा कोण जानवर तथा ओसड वेसड साधुने पण करवा कह्या छे ते साधु करे छे ने ते दुखनो निर्वाह समता राखीने करवो ते सव निर्वाह करे छे कोइ उत्पातीओ होय ते हाय वराय करे परतु रोगनु आवखु आवी रह्या वगर रोग जाय नहि माटे ए परीसह सहेवा थकी कांइ मुक्ति कहेवाय नहि तथा तृणफास परिसह केहेतां डाभ प्रमुख घासना संथाराना फरस कठण छे ते मुनि निर्वाह समताथी करे परतु ते परिसह सेहेवा थकी मुक्ति मले ते तं

सभवे नहि, शामाटे जे कोली भिल्ल प्रमुख घासमाज पडया रहे छे, तथा जानवर पण घासमा वेसे उठे छे तथा खेतीवाला लोक शियाले आवे थके परालना ढगलामाज वेशी रहे छे माटे ए परिसह तो घणा जीवना सहेवामा आवे छे पण तेनु कोइनु कारज थयु एवु कोइना सांभल्यामा आव्यु नथी, तथा मल परिसह वहेंर्ता जे शरीरमेंल तथा परसेवो वले ते परिसह सहेवो, तो ते परिसह वधिवान लोको राजद्वारे छे, जेने केद थयो त्यांथी मांडीने ज्यां सुधी केदमां रहे त्यां सुधी हजामत तथा नाहावु तथा लुगडां धोवां ए सर्वे बध छे तो ते लोकोने ए परिसह बराबरनो दिसे छे माटे जो ए परिसह थकी कारज सिद्धि थाय तो ते लोकोनी थवी जोइये परतु आत्मस्वरूप ओलख्या विना कारज सिद्धि छे नहि तथा सत्कार परिसह कहेता सन्मान पामवा थकी मनमा अभिमान न करे ते परिसह पण कपटी तथा लोभी पुरुष भली रीते सहे तथा गफलत मनुष्य पण सहे तथा जनावर मात्रने पण ए परिसह छे माटे मान पामवा थकी अभिमान न थयु ते थकी काइ अविनाशी सुख मले नहि अविनाशी सुख तो आत्मा निर्मल थये मले तथा प्रज्ञा परिसह कहेतां जे ज्ञाननु विशेषपणे जाणपु थाय तेनो मद न करवो ए परिसह जो न सहे तो केवल न पामे परतु धर्म थकी भ्रष्ट न थाय, समकित तेनु जाय नहि कदापि ते थकी अतिशे मद थइ जाय तो आकरु कर्म उपार्जे परतु समकित न जाय. जेम महारुस महातुस नामा मुनि पूर्वे ज्ञाननो मद घणो करयो ते थकी आभवने विषे ते ज्ञाननु आवरण उदय आव्यु तेथी अगियार अग भण्या हता ते भुली गया परतु समकित तथा चारित्र कांइ गयु नहि ने एज भवने विषे छे ते कर्मना उदयनो क्षय करीने केवलज्ञान पामीने मोक्षे गया. तेम ए ज्ञानना मद करवाथी ज्ञाननु

आवरण बंधाय माटे ज्ञाननो मद न करवो. ते ज्ञानना बे भेद छे, व्यवहार ज्ञान तथा निश्चय ज्ञान, व्यवहार ज्ञान ते वैदक, ज्योतिष, राज्यनीति, शृंगारशास्त्र, कलाशास्त्र, अन्यमतिनां शास्त्र, ए सर्वे व्यवहार छे तथा जैन शास्त्रना चार भेदछे ४ ते मध्ये गणि ताणु जोग कहेतां जे द्विप देवलोक प्रमुख जे लांबा पहोला पर द्विपआदे देइने मान बांधवु, ते सर्वे गणिताणुजोग कहिये तथा धर्म कथानु जोग कहेतां जेने विषे धर्म करवा थकी पाम्या तेनी कथाओ कहेवी ते धर्मकथानुजोग, तथा चरण करणानु जोग कहेतां जे चरण शित्तरीना ७० बोल पचमहाव्रत आदे देइने, तथा करण शित्तरीना ७० बोल पडिलेहण प्रमुख आदे देइने, एनो जे विचार एज चरण शित्तरी करण शित्तरीनु जे कहेवु सांभलवु तेने चरणकरणानुजोग कहिये ते त्रणे जोग व्यवहार छे, त्रणे पुन्य प्रकृतिना हेतु छे, तथा चोथो द्रव्यानुजोगकेहेतां जे द्रव्य गुणने पर्यायनो विचार नयनिक्षेपासहित स्याद्वाद जाणवु, ते केहे वु सांभलवु, तेने शुद्ध व्यवहार कहीये पण आत्मानो उपयोग मांहि रमतो होय तो नहि तो पूर्वना व्यवहारमां गणीये, अने तेज द्रव्य गुण पर्याय अभेदपणे ग्रहिने रमणता करे तेने निश्चय ज्ञान कहिये, माटे ए ज्ञान जे निश्चय ज्ञाननो समजु तेने मद आवे नहि, कदापि कोइ कर्मना उदय थकी मद आवे तो सभाली लेवो ते धणीना आत्मानी सिद्धि थाय ते नि संदेह जाणवु तथा समकित परिसह केहेता जे समकितपा सुझातु नहि शामाटे जे समकित छे ते अभ्यंतर आत्मानी रमणतामा छे ने कदापि समजवामां बराबर न आवे तोपण सद्दहणा पाकी राखवी, पण मुझातु नहि एटले समकित केहेतां श्रद्धानु नाम छे, ते व्यवहार श्रद्धा देवगुरु धर्मने कहिये परतु निश्चय श्रद्धातो खटद्रव्य नवतत्त्व नयनिक्षेपा प्रमुखे करीने

आत्म उपयोग सहित जे जाणपणु तेने निश्चय श्रद्धा कहीए अथवा तेनु जाणपणु तेने न होय तो नवतत्व खट द्रव्य भावे करीने सद्दहवा एटले ए बावीशे परिसह कह्या

शिष्यवाक्यः—हे भगवंत तमे केटलाएक परिसहनी मांहेली कोरे अन्यमतिनो तथा ग्रहस्थनो तथा भिक्षुकनो तथा जानवरनो दृष्टांत देइने ते परिसहमा मुक्तिनी ना पाडी परतु ते जीव तो अज्ञान छे ते अज्ञानपणे जे करे तेनी मुक्ति शानी होय तथा परिसह परवशपणे सहे तेनी मुक्ति शानी होय, पण जे पोताने वशपणे ससारना सुख छोडीने साधुपणु लीधु ने जाणीने परिसह सहे तेनी मुक्ति केम न होय ए अमारा मनमा मोटी शका छे

गुरुवाक्य'—ते जे वधु के ससार मुकीने निकल्या तेने परिसहथी मुक्ति जोइये ते वात एम नथी, जो परिसह थकी मुक्ति होय अने ससार मुकवा थकी मुक्ति होय तो जमालीए राजधानी छोडीने दिक्षा लीधी, अने परिसह पण जार जीव सुधी मनुष्यना तथा देवना तथा तिर्यंचना उचना ते सह्या परतु अनत ससारी थया पण मुक्ति थइ नहि

शिष्यवाक्यः—स्वामी एतो वचनना उत्थापक थया माटे ससार रखड्या परतु आपणे तो कोइ हमणा उत्थापक तो छे ज नहि माटे तेनो परिसह धर्ममा केम न गवेख्यो

गुरुवाक्य —हे भद्र तरणाना चोरने शुळीनो हुकम थाय त्यारे जे करोडो धननो चोर तेने सो दड देवाय ? तो तेनो दडतो हवे काइ सभवतो नथी शाथी के तरणा साटे शुळी थइ, ने शुळीथी अधिक दडतो बीजो काइ सभवतो नथी तेम इहा जमाली तो एक मात्रानो चोर छे केमके भगवाने कह्यु के "करे माणे करु"

एटले करवा माडयु तेने करयु कहिये ने जमालीनुं केहेवु ए छे के "करु माणेकरु" एटले काम पुरु थइ रहे त्यारे कर्यु कहिये एटलु एक मात्रा वचन फेरव्यु तेथकी अनतो ससार वधी गयो तो अहियां तो हालना समाने विषे तो सर्व सूत्र उथाप्यां छे केमके माटेथकी तो एवु कहे छे के काने मात्र उथापवो नहि एनो विस्तार सिद्धांत सारोद्धारथकी जाणजो हाल ने समे अहिज प्रवर्त्तन छे ते घणु के आवश्यकनी टिकाथकी छे परतु सूत्रने मलतु कोइक वचन छे ते समजु होय ते विचारी जो जो प्रत्यक्ष सूत्रने उथापीने आवश्यकनी टिका मानीए छिए तथा हालना स्तवन सजाय मानीने पण सूत्रने उथापी नांखीए छीए तने हवे शो दड ठरे ? अनतो ससार तो जमालिने कह्यो ने अहियां तो काइक उथापवानु एटयु रेहेतु नथी माटे ते पुरुषमां ते ज्ञानी पण शु जाण्यु माटे ए पण परीसह सहेते सर्व अजाणज छे, जेम अन्य दर्शनना भेख धारी परिसह सहे छे तेम ए पण सेहे छे ए २२ बावीश परीसह छे ते शाता अशाताना पक्षमां छे माटे ए बावीश परिसह सहेवाथकी काइ मुक्ति थाय नहिं ने तेने कांइ सवर कहेवाय नहि शामाटे जे बाह्य द्रष्टि व्यवहारवाला तेने सवर माने, परतु निश्चयथकी विचारी जोता आश्रवज छे जेम आत्मस्वरूपनी रमणता तेने निश्चय सवर कहिये एटले जेने आत्मानी रमणता होय ने परिसह सहेते थकी मुक्ति थइ, तो ए कांइ परिसहना जोरथी मुक्ति पाम्यो नहि एतो ज्ञानना जोर थकी मुक्ति पाम्यो अहियां कोइ वीर स्वामीनो द्रष्टांत देशे जे घणा परीसह सह्या तेनु केम ? तेनो उत्तर जे एमने कर्म उदय घणां हतां तो घणा परिसह थया परतु तेथकी केवलज्ञान तो पाम्या नथी, ते तो शुक्लध्याननो बीजो पायो एकत्व भावज्ञान विचारता केवलज्ञान माटे अहियां परिसहनु परिवल जाणवु नहि, जा परिसहथकी

केवलज्ञान होय तो धनोकार्कंडी तथा मेघकुमार प्रमुख घणा साधुये परिसह सह्या पण कांइ केवलज्ञान पाम्या नहि; तथा श्रीमल्लिनाथ स्वामी दिक्षा लेइने तरत केवलज्ञान पाम्या त्यां काइ परिसह थयो नथी माटे मुक्ति तो ज्ञान ध्यानमां छे ते कांइ बीजी वस्तुमां छे नहि ए वातमां संदेह राखवो नहि

हवे दश विध यति धर्म कहिये छिये ते मध्ये प्रथम क्षमा धर्म, क्षमा कहेतां समपरिणाम एटले जडनु धर्म ते उपर रागद्वेष न राखे आत्मस्वरूपमां रमे तेने क्षमा धर्म ते आत्मीक कहीये ते विनानी जे समता छे ते पूर्वे कही बावीश परिसहना अधिकारने विषे ते प्रमाणे जाणवी

हवे बीजु मार्दव धर्म केहेतां मद अहंकारनो त्याग ते पण पुर्वे कहेलुज छे तो पण इहां जरा देखाडीए छीए के आठ प्रकारनो मद छे ते मध्ये प्रथम कुल मद कहेतां जे पोतानो पक्ष ते एवु विचारे के अमे आवा कुलना छीये तेने मद कहिये, परंतु ते मद न करे तथा कांइ आत्मानो धर्म प्रगट न थाय शा माटे के एने विषे कांइ आत्म रमणता छे नहि एतो लोकमां निर्मानी पुरुष केहेवाय कदापि जो आत्म स्वरूपनी रमणता होय तो एवु विचारे के तारु कुल एके छे नहि अने कुल ते चार गतिने विषे लाधे, अने ते चार गतिमां तु एक कुलमां उपन्या विना रह्यो नथी माटे इहां कीयु कुल तारु गणाय एमां कोइ तारु कुल नथी, एमा एक आत्मीक धर्म तारु छे ते तु सांभल एटले तेने उच नीच मध्यम कोइ विचारवानो ते धणीने न रह्यो तेने कुल मद तज्यो कहिये तेने धर्म कहिये तथा बीजो जातिमद केहेतां मातानो पक्ष एटले मातानु कुल ते पोतानी जात केहेवाय तेनो विचार पण सर्व कुलनी परे जाणवो, तथा त्रीजो मद ऐश्वर्य कहीए ते ऐश्वर्य मद केहेतां ठक

राइनो मद त्यां पण जे एवु विचारे जे आ राज्य ऋद्धि ते छे ने नथी एवु विचारीने मद न करे, ए कांइ धर्ममां नथी ए पण ससार व्यवहारमां छे हवे जे पुरुष एवु विचारे जे अनतो काल थयां स सारमां भटकतो राजा ऐश्वर्य प्रमुख ध्यो तथा तेओनो दास पण थयो माटे ए ऐश्वर्य पण ते तु नही ए तो पुन्यनी प्रकृतिना जोरथी पाम्या छे ने ते पुन्य ते जड छे ने तु तो चेतन छे ते ए जडनी ठकराइथी तारी काइ करज सिद्धि थइ नहि ज्यारे तु तारी आत्म शक्तिये करीने मुक्तिनो ठाकोर थइश ए ठकराइ तने सुखदाइ थशे माटे आ ठकराइमां शु तु राचे छे एवी रीते जे विचारे तेने धर्ममां गणाय तथा चोथो बळ मद एटले शरीरनु बल पराक्रम तेथी घणा जीव अभिमानमां छावया रहे छे ने अमो जेवो कोइ बलीयो छे नाहि एवो मद न करवो, भलाभली पृथ्वि छे एक एकनाथी बलीया होय एम विचारीने जे मद न करे ते पण व्यवहार छे हवे जे धणी एवो विचार करे जे अहो चेतन तु अनत शक्तिनो धणी थइने जडनी तुच्छ श क्तिमां शु राचे छे तुं तारी शक्ति प्रगट कर के जेम तु अक्षय सुख पामे तो तारी शक्ति केटली छे एक समे चौद राज्य चाल्यो जाय एवी अत्यत शक्ति छे ते शक्ति तारी तु प्रगट कर ने कर्म रूप शत्रुने जीत ने जडरूप बधीखानाथी छुट तो तारी शक्ति लोकमा वखाणवा जोग थाय, ने तु लोकने पुजवा सेववा लायक थाय एम विचारीने जेने माननो त्याग थयो छे तेने धर्ममां गणीये, पांचमो धन मद, धन पामीने मद न करवो केमके अथिर पदार्थ छे माटे मद करवो नहि एवो जे विचार ते व्यवहार हवे जे धणी पोताना आत्मा थकी विचार करे के अहो चेतन आ तो जडनो खमानो छे सात धातु नवरत्न ते सर्वे पृथ्विकायनु दल छे ते कांइ

आत्मीक वस्तु नथी तेतु पामवु ने पूर्वना पुन्यना जोग थकी पामे, ने आभवने विषे जेनो लाभा अनराय तथा भोगा अंतराय मनुष्वनो जेने क्षय उपसम थयो होय ते धणीने मले ने ते धणी भोगवे परतु हे चेतन! ए काइ आत्माना भोगमां आवे नहि, ए तो जडना भोगमां आवे छे. आत्मा तो ज्ञानदर्शन चारित्रनो भोक्ता छे माटे एवा धन धान्यादिक पामीने मूर्छा न राखवी, तथा मद पण न करवो तेने धर्म कहिये तथा रूपमद, रूप कहेता जे शरीरनो वरण सारो होय, घाट सारो होय तेनो कांइ मद न करवो केमके एनो दैवोगति छे, ए कोइने वश नथी एम जाणीने मद न करवो ते व्यवहार, हवे जे आत्मस्वरूपथी विचारे जे हे चेतन! अनंताकाले अनता शरीर तें बांध्यां ते स्वरूपवान तथा कुरूपवान, सुघाट वा, बे घाट, तेमां कया रूप घाटने वखाणे छे, ने तेनो मद करे छे, ने कीया रूप घाटने तु नखेदे छे, पण विचार हे चेतन! ए शुभाशुभ पुन्य पापनी प्रकृतिओ छे ते सर्वे नाम कर्मनो भेद छे, माटे काइए शुभ वर्ण, शुभगध, शुभरस, शुभफरस, वधु पूर्वे उपार्जलु ते धणी अहियां सारु वर्ण, गध, रस, फरस, पाम्यो जेणे पूर्वे अशुभ वर्ण, रस, गध, फरस, उपार्जला ते अशुभ पाम्यो, परतु ए काइ आत्माना घरनी ऋद्धि नथी, एतो जडनी ऋद्धि छे तोए पण ए शुभाशुभ रहेवानु नथी एतो अते विणसी जवानु छे, माटे ए वस्तु उपर राचवु माचवु नहि, एक आत्मीक स्वरूपने विषे राचवु माचवु तथा सातमो ज्ञानमद ते न करवो तेनो अधिकार पूर्वे परिसहना विचारमां कीधेलो छे तथा आठमो तप मद, तपनो मद न करवो, तेनो विचार आगल कहेवाशे एटले ए आठ मद करीने रहितने मार्दवधर्म कहिये २ तथा त्रीजो आर्जव धर्म कहेता जे सरलतापणु एटले कपट नहि करवु जो ससारादिकने विषे कपट करे तो अन-

तां कर्म उपार्जे, तो जे धणी धर्मीपुरुष कहेवाय तेने दंभ नहि राखवो एटले दंभ सहित पुरुषनुं करेलुं जे धर्म लेखे आवे नहि, दंभ समान जगतमा बीजुं पाप नथी, सर्व धर्मनो नाश करता ए दंभ छे माटे दंभ न राखे तेने आर्जव धर्म कहिये ३ हवे चोथो मुक्ति धर्म कहेता निर्लोभपणुं एटले आहार, पाणी, वस्त्र, पात्र, प्रमुखनो लोभ नहि राखे, अने लोभ राखे तो साधुगुण रहे नहि, ए सर्वे व्यवहार परंतु आत्मायकी एवो विचार उठे जे अहो चेतन! तारे शुभाशुभ कारज न करवुं शा माटे के सर्वे पुद्गलीक वस्तु छे एम विचारीने शुभ कारजनो निषेध करे एटले पुन्यनां काम करे नाहि, पुन्यनी वछा पण करे नाहि. जे धणी पुन्यनी वछा करे तेणे साधुपणुं लीधुं पण ए संसारीज छे तेवारे कोइ कहेशे जे साधु थइने पुन्यनी वछा कोण करे छे तेने कहिये जे तिर्थ जात्रा व्रत नियम तथा बाह्य तप तथा व्यवहार चारित्र तथा व्यवहारक्रिया इत्यादिकने विषे जे रच्या पच्या छे ते सर्वे पुन्यना इच्छक छे ने तेने आश्रवी कहिये

शिष्यवाक्य—स्वामी! जे परिग्रह प्रमुख राखे छे ते करतां तो ए साधु सारा छे

गुरुवाक्य—परिग्रह राखे तेने साधु कहे, तेने मिथ्यात्व लागे शा माटे के वीतरागना मार्गमां तो निग्रंथ प्रवचन कहेवाय छे अने जे स्थानके निग्रंथपणुं नथी त्यां साधुपणुं पण नथी तेने कोइ साधु कहेशे अथवा साधु जाणीने वस्त्र पात्र आहार पाणीओसडवासड अथवा रोगी प्रमुख जाणीने जे एनी अनुकंपा पण करशे, ते अनंता भव रखडशे ते आवश्यक निर्युक्ति प्रमुख घणा सूत्रमां छ, ते जोइ लेजो माटे ए असयतीनुं ओढ्ढुं देवुं नहि अने जे निग्रंथ थइने साधु नाम धरावे छे ने आत्मस्वरूपने ओलखता

नथी अने व्यवहारमां रच्या पच्या रहे छे ने लोकोने देवलोकादि-क ऋद्धि देखाडीने वाल जीवोने व्यवहारमा नाखे छे ते पोते पण अज्ञानी छे ने तेने पण अज्ञान प्रवर्त्तावे छे पोतानो पण ससार वधारे छे ने सामानो पण ससार वधरावी आपे छे ते पुन्यनी वछा करवी नहि एटले व्यवहारनी पण पुष्टि करवी नहि, एक आत्मधर्मनी पुष्टि करवी जे थकी आत्मा कर्म थकी छुटे तेवा शुद्ध व्यवहारनी तथा निश्चयनी प्ररूपणा करी सामाने समजाववो पण अशुद्ध व्यवहार तथा कल्प व्यवहारमा सामाने नाखवो नहि, शा-माटे जे अशुद्ध व्यवहार तो अनादिकालनो चेतन करतो ज आवे छे एटले पुन्य पापनी करणी सदाय चेतनने छे, तेथी काइ आत्मा-नु कारज थाय नहि, तथा कल्प व्यवहारने विषे विखवाद घणो रह्यो शामाटे जे वहुजन कृत ग्रथ टिका प्रमुख घणा, तेनु मतु एकेनु मल्तु आवे नहि तथा सिद्धांतनो पण एक रीतनो वांधो दिसतो नथी ते पण अनेक रीतो जुदी जुदी दिसे छे, तथा आजने काले स्तवन सझाय रास चरित्र प्रमुख घणा नोखा नोखा जणना करेला छे तेथी करीने आजना लोको ए कल्प व्यवहारमा पडया थका महा कर्म उपार्जे छे लोकने विषे धर्मीनाम धरावे छे अने पोत-पोताना मतनो ममत कदाग्रह छोडता नथी तेथी पोते पण अनतां कर्म उपार्जे छे ने सामाने पण अनतां कर्म वधना कारणीक थायछे, माटे कल्प व्यवहार तथा अशुद्ध व्यवहारने विषे प्रवर्त्तवु नहि, फक्त एक रागद्वेष प्रमुख मद थइ जाय अने आत्मस्वरूपनी ओल खाण थती जाय एवो उपदेश करवो तथा श्रोतानु पण कल्याण थाय ने वक्ताने पण श्रम लेखे आवे तेम पोताने पण शुद्ध व्यवहार तथा निश्चयमां रमण करवु तथा पोते पुन्यनो ग्राहि न थाय फक्त एक पोताना आत्मानी मक्तिरूप कारजनो कर्त्ता थाय, एवी रीते

समजीने जे चालवु तेने चोथु मुक्तिधर्म कहिये ४

हवे पांचमु तपधर्म, कहेतां जे तप करवो ते बे प्रकारे छे, ते नो विचार आगळ नीर्जरा तत्वमां कहीशु. ५ हवे छट्ठो सजम धर्म, सजम कहेतां जे आत्माने सवर भावमां राखवो एटले पृथ्विकाय प्रमुख जीव अजीवनो जे सजम कहेतां हणवो नही तथा जुठु बोलवु नही तथा चोरी करवी नही तथा मैथुन सेववु नही तथा परिग्रह राखवो नही तथा पांच इंद्रिने सवरवी तथा चारे कषायने टाळवु तथा त्रण दडथी वीरमवु इत्यादिक सजमना सत्तर प्रकार घणे प्रकारे थाय छे, परतु ए सर्वे व्यवहारनयमा छे शा माटे जे ए काम तो अभवी तथा अज्ञानी पण करे छे माटे ए सजमथी आत्मानु सार नथी, हवे जे आत्मानु साररूप सजम छे, ते कहीये छीये जे आत्माना गुण न हणवा, शा माटे जे ए गुणनी मुख्यता न होय त्यां सुधी मुक्तिनी आशा नही थाय कदापि कोइ कहेशे के आत्माना गुणने कोण हणे छे तेने कहीए के जे परभावमा धर्म मानीने बेठा छे ते आत्माना गुणना हणता छे, ते परभाव वेहेता पर जे जड तेना कर्त्तव्यने धर्म जाणे छे, तो जडतो जडना धर्मनो कर्त्ता छे पण कांइ आत्मिक धर्मनो कर्त्ता नथी एटले जेटला बाह्य व्यवहार पुन्य पापनी करणी तथा व्यवहार सवर तथा व्यवहार निर्जरा ए सर्वे जडनी करणी छे ते जडनी करणी ज्या सुधी मोह रहे त्या सुधी आत्मानु रमण सुखे थाय नही, अने आत्मरमण थया वगर धर्म कोइ दिन थाय नहीं ते माटे नीज स्वरूपनी रमणता करवी, अने श्रीभगवतिजीमां

॥ आयासजमे ॥

एवो पाठ छे माटे आत्मा छे तेज सजम छे तथा मत्य धर्म

सातमुं, सत्य केहेतां जे जुट्ठ न बोलवु, ते जुट्ठ छ प्रकारे करीने बोलाय छे, क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ हास्य ५ भय ६ ए छ प्रकारे करीने जे मृषा वचन केहेवु तेनो त्याग ते व्यवहार सत्य थयु हवे निश्चय ओळखावीये छीये निश्चे सत्यना २ भेद आज्ञासत्य १ वस्तु सत्य २ प्रथम आज्ञासत्य कहीये छीये, आज्ञा केहेतां जे श्री वीतराग परमात्माए आज्ञा फरमावी ते प्रमाणे प्ररूपणा करवी ते प्रमाणेज वचननु उच्चारण करवु ते विना जे करे तेने आज्ञा असत्य कहीये ते शीरीते के जे परमात्माए हिंसामां धर्म कह्यो नथी, त्यां कोइ हिंसामा धर्म ठरावे तेने आज्ञा असत्य कहीये ते शीरीते ते कहीये छीये

श्रीनदी सूत्रमा एवु कह्यु छे के दस पूर्व धरना भाषेला तथा बांधेला जे शास्त्र तेने सूत्र कहीये तेथी ओछा ज्ञानवाळाये बांधेलां शास्त्र अथवा तेमनु वचन ते सिद्धातने मळतु होय तो मानवु अने सिद्धातनु वचन जे उथापे ते अनत ससारी थाय एवु त्यां कह्यु छे, परतु दस पूर्वथी ओछा भणेलानु जे वचन तथा बांधेला जे शास्त्र तेने ग्रथ कहेवाय, ते इछ्ये तेसे तो मनाय, न इछ्ये वेसे तो न मनाय इहा केटलाएक कहे छे जे पचागी प्रमाण करवी तथा केटलाएक कहे छे के पाच गाथानु स्तवन सझाय होय ते पण प्रमाण करवु एवु जे कहे छे, ते घणीये मिथ्यात्व प्रवर्त्ताव्यु, ने अज्ञाननो वधारो करनो शा माटे जे सिद्धातना वचनथकी उपरांठो मार्ग जे प्रकरण प्रमुखवाळाए बांध्यो ते मार्गने मानता थका शुद्ध मार्ग सवरनो ते छूटी गयो आश्रवनो वधारो थयो ने आज्ञा परमात्मानी रही नही, तेनु कारण कहीये छीये के परमात्माये श्रीभगवतीजी तथा उववाइ प्रमुखने विषे एवु कह्यु छे

॥ असहजइआदेवा ॥

इत्यादिक पाठ घणा छे ते त्यां जोजो एटले

असहजइआदेवा

कहेतां कोइ देवतानी साहाय श्रावक न वछे, तथा आवता भव ना सुखनी चाहना न वछे, ते श्रीठाणागजी प्रमुखमां जाणजो. तो इहां तो भवोभवनु मागवु प्रत्यक्ष दीसे छे, ने श्रावक प्रतिक्रमणादिकने विषे देवनी साहाय मागे छे, तथा साधु पण मागे छे तथा साधु देवी देवलांना आगळ हाथ जोडी विनय सहित वांदवु पुजवु करे छे अने सूत्रे तो श्रावकने पण ना पाडी छे, तो साधुने तो हा शानी होय ? अने साधु ते पचपरमेष्टीमां परमेश्वर छे, ते पद पोतानु खोइने देवी देवलांनो दास थाय छे अने सूत्रकारे तो भगवान कहीने बोलाव्या छे, तथा सूत्रमां साधुने ग्रहस्थनी संगत करवानी साफ मना छे अने इहा तो साधु ग्रहस्थ साथे रच्या पच्या थइने रहे छे, अने पोतानी मनकल्पनी वार्ताओ प्ररूपाय छे तथा प्रकरण प्रमुख जे मानवा तेने पूछीये जे कर्ता धणी केटला पूर्व भणेला हता ते वारे कहेशे जे पूर्वतो काइ भण्या नहोता, ते वारे कहीये के तमे शा थकी एनु वचन मानोछो, तेवारे महा कोप करीने बोले, ने एवु कहेके शु तमे जेटलु ए नहोता भण्या कोइ शास्त्रमां एवु दीठेलु हशे त्यारे लाव्या हशे, एवो उत्तर आपीने प्रत्यक्ष आ सूत्रना तथा पूर्वधरना करेला ग्रथना वचन उथापे अने अधकुशरूप जे वचन तेमणे कीधु हशे ते कोइक शास्त्रे दिठु हशे एवा वचननो पार केम पामीये ? प्रत्यक्ष सिद्धांत प्रमुखने विषे देखीये छीये ते गोद्ध करीने आजना पडितो असज्ञानि, महा आरभ परिग्रहना भरेला स्त्रीओना लोलुपी तेवाना करेला स्तवन स

ज्ञाय मुमुख ते मानवामा केम आवे ते जे माने तेने आज्ञा असत्य थाय कदापि कोइ कहेशे के ए असजति नवाला नथी एटले अव्रती छे, तो ए पण सत्यमरूपक छे एवु कहे छे ते महा मृपावादि छे, शा माटे जे पोते कुमार्ग चाले ने सामाने सुमार्ग बतावे, ए वात तो भासनमां आवे नहि, अने ते धणी समार्ग बतावे तो तेने धन मले क्याथकी अने ज्यां धननु उपार्जनु छे त्या मृपावाद तो मत्यक्ष छे, अने परमात्मानु एज वचन छे जे निग्रथ विना बीजानु वचन अनर्थकारी होय.

उक्तंच.

श्री ज्ञाता तथा भगवती ममुख बहु सूत्रने विषे जे पाठ छे ते लखीये छीये

॥ समणसभगवहोमाहावीरस अंतेएधमंसोचा निसमहठतुठाए समणभगवमाहावीर तीखुतोआयाह-णंपयाहणकरीएकरीए वदीअनमंसीअएववीआसीस दहामीणंभते नीगंथपावीएणं सदहेमाणेपतीअमाणे रोएमाणेफासेमाणे असुठीओभीणंभंते नीगंथपावीएण एवंमएभंतेअवीतहमएइछींअमेय पडीइछीध मयइछी-अंपडीइछीयंमय सेसाओअनथमुवाओ ॥ इत्यादिक

पाठ घणा सूत्रने विषे छे माटे निग्रथनु वचन सदहवु ते नो अर्थः—हवे समणो भगवंत केहेता श्रमण भगवत श्री माहावीर स्वामीनी पासे जे जे पुरषे धर्म साभल्यो ते ते पुरुपने हरख स-तोष घणो उपन्यो हृदयने विषे आणद घणो थयो तेणे उठीने भगवतने त्रण मदक्षणा देइने वादी नमस्कार करीने विनय

दया पाले तेने पवित्र कह्यो छे, तथा पांच इंद्रीने जे पोताने वश राखे तेने पवित्र कह्यो छे तथा क्षमा सहित तप करे तेने पवित्र कह्यो छे, ने पांचमु जल पवित्र कह्युं छे, माटे जलथकी कोइ पवित्र थाय नहीं, तथा चार ए सत्य वचन प्रमुख कह्यां ते पण व्यवहार पवित्र छे ए थाइ निश्चे पवित्र कहेवाय नहीं, तथा कोइ कहेशे के भगवाननु नाम लेइये एटले मुख पवित्र थाय तथा मनमां भगवाननु स्मरण करीये एटले मन पवित्र थाय, तथा कायाये करीने भगवाननी शेवा भक्ति करीये एटले काया पवित्र थाय, ते पण व्यवहार छे ते काइ निश्चे नथी ए धर्मने काइ पवित्र कहेवाय नहीं हवे पवित्रपणानी ओलखाण करावीये छींये जे कायाथकी पवित्र कोने कहीये जे शुभाशुभ आश्रवनु काम करे नहीं तेने काया पवित्र कहीये तथा वचनथकी पोताने आश्रव लागे अथवा कोइ जीवने बाधा पीडा उपजे एवु वचन बोले तथा मन पवित्र कहेतां जे मनने विषे आरह्ट रोद्रह ध्यान ध्यावे नहीं, सदाय एक आत्म स्वरूपनो उपयोग तथा द्रव्य गुण पर्यायनी रमणता परभाव त्यागी स्वभावभोगी एवी रीते जे मनने विषे ध्यान प्रवर्त्ते तेने निश्चे सौच कहीये, एटले सौचधर्म देखाडयु हवे नवमु अकिंचनधर्म कहेतां जे सोनु १ रपु २ तथा त्रांबु ३ तथा कलाइ ४ तथा जसत ५ तथा सीसु ६ तथा लोढु ७ तथा माणेक ८ तथा हीरा ९ तथा पानु १० मणी ११ तथा पुखराज १२ तथा लसणीया १३ तथा मोती १४ तथा परवालु १५ प्रमुख अनेक वस्तु ते परिग्रह कहीये ते वस्तुनो जेने त्याग तेने अकिंचनधर्म कहीये ते सर्व व्यवहार छे निश्चयथकी कोइ वस्तुपर स्नेह नही राखे सचित अचित मिश्र पदार्थ ते सचित कहेतां नरनारी उपर स्नेह नही राखवो, अचित कहेतां धनधान्य पात्र प्रमुख वस्तु उपर स्नेह न राखे, मिश्र कहेतां

गाम नगर उपर स्नेह न राखवो, एटले स्नेहलता ते अभ्यतर छे ते स्नेहलतानो जेने क्षय उपशम थाय तेने राग द्वेषनो क्षय उपसम थयो कहीये, ने जेने क्षय थाय तेने राग द्वेषनो क्षय थयो कहीये. एम जेनो रागद्वेष गयो तेने अभ्यतर अकिंचनी कहीये तेने निग्रथ पण कहीये एटले अकिंचन धर्म नवमु कह्यु हवे दसमु ब्रह्मचर्य धर्म कहीये छीये तेना नव प्रकार छे तेनी वीगत मन १ वचन २ काया ३ हवे मनथकी पोते मैथुन सेवे नही तथा सेवावे पण नही तथा सेवताने भलो जाणे नही, तथा वचनथकी मैथुन सेवे नही सेवरावे नही सेवताने भलो जाणे नही, तथा काया थकी मैथुन सेवे नहीं तथा कोइ पासे सेवरावे नही तथा कोइ सेवतो होय तेने भलो जाणे नही, एम ए नव प्रकारे ब्रह्मचर्य पाले तथा बीजे प्रकारे पण नव भेद छे, तथा नव वाडसहित पण पालवु तेने ब्रह्मचर्य व्रत कहीये एटले दसविध यतिधर्म पण कह्यु हवे वार भावनानो अर्थ लखीये छीये एटले भावना छे ते भाव रूपज छे शामाटे के एने विषे कशी व्यवहार थकी वस्तु करवानी नथी ए सवे आत्म थकी विचारवानु छे ते आत्माने घणु हितकारी छे हवे प्रथम भावना अनित्य एवे नामे तेनो अर्थ कहीये छीये.

हवे जे पुरुष आत्मार्थी होय तेनो एवो भाव आत्माथकी उठे तेवारे एवु स्वरूप विचारे के अहो ससार अनित्य छे एमा कांइ पदार्थ रहेवानु नथी जेवो डाभनी अणी उपर पाणीनो बिंदुवो केटली वार टके तेवो अथिर ससार जाणवो, तथा जेवो इन्द्रधनुष चोमासामां आकाशे थाय छे तेनो रग केटली वार टकवानो तेवो आ ससार [illegible] एटले आ सर्वे जे सजोग ससारने विषे मल्यो छे [illegible] नो नथी तथा कर्तव्य वस्तु जेटली छे एटली सर्व [illegible] वीजलिनो झब्कार थइने नाश थाय तेम

ए वस्तु सर्वनो नाश थवानो छे जेम इंद्रजालथकी कांकरानो रू पिओ करे परतु ए रुपिओ काइ काम लागे नहि, तेम आ ससारनु सुख ए काकराना रुपिआ बराबर छे ए काइ सदा रहे नहि अ थवा जेम स्वप्नाने विषे शुभ वा अशुभ देखे परतु आहिंया कांइ शुभ अथवा अशुभ नथी एतो जाग्यो नथी त्यां सुधी एवु छे, जाग्यो एटले कांइ छे नहि एटले ते स्वप्नानी वात उपरथी मनमां कांइ हरख शोक थाय नहि तेम ससारना सुख दुःख उपरथी हरख शोक करवो नहि, ए पण अनित्य पदार्थ छे तथा जोवन पण अनित्य छे ए पण च्यार दहाडानो चटको कहेवाय जेम ठार एटले झाकल नो तरे पृथ्वि उपर केटली वार रहे ? सूरज न उग्यो त्यां सुधी तेम ए जीवन पण त्या सुधी रहेवानु ए पण झाझा दिवस टके नहि तथा कोइ राक माणस साथे स्नेह करयो ते राक बिचारो आपणु शु कारज करवानो हतो, तेम ए जोवनथकी पण काइ मारु कारज नीपजे नहि, माटे हे चेतन ! तु ताहारा आत्मामां रमणता कर शा माटे के ए अनित्य पदार्थ ए जोवन ते पामीने मदन क- रवो तथा धन सपदा राज्य ऋद्धि ए सर्वे पण कारमा छे एतो जेवो एक समुद्रनो कल्लोल चडे ने क्षय थाय तेम ए धन ठकराइ आवे ने जाय जेम चारुदत तथा वनपाल प्रमुखना दृष्टात जोजो जे एक भवमा केटलीवार पाम्या ने क्षय थयो एवो ए अनित्य पदार्थ छे ए कोईने त्या स्थिर थइने रही नथी, जेवो सध्यानो रग ते सरखो एक पामे त्यारे बने परतु एज रग सध्यानो क्षण एकमां क्षय थइने अधारू घोर थाय तेम ए धन सपदा क्षण एकमा वीण- सी पण जाय एनो कांइ भरसो थाय नही जुओ मुज जेवो राजा तेने पण अते भीख मागवी पडी अने सुलीये रोपाणा, तो ए ऋद्धि तो एवी छे तथा आज कोई शरीरनु रूप रग घाट घणो सुदर

सारो दीसे, परतु एने पण काइ वीणसतां वार लागे नही, केमके जडनो स्वभाव सडण पडण वि-वसण छे माटे एवा शरीर उपर मूर्छा न राखवी जो सनतकुमारनामा चक्रवर्ती तेनु रूप इद्रे पण वखाण्यु ने देवता जोवा आव्या ते समे खेळ भरी काया हती तो-पण देखीने भेचक थई गया तेज जे वखत सणगार करी सभामां वेठो ते वारे ते रूप न रह्यु ते देवताना केहेण थकी तबोल थुकी जोयु ने मांहे जीवडा दीठा तेज वखत ते चक्रवर्ती अनित्य ससार जाणी दिक्षा लेइ चाली नीकल्यो अथवा जेम कीर्तिधर राजा सुरजनु ग्रहण देखीने ससारने अनित्य जाण्यो तथा जेम करकडु राजा बळदने जराये पीड्यो देखीने काया प्रमुख सर्वे अनित्य जाणी, तेम ए सर्वे अनित्य पदार्थ उपर हे चेतन ! तारे कदी मूर्छा न राखवी तथा मनुष्यनु आवखु पण अथिर छे जेवो पाणीनो परपोटो क्षण एकमां नाश पामे तेम मनुष्यनु आवखु पण समजवु जेवो हाथीनो कान चपळ तेवु अथिर आवखु जाणवु वळी विचारी जो के अहो ससारने वीषे तीर्थंकर केवली गणधर चक्रवर्त्ती, वासुदेव, बळदेव, ईंद्र, देवता आदि देईने मोटा मोटा पराक्रमी पुरुष ते पण कोई इहां अमर थईने रह्या नहीं ए सर्वेनां आवखा आवी गयां एवु आवखु अनित्य जाणीने तथा धन जोवन काया पुत्र परिवार सर्व सजोग तथा कृत्रिम वस्तु ए सर्वे अनित्य छे माटे ते उपर ममता न करवी एक नित्य पदार्थ पोतानो आत्मा अविनासी ज्ञान दर्शन चारित्रनो पुज तेनु अहोनीश स्मरण करवु ए थकी अविचल सुख मळे जन्म मरणना फेरा टळे एवी रीते पेहेली भावना चेतन भावे. १

हवे बीजी अशरण भावना कहिये छीये एटले अशरण कहेतां कोइ शरणे राखवा समर्थ नथी, त्यां आत्माने एवी रीते भावना

तो जे केवलि थया तेने कहिये, तेने कहेवु के तें कहि ए वात ठीक छे, परतु एवभूतनये केवलि अरिहत छे ते शरण करवा जोग छे परतु ते कांइ अहिया आडा आवीने हाथ आपे नहि, ने जन्म जरा मरणना फेरा टळे नहि, एतो आपणो ज आत्मा आत्म स्वरूपने विषेज रमशे अने पोताना कर्मरूप शत्रुनो क्षय करशे ते वारे पोते ज केवल ज्ञान पामीने अरीहत थशे माटे ए आत्मानु स्मरण छे ते सत्य छे, ने जे केवली अरिहत विचरता छे तेनु शरण ते व्यवहार छे, तथा बीजु सिद्धनु शरण ते पण ठीकज छे, व्यवहार छे शा माटे के तेमने फरीथी ज म लेवो नथी त्यारे ए अहियां आवीने आप णने शी रीते तारशे तथा मेश्रीनी गोडे एवा बोल आपणामां नथी जे भगवाननी अकळलीला छे ते एमनी इच्छा थशे त्यारे तारी लेशे ते तो रीत जैननी छे नहि तथा कोइ कहेशे के

तिन्नाण तारयाण

ए पाठ छे तेनु केम तेने कहिये के ए पाठ छे ते उपमा वात छे पण काइ तारवा समर्थ नथी तथा शास्त्रे एवु पण कह्यु छे जे अरिहत भव्य जीवने तारवा समर्थ नथी? मार्ग देखाडवाना कुशल छे तो अरिहत समर्थ नहि, तो सिद्ध तो समर्थ शेना होय एज, प रतु सिद्ध पद तु आत्माने सवज, अति शुद्ध द्रव्यार्थक नये करीने मुल सत्ता स्वरूप आवरणना अभावथी जोइश तो तारो आत्मा सिद्ध परमात्मा छे तो तेज शरण थकी ताहारू कल्याण थशे तथा त्रीजु साधुनु जे शरण, ते साधु जैन शुद्ध मार्गना चालवा वाला एटले आचार्य उपाध्याय सर्व साधुमां आव्या ते शुद्ध मार्गवाला तेनु शरण जे करीये ते पण पूर्ववत् व्यवहार छे अहियां कोइ कहेशे के ए तो उपदेशना दातार छे ते समकित ज्ञान चारित्र पमाडे तेने व्यवहार केम कह्यो? तेने कहियेके समकित ज्ञान चारित्र पमाडे

ते कांइ बहारथी आवतु नथी ते तो आत्मामांथी प्रगट थाय छे, परतु एवा उपदेशना दातार शुद्ध मार्गना देखाडनारा माटे तेनो उपगार घणो मोहोटो छे, कदापि असंख्याता भव सुधी तेनी शेवा भक्ति करीये तोए पण गुण ओशींगण न थइये परतु उपदेश तो ते सर्वने दे छे, पण ते निमित्त कारणरूप ऊे पण उपादान कारण रूप गुरु तो आत्मा ऊे, जो पोते सवलो परिणमे तथा धर्मनो खपी होय तेने उपदेश गुण लागे पण जे काइ मिथ्यात्वना भरेला बोहोळ ससारी तथा कृष्ण पक्षीया तेवा जीवोने कांइ उपदेश लागे नहि, जेम जमालीने भगवत तथा गौतम प्रमुख साधु पण घणा समजावनारा मल्या तो पण ते काइ समज्यो नहि, तो उपदेशना देनारनु शु वले ? तथा अन्य दर्शनी प्रमुख घणा जीव भगवत पासे आवीने प्रश्न पुछया ने प्रश्नना उत्तर भगवते दीधा पण कांइ तेणे मान्या नहि, तो भगवत थकी ते तरया नहि ते अधिकार श्रीभगवती थकी जाणजो, माटे पोतानो आत्मा सवलो परिणमे ने पोतानु धर्म प्रगट करवा चाहे ते धणी धर्म पामे आत्मा तेज साधु छे ते भगवतीजिमां कह्यु ऊे माटे तेनुश स्मरण करवु.

हवे चोथु जे केवली भाषित धर्मनु शरण कहेतां जे केवळीए भाख्यु जे देशविरती १ सर्वविरती २ तथा वीजे प्रकारे पण वे भेद कह्या छे, श्रुत धर्म तथा चारित्र धर्म तेनुज शरण करवु ते व्यवहार छे माटे केवळीए भाख्यु एवु जे धर्म जे वस्तुनो स्वभाव तेनुज शरण करवु ते निश्चय छे एटले वीतराग भाषित जे धर्म ते आत्मस्वरूपनी रमणता, परभावनो त्याग तेहीज शरण ते सत्य छे एटले आ ससारनी माहेली कोरे पोताना ज्ञान ध्यान विना कोइ राखवा समर्थ नथी, एटले जन्म जरा मरणना फेरा वीजा थकी टले नहीं, जेम श्रीगौतमस्वामी भगवान श्री वीरस्वामीनु

नाम तथा सेवाभक्ति अहोनिश करता हता, ने जे वारे भगवान श्री महावीरनु निर्वाण थयु ते वारे स्वपरनी रमणता थइ अने भगवत थकी पोतानो आत्मा पाते जुदो दीठो ते वारे रागद्वेष मुकीने स्वसत्तामां प्रवेश थयो, एटले शुक्ल ध्यान पण आव्यु तेथी केवलज्ञान पाम्या अने मोक्ष पण गया ने जो "भगवान वीरस्वामी वीरस्वामी" करता होत तो त्रण कालमां पण मुक्ति थात नही माटे शरण ते पोताना आत्मानु तेहीज सत्य छे बाकी सर्वे व्यवहार छे ते माटे हे चेतन पोताना ज्ञानदर्शन चारित्रनी रमणता करवी ते थकी ससारनो पार पामीश, अने जो तु नही करे तो आ ससारमा तने कोइ राखवा समर्थ नथी, अने तु जे आ ससारनी मोहजालमां गुथाणो छे ते मोहजाल मिथ्या छे ए सर्व आलपपाल फोकटनो छे आ ससारनी माया सर्वे जूठी जाणवी, ते अमे सक्षेपथी कहीये छीये माता तथा पिता तथा स्त्री तथा पुत्र तथा भाइ तथा भावड सगां वहालां कुटुब परिवार, ए सर्वे स्वार्थनु सगु छे, एमां कोइ तारु नथी अने रोगादिक आवीने उपने थके अथवा आवखु आवे थके ते कोइ सगावाहाला छोडाववाने समर्थ नथी रोग कोइथी लेवाय नहीं, तथा काल थकी पण राखवा कोइ समर्थ नथी अने वेदना पोते भोगवे ने मार मारु करतो जाय ते वारे नरकादिक गतिनां महा दु ख भोगववां पडे, अने जे पाप करीने पैसो कमाणा ते केटला होय ते भोगवे माटे पाप जे बाध्यु होय ते भोगववु पडे ए सज्जननी पण कारमी सगाइ छे ए कांइ आ आपणा दु'खनो विभागी न थाय,

तथापीजोने प्रत्यक्षपणे जे द्वारको जेवी नगरी कृष्ण जेवो वासुदेव बलभद्र जेवो बलदेव, अने भगवान नेमनाथ जेवा तीर्थंकर तेने माथे धणी, तोय पण जे वखत द्विपायनदेवे द्वारकांनो दाह

कर्यो ते वारे कोईथी रखाणु नही, अने सर्वे नगरीनो क्षय थइ ग-
यो, अने कृष्ण वलभद्र बे भाइ माता पिताने लेइ नीकलवा मांडयु
तोय पण लेइ नीकलायु, नही ते पण ए नगरी भेगा क्षय थइ गयां
तो कोनु शरण करवु के जो वासुदेव बलदेव सरखा महा जोद्धा
ते थकी पण पोतानां मावित्रने रखाणा नही, ने महा कंगाल भीक्षु-
वत बन्ने भाइ चाली नीकल्या छप्पन कुलकोड जादवना परिवारनो
धणी तेने पण ए अवस्था थइ ते सर्व पोताना कृत कर्म पोताने
नडे छे जुओके कोइनु शरण इहा खप लाग्यु नहि, अने तमे जेटलु
तो ते चार शरण करवामा समजता हशे शामाटे के ज्यां श्री भग-
वान नेमनाथ स्वामीनो विहार घणा फेरा थयो छे तथा ते क्षेत्रे साधु
साधवीनो विहार पण घणो छे माटे तेणे शु अरिहंतादिक शरण नहि
कर्यां होय परतु कोइथी रखाणा नहि तथा रोहिणी देवकी प्रमुखे
तो तिर्थंकर गोत्र बांधेला छे तो तेने शु समज नहि पडी होय
परतु पोतानां बांधेलां जे कर्म ने पोतेज भोगवे ए कोइ थकी दूर
थाय नहि एवु जाणीने आत्म धर्मनी खप करवी तथा नवनंद पा-
डलीपुरमा थया तेणे नव डुंगरीओ धननी समुद्रमा करावी ते धन
त्यां रह्यु ने पोताने काल खाइ गयो माटे धनादिक वस्तु कोइ श-
रण भूत थाय नहि तथा सुभूमनामा आठमो चक्रवर्त्ति छ खडनो
भोक्ता जेनी पासे पचीश हजार देवता शेवामा हता तोय पण सर्वे
सेना परिवार सहित समुद्रमां डुब्यो पण कोइ राखी शक्यु नहि
आवखु आवी रह्यु त्यारे देव पण नाशी गया माटे आ ससार
एवो शरण रहित छे माटे ते ससारने विषे मूर्छा राखवी नहि शा
माटे के जन्म जरा मरण सदाय वासे लागी रहेलां छे ते कोइने छो
डतां नथी तो तने केम छोडी देशे ते माटे तु तारा स्वभाविक ध-
र्मने विषे स्थिर प्रभाव दूरकर जेम तारा आत्मानु कारज सरे,

एज एक शरण श्रुत छे बीजो कोइ संसारमां शरणे राखनार नथी॥

हवे श्रीजी संसार भावना कहिये छीये एटले संसारनु रूप केवु छे ते सर्वे विचारीने जोइये प्रत्यक्ष ए वधी वस्तु कारमी दीसे छे के जुओ आ संसारने विषे आपणो जे चेतन अनंतो काल थयां परिभ्रमण करे छे ते सर्वे कर्मने वश रह्यो थको एटले कर्म केवां जोरावर छे के भलाभला मुनिने पण अगीआरमे गुण ठाणेथी पा छा नाखी आपे छे ने नित्य नवा संसारमां रूप ग्रहण करावे छे एटले विविध प्रकारनु नाटक जीव पासे करावे छे माटे आवो मनुष्यनो भव सुगुरुनी जोगवाइ पामीने जो कोइ धर्मनी समज तने पडी होय अने जो धर्मनो खप होय अने अनेक विध नाटक संसारमा करता ते थकी थाक्यो होय तो तु आत्मस्वरूपनी खप कर हवे तें पुर्वे नाटक कर्यु ते भवनो संक्षेप देखाडिये छिये प्रथम तो अव्यवहार राशी निगोदमा हतो ते कोइ अकाम निर्जराना जोरथी व्यवहार राशीमा आव्यो तोय पण अनंतीवार सुक्ष्म निगोदमां गयो तथा बादर निगोदमां पण अनंतीवार गयो तेमज प्रत्येकनी गतिने विषे पण पृथ्विकाय सूक्ष्म तथा बादर, अपकाय सुक्ष्म तथा बादर, इत्यादिक चारे गतिने विषे अनंताकाल थयां तु भटके छे एवी गति कोइ नथी के तु ते गतिने विषे न गयो होय तथा एवो वर्ण, गंध, रस, फरस, रूप, शब्द, स्वस्थान तु न पाम्यो, एवु कोइ दिसतु नथी सर्व पुद्गलना परमाणु तु पामी चूक्यो छे तथा चौद राज लोकने विषे एवो कोइ आकाश प्रदेश नथी जे तु फलाणी आकाश प्रदेशे जन्म तथा मरण कर्या विना बाकी रह्यो ते माटे अनंता अनंता पुद्गल परावर्तन थया शुभाशुभ आगे भोगवतां तथा जन्म मरणादिक दुःख सेहेता थकां गया तोए पण तने हजु कोइ संसारनो भय लागतो नथी तो ए जोतां अहो चेतन तारु

घणुं कठोरपणु छे अने कोण ए संसारमा सुखीयो थयो ? जेणे ए संसार छोडयो ते सुखीआ थया जुओथावच्चा पुत्र महा ऋद्धिनो धणी बत्रीश स्त्रीओ जेने छे, ने भगवान नेमनाथ स्वामिनी देशना सांभळीने संसार खोटो जाण्यो ने संसारथकी विरक्त भाव थयो ते संसार छोडी चारित्र लीधु पोताना आत्मानु शुक्ल ध्यान ध्याइने केवल ज्ञान पामीने मोक्षे गया ते सुखीया थया तथा अनाथी मुनि संसारथकी रोगनु कारण पामीने विरक्त थया त्यार पछी श्रेणिक राजा मळ्या ते वारे घणुक संसारनु सुख आपवानु देखाडयु तोय पण ते पासमां पड्या नहि ने सामु श्रेणीक राजाने समकित पमाडयु ते घणी सुखीया थया वली संसारने विषे जे सगां वहालां छे तेनो पण नियम नथी जे एनु एज सगपण रहे एकएक जीव साथे अनंता सगपण थयां ते सिद्धांतमां कह्यु छे तथा विवरासहित जोवु होय तो भुवन भानु केवलीना चरित्रमां जोजो, तथा यसोधर तथा यसोधरनी माता तथा यसोधरनी स्त्री तथा यसोधरना छोकरानां सगपण अन्योअन्य थया ते यसोधरना चरित्रथकी जाणजो, तथा श्री ऋषभदेव स्वामीने श्रेयासकुमारनां नव भवनां सगपण जुदी जुदी रीतथी थया ते सर्वे श्री ऋषभदेव स्वामीना चरित्रथकी जाणजो इत्यादिक घणा शास्त्रने विषे घणा जीवोना अधिकारमा सगपणनो नियम रहेतो नथी, बहु वीपरित सगपण थाय छे ते माटे एवा असार संसारनु स्वरूप विचारीने जेम ए संसारथकी छुटवानो विचार करवो ते संसारथकी छुटवामां एक ज्ञान दरशन चारित्र एज सुखकारी छे ते पोताना आत्मामांज छे तेने प्रगट करवु ते शाथकी थाय के जो सुगुरु स्वपर समयना जाण, आत्मज्ञानी एवा पुरुषनी सेवा करीने तेनी पासे अध्यात्म ग्रंथ तथा द्रव्यानुजोगना ग्रंथ छे ते सांभलवाथकी तमने ज्ञान प्रगटशे

ने पानथकी विज्ञान प्रगटशे यावत् मुक्ति मलशे, संसारनो छेद आवशे, सर्व कर्मनो नाश थशे, अनंत सुखना विभागी थशो, एवी रीते ससार भावना भाववी ए त्रीजी भावना

हवे चोथी भावना एकत्व कहेतां एकाकीपणे छे एटले आ ससारने विषे पूर्वे कह्या जे भवातर गति आदिकने विषे कर्यो पण त्या एकाकी त्यां कोइ जीवनो सहचारी हतो नहि जीव एकलो सुख दुःख सर्व भवने विषे भोगवे छे ते माटे हे चेतन ? अनतोकाल एवो एकाकीपणे थयो, तोय पण हजी तु ममता छाडतो नथी हजी तु जाणे छे के सर्व ससारमा वस्तु छे ते मारीज छे, एटले धन धान्य पुत्र कलत्र सज्जन सबधी तु मारु मारु करी रह्यो छे पण ते कोइ तार नथी, तारो तो तुं हे चेतन एकज छे, अने जो प्रत्यक्षपणे ए सर्व ससारी मल्या छे ते सर्व स्वार्थीया छे, स्वार्थ पुरो थाय त्या सुधी ए सर्वे सगा जाणवां, स्वार्थ पुरो नहि थाय तो एज दुश्मन जाणवा, अने तारु अहियां कोण छे तु जन्म्यो त्यारे पण एकलो हतो, ते वारे काइ सगा वहाला तथा धन माल साथे लेइने आव्यो नहोतो, तथा जइश ते वारे कांइ साथे लेइने जवानो नथी, ते सर्वे सगावहाला धनमाल अहियां पडयु रहेशे ने तारे एकलाने जवानु छे, माटे खोटी ममता शावास्ते करेछे ते करतां प्रत्यक्ष विचारीने जो जे मोटा मोटा चक्रवर्ती ते पण छोडी ने गया एटले ब्रह्मदत्त नामा चक्रवर्ती छ खडना राज्यनो भोक्ता चौदरत्न नव निधान चोसठ हजार अतेउरि इत्यादिक सर्व चक्र वर्तीनी ऋद्धिने विषे अत्यंत मुर्छीत हतो ने चित्र मुनिये घणो उपदेश कर्यो हतो तो ए पण तेणे मान्यु नहि उलटो तेने ससारमां नांखवानो उद्यम कर्यो पण ते तो आत्मज्ञानी पुरुष ते ससारने

जुठा जाणे छे ते ससारमां केम पडे ? अने ब्रह्मदत्तने

उपदेश न लाग्यो ते वारे मुनी विहार करीने गया अने ते ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती ससारना सुखनो अत्यत रागी तेज भवमा आंधलो थयो ने अंते मरीने सातमी नर्के गयो पण ऋद्धि परिवार कोइ साथे गयो नहि तथा रावण लंकाधिपति त्रण खंडनु राज जेने घेर, महा अभिमाननो भरेलो एवो जे पुरुष ते पण अंते रण-सग्रामने विषे मराणो अने मरीने नर्के गयो पण ए ऋद्धि परि-वार कशुए खप लाग्यु नहि माटे एवो ससार अस्थिर छे ने आ-पणु कोइ नथी आपणो तो एक चेतन छे बाकी सर्वे स्वार्थनु छे जेम एक वृक्ष उपर साज पडे हजारो जनावर भेगा थाय अथवा केटलाएक माहे माला करीने रहेता होय पण जे वारे ए वृक्षने माथे आपदा आवीने पडे एटले दव लागे अथवा कोइ कापवा आवे ते वारे सर्वे जानवर मुकीने नासी जाय एमज आ ससारने विषे, जीवने स्वार्थ होय त्यां सुधी सर्वे सगु छे पण आपदा आवी पडे तेवारे कोइ भलु न थाय तथा आवखु आवी रहे तेवारे कोइ राखे नहि, माटे आपणे एकला आव्या ने एकला जवु त ससार उपर खोटी ममता शा वास्ते करवी जेम नमीराजा पोताना शरीरने दाहज्वर रोग उपन्यो ते वारे स्त्रीओ बावनाचंदन घ सती ते चुडानो खडखडाट थनो थनो शामाटे के एक हजार राणी हती ते सर्वे घसती ते मधानना कहेणथी अकेकी चुडी रा खी तेथी राजाने सुख उपज्यु पछी मधानना कहेणथी राजा-ने मालम थयु के राणीए अकेकी चुडी राखी छे तेथी खलभरा ट नथी माटे एकाकीमा सुख वृत्ति छे एम विचारी मन साथे एवो निश्चय कर्यो के जो मने रोग मटे तो हु एकाकी विचरु तेमज प्रभाते रोग मट्यो ने चारित्र लेइ एकाकी चाली नीकल्यो सर्व परिवार ... थइने उभो रह्यो ते वारे गाममांथी नी-

करया पछी शक्रेंद्र भगवार नोखो नोखो रूप करीने नमि राजानी परीक्षा करी पण ससार सामु नमिराज ऋषिये जोयु नहि, तथा वनमा श्री ऋषभदेव स्वामिना मंदिरने विषे चार द्वारे थइने चार प्रत्येक बुद्ध पेठा ते मध्ये करकडुराज ऋषिश्वर पासे सोनानो ग्वरपो खाज खणवाने राखेलो छे त्यां बीजा प्रत्येक बुद्धे कयु के साधुने कंचन शु ? ते वारे त्रीजा प्रत्येक बुद्धे बीजा प्रत्येक बुद्धने कयु के तु तारा स्वभावमां एकाग्रपणु मुकीने बीजामां केम भले छे ते वारे चोथा प्रत्येक बुद्धे त्रीजा प्रत्येक बुद्धने कयु तुं वली एनामां केम पेसे छे तु तारा स्वभावमां रमण कर ते वारे चारे प्रत्येक बुद्ध एकत्व भावमां रमण करवा लाग्या तेथी केवल ज्ञान पाम्या ते अधिकार प्रत्येक बुद्धना चरित्र प्रमुख घणे ठेकाणे छ

एम एकत्व भाव आत्मस्वरूप विचारवु इहां गुण पर्याय पण जूदा न पाडवा गुण पर्याय छे, ते द्रव्यमान छे अने गुण पर्याय द्रव्य विना ना होय अने गुणपर्याय विना द्रव्य पण न होय ते द्रष्टांते करीने ओलखावीये छीये जे घटने घटनो गुण जल धारण पणु ते कांइ जूदु नथी ज्यां घट छे त्यां जलधारण करवीज, ज्यां जल धारणपणु त्यां घट छेज, माटे ए द्रव्यने द्रव्यनो गुण ते भेगोज छे, त्या घटने घटना पर्याय जे रक्त तत्वादीक ते पण कांइ जुदा नथी, ज्यां घट छे त्यां वर्ण छे ने वर्ण छे त्यां घट छे, तेमज द्रव्यने विषे द्रव्यनो पर्याय जुदो नथी एटले आत्मा ते द्रव्य ज्ञानादिक ते गुण ते कांइ आत्मा थकी ज्ञानादिक गुण जुदा नथी ने जो ज्ञानादिक गुण जुदा कहीये तो आत्मा शानें कहीये माटे आत्माए ज्ञानादिक गुण अने ज्ञानादिक गुण ते आत्मा तथा आत्माने आत्माना गुण पर्याय जुदा नथी माटे गुण पर्याय सहित आत्मा, जेम

पटने पटनुं भिन्नपणु तथा आधारआधेयपणु ते काइ जुदु नथी ए त्रण मलीने एक वस्तु थाय कदापि त्रणमांथी एक न होय तो ए वस्तु पण न होय अहिया उपनय जोडीये छीये, जेम पट ते आत्माने ठामे ने आधार आधेयपणुं ते ज्ञानादिक गुणने ठामे अने भेदादिक ते पर्यायने ठामे. ते जेम त्रण मलीने एक एक वस्त्र थयु, तेम अहिया पण गुण पर्याय सहित आत्मा थाय एवी रीते विचार एकत्व भावनो करवो ते केवलज्ञान दातार छे था माटे के ए शुक्ल ध्यानना बीजा पायानु लक्षण छे, एटले शुक्ल ध्यानने पेहेले पाये तो भेद ज्ञान तथा भेदाभेद ज्ञान छे तेथकी एकला मोहनीकर्मनो नाश थाय पण केवलज्ञान न पामे, अने शुक्ल ध्याननो बीजो जे पायो एकत्व भाव छे ने अभेदज्ञान छे तेथकी त्रण कर्मनो नाश थाय ज्ञानावरणी दर्शनावरणी अतराय ए त्रण कर्मनो क्षय थयाथी केवलज्ञान केवलदर्शन प्रगटे, एवी एकत्व भावनाने विषे माल रह्यो छे माटे एकत्व भावना सदाय निरतर भाववी, ए भावना भावतां थका अनता कर्म निर्जरे अने मुक्ति ढुकडी आवे ए वातमा शका राखवी नहि ए चोथी भावना कही हवे पाचमी भावना कहिये छिये

ते अनित्यभावना छे एटले अनित्य कहेता सगावाहालां सज्जननो जे स्नेह ते सर्वे अनित्य छे अने ए स्नेहना राखवा थकी जीव भवसमुद्रने विषे डुबे छे अने अनता जन्म मरण करे छे अने अनतु दुःख भोगवे छे एम विचारीने सगावहालां सज्जन उपरथी स्नेहभाव तजवो केमके ए ममतारूप डाकणी सर्वने खाइ गइ छे ने आपणने पण अनतो काल थया रोले छे माटे ए ममता डाकणीने घर थकी कहाडवी [illegible] सज्जन सबधी मल्या छे ते स्वार्थना स-गां छे पण ताउ [illegible] नहि तु पण एमा कोइनो न [illegible]

सजोगे मली विजोगे जाशे, जेम पथी जननो मेलो कहेतां जेम को इक धर्मशालाने विषे रस्ते जता रात त्यां रह्या, बीजा पण दशदे शनां पथी आवीने उतर्यां छे, तेनी साथे प्रीति वधाणी ने प्रभातनो काल थयो त्यारे सर्व सर्वने मार्गे चाली नीकल्या, हवे ए प्रीतिनो निर्वाह क्यां करशे, तेम आ जीव इहांथकी परलोक गये थके ए सगां वहालाना स्नेहनो निर्वाह क्यां करशे, माटे सर्व अनित्य पदार्थ छे अथवा जेम तिर्थने विषे संघ मनुष्य मले छे, पछी तेमां केटलाएक जीव पुन्य उपार्जे ने केटलाएक जीव पाप उपार्जे. एम नफो टोटो लेइने सहू महूने मार्गे पाछा जाय तेम आ मनुष्यभव रूपि तीर्थ तेने विषे आ जीवरूपी संघ मल्यो छे तेमां को इक जीवनो वस्तुधर्म पामीने ज्ञान ध्यान करे. करीने सर्व कर्म ख पावीने मोक्ष जाय, अथवा कोइक जीव पुन्य उपार्जिने देवादिक शुभ गतिमां जाय अथवा कोइक जीव पाप उपार्जिने नर्कादिक ग तिमां जाय, पण कोइ स्थिर भावे तो अहियां रहेवानो छेज नहि. अने जे सज्जन भवथी ते तो जो स्वार्थ तेनो पुगे न थाय तो तुरत छेह दाखे, जेम परदेशी राजाने सुरीकताराणीए झेर देईने मारी नाख्यो ते अधिकार रायपसेणीथी जोजो तथा ब्रह्मदत्त चक्रव र्तिनी माता चुल्णी जे स्वार्थ पोतानो न सरतो दीठो त्यारे लाख नो मेहेल करावीने दीकरा वहुने माहेलीकोर सुवाडया ने ते मेहेल सलगावी दीधो, पछी त ब्रह्मदत्तनु आवखु हतु तो सलगमां थइने जीवतो नीकल्यो, परतु मातानो स्नेह पण एटलोज छे माटे ससार अनित्य छे तथा जुवो श्रेणीक राजाए पोताना पुत्र कोणीकनो अगुठो छ मास सुधी मोहोडामा राखीने लोही परु चुस्यु, अने कोणीकनी माता चेलणाने ए पुत्र जीवतो राखवोज नहि हतो, पण श्रेणीके जोरावरीए ते पुत्रने उछेर्यो तेज पुत्रे पिताने काष्ट पंजरमां

घाल्यो ने दीन मत्ये पाचसें पाचसें कोरडा मारे, जुवो ए ससारनु सगपण एवु अनित्य छे ए सर्वे स्वार्थनु सगु छे तथा मरुदेवा माता जेवारे रीखवदेव स्वामी दिक्षा लेइने चाली नीकल्या त्यांथी माडीने एक हजार वर्ष सुधी मारो रीखव मारो रीखव करीने आखे आंधला थयां, ते सर्वे स्नेहना फल जाणवां जे वारे भगवत केवल ज्ञान पाम्या ते वारे भरत वांदवा गयो ते वारे माताने पण साथे तेडी गया ते हाथीनी खंधे बेठा थकाज भगवतनी ऋद्धि संपदा देखीने स्नेह टुटी गयो अने विचार्यु जे हु रीखव रीखव करता आधली थइ अने रीखवतो आटली रिद्धि भोगवे छे अने माताने संभारतो पण नथी, तो केनो रीखवने केनी माता सहु सहुना आत्मानु सरीख छे एम अनित्य भावना भावता थकां अतगड केवली थइने मोक्षे गयां, ते फल ते अनित्य भावनानु, तथा श्री गौतम स्वामी त्रीश वर्ष सुधी महावीर स्वामीनी सेवामां रह्या अने भगवान उपर घणो स्नेह रह्यो, तेथी करीने केवलज्ञान पाम्या नहि, तथा क्षेपक श्रेणी पण आवी नहि, जे वारे भगवान निर्वाण पाम्या ते वारे एवी भावना थइ जे केना वीर ने केना कुवीर ? वीर तो आत्मानु कारज करीने गया अने तु फागट वीर वीर पोकारे छे तेमां तारु शु वल्यु ? तु तारा आत्मानु कारज कर एम अनित्य भावना भावतां थका केवलज्ञान पाम्या एम बीजाने पण अनित्य भावना भाववी तेथकी आत्मानु कारज थाय एटले ए पाचमी भावना कहि

हवे छठी भावना असुची नामे कहिये छिये एटले असुची कहेता अपवित्र वस्तुने विचारवी एटले ते अपवित्रपणु शा थकी पामे छे ? ते कहिये छिये जे जीव मोहने वश पडयो थको कर्म बांधे ते थकी मन वश पण न रहे अने मन वश न रहे ते वारे मन

सजोगे मली विजोगे जाशे, जेम पर्थी जननो मेलो कहेतां जेम को इक धर्मशाळाने विषे रस्ते जता रात त्या रह्या, बीजां पण देशदेशनां पर्थी आवीने उतर्यां छे, तेनी साथे प्रीति वधाणी ने प्रभातनो काल थयो त्यारे सर्वे सर्वेने मार्गे चाली नीकल्या, हवे ए प्रीतिनो निर्वाह क्यां करशे, तेम आ जीव इहांथकी परलोक गये थके ए सगां वहालाना स्नेहनो निर्वाह क्यां करशे, माटे सर्वे अनित्य पदार्थ छे अथवा जेम तिर्थने विषे संघ प्रमुख मले छे, पछी तेमां केटलाएक जीव पुन्य उपार्जे ने केटलाएक जीव पाप उपार्जे. एम नफो टोटो लेइने सहू सहूने मार्गे पाछा जाय तेम आ मनुष्यभव रूपि तीर्थ तेने विषे आ जीवरूपी संघ मल्यो छे तेमां को इक जीवतो वस्तुधर्म पामीने ज्ञान ध्यान करे. करीने सर्वे कर्म ख पावीने मोक्षे जाय, अथवा कोइक जीव पुन्य उपार्जिने देवादिक शुभ गतिमा जाय अथवा कोइक जीव पाप उपार्जिने नर्कादिक ग तिमां जाय, पण कोइ स्थिर भावे तो अहियां रहेवानो छेज नहि, अने जे सज्जन संबंधी ते नो जो स्वार्थ तेनो पुरो न थाय तो तुरत छेह दाखे, जेम परदेशी राजाने सुरीकताराणीए झेर देईने मारी नाख्यो ते अधिकार रायपसेणीथी जोजो तथा ब्रह्मदत्त चक्रव र्त्तिनी माता चुल्णी जे स्वार्थ पोतानो न सरतो दीठो त्यारे लाख नो मेहेल करावीने दीकरा वहुने मांहेलीकोर सुवाडयां ने ते मेहेल सळगावी दीधो, पछी ते ब्रह्मदत्तनु आवखु हतु तो सलगमां थइने जीवतो नीकल्यो, परतु मातानो स्नेह पण एटलोज छे माटे संसार अनित्य छे तथा जुवो श्रेणीक राजाए पोताना पुत्र कोणीकनो अंगुठो ७ मास सुधी मोहोडामा राखीने लोही परु चुस्यु, अने कोणीकनी माता चेलणाने ए पुत्र जीवतो राखरोज नहि हतो, पण श्रेणीके जोरावरीए ते पुत्रने उछेरयो तेज पुत्रे पिताने काष्ट पंजरमां

घाल्यो ने दीन प्रत्ये पाचसें पाचसे कोरडा मारे, जुवो ए ससारनु सगपण एवु अनित्य छे ए सर्वे स्वार्थनु सगु छे तथा मरुदेवा माता जेवारे रीखवदेव स्वामी दिक्षा लेइने चाली नीकल्या त्यांथी मांडीने एक हजार वर्ष सुधी मारो रीखव मारो रीखव करीने आखे आंधला थयां, ते सर्वे स्नेहना फल जाणवां जे वारे भगवंत केवल ज्ञान पाम्या ते वारे भरत वांदवा गयो ते वारे माताने पण साथे तेडी गया ते हाथीनी खधे बेठा थकाज भगवतनी ऋद्धि सपदा देखीने स्नेह तुटी गयो अने विचार्यु जे हु रीखव रीखव करता आधली थइ अने रीखवतो आटली रिद्धि भोगवे छे अने माताने सभारतो पण नथी, तो केनो रीखवने केनी माता सहु सहुना आत्मानु सरीख छे एम अनित्य भावना भावता थकां अंतगड केवली थइने मोक्षे गयां, ते फल ते अनित्य भावनानु, तथा श्री गौतम स्वामी त्रीश वर्ष सुधी महावीर स्वामीनी सेवामां रह्या अने भगवान उपर घणो स्नेह रह्यो, तेथी करीने केवलज्ञान पाम्या नहि, तथा क्षेपक श्रेणी पण आवी नहि, जे वारे भगवान निर्वाण पाम्या ते वारे एवी भावना थइ जे केना वीर ने केना कुवीर ? वीर तो आत्मानु कारज करीने गया अने तु फागट वीर वीर पोकारे छे तेमां तारु शु वल्यु ? तु तारा आत्मानु कारज कर एम अनित्य भावना भावतां थका केवलज्ञान पाम्या एम बीजाने पण अनित्य भावना भाववी तेथकी आत्मानु कारज थाय एटले ए पांचमी भावना कहि

हवे छठी भावना अशुची नामे कहिये तिये एटले अशुची कहेता अपवित्र वस्तुने विचारवी एटले ते अपवित्रपणु शा थकी पामे छे ? ते कहिये छिये जे जीव मोहने वश पडयो थको कर्म बांधे ते [illegible] ण न रहे अने मन वश न रहे ते वारे मन

जोगथकी कर्म घणां बांधे तथा मन वश न होय तो इंद्रिओ पण जोर घणु दाखवे अने इंद्रिओना परिजलथी करीने जीव प्रमादमां पडे ने प्रमादमा पड्यो एटले तेने ज्ञान ध्यान तो होयज नहि, तेने तो इंद्रिओना पोषणनोज विचार अहोनिश रहे, तथा जीव अनंता कर्म अशुभ उपाजे अथवा कदापि कोइ शुभ उपाजे परंतु अंते ए कर्मवश कहिये, ते कर्मना जोरथी करीने जीव नरकादिक गतिने विषे जइने उपजे तो त्यातो रुधीर मांसनो कर्दम थइने रह्यो छे, ने सदाय छेदन भेदन छे त्यां अशुचीनु शु कहेवु अथवा मनुष्य अथवा तिर्यचनी गतिने विषे आवे तो त्यां पण गर्भवासने विषे तो अशुचीनोज भंडार छे ते गर्भवासमा उपजाववानी तथा उपजवाना थानकनी वार्ता संक्षेपथकी देखाडीये छिये, जीव गर्भने विषे केटला दिवस रहे तथा केटला रात्र रहे तथा केटला मुहूर्त रहे तथा केटला श्वासोश्वास रहे तथा जीव शो आहार ले एटलां वानां गर्भनां कहीशु हवे जे गर्भने विषे जीव वसेने साडीत्रिस्त्रोतेर अहोरात्र रहे एटलो गर्भ स्थितिनो कालपाये छे, तेमा कोइने गर्भ ओछो थइ जाय ते सर्व कर्मनो व्याघात जाणवो तथा जीव गर्भने विषे आठ हजार त्रणसने पचवीस मुहूर्त रहे व्याघातथकी ओछो अधिक जाणवो तथा चौंदलाख दशहजार वसने पचवीस एटला श्वासोश्वास गर्भने विषे लेवे

हवे गर्भावासे जीवने उपजवानु थानक देखाडे छे, ते स्त्रीनी नाभिने हेठे बे नाडी छे, ते ने नाडी फुलने आकारे छे तेनी नीचे योनि छे, ते मध्ये जीवने पजवानु ठेकाणु छे ते जेम कमल उधु करीने राखिये ते आकारे छे, तेनी नीचे जेवी आंबानी माजर तेवे आकारे मासनी पेसी छे ते जे वारे स्त्री ऋतुकाल होय ते वारे मासनी माजर फुटे ते मांहेथकी रक्त वहे जीवनां

उत्पत्ति विषे जे अधोमुख फूलने आकारे योनि छे, त्यां पुरुषनु वीर्य समाप्त थाय ते काले योनीमिश्रीत होय ते वारे जीव उपजवा जोग थाय ते वीर्य प्राप्त थया थकी बार मुहूर्त्त सुधी जीवनु उपजवु थाय, ते वार पछी ते वीर्य नाश पामे आहियां केटलाएक जीव पण नाश पामे शामाटे के जो जीव त्यां उपजे तो एक पण उपजे तथा बे पण उपजे तथा त्रण पण उपजे तथा उत्कृष्टा नव लाख उपजे, तेनु आवखु जघन्यथकी अंतर्मुहूर्त्त उत्कृष्टक्रोडपूर्वनु, ते जीव जे उपजे तेना पितानी सख्या कहीये छीये, एक होय अथवा बे होय अथवा नवसें पिता होय, हवे गर्भना जीवने उपजवानु ठेकाणु कहीये छीये स्त्रीनी जमणी कुखे पुत्र होय, डाबी कुखे दीकरी होय, ए बे कुखनी मध्य भागने विषे नपुंसक होय हवे ते गर्भनी स्थिति कहीये छीये, मनुष्य गर्भमां रहेतो बार वर्ष रहे एथी अधिकु न रहे, कदापि कोइ अधिकु रहेतो छोड होय पण जीव न होय, कदापि नवो जीव ते छोडमा आवीने उपजे तो छोड पक्षव थाय. तिर्यंच गर्भमां रहेतो उत्कृष्टो आठ वर्ष रहे, हवे गर्भने अहारनी विधि कहीये छीये जे जे गर्भने विषे उपजे ते प्रथम समे अहार ले ते अहार शु करे ? मातानु रुधिर पितानु वीर्य ते प्रथमे अहार करे तो अपवित्र असुची दुगछनीय एवो अहार करे छे ते वार पछी तेनुज शरीर बांधे यावत् छ ए पर्याप्ति पुरी करे एम करतां सात दिवस थाय त्यारे पाणीना परपोटा जेवो थाय, ते वार पछी मनुष्यपणु बांधे, ते वार पछी आरानी गोटी सरखो बधाय, ते वार पछी प्रथम महिनो पुरो थये ए गर्भ एक करखणे उणो एक पल्नो थाय, मोल मासानु एक करखण कहीये चार करखणे एक पल कहीये तथा बीजे महिने ते पेसी कठण थाय ते वार पछी त्रीजे मासे माताने उपजे, गर्भ सारो होय तो मारा सारा

अभिलाख थाय, अथवा गर्भनो जीव माठो होय तो माठा माठा अभिलाख थाय, तथा चोथे मास माताना अगनो वधारो थाय, तथा पांचमे मासे पाच अग थाय हाथ २ तथा पग २ तथा मस्तक १ ए पांच अग थाय, छठे मासे रुधिरनो सग्रह थाय, तथा सातमे मासे सातसें नाडी वधाय, तथा पांचसें पेसी वधाय, तथा नव धमणी अने नाभीथाय, तथा नवाणुलाख रोमराय प्रगटे, तथा रोम अहार ग्रह थाय, अने समे समे परिणमे, वली बीजा केस दाढी मूछविनाना कह्या. सर्व शरीरे मलीने साडीत्रणक्रोडी रोमरायहोय आठमे मासे सर्व अगोपाग सपूर्णहोय हवे गर्भनेविषे जे उपन्यो तेने लघुनिल्य वडीनित्य सलेखम बलखा प्रमुखकांइ न होय एटले ते जीव गर्भमा रह्यो थको आहार करे ते आहार इंद्रि नी पुष्टीकरे, हाड तथा मेज तथा केस प्रमुखनी वृद्धि करे, हवे जे गर्भमा रह्यो थको आहार करे ते सर्व शरीरे करे अने सर्व शरीर परिणमावे, अने वारवार आहार करे ने सर्व शरीरे उश्वास निश्वा सले ते पण वारवार ले, ते आहार क्या थकी ले छे ? मातानी नाभीनी ने पुत्रनी नाभीनी रसहरणी जे नाडी छे ते मातासाथे सलग्नज छे, ते पुत्रना जीवने स्पष्ट छे ते कारणमाटे आहारकरे तेथी आहार परिणमे तथा एक बीजी नाडी पुत्रना शरीरसु सलग्नपणे छे, तेमाताना शरीरने स्पष्ट छे, ते कारण थकी शरीर पुष्ट थाय, तेथकी घणी पुष्टी थाय तथा व्यवहारनय ने मते तो जीव समये समये आहार ले छे तथा माता आहार ले तो गर्भनो जीव पण आहार ले हवे गर्भमां मातानां अग केटलां तथा पिताना अग केटलां ते कहिये छिये पिताना ३ अग छे, अस्थी १ अस्थी मांहिली मीज. २ केशरोम प्रमुख ३, तथा मातानां अग ३, मास १ लोही २ अने कपालनो मांहिलो भेजो ३, हवे

जीव कदापि गर्भमांथीज चवे तो नरनरकादिक चारे गतिमां जइ उपजे हवे ते गर्भमां रह्योथको जीव माता जो सूवे तो पोते सूवे, माता जागे तो पोते जागे, माता सुखणी ए सुखीयो, माता दुखणी ए दुखीयो, एवी रीते गर्भमां रह्योथको जीव अशुची अपवित्रमां दुख परवशपणाथी भोगवतो थको रहे एटले स्थानक महा मलमूत्रनु भरेलु तेमां वसवु पडे. एवी रीते नव महीना गर्भने विषे रहे हवे जे पुर्वे माताना रुधिरनु बल थोडु होय अने पिताना वीर्यनु बल घणु होय तो गर्भ पुरुष वेदे थाय, जो माताना रुधिरनु बल घणु होय ने पिताना वीर्यनु बल थोडु होय तो स्त्रीवेद थाय, जो रुधिर तथा वीर्यनु बल समभागे होय तो नपुंसक वेद बांधे, तेमां कोइ जन्म-कालने विषे मस्तके करी आवे, कोइक पेहेला पग आवे अथवा कोइ तिर्छो आवे ए सर्व पुन्य पापनां फल छे ए सर्वे जो पोतानी पूर्वनी अवस्था जो संभारे तो कोइनी दुगन्छा करे नहि केमके ए गर्भवास नरकनी कुंभीपाक सरखो छे अने ते कोइ जीव पूर्व अवस्था भुलीने जुवानीना मदमां छाकया थका अशुचीनी दुगन्छना घणी करे छे, ते अज्ञान छे अथवा शरीरने विषे जे छे ते कहिये छिये

अराडपांसलीओ परीएकडानामे मर्थानी छे, तथा चार कंड-लीओ कडक वेशासानी छे, चार आगुल प्रमाण ग्रिवा छे, [illegible] पलनी जीभ छे, बे पलनां नेत्र छे, चार पलोनु [illegible] आंगलनी जिव्हा छे, आठ पलनु हृदय छे पचीस [illegible] छे, बे अनम घर्षा छे ते मध्ये १ सुक्ष्म ने ? [illegible] पदीनितनु स्थानक कहिये ने सूक्ष्म ने [illegible] कहिये. पछी ते शरीरमां बे परिणमवाना बे [illegible] पकवाय. [illegible] परिणमे तो [illegible]

णमे तो मृत्युनु कारण, एकसोने साठ संधि छे, एकसोने सित्तोतेर मर्मनां थानक छे ते ठेकाणे लागे तो मरे, त्रणसें हाडनी माग छे,नवसें नाडी छे, सातसें सारी छे. पांचसें मांसनी पेसी छे, नव धमणीओ नाडी छे, नवाणु लाख रोमराय छे, मस्तक दाढी मुछ विना सर्व मली सर्व शरीरनी साडीत्रणक्रोड रोमराय छे, एक सोनेसाठ नाडी नाभि थकी उंची चाले छे, ते मस्तकना वधर्नां छे, तेने रसहरणी कहीये, मस्तके रस पहोचाडे. ए रसहरणी नाडीनो जेटलो उपघात थाय एटली रोगनी प्राप्ति गणवी, आख तथा नाक तथा कान तथा जीभ एना बलने हणे, रोग थाय पिडा करे, ए सर्व उर्ध्व नाडीनां फल जाणवां तथा वली एक सोने साठ नाडी नाभि थकी जे उठी ते अधोगामिनी कहेतां नीचीं चाली ते पगने तलिये बधाणी छे, ते नाडीने उपघात थाय तो एटला रोग प्रगट थाय, नेत्रनो तथा जघानो तथा मस्तकनो तथा आदोशीशी यावत् अध थाय, त्यां सुधी पण ए रोग एना जाणवा, तथा एकसोने साठ नाडी नाभि थकी जे उपडी ते तिर्च्छि गतीए चाली, ते हाथनां आगलां सुधी पहोंची, तेना उपघाते करी जे रोग थाय ते कहीये छिये बे पासे वेदना थाय, तथा पेटनी वेदना, तथा मुखनी वेदना, ए सर्व एनी रसहरणीना घात थकी उपजे, तथा एकसोने साठ नाडी नाभि थकी जे उपनी अधो गामिनी कहेतां गुजस्थानक सुधी पहोंची, तेने उपघात थकी जे रोग उपजे ते कहीये छिये लघुनित वडीनित तथा वायु तथा करमिया प्रवर्ते, अथवा लघुनित वडीनितनु थभनु थाय, तथा वायु रुधाय, तथा हरस विकार पांडुरोग इत्यादिक कयोला रोग ए रसहरणीना घात थकी थाय छे तथा पचवीश नाडी नाभि थकी उपनी ते सलेख्म मने उपरवाणाली छे, उपघातथी सलेखम थाय, तथा पचवीश

नाडी पित्तनी धरनारी छे, उपघात थकी पित्तनो रोग थाय तथा दश नाडी वीर्यनी धरनारी छे, इत्यादिक पुरुषने सातसें नाडी तेनी रसहरणी जे नाडी तेने उपघात न होय तो सदाय शरीरने सुख रहे, अने ते रसहरणी नाडीने काइ उपघात थयो होय तो ते ते प्रकारनो रोग थाय तथा त्रीश नाडी ओछी होय एटले छसें नेशीतेर होय ते स्त्रीने जाणवी नपुशकने छसेंनेएशी नाडी होय.

हवे शरीरमा धातु प्रमुखनु प्रमाण छे ते कहीए छीये, शरीर मध्ये रुधिरनो एक हाडो होय अने मांसनो अडधो हाडो होय, अने माथानो भेजो एक पायो होय, लघुनित एक हाडो होय, वडीनीत एक पायो होय, पित्तनो एक कलव होय, कफनो एक कलव होय, सलेखमनो एक कलव होय, वीर्यनो अडध कलव होय, ए प्रमाणे वरावर शरीरमां सर्वे वस्तु रहे, त्या सुधी शरीरमां रोगादिक न थाय. अधिक न्यून थाय ते वारे रोगनी उत्पत्ति थाय, तथा पुरुषने पांच कोठा शरीरमा होय, स्त्रीने छ कोठा होय एटले एक कोठो गर्भ धरवानो अधिक होय, पुरुशने नव द्वार सदाय वेहे छे, स्त्रीने वार द्वार वहे छे, तेना नाम कान २, चक्षू २, वडीनित १, नासीका २, मुख १, लघुनीत १, ए पुरुषने नव द्वार जाणवा, स्त्रीने ए थकी त्रण द्वार अधिक तेना नाम, स्तन २, प्रसवयोनी १, ए त्रण अधिक होय ए रीते वार द्वार स्त्रीने वहे ते सदाय पुरुष स्त्रीने वखाण करे छे तथा जे पुरुषने पांचसें पेसी मांसनी कही छे ते मध्येथी त्रीस ओछी स्त्रीने होय, तथा नपुशकने वीसवधारे होय, एटले मनुष्यना शरीरने विषे मास मेलादीक जे भरेलु छे, ते महा अपवित्र छे, केमके माटे पर छे, लघुनीत वडीनीत प्रमुख भर्यु छे, महा दुगछान स्थानक छे माटे एवु अशुचिनु स्थानक, आ शरीर अपवित्रनो [illegible] जाणतो नथी अने जुवानीना मदमां छाक्यो

थको चदन अत्तर कुसम चूरण प्रमुखे पोताना शरीरने विलेपन प्रमुख सुगंधे भर्यो रहेछे ने लोकोनी दुगछना घणी करेछे ते तेने आगल कर्म घणां भोगववां पडशे, माटे पूर्वना जे कहेला बोल गर्भ तथा शरीर प्रमुखना ते सभारीने दूगछना कोइनी करवी नही, अने आत्मा साथे एवो विचार करवो हे चेतन ! ए पुद्गलनो स्वभाव सडण पडण विध्वसण छे, एना वरणने तथा रसफरसने पलटवानो स्वभाव रह्यो छे, एना पर्यायनी एज स्थिति छे, माटे तु पुद्गलना धर्ममां प्रवेश करीश नहि तु तारा आत्मिक धर्मने विषे प्रवेश कर, तारा धर्मने विषे कशी अशुची अपवित्र छे नहीं, तु तो सदाय पवित्र छे माटे पोताना ज्ञान दर्शन चारित्रना उपयोगने मूकतु नहीं एवी उठी अशुची भावना भावे.

हवे सातमी आश्रवभावना कहीये छीये, हवे ते आश्रव केवो छे' के आश्रवरूपी एक सरोवर छे एटले कायारूप सरोवर जाणवु, ते मध्ये इंद्रि तथा मनरूप मच्छकच्छ रमी रह्या छे, तथा विषयना कल्लोल त्यां घणा थइ रह्या छे, पापरूपी पाणी भरेलु छे, ते काया रूप आश्रव सरोवर छे, तेने पांच गडनाला छे, ते पांच गडनालानां नाम जीवहिंसा १, जुटु बोलवु २, चोरी ३, मैथुन ४, परिग्रह ५, हवे ते मध्ये प्रथम जे जीवहिंसा जे त्रस तथा स्थावर जीवनी हिंसा ते धर्म निमित्ते अथवा ससार निमित्ते करवी तेने हिंसाश्रव कहीये. अहियां कोइ कहेशे के धर्म निमित्ते कांइ हिंसा थाय ते कांइ पापमां गणी नथी तेने कहियें के प्रश्न व्याकरण सुत्रने विषे, धर्मनिमित्ते जे हिंसा करे तेने महा मदबुद्धि याने महादुष्ट परिणामी कह्या छे तथा दशवैकालिक सूत्रने विषे जयणा ए धर्म कह्यो छे, इत्यादिक सर्व सूत्रने विषे जयणा विना धर्म थाय नहि, अने जे धमाधम करी ने धर्मधर्म पोकारे छे, ने जीवहिंसा करे छे, ते जीव शास्त्र जोता

महा माठी गतिना छे, अने बहुल ससारी दीठामा आवे छे, अने अनतो ससार ते रखडशे, एवा परमात्माना वचन छे, तथा जे धन ना लोभि थका जे पुजा प्रतिष्ठा स्नात्र व्रत पचखाण करावे छे, तथा तेनो उपदेश करेछे, तें सर्व पत्थरना नाव सरखा जाणवा, तेमां ते बुडे छे ने बीजाने बोळे छे, ए बिचारा अज्ञान जीव पेट भरवावास्ते धर्म तथा पाप तथा आश्रव सवरनी कशी ओलखाण राखता नथी, अने कदापि कोइये वेशास्त्र वांचेलां छे तो तेने पोताना स्वार्थ आगल कांइ सुज पडती नथी, तथा पोते पण बुडे ने आगलनाने पण बुडाडे छे. एवु श्री परमात्मानु वचनछे माटे ज्यां ज्यां जीवनी हिंसा त्यां त्यां सर्व ठेकाणे आश्रवज कहिये शा माटे के भगवते अव्रत चार कह्यां छे तेमा छए कायनु अव्रत हिंसाज छे, त्यां कांइ एवु नथी कह्यु के धर्म कारण हिंसा करे ते पापमा न गणवी, जे कोइ जाणीने सोमल खाशे, तेने पण झेर चडशे, ने अजाणे ग्वाशे तेने पण झेर चडशे माटे ससार अर्थे अथवा धर्म अर्थे जेधणी हिंसा करशे तेने महा आकरां कर्म बधाशे यावत् नर्कादिक गतिने विषे जशे एवुकोइ जीवने कह्यु नथी के तु मने मारीने तार ससारनु कारज साध, अथवा धर्मनु कारज साध एवु तो कोइ कहेतु नथी, सर्वे जीव जीववु वछे छे, माटे हे चेतन! सर्वथा प्रकारे त्रस अथवा थावर जीवनी हिंसा न करवी ते हिंसा नाहि करे ते धणी आत्मानो सुखी थशे ने जे हिंसा करशे तेनो आत्मा दुःखी थशे, जेम गोत्रास दु खी थयो तेम बीजा पण दु खी थशे ए वात विपाकथकी जाणजो तथा बीजो आश्रव जे मृषा न बोलवु केटलाएक एवु कहे छे के धर्म अर्थ जूटु बोलीये ते नु पाप नथी ते पण वचन मिथ्या छे परमात्माना मार्गने विषे यथार्थ वचन बोलवु हवे ते भावने विषे शु विचारवु, अहो चेतन! आ ज [illegible] कर्तव्य छे ए सर्वे असत्य छे. जदथकी जे जे

कारज नीपजे छे तेने तु पोतानु करीने जाणे छे, अथवा तेमां तु लाभ खोट माने छे, ए सर्वे मिथ्या छे शा माटे के पुद्गलना कर्तव्यमां कोइ काले आत्माने नफो होयज नहि. ए आत्माने तो अवगुण कर्ता छे, तथा त्रीजो आश्रव जे चोरी एटले परवस्तु जे तेना स्वामीना दीधा विना जे लेवी ते सर्वे चोरी छे, माटे ते आत्माने काइ खपमां आवती नथी धनधान्यादिक जे चोरीने तु भेगु करीश ते अहिंया पड्यु रहेशे अने कर्म बांधीश ते तारे भोगववु पडशे, तथा चोथो आश्रव जे अनब्रह्मचर्य एटले स्त्री आदिकनु सेवन ते विटंबना छे, अने स्त्रीनी संगतथकी अनंता जीव आगे डुबेला छे माटे तेने स्त्रीथकी सदाय अलगु रहेवु तथा पांचमो आश्रव जे महा आरंभ जे परिग्रह ते पापनु मुलज तथा सर्वे आश्रवनु मुल तथा सर्वे दुःखनो दातार एवो जे आरंभ परिग्रहथकी सदाय अलगु रहेवु. अंते पण ते आरंभ परिग्रह आपणी हारे आवे नहि एथकी आपणे अनंताभव रखडवु पडे माटे ए पांचे आश्रव तेथकी सदाय वेगलो रहे, नहि तो एज तने संसारमां अनंताभव जन्ममरण करावशे तथा बीजे प्रकारे अढार पाप स्थानक ते पण आश्रवज छे, तेथकी पण सदाय वेगलु रहेवु तेनां नाम हिंसादिक ५ पूर्वे कह्यां ते तथा क्रोध छट्ठो एटले क्रोध छे ते पण आश्रव रूपज छे जे वखत जीव क्रोधने विषे आवी जाय छे ते वखत कांइ कृत्याकृत्य विचारतो नथी तथा मान ते पण जीव अभिमाननो लीधोथको न करवानां कारज करे तथा माया कपटनो भरेलो जीव शु न करे ? सर्वे कारज सेवे तेनो कोइ विश्वास पण न करे तथा लोभ ते तो सर्वथकी महा निष्ट छे लोभी माणसने कोइ सगुवहालु हेतु कोइ होय नहि अने न करवानां कारज ते सर्वे ए लोभी माणस करे पोते दुःखी थाय ने बीजाने पण दुःखी करे तथा राग ते स्नेहनो लीधोथको कोइ

वचन बोलवानो पण विचार न होय तथा कोइ काम करवानो पण विचार न होय, कोइनी लाज शरम पण न रहे, ए राग सोनानी बेडी सरखो छे, तथा द्वेष ते द्वेषनो भरयोथको पोतानुं कारज पण बगाडे ने सामानु कारज पण बगाडे केवो के लोढानी बेडी जेवो छे, तथा कलेश जे सामा साथे ऊभो करवो अने संतापथी घडी एक छेटे खसे नहि. पोते कलेशमा भरया रहे ने सामाने क्लेश उपजावे तथा अभ्याख्यान एटले पराइ खोटी वातो जाणी अजाणी करवी तथा खोटां आल कोइने माथे देवा

हवे पैशून्य केहेता पराइ चाडीओ खावी अथवा कोइ ए हेतु जाणीने मर्मनी वात आपणने कही होय ते प्रसिद्ध करवी तथा कोइनी मर्मनी वात जाण्यामां आवी होय तो फजेतो करवो तथा पर परिवाद केहेता परना अवर्णवाद बोलवा, कोइना गुण ग्रहण करवामां समजे नही ज्यां त्यां सर्वना अवगुण ग्रहण करवामा समजे पदरमु पापस्थान रतअरत एटले सुख आवे थके शाता वेदवी एटले पोताना सुखमां मगन थइ गयो पारकु दुःख जाणे नही दुःख आवे थके हायवराय घणो करे संतोश राखे नही तथा सत्तरमु माया मोस केहेता जे कपट सहित जुठु बोलवु जेम आगे थी विष हनु अने वली तेने वधार्यु एटले तेना जेवु शुं कहेवु तेम पेहेलु जुठु बोलवु ते तो माहा पाप छे ने वली दंभ सहित बोलवु एटले तेना पापमा शु कहेवु? तथा अढारमु मिथ्यात्व सत्य ए अढार पाप स्थान थकी हे चेतन सदाय वेगलो रहे ए थकीज मर्व पापनी क्रिया लागे छे ने पापनी व्यासी ए प्रकृतिना बंध रजनना करवा वाला ए अढार पाप स्थानरूज छे ने ए अढार पाप स्थानक ज्यां सुधी माहेथी गयां नथी त्यां सुधी जीवन ममार थीरभावन है त्यां सुधी मसार नथी,ए वात निश्चय छे

पापस्थानमा सत्तर पापस्थान थोडा संसारना धणी छे अने एक मिथ्यात्व पाप स्थानक अनंत संसारनो धणी छे माटे एवु जाणीने हे चेतन ए थकी तु सदाय अलगो रहे तथा पांच इंद्रीना आश्रव छे ते पण तजवा. श्रोत इंद्रीना ३ वीषय छे ते पण तजवा जो नही त जिये तो ए थकी जडनु पोषण थशे ने आतमानु घात थशे तेम पांच इंद्रीना विषय समजवा जेम श्रोत इंद्रीना परवशपणाथी मृगनो जीव जाय छे तथा चक्षु इंद्रीना परवशपणाथकी पतंगीआनो प्राण जायछे तथा रस इंद्रीना परवशपणाथकी माछलानां प्राण जायछे तथाघ्राण इंद्रीना परवशपणाथी भमरानो जीव जाय छे तथा फरस इंद्रीना विषय थकी गजनो नाश थाय छे ए पांच इंद्री मध्ये अकेकी इंद्री जेनी वश नथी तेना जीव जाय छे तो जेनी पाचे इंद्री मोकली होय ते तो सुख क्यां थकी देखे माटे हे चेतन ए पाच इंद्रीरूप जे संसारना दूत तेने छुटा मुकीश तो ए तने सुख केम आववा देशे ने तने संसारमां रोलवशे माटे तु ए पांचे दूतने पकडीने केद कर एटले तु सुखीयो थइश इत्यादिक जे जे कारण थकी आश्रवनु आववु थाय छे ते ते कारणने तु बंध कर जेम तारो आत्मा भारे न थाय अने जो तु आश्रवने बंध नही करे तो तारा आत्माने तरवानी वखत कोइ काले नथी माटे आश्रव बंध करी एवी भावना भाववी

तथा आठमी जे संवर भावना एटले पुर्वे सातमी आश्रव भावनाने विषे जे अधिकार कह्यो तेने रुंधवानो विचार तेने संवर कहिये तथा मन वचन कायाना जोग संवरवा ते सर्वे व्यवहार संवर छे तथा जे परभावनो त्याग अने स्वभावने विषे रमण करवुं एटले ज्ञानदर्शन चारित्रमां रमण करवु तेने संवर कहिये ॥ तथा नवमी निर्जरा भावना एटले धर्म ध्यान शुक्ल ध्याननु ध्यावु तथा गुरु पासे लागेला दोषनु प्रायश्चित लेवु तथा विनयवेयावच गुरुवादि-

कनी करवी इत्यादिक भावना भाववी तेने निर्जरा तत्व कहिये ॥ दशमी लोकस्वरूप भावना लोक कहेता चौदराज लोक तेनो आकार कहिये छिये पुरुप आकार कहेतां पुरुप बे पग पहोला करीने उभो रहे, हाथ बे कमरे आवे तेवा आकारे लोक छे तथा बीजे मकारे वलोणा आकार कहिये, त कहेना जेम स्त्री वलोवाने उभी रहे अने माखण उपर लाववा झडकाले छे ते वखत जेवो एनो आकार होय ते आकारे लोक छे तथा त्रीजे मकारे एक सरावलु निचे उघु वालीये ते उपर सरावलानु सपुट करीने उपर मुकीये पण नीचेनु काइक मोहु मुकी एने उपरना बे सरखा ने नाहानां मुकीए ते आकारे लोक छे, ते लोकना त्रण भेद छे उर्ध्व तथा अधो तथा तिर्छो लोक छे, ते जे पुरुपाकारने विपे जे नाभिनी जग्याथकी नीचुं तेने अधोलोक कहिये ते सात राजथी कांइक झाझु छे, तथा सात राज माठेरो नाभिथकी उपरनो भाग छे तेने उर्ध्वलोक कहिये, तथा जे नाभिनी जग्यानो भाग छे तेने तिर्छोलोक कहिये हवे ते त्रणे लोकनु किंचीत् स्वरप देखाडिये छिये अधोलोकने विपे सात पृथ्वी छे ते मध्ये पहेली पृथ्वी रत्नमभा एवे नामे छे तेनो एक लाखने एसीहजार जोजननो पिंड छे ते मेरु पर्वतनां समुतला पृथ्वीना भागथकी गणवो हवे जे एकलाख एसीहजार जोजननो पिंड छे ते मध्ये एकहजार जोजन निचे मुकीये ने एकहजार जोजन उपर मुकीये तेना मध्यमा एकलाखने अठोतेरहजार जोजननो पड रह्यो ते मांहे तेर भाग करीये तेमा ते नर्कना पायडा छे तेना वचला आंतरा अगीयार रह्या ते मध्ये दश आंतरामां भुवनपतिनी दश निकायो छे ने एक आंतरु खाली छे तथा हजार जोजन जे उपरनु रह्यु ते मध्ये सो जोजन उपर मुकीए तथा सो जोजन हेठल मुकीए एटले [illegible] जन रह्यु ते मध्ये आठ व्यतरनी नि-

कायो छे तथा उपरना सो जोजनमांथी दश जोजन उपर मुकीए तथा दश जोजन निचे मुकीए मध्यना एसी जोजनमां आठ जातना वाण व्यंतरनो रेहेवास छे ते भुवनपति तथा व्यंतरनें रत्नमय ज ग्याओ छे हवे जे नर्क रत्नप्रभा तेना त्रण भाग करीए ते मध्ये प्रथमनो भाग रत्ननो छे ते रत्नना भागनी मांहेली कोर सोल कड रत्नना सोल जातना छे बीजा भागोमां रत्नना भाग नथी, तथा तेर पायडे थइने त्रीस लाख नर्कावास छे ते नर्क एथ्विने निचे त्रण वलीयां छे, एक घनोदधी १ घनवा २ तनवा ३ ए त्रण वलीयांने आधारे करीने ए एथ्वि रही छे तेनी निचे एक राज आकाश छे त्यां गये थके बीजी नर्क एथ्वि आवे तेने विषे अगीयार पायडा छे ते पृथ्वि कांकरा सरखी जाणवीं त्यां थकी एक राज गये थके त्रीजी एथ्वि वालुक प्रभा एवे नाम आवे तेने विषे नव पायडा छे ते पृथ्वी वेल सरखी छे त्यां थकी एक राज चोथी पृथ्वी पंकप्रभा एव नामे आवे त्यां सात पायडा छे ते एथ्वि पंक केहेता कादव जेवी छे त्यां थकी एक राज पांचमी एथ्वि धुमप्रभा एवे नामे आवे त्यां पांच पायडा छे ने ते धुवाडा सरखी एथ्वि छे त्यां थकी एक राज छठी एथ्वि तमप्रभ नामे आवे तम केहतां अंधकाररूप छे त्यां एकज पायडो छे, त्यां थकी एक राज छेल्ली सातमी पृथ्वि तमतमा एवे नामे आवे, त्यां अंध कार अत्यंत घणाज तद्रूप छे त्यां एकज पायडो छे ते मध्ये पांच नरकावास छे तेनां नाम कहिये छिये काल १ महाकाल २ रोरु ३ माहारोरु ४ अपेठाण ५ कालादीक चार पायडा चार दिसीने विषे छे ते असख्याता जोजनना छे ने अपेठाण नामे नरकावास मध्यनो एक लाख जोजन लांबो पोहोलो छे तेनी वेदना घणी आकरी छे त्यांथकी एक राज गये थके अलोक आवे. हवे ते साते पृथ्वीनु

पोहोलपणु कहीये छीये पेहेली पृथ्वी एक राज लांवी पोहोली छे बीजी नरक पृथ्वी वे राज लांवी पोहोली छे त्रीजीनरक पृथ्वी त्रण राज लांवी पोहोली छे तेम एक राज वधते वधते छट्टी छ राज, ते थकी सातमी नरक पृथ्वी सात राज लांवी पोहोली छे हवे ते साते नरकनी वेदनानु स्वरूप कहीये छीये प्रथमनी त्रण नरकने विषे परमाधामी कृत वेदना छे तथा खेत्रवेदना पण छे तथा चोथी पांचमी वे नरकने विषे माहोमाहे वैक्रीय शरीर करीने लढी मरे छे एकएकने वेदना करेछ तथा खेत्रवेदना पणछे, तथा छट्ठी सातमी वे नरकने विषे खेत्रवेदना एकलीज छे परतु पेहेली नरकने विषे अनती वेदना छे तेथकी बीजी नरकने विषे अनत गणी वेदना छे एम अनुक्रमे एक एकथकी अनंत गणी वधती वेदना जावत छट्ठी करतां सातमी नरक पृथ्वीने विषे अनत गणी वेदना छे तथा ते साते नरक मांहे महा अधकार छे त्यां कोइ चद्रमा सूरज प्रमुख अजवालु करता छे नही.

शिष्यवाक्य—ज्यारे साते नरक पृथ्वीमां अधारु कह्यु त्यारे भुवनपति व्यतरमां पण अधारु छे ?

गुरुवाक्य—भुवनपती व्यतरने विषे रेहेवाना जे रहेवास ते सर्वे रतनमय छे तेथी माहा उद्योतकारी छे त्यां कांइ अधकार छे नही अने तेना रेहेवासनाजे भुवन ते जबु द्वीप जेवडा छे जावत अढी द्वीप जेवडा छे ते महा उद्योतमय छे घठार्यां मठार्यां माहा तेजनो पुज मुके छे इत्यादिक एनो विस्तार जीवाभिगम थकी जाणजो

आंतरे आंतरे भुवनपतिने विषे

महा उद्योत नर्कना पाथडा ने विषे अधारु

कहा दुःख ते शु ? ते पण पृथ्वि तो रत्ननी छे अथवा सोळ कट रत्नना पृथ्वमे कह्याज छे.

गुरुवाक्य —हे भद्र जे देवना जे रहेवामना जे उद्योत तथा सुख ते सर्वे पुन्यना जोरथी भोगवे छे तथा नर्कवालाने अधकार तथा दुख ते सर्वे पापना जोरथी छे जेम कोइ एक घरने विषे हेठे उपर वेना उपर एम अनेक लोक वसे छे ते सर्वेने सुख दुख तो पोताना पुन्य पापना उदे प्रमाणे मळे छे तथा जग्यानी जे शोभा ते पण पुन्य पाप प्रमाणे छे, तथा तें जे कह्यु जे रत्ननी पृथ्वि तथा रत्नना वुड तेनु एम छे के ज्या नरियानो रहेवास छे त्यां तो उपर खर पृथ्वि समज्यामां आवे छे माटे त्यां उद्योत नथी तेनो विस्तार पन्नवणा तथा जीवाभिगम थकी जाणजो हवे तिर्छा लोकनो अधिकार कहीये छीये त्यां प्रथम जबुद्वीप एक लाख जोजन लांबो पहोलो छे ने सव द्वीप समुद्र एने वींटीने रह्या छे तेना मध्य भागने विषे मेरु पर्वत छे, ते एक लाख जोजननो उचो छे दशहजार जोजन लांबो पहोलो छे, तेनी पूर्व पश्चिमे महाविदेहनी सोल सोल विजय छे, बे मळीने बत्रीश विजय छे, देवकुरु उत्तरकुरु आदे देइने ७ क्षेत्र जुगलीयाना छे तथा भरत ऐरव्रत क्षेत्र छे ते कर्म भूमिना छे ते सर्वे उत्तर दक्षिणे छे, ने सर्वे क्षेत्र थकी मेरु उत्तर दिशामा छे तथा छप्पन अतर द्वीप छे ते सवे द्वीपोने फरती जगति छे तथा जबुद्वीपने जगतिनो कोट छे तेने चार दरवाजा छे तथा उत्तरकुरुने विषे सुदर्शन नामा जबु वृक्ष छे इत्यादिक विचार सर्व जबुद्वीप पन्नती थकी जाणवो तेने फरतो लवण समुद्र जाणवो, ते बे लाख जोजननो जाणवो तेमां पताल कलसा छे, ते मध्ये थकी पाणी उछले छे तेनी भरतीओट थाय छे, तेनु पाणी खारु छे तेने पण फरती जगति छे तेनी परथी सोळ लाख जोजन माठेरी

छे, तेने फरतो धातकी खड छे, तेने विषे जबुद्वीप करता बमणां क्षेत्र तथा बमणी रीत सर्वे जाणवी एटलो विशेष जे त्यांना वे ये मेरु चोरासी हजार जोजन उचा छे, तथा वे इखुकाल पर्वत छे तथा धावडीनु वृक्ष छे तथा फरती जगति छे, बाकी सर्वे जबुद्वीप नी रीते जाणवु. ते द्वीप चार लाख जोजन पोहोलो छे तेनी परधी एकताळीस लाख जोजन झाझेरी छे, तेने फरतो कालोदधी नामे समुद्र छे तेनु पाणी काले वर्णे छे, ने पाणी सरखु पाणी मीठु छे, तेने पण फरती जगति छे, आठलाख जोजन पोहोलो छे तेनी परधी एकाणु लाख जोजन झाझेरी छे, तेने फरतो पुखरवर नामा द्वीप छे तेना मध्य भागने विषे मानुषोत्तर पर्वत वलीयाकारे पडयो छे तेनी मांहेलीकोरे अडधो जे द्वीप ते मध्ये सर्व धातकी खडनी पेरे समजी लेवु, परंतु खेतर धातकी खडना करतां ए बमणो मोटो छे, ए अढी द्वीपनी माहेलीकोरे मनुष्यनो रेहेवास छे तथा मनुष्यनु जन्म मरण पण ए अढी द्वीपनी मांहेलीकोरे छे, तथा तीर्थंकर केवली गणधर आचारज उपाध्याय साधु ते धर्मदेवता तथा देवाधी देव ते अढी द्वीपनी माहेलीकोरेज छे, तथा अढी द्वीपनी बाहारनी कोरे देवता तिर्यंचना रहेवास छे ते एक एक द्वीप थकी समुद्र बमणो एम अनुक्रमे असंख्याता द्वीप समुद्र मुकता थका छेल्लो स्वयभूरमण नामा द्वीप आवे ते पा राज पोहोलो छे ते थकी स्वयभूरमणनामा समुद्र बमणो पोहोलो छे, एटले अडधा राजमा छे, तथा अढी द्वीपने विषे जे चद्रमा सूर्यग्रह नक्षत्र तारा सदाय फर्या करे छे तेथी दिवस रात्रिनु मान वधाय छे तेथी समय खेतर कहीये छीये तथा अढी द्वीप बाहार जे चद्रमा सूरज ग्रह नक्षत्र तारा छे ते सर्वे [illegible] सूरज छे त्यां सदाय दिवस रहे छे, चद्रमा छे त्यां [illegible] है छे, तथा चद्रमा सूरजनु पचास

जोजननु आंतरु रहे छे एटले श्रेणी बध रहे छे एम असख्याता द्वीप समुद्रनु जाणवु

शिष्यवाक्य—स्वामी ते असंख्याता केटला हशे

गुरुवाक्य—अढीसागरोपमना जेटला समय तेटला ए द्वीप समुद्र छे तेनो विस्तार अधिकार जीवाभिगम थकी जाणजो. एटले तिर्छा लोकनो अधिकार कह्यो हवे उर्ध्व लोकनो कहीयेछीये, त्यां पेहलु देवलोक सुधर्मनामा छे, त्यां बत्रीश लाख वैमान छे सर्वे रतनमय छे, ते थकी उत्तरनी दिशे बरोबर इशान देवलोक छे तेने विषे अठाविश लाख वैमान छे, तेना इद्रनु नाम देवलोकने नामे समजी लेवु. सर्वेने विषे ते बे देवलोक लगडीने आकारे छे तेना उपर सनतकुमारनामा देवलोक दक्षणदिशाए छे तेने विषे बारलाख विमान छे तेने विषे देवांगनानु उपजवु होय नहि, तथा आगल्ना देवलोकमां पण उपजवानु नथी ते थकी उत्तर दक्षणने विषे महद्रनामा देवलोक छे तेने विषे आठ लाख विमान छे, तेना उपर चोथु पाचमु ब्रह्मदेवलोक छे, तेने विषे आठ लाख विमान छे, तेना उपर पांचमु ब्रह्मदेवलोक छे तेने विषे चार लाख विमान छे तथा कृष्णराजि त्यां छे, तेने विषे नवलोकांतिक देवनां नव विमान छे, ज तिर्थकरनी दिक्षानेसमे उपदेश करवा आवे छे ते देवोनो रहेवास त्या छे, ते देवलोक पांच राज लागु पहोलु छे तेना उपर छठु ललीतांग नामा देवलोक छे, तेने विषे पचासहजार विमान छे तेना उपर सातमु महाशुक्रनामा देवलोक छे तेने विषे चालीस हजार विमान छे तेना उपर आठमु सहस्रारनामा देवलोक छे, तेने विषे हजार विमान छे तेना उपर अनतनामा नवमु देवलोक छे, ते थकी उत्तरादिसी दसमु प्राणतनामा देवलोक छे, ते बे देवलोक मलीने चारसें विमान छे, ते बने देवलोक मलीने प्राणतनामा एक

इद्र छे, ते उपर आरणनामा देवलोक दक्षिण दिशामा छे, ते थकी उत्तरादिशाने विषे अच्युतनामा बारमु देवलोक छे, ते बे देवलोक मलीने त्रणसें विमान छे ते बे देवलोक मलीने अच्युतनामा एक इद्र छे, ए बार देवलोकने कल्प कहीये ते उपरनाने कल्पातीत कहीये, तेनो विचार कहीयेछीये, ते बार देवलोक उपर नव ग्रैवेयक छे तेना प्रथम त्रण ग्रैवेयक पहेलु बीजु त्रीजु ए त्रण मलीने एक प्रथम त्रिक कहीये, ते पहेला त्रिकनां एकसो अगीयार वैमान छे तथा बीजात्रिकनां एकसोने सात विमान छे, तथा त्रिजात्रिकनां सो विमान छे, ते त्रणेत्रिकमलीने नवग्रैवेयक कहीये ते नवग्रैवेयकमलीने ३१८ विमान छे ते उपर पाच अनुतर विमान छे, तेनां नाम विजय, विजयत, जयत, अपराजित, सर्वार्थ सिद्ध, ते मध्ये विजयादिक चारविमान चारदिशाने विषे छे, अने पांचमु सर्वार्थ सिद्धनामा विमान लाख जोजन लाबु पहोलु मध्यभागमा छे, ते विमाननी धजाथकी बार जोजन उपर सिद्ध सिला छे ते मध्यमां आठजोजन जाडी छे, छेडे माखीनी पाख जेवी पातली छे ते सिद्धसिला उपर एक जोजनना त्रेविश भाग मुकीनें चोवीशमा भागने विषे सिद्ध परमात्मा छे, ते अलोकने अडीने रह्या छे आत्मस्वरूपी छे, अनत सुखमय छे जन्मजरा मरणना फेरा टल्या छे, ज्ञानरूप ज्योतिमय निरजन निराकार, अलख अजर परमात्मा, एवा सिद्ध भगवत त्यां वसे छे तथा पहेला बीजा देवलोकना देव तो मनुष्य तिर्यंच पृथ्वी पाणी अने वनस्पतिमा उपजे, तथा आठमा देवलोकना देव मनुष्य तिर्यंचमां उपजे. अने तिर्यचना जीव आठमा देवलोक सुधी जाय, ते उपरनादेव मनुष्यगतीमा आवे तथा श्रावक तथा आजिवीका मतिना बारमादेवलोक सुधी जायतथा व्यवहार साधु नवग्रैवेयक सुधी जा।

शिष्यवाक्य—व्यवहार साधु शामाटे कह्या

गुरुवाक्य—जेने आत्मस्वरूपनी ओळखाण नथी अने व्यवहारथकी तपक्रिया कष्टचारीत्र पाले छे ते जीवने हजु सुधी समकित पण प्रगट्यु नथी, ने मिथ्या द्रष्टि छे ते कोइ भवी छे अने कोइ अभवी छे, ते सर्वे एवा व्यवहार कष्टथकी नवग्रैवेयक सुधी जाय पण काइ तेना आत्मानु कल्याण थाय नहि, ते जीव तो अनतो कालससारमां रखडवाना जाणवा, माटे तेने व्यवहार चारित्रीया कहिये, तथा निश्चे चारित्रीया पाच अनुत्तर विमान तथा सिद्ध पण जाय, हवे ते चउद राजलोक उचपणे छे, ते म ये एक राज लावा पहोला पणे चउदे राजसुधी तेने त्रश नाडी कहीये, परतु सिद्धसिलाए गए थके पिस्तालीस लाख जोजन लांबी पहोली छे एज त्रसनाडीने विषेज त्रस जीव छे बाकी सर्व लोकने विषे पांच स्थावर भरेला छे, ते माटे हे चेतन एज लोकने विषे कोइ आकाश प्रदेश तें जन्म मरण कर्याविना छोड्या नथी

शिष्यवाक्य—सर्व लोक कहेता सिद्ध पण भेगा आव्या तो शु सिद्धना भेगा बीजा जीव छे ?

गुरुवाक्य—सिद्धना भेगा पाचे स्थावर सुक्ष्म तथा बादर वायुकाय रया छे ते मध्ये चार स्थावर तो असख्याता छे अने सूक्ष्म वनस्पति ते नीगोदकहीये ते जीव अनता छे

शिष्यवाक्य—ते जीव सिद्ध क्षेत्रमा रह्या छे, तेने कांइ सिद्धना सुखनो भाग आवतो हशे ? अथवा कांइ सिद्धना जीवने ए बाधा पीडा करता हशे ?

गुरुवाक्य—सिद्धना सुखनो भाग एने आवे नही, तेम काइ ए सिद्धना जीवने बाधा पीडा करे नही यथाद्रष्टांत जेमचद्रपाझु अजवाळु छे ते अजवाळानु सुख कांइ बे आखे अध छे तेने होय

नहीं तेम ते अंध काइ चंद्रमाना अजवाळाने बाधा पीडा करी शकतो नथी, तेम ते जीव रह्यो छे ते आपआपणा कर्मने वश दुख पीडामां रहेछे, ते अधरूप जाणवा तेने सिद्धना सुखनो भाग क्यां थकी होय तथा सिद्ध जीव नीराकार पोताना स्वरूपरमणी छे तेने ए बाधा पीडा करवा समर्थ केम थाय ? ते अजवालारूप छे हे चेतन एवो जे कोइ लोक तेने विषे तु अनतकाल परिभ्रमण करे छे, तो हवे तु एवु लोकनु स्वरूप जाणीने हजु तु ए लोकथी अळगो थवा केम इच्छतो नथी, जो तु समज्यो होय तो ए लोकथी उदास थइने पोताना स्वरूपनी ओलखाण कर एज तने श्रेयकारी छे, एथीज तारी मुक्ति छे, एवी रीते लोक स्वरूप भावना भाववी.

हवे अगीयारमी बोधि दूर्लभ भावना कहेतां बोध बीजनु पामवु, ते घणु मुश्केल छे ते कांइ सर्व गतिने विषे पामवु थतु नथी ते ठेकाणां बतावीये छीये जे पांच स्थावर सूक्ष्म बादरने विषे तो अव्यक्तपणु छे, तथा विगलेंद्रिने विषे पण अ यक्तव्य जेवुज छे, जेने विषे मन तथा श्रोत इंद्री छेज नही तो धर्मनु साभलवु अने विचारवु शा थकी करे ? तथा तिर्यच पंचेंद्रीने विषे समूर्छीममां तो धर्म छेज नही तथा गर्भजने शास्त्रवाळा लखे छे के समकित मुळ अगीयारव्रत होय, ते हशे त्यारे केहेता हशे परतु हाळना समाने विषे तो काइ दीठामा आवतु नथी, अने ते जीवने तो छेदन भेदन, मारकुट भुखतरश ताहाडतडको एम दूख सेहेतांज दीन जाय छे, तथा नारकीने विषे तो गुरनी जोगवाइ छे ज नही, तो ए जीव धर्म शानु पामे तथा ए जीव छेदन भेदननां माहा आकरां दुख वेठतां थका विचरे छे समय मात्रनु सुख तो छे नही तो धर्म शा थकी पामे! तथा देवगतीने विषे पण चारित्र धर्मनी शास्त्र पण तथा श्रुत धर्म हशे पण कोइ देवने

परतु घणा देवता पोताना विषय सुखमा ज मवहारी जाय छे तथा जे अकर्म भूमी तथा अतरद्वीपना मनुष्यने तो धर्म छे ज नही तथा जे कर्म भूमीनां क्षेत्र एकसो सीत्तेर विजय छे ते अकेकी विजयमां बत्रीस बत्रीस हजार देश छे, ते मध्ये एकत्री स हजार नवम साडा चुवोत्तेर देश तो अनार्य छे तेमां कोइ जीव धर्म पामे, ते ना कहेवाय नही परतु बहुल्ताएतो न ज पामे तथा जे साडी पचवीस देश आर्य छे तेमां पण वाघरी भील कोली प्रमुख जीव अनार्य घणा वसे छे, अने आर्य जीव तो घणा थोडा छे, तेने पण सुगुरुनी जोगवाइ घणी मुश्केल छे, शा माटे के ए वी उपर पाखड धर्म घणुं प्रवर्त छे, अने जिन धर्म थोडु प्र वर्त छे ते जिनधर्मने विषे पण पाखडी भेख धारी घणा दीसे छे, जे आरभ परिग्रहमां डुब्या पड्या छे, अने जे वीतराग भाषित वस्तु धर्मनी ओलखाण करावनारा एवा जे सुगुर ते तो कोइक दीसे छे अहीया कोइक केहेशे के एकवीस हजार वरस सुधी भगवा नतु धर्म चालशे ते अमथकी चालशे एवु कहेशे ते महा मीथ्यात्वी छे ने भगवानना मारगना चोर छे शामाटे जे भगवाने आरभ परी-ग्रहवालाने साधु कह्या नथी तो ते थकी धर्म शानु रहे ? धर्म तो साधु मुनिराजथकीज रेहेशे

शिष्यवाक्य—स्वामी तमे प्रथम जे क्रिया व्यवहार पाले,आ-रभ परिग्रहथकी वेगला रहे, तेने तो तमे साधु पणानी ना पाडी हती तो हवे कया साधु मुनिराजथकी धर्म रहेशे.

गुरुवाक्य—हे भद्र अमे जे ना पाडी ते ज्ञानहिण जे खोटो क्रिया आडबर करीने चाले तेनी अमे ना पाडी हती ते श्री सुम तो ग्रथने विषे सिद्धसेन दिवाकर एवु कही गया छे, तथा श्री भ गवतीजीने विषे सुधर्मास्वामी एम कही गया छे, कह्यु छे जे

गीतार्थ होय तेने साधु कहीये, अथवा ते गीतार्थना कहेण प्रमाणे विचरे तेने साधु कहीये ते विनाना जेटला विचरे छे ते घणी कष्ट क्रिया तप लुखाशपणु राखे छे, तोय पण तेने साधु कहीये नहि. ए श्री वीरना मुखना वचन छे ते वारे कोइ कहेशे जे आजने काले वे अक्षरना जाण पंडितपणु धरावता एवा भेखधारी पण छे तेने साधु कहीये के ना कहीये ? तेनो उत्तर जे एवा वे अक्षरना जाण थइ ने जे आरभ परीग्रहथकी अलगा न थया तेने महा मिथ्यात्वी कहीये. ने महा अज्ञानी कहीये तेनु भण्यु सर्व धुल मां गयु ते कांइ लेखे आव्यु नहि, ते श्री उत्तरा-ययनजीना अगीयारमा वहुश्रुत नामा अध्ययनने विषे एवुं कह्यु छे, तथा श्री आचारागजीमां तेनी साथे यावत्‌ठलेजवा सुधीनीना पाडी छे, तथा श्री आवश्यक निर्युक्तिने विषे श्री भद्रबाहु स्वामिए एवु कह्यु छे, के जे एने वांदे ते अनता भव ससारमा रखडे तथा श्री भगवती जीना आठमा सतकने विषे एने जे आहार पाणी आपे ते अनंता भव रखडे, तेमज श्रावकना प्रतिक्रमण ने विषे एने आहार पाणी आपे तेनी आलोयण गुरु पासे मागी छे एम यावत् घणा शास्त्रने विषे एने निशेध्या छे, माटे एने साधु न कहीये तथा प्रत्यक्ष पणे समजो के जे पुरुष पोते कुवो जाणे छे ते घणी काइ चालतो कुवामां पडी जाय ? जे न जाणे ते पडे, जाणे ते पडे नहि, तेम जे पुरुषने ज्ञाननु जाण पणु होय तो ते पुरुष अव्रतने केम शेवे, माटे ए शेववावाला पुरुष पासे ज्ञान छे ते पण अज्ञान छे, तेवा जे भेखधारी पाखंडी तेना भाख्या धर्म मार्ग उपर चाले तेने पण काइ धर्म पाम्यो कहीये नहि ते अधिकार श्री महानिसीथ सूत्रने चोथे अध्ययने नागील सोमिलनो अधिकार छे, ते जोजो, माटे सुगुरुविना धर्म होय ९ ते वहुश्रुतज्ञानी पुरुष आरभ परीग्रहथकी वे-

गला होय तेने सुगुरु कहीगे ते सुगुरु सदायकाल सर्वे क्षेत्र ना होय, एतो कोइक क्षेत्रे कोइक अवसरे मले ते चोथे आरे पण कोइक अवसरे मलता ने आधिकार महानिसीथ सूत्रथकी जाणजो एवा कदापी कोइ अवसरे सुगुरुनु मलवु थाय तो त्यां तेर काठीया आवीने नडे ते थकी गुरु दर्शन करी शके नहि तो वाणी साभलवी तो क्या थकी ? कदापि कोइ जीव जवरो थइने तेर काठीआने दूर करीने गुरु पासे जाय तो पण शणगारादिक रस कथाना लोलुपी थका धर्म पामी शके नहि अथवा केटलाक जीव बेठा थका उंघे, अथवा केटलाक जीवकथामां चार प्रकारनी वार्त्ता लेइ बेसे ते थकी धर्म सांभलेज नहि एम करता ए सर्वे कारण ने दूर करीने धर्म सामलवा बेसे तो पुर्वे कुगुरु स्वदर्शनना अथवा अन्य दर्शनना तेने जे भरमावे छे तेथी तेने सुगुरुनु वचन रुचे नहि यथा दृष्टांतः—एक नगरने विशे राजा महा भक्तिवान अने पंडितना वचननो लोलुपी अने स्वभावे भद्रीक हतो, ते जे जे पडित लोक आवे तेने वडे आडंबरथी हाथी उपर बेसाडीने घेर तेडी लावे तेने पाच रात्री राखी शेवा भक्ति करी धर्म तेनी पासे साभलीने तेने पांच रुपैयानो माल देइने भली रीते विदाय करी आवे, एम जे जे पडित आवे तेने एम करे, तेवा एक ब्राह्मण पडित आव्यो ते स्वभावे कपटी छे ते मनमां एवु विचारतो हवो जे आ राजा बहु भक्तिवान अने बहु दानेश्वरी छे तो ए राजा महारे वश रहेतो घणु सारु तो हु जो एने विलो मुकीने घेर जइश तो ए राजा भद्रीक छे ते बीजाने वश थशे एम विचारी त्या थकी जाय नहि एम करतां केटलाक वर्ष वहि गया ते वारे मनमा विचार्यु के आपणे ग्रहस्थ ठर्‍या ते घेर गया विना तो चाले नहि माटे हवे घेर ता जवु पण राजा आपणे वश रहे एवु करीने जवु एवु वि-

चारी राजा पासे आज्ञा मागी तेवारे राजाए कह्यु के सुखे थकी पधारो हु तमने शक्ति अनुसार विदायगिरी करु तेवारे ब्राह्मणे ए वात कबुल करी राजाये विदायगिरी करी ते वारे ते पडित राजा प्रत्ये कहेतो हवो जे तु घणो भद्रीक छे, अने घणो दानेश्वरी छे पण तने हजु पडितनी परीक्षा नथी, पण हु तने शास्त्रमा कोइक रीतना अर्थ छे ते देखाडु पण ताहारा पेटमा रहे तो कोइने कहे माटे ते देखाडवा जेवु नथी, ते वारे राजा बोल्यो जे आवडी वधी सर्व राज्यनी वार्ता माहारा पेटमा रहे छे तो शास्त्रनी वार्ता हु कोइने केम कहीश ? माटे मने कृपा करीने देखाडो ते वारे पडित ना मुकर गयो के ए वात तने कहेवाय नहि अने तुज थकी जीरवाय पण नहि एम कहीने राजाने घणो मोह चडाव्यो, ते वारे राजा घणो आग्रह करीने वळग्यो, ते वारे ते पडिते घणो बदोबस्त करीने राजाने गीतानो पाठ देखाडयो, ते म ये एक शब्दनो अर्थ पूर्वे जे थतो हतो अने शब्दनो अर्थ पण एज हतो ते कहीने देखाडयो. अने पछी कह्यु के आ अर्थ तो अमारे सर्व लोकने समजाववानो छे पण पडित लोकना समज्यामा ए शब्दनो अर्थ एवो छे के सींके बेठी देवी चणा चावे एवो अर्थ पडितोना जाणवामा छे बीजाना जाण्यामा नथी अने पडीत बीजाने जणावता पण नथी पण तारी घणी भक्ति जाणीने म तने ए अर्थ कह्यो छे पण तु कोइनी पासे कहीश नहि अने ए शब्दनो एज अर्थ करे तेने पडित जाणजे बीजाने पडित जाणीश नहि

ते पडीत एवु शल्य घालीने पोताने घेर गयो त्यार पछी जे जे पडीत आवे तेने राजा बहु आदरथी लावीने ते गीताना पाठना शब्दनो अर्थ करावे ते एने पूर्वे पेलो पडित शल्य घालीने गयो ते अर्थ तो कोइ थकी थाय नही त्यारे ते पडितोने नीभ्रछी अपमान

करीने काढे, ते वात देशमा प्रसिद्ध थइ जे राजा पूर्वे पंडितोनुं बहु
मान पूजा करता ने हमणा तो सर्व पंडितोने नीभ्रछे छे ते वात
काश्मीरमां एक पंडित सर्वोपरी शास्त्रनो जाण, सरस्वतीनो उपासक
तेने सांभलीने एवो विचार थयो जे हु जइने राजाने ठेकाणे पाडु
ते वारे रातने समे सरस्वतीए आवीने ते पंडीतने एवु कह्यु जे एने
आगल पंडित शल्य देइ गयो छे, ते शब्दना अर्थमां ते वात कइ
छे नही तो ते शब्दनो अर्थ तु क्या थकी करीश के सींके बेठी देवी
चणा चावे माटे तु पण जइने अपमान पामीश ते वारे ते पंडिते
देवीने कह्यु एज कारण छे के बीजु छे, ते वारे देवीए कह्युं एज
कारण छे ते वारे पंडिते कह्यु के हवे में वात जाणी छे तो ठेकाणे
पाडीने आवीश ते वारे ते पंडीत ते नगरे आव्यो ते पंडित बडो
नामीचो देशचावो छे, तेथी राजा बडे आडंबरे करीने लाव्यो अने
ते गीतानो पाठ पाछो मोहोडा आगल धर्या ते वारे मूल अर्थ हतो
ते कर्यो ते वारे राजा बोल्यो के बीजो काइ अर्थ एनो हशे ? ते
वारे पंडित बोल्यो हा छे, ते वारे पंडिते एवी रीते सात आठ अर्थ
ए शब्दना कर्या तोपण राजानु मन कांइ रीझ्यु नही ते वारे पंडित
बोल्यो के ए शब्दना अनेक अर्थ छे पण एनो मूल अर्थ एक छे
तेतो अमे पंडित लोक कोइने देखाडता नथी ते वारे राजा घणा
आग्रहे करीने वलग्यो, जे ए अर्थ तो मने जरुर देखाडवो पडशे
माटे हु एकांत आवु ते वारे पंडीत एकांत जइ कोइने कहेवु नही
एवो बंदोबस्त करीने अर्थ कर्यो जे सींके बेठी देवी चणा चावे ते
वारे राजा बहु खुशी थयो, अने कहेवा लाग्यो जे पूर्वे फलाणा
स्वामी आव्या हता तेणे ए अर्थ कर्यो हतो के तमे आज ए अर्थ
कर्यो ते वारे पंडीते कह्यु जण जण ए अर्थ जाणता नथी ए तो
पुरो पंडीत होय ते जाणे, ते वार पछी पंडीत मनमां विचारवा

लाग्यो जे ए मुरखो आ राजाने शल्य घाली गयो ते अर्थपडीत वधा थकी लावे, माटे एनो शल्य कहाडवो एम विचारी राजाने व्याकरण पच काव्य सिद्धात कौमोदी सुधी भणाव्यु पछी गीताना पाठनो राजा पासे अर्थ करावबा मांडयो ते वारे मूल शब्दनो अर्थ हतो ते आवे पण पेलो कल्पित अर्थ हतो ते आवे नहीं ते वारे पडीते कह्युके हे राजा तु काचो छे तेथी ए अर्थ तने माहि सुजतो नथी ते वारे राजा बोल्यो जे हु काचो छु ते तमे कोहोछो ते सत्य छे, पण अर्थ तो हु कहुछु तेज थशे एम माहोमाहे विवाद घणो थयो, ते वारे पडीत बोल्यो जे एज अर्थ सत्य छे तो तें आटला बधा पडीतोनु अपमान केम कर्यु ? ते वारे राजा बोल्यो जे स्वामी ते मुरखो मने शल्य घाली गयो ते हु शु जाणु ने हवे तो तमे मने विद्यारूपी आव्यो दीधी तेथी हवे मने सर्व यथार्थ भासन थयु हवे काइ हु ठगाउ नहि, ते द्रष्टाते जे एवा कुगुरुना भरमावेला जे जीव छे तेने सुगुरुना वचन नज रुचे, जेम जे धणीने ज्वर आवतो होय तेने अन्ननी रुची ना थाय, तेम कुगुरुना सगती लोकोने धर्म उपर रुची होय नहि. एम करतां कोइ कुगुरुनो भरमावेलो नहोय तो ते पोते आप डाह्यो होय, ते पोताना डाह्यापण आगल सुगुरुना वचन हइये धरे नहि अथवा कोइ जीव अज्ञानी होय तो तेने स्वभावेज रुची आवे नहि अथवा कोइ जीवना मनमांथी शका कखा मटे नहि एटला वधाए कारण ज्यारे मटे अने पछी सुगुरुनु वचन साभले तो तेने धर्मनी प्राप्ति थाय, तेमा पण केटलाक जीव साभलीने हइए धरे नहि तेने पण काइ गुण थाय नहि. ते आजना कालने विषे केटलाक जीव एवा ज नजरे । केटलाक जीवतो कुलाचार जाणीने धर्म प्रमुख छे, तथा केटलाक जीव अभिमानना ली-

धा थका चर्चा वार्त्ता शीखे छे, पण पोतेपोताना स्वरूपनी ओ लखाण करता नथी अथवा केटलाक जीव द्वीप समुद्र तथा क्रिया आचारनी वार्त्ताओ जाणीने भणवा कहेवरावे छे तथा कोइ समजु कहेवडावे छे, परतु निश्चेथी कहेतां ते पण अज्ञानीज छे तेने काइ धर्म पाम्यो कहिये नहि जे धणी पोताना आत्मानु वस्तु धर्म यथार्थ मत्तागत छे तेनु जाणीने तेने सद्दहे तेमाज भासन रमण करे तेने बोध पाम्यो कहिये ते तो तेवा ज्यारे स दुगुर मले ने तेनी शेवा कर ता मले कोइ जीवने सदूगुरविना पोताना स्वभाव थकी मले, शा माटे के समकित बे प्रकारनु कह्यु छे, एक गुरु उपदेश थकी तथा बीजु नीश्रग कहेता स्वभाव थकी मले माटे ए बोध पामवो जगतमां घणो दुर्लभ छे अने आ मनुष्य भवमाज विशेष करीने छे एवी जे भावना भावे तेने बोध दुर्लभ भावना कहिये

हवे बारमी धर्म भावना कहिये छिये एटले धर्म कहेता "वथ्थु सहावो धम्मो" एटले वस्तुनो स्वभाव ते धर्म ने पोते पोतानी वस्तु नो स्वभाव ते पोतानु धर्म कहीये कदापि कोइ परवस्तुना स्वभाव मां पोतानु धर्म जाणे ने मूलाइ छे, केमके परवस्तुना स्वभावमा परनुज धर्म रहु छे तेम अहींयां समजनु के आत्मानु धर्म ते आ त्मामाज रह्यु छे, ने पुद्गलनु धर्म ते पुद्गलमांज रह्यु छे ते कोइ पुद्गलना स्वभाव थकी साधीने पोतानु धर्म करवा चाहे छे ते भूल छे, एटले पुद्गल थकी साधीने पोतानु धर्म ते शु करे छे ते देखाडीये छीये दया दान पूजा व्रत नम तप सामायक पोसो प्रतिक्रमण इत्यादिक जे पुद्गल थकी साधीने पोतानु धर्म माने छे ते भुल छे

शिष्यवाक्य—दयादानादिक पुद्गलथकी साधीने केम कहो छो ते शु आत्माथकी नहि

गुरुवाक्यः—हे भद्र ए आत्माथकी नहिज ए पुद्गलथकी सधाय ते देखाडीये छीये, जे छकायनी दयापालवी ते पुद्गलने रोकीने पलाय तो ते पुद्गलनो स्वभाव थयो, तथा दानदेवु ते देवुं ते पुद्गल छे ने देवावाला ते पण पुद्गल छे, ए सर्व कायाथकी ज थाय तथा पुजा जे करवी ते पण कायाथकी थाय तेम व्रतनियम तप प्रमुख सर्व कायाथकी नीपजे छे ते काइ आत्माथकी नीपजतु नथी

शिष्यवाक्य—काया थकी निपजे छे पण काइ आत्माना उपयोग विना नीपजे छे ?

गुरुवाक्य—जे ते आत्मानो उपयोग मान्यो ते तारी मोटी भुल छे शा माटे जे अहिया तो मनना परिणाम भेगा भलीने कारज करे छे.

शिष्यवाक्य—मननी अने आत्मानी जूदी केम खबर पडे ? शु जाणीये के ए मनना परिणाम छे ? के आत्मानो उपयेग छे ? अमे बेउने एकज जाणीए छीए

गुरुवाक्य—अहो भद्र हजी सुधी तने मन आत्मानी जुदी खबर पडी नथी तो तु धर्मनी वार्ता शानी पूछेछे ने तु धर्म शु पाम्यो जे जड चेतननो विभाग थयो नहि त्या सुधी समकित क्या छे अने समकित विना धर्म ना होय, अने धर्म विना मुक्ति शानी मले माटे तु पहेली जड चेतनना विभागनी समजकर

शिष्यवाक्य—स्वामी कृपा करीने मने भेद ज्ञान देखाडो जेथी हु आत्मानु अने मननु स्वरूप जुदु जुदु जाणु

गुरुवाक्य--हे देवाणु प्रिय निद्रा वीकथा अने प्रमाद तजीने एकाग्र चित्त थइने तु सामळ, जे आत्मा छे ते उपयोग ग्राही छे अने मन छे ते परिणामग्राही छे शास्त्रमां एवु कह्यु छे के क्रिया ए, कर्म परिणामे बध अने उपयोग धर्म एटले क्रिया छे ते कर्मनी खेंचनारी छे, अने परिणाम छे ते कर्मना बध पाडता छे, माट ए बेउ तजवाजोग छे ने एक उपयोग छे तेथकी धर्म नीपजे ते उपयोग जे छे ते स्वरूपने विषे जे रमणता करवी तेने उपयोग कहीये अने परभावमा पेसवु तेने परिणाम कहींये एवीं रीते उपयोगनी अने परिणामनी वेंहचण जाणवी

हवे जे पुद्गलनो स्वभाव ते पुद्गलनु धर्म कर्त्ता छे, ते थकी काइ आत्मानु धर्म थाय नहि शामाटे के पूर्वे जे दया प्रमुख भेद कह्या ते सर्वे पुद्गलथकी थाय त्यारे ते पुद्गलीक धर्म कहींये अने सर्वे धर्मवाला पोतपातानी पुष्टि करे छे, तेम निश्चेमा ए जडजडनी पुष्टि करे छे, जे ए पूर्वलाभेद कह्या तेथकी शु थाय ए ते शुभ कर्म उपार्जे तो शुभ कर्म ते पण जड छे, अने अशुभ कर्म ते पण जड छे तो एणे जडे जडना वधनो वधारो करयो, पण कांइ आत्मगुणनो वधारो ए थकी थाय नहि आत्मगुणनो वधारो तो पाताना उपयोग मां रह्या थकीज थाय पण पुद्गलना कामोमां आत्मानो उपयोग होय नहि तेने धर्मी केम कहीये

शिष्यवाक्य--जो पुद्गलना कामोमा आत्माना उपयोगनी तम ना पाडोछो पण तेरमा गुण ठाणा सुधी पुद्गलना कामो तो ते जीव करे छे तो ते जीवतो काइ अधर्मी छे नहि

गुरुवाक्य--जे धर्मि पुरुष पुद्गलना कामो करे छे तेमा पोताने उपयोग नथी शाहणाते के जेम कोइ पुरुषने राजाए मारवा फहाडयो ते पुरुषने लाडवो ख्यावा आपे छे तेने कांइ लाडवो

खाता लाडवामा एनु चित्त छे? तेनु चित तो लाडवामा नथी शा माटे के तेने तो मारवानो महोटो भय छे, तेम जे ज्ञानी पुरुष छे ते पुद्गलना कामो करे छे, पण ते जेम पेलो पुरुष लाडवो खाय तेवो रीते करे छे, पेटमा समजे के ए काइ महारु नथी पण पुद्गलनु धर्म उदे आव्यु ते रोक्यु रहे नहि ते भोगवीने खेरवे पण पोते भेगो भळे नहि. पोतपोताना आत्माना उपयोगमां रहे, जेम कोइ स्त्रीने पराया छोकराने धवराववाने महिनो ठरावीने लाव्या छे पण तेना चित्तनो आणद पोताना छोकराने धवडाववामा छे, अने पानो पण पोताना छोकराने देखीने आवे अने ते छोकराने जे धवडावे ते मनमां विचारे जे पेलानो महीनो खाइये छीये ते धवराव्या वगर चाले नहि परतु तेमा काइ चित्तनो आणद पण नावे, तेम कांइ पानो पण ना आवे तेम आहिया ज्ञानी पुरषने समजवो के पुद्गलना कामोमा भेगोनाभळे हवे जे पुद्गलीक धर्मना परिणाम उठावीने आत्मीक धर्मनो उपयोग करवो ते ज्ञान दर्शन चारीत्र रत्न त्रयीनु साधवु अने तेना स्वरुपने विषे रमवु तेने धर्म भावना कहीये तेमा जे व्यवहार धर्मनी भावना भाववी तेथकी, शुभ आश्रवनु उपार्जनु थाय तेथकी आत्माशुभ कर्म बांधे आत्माभारे थाय पण काइ आत्मानु कारज सिद्ध थाय नहि अने निश्चे स्वरूपनी जे भावना भाववी तेथकी भावसवर थाय, अने आत्माने नवां कर्म आवतांरोके अने तेना आत्मानु कारज सिद्ध थाय, ए वातमा संदेह राखवो नहि एटले भावनाओ बारे कही

हवे पाच चारीत्र कहीये छीये प्रथम समायक चारीत्र कहेता जे स्वसमाधि एटले आत्मस्वरूपने विशे रमणता तेने स्वसमाधि कहिये

समाधी तो घणी करी तथा जोगनु साधन

थाय त्यारे समाधी तो थाय छे अने तमे तो आत्मानी रमणताने समाधी कहो छो

गुरुवाक्य—जे जोग साधन थकी समाधी चढावे छे अने खटचक्रनु साधन करे छे अने रेचक कुंभक प्रमुख भाषी तथा गुरस्वासरधीने समाधी चढावशी तेने हठ समाधी कहीये, तेमां मेहेनत एक करोड रुपयानी छे, अने प्राप्ती एक कोडीनी छे कदापि कोइ कहेशे के तमे नथी मानता तेथी एवु कहो छो, तेने कहीये क भाइ अमारे तो ए वातनो रागद्वेष छेज नहि, अने अमारे मते पण अमे कहेता नथी, उमास्वामीकृत गुण स्थानक क्रमारोह ग्रंथ छे तेनी टिकाने विषे एनो विस्तार घणो छे ते जोशो तो तमने समज पडशे, माटे सहज समाधीनु साधन करवु, सहज तो आत्मानु स्वरूपज छे तेनी जे स्वभावे रमणता थाय तेने सहज समाधी कहीये एवा जे समाधी वंत तेने सामायक कहीये ते सामायकना बे भेद सर्व विरती सामायक ते साधु ने सदाय एवी समाधिमाज रमणता करे अने देशविरति सामायक कहेता श्रावक तेने समाधिमां निरतर रही ना शके शा माटे के गृहस्थ तेथी निरतर रमणता थाय नहि, तथा गुणठाणु पण पांचमु तेथी ते प्रमाणे समाधि होय तेने सामायक चारित्र कहीये तथा बीजु छेदोपस्थापननामा चारित्र कहीये छीये. जे पूर्वे कही जे समाधि तेथकी भ्रष्ट थाय शाथी के पूर्वे कृत कर्मना जोरथकी परिणामनी धारा फरे तेथी करीने आश्रव भावमां जीव जाय ते वारे समाधिगुण न रहे त्यारे सामायक चारित्र पण ना रह्यु, ते पाछो पोताना आत्मानो उपयोग देइने पूर्वकृत कर्मने छेदीने पाछो चारित्र स्थापन करे एटले ज्ञान दर्शनने विषे अखड रमण करे तेने छेदोस्थापन चारित्र कहीये

हवे त्रीजु परिहार विसुद्धि चारित्र कहीये छीये एटले अशुद्धनो परिहार तेनो आत्मा विशुद्ध थाय एटले अशुद्ध जे राग द्वेपना परिणामने घटाडवु उपाधिने घटाडवुं अने पोताना स्वरूपनु निर्मलपणु करवु, ते निर्मल शाथकी थाय के भेद ज्ञान प्रथम प्रगटे त्यारे आत्मा निर्मल थाय, एटले भेद ज्ञान ते शु कहीये जडचेतननी वेंहेंचण तेने भेद ज्ञान कहीये ते सक्षेपथकी देखाडीये छीये, जे रूपी साकार रागद्वेप क्रोध मान माया लोभ काम विकारइत्यादिक जे वस्तु छे, ते सर्वे जडना घरनी छे तथा ज्ञान दर्शन चारित्र आदि देइने जे वस्तु छे ते सर्वे चेतनना घरनी छे एम समजीने जडनी वस्तुने दूर करे ने आत्मानी वस्तु पोतानी जाणीने तेने विषे रमणता करे एटले जडनो परिहार आत्मानु विशुद्धतापणु तेनु नाम परिहार विशुद्ध चारित्र कहीये तथा चोथु सूक्ष्म सपराय चारित्र ते श्रेणीगत छे एटले जीव श्रेणी आरोहे ते श्रेणी बे प्रकारनी छे एक उपशम श्रेणी बीजी क्षेपकश्रेणी उपशम श्रेणीनो करनारो जीव पाछो पडे, अने क्षपक श्रेणीनो करनारो जीव पाछो ना पडे. शा द्रष्टांते के जेम चुलानी तथा बीजी जग्याये अग्नि छे ते अग्निने एक पुरुप तो राख प्रमुख नाखीने दाबे ते कोडना जावामा ना आवे के अहिंयां अग्नि छे एवी करे अने एक पुरुप पाणी नाखीने ते अग्निनो क्षय करे ते बेमा कोनी आग्नि प्रगट थाय के जे धणीये पाणी नांखीने आग्निनो क्षय कर्यो छे तेने काइ अग्नि प्रगट थवानी छे नहि, अने जे धणीये राख नांखीने दाबी छे तेने ए अग्नि तो प्रगट थशेज, ते द्रष्टाते अहिंया बे श्रेणीनु स्वरूप जाणवु जे जीव आठमा अपूर्वकरणनामा गुणठाणे जाय त्याथी श्रेणी बधाय ज्यां सुधी सातमा गुणठाणामा होय त्यांसुधी काइ श्रेणी प्राप्त थाय नहि हवे [illegible] विपे श्रेणी छे ते श्रेणी कहेता मुक्तिपुरने

विषे जवानो रस्तो, ते त्यांथी बे रस्ता छे एक जमणो अने एक डावो ते जमणे रस्ते चढे तो ते धणी ते नगरे पहोंचे तथा डावे रस्ते चढे ते रस्तो तो राननो छे ते केटलीक भोंय सुधी चाले पछी आगल तो मार्ग छे नहि तेवारे पाछु फरीने मुल ठेकाणे आववु पडे एटले आहिया जे जमणो रस्तो ते क्षपकश्रेणी कहिये डावो रस्तो ते उपशमश्रेणी कहीये जे धणी उपशम श्रेणीये चढे ते धणी कषाय तथा मिथ्यात्वने दाबतो चाल्यो जाय, ने जे क्षपक श्रेणीये चडे ते मिथ्यात्व प्रमुखनो क्षय करतो चाल्यो जाय, ते क्षयनो करनारो यावत् केवल पामी मोक्षे जाय, अने जे दाबतो चाल्यो जाय ते अ गीयारमा गुणठाणा सुधी जाय, पण आगल रस्तो छे नहि माटे तेने पाछु फरवु पडे, अथवा जो आवखु आवी रह्यु होय तो काल प्राप्त थाय हवे जे पाछो वले ते शा दृष्टांते के जेम कोइ पर्वाने पगे दोरी बांधीने उडाडे छे ने पर्वाने जेटली दोरी होय एटली भोंय उडे पण तेथकी आगल जवाय नहि अने ते दोरी वालो दोरी खेंचे एटले ठेकाणे आववु पडे, तेम उपशमश्रेणी वालाने मोहनी कर्मनो नाश थयो नथी, एतो उपशमावेली छे ते प्रकृति पाछी प्र गट थइने ते जीवने अगियारमे गुणठाणेथी पाछो खेंचे एम जाणवु. हवे ते बे श्रेणीने विषे सूक्ष्म सपराय चारित्र छे, तेनु स्वरूप किंचिद् देखाडीये छीये हवे ते आठमे गुणठाणे गयोथको प्रथम हास्य, अरति, भय, शोक, दूगछा ए षटकने खपावे तथा उपशमावे ते वारे पछी नवमे गुणठाणे सज्वल्नो क्रोध, मान, माया, पुरुषवेद, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद खपावे तथा उपशमावे तेवारे दशमे गुणठाणे सज्वल्नो लोभ रहे पण ते लोभ धनधान्यादिक जड वस्तुनो न होय, अत्यन सूक्ष्म पोताना स्वरूप मात्रनो होय तथा अगियारमे गुणठाणे ते लोभ उपशमी गयो होय अथवा पोताना स्वरूपनी

प्राप्ति थवानो विचार मनमां थाय जे मारा आत्मानी मुक्ति करु एवो लोभ थाय तो पाछो अगियारमेथी पडीने दशमे आवे

शीष्यवाक्यः—स्वामी ए काइ परभावमा तो पेठो नथी पोताना आत्मानी मुक्ति ताकता उलटो पाछो पडयो ए शु

गुरुवाक्य—हे भद्र इहा आत्मानी मुक्ति विचारी ते साची वात पण एनु नाम पण लोभ केहेवाय अने लोभ छे ते जड छे अने जड छे ते आत्माना गुणनो घात कर्ता छे माटे एटलोए लोभ समजुने न जोइये.

शीष्यवाक्य—स्वामी आत्मानी मुक्ति त्या न विचारे तो त्या शु विचारता हशे

गुरुवाक्यः—हे देवाणु प्रिय त्या पोतानी परनी कशी खबर नथी, त्यां तो द्रव्य गुण पर्याय भिन्न भिन्न नोखा करे तथा गुण छे ते पर्यायमा सक्रमावे, अथरा द्रव्यमां सक्रमावे, अथवा गुण पर्याय बन्ने द्रव्यमां सक्रमावे एवी रीते त्या भेद ज्ञान तथा भेदाभेद ज्ञान छे ते पोताना स्वरूप रमणज छे, तेने सूक्षम सपराय चारित्र कहीए हवे पाचमु यथाक्षायक चारित्र कहीए छीये ॥ एटले यथा क्षायक कहेतां यथार्थ क्षय कर्यो छे जेणे मोहनी कर्मनो एटले पूर्वे सूक्ष्म संपराय चारित्रने विषे दसमे गुण ठाणे सूक्ष्मनो जे लोभ रह्यो हतो ते लोभनो क्षय करयो एटले सपूर्ण मोहनी कर्मनो क्षय थयो तेवारे ते जीव क्षीण मोही थयो हवे ते जीवना मनना परिणामनो कल्लोल चडे नाहि शा माटे जे मदिरारूप मोहनीनो जे केफ हतो ते केफना जोरथी अनेक तुरग उठता हता ते मोहनी कर्मनो क्षय थयो एटले घेलछा माहेथी गइ तेवारे तेनो आत्मा थीर भाव थयो जेम सरोवरनु पाणी वायु बध थये थके स्थीरभावे रहे तेम

ए आत्मानो उपयोग थीर भाव थयो एटले यथार्थ चारित्र थयु ए टले क्षायक कहेतां मोहनीनो क्षय कहीये थीर भाव कहेतां चारित्र कहीये ते यथार्थ कहेता जेवु सत्तागतने विषे वस्तुपणे हतु तेवुज मगटपणे थयु, तेवारे तेने एकत्व भाव थयो जेम जग्नीं जे शित लता अने जल रसनो स्वाद अने जल ए प्रणएकज छे, रस स्वा दने शितलतापणु ते काइ जल थकी जुदु नथी, तेमज गुण पर्याय सहित तेज द्रव्य छे कदापी कोइ अहियां कहेशे के पाणी तो उन पण होय तेने कहीये के वीभावथकी पाणीमां उष्णता पेसे छे पण स्वभाव थकी नथी. जे अग्निना जोगथी पाणी उष्ण थाय पण अ- ग्नि थकी अलगु करीये अने पछी ने थाय एटले शितपणु थाय तेम आपणो आत्मा कषायादिकना जोगथकी कापी, क्रोधी, मानी लोभी अनेक नाम धरावे छे पण त मोहनी कर्मनो नाश थयो ते वारे स्वभाविक नीर्विकल्प निरउपाधी थीर परिणामेम होय, एवु ए भेद ज्ञान त्यां मगट त्या थाइ आत्मा अने आत्माना गुण पर्याय जुदा नथी एटले ध्याता ध्येय ध्यान एकत्वपणे भजे, एटले ध्येय प दार्थ परमात्मा ते पोतानो आत्मा तेज जाणवो, अने ध्यातापणु पोतज छे अने ध्यान ते पोतानो उपयोग छे, एम त्रणे एक रूपज त्यां ध्यान छे तेने यथार्थ कहीये एटले यथाख्यायक चारित्र कहु कोइ अहियां कहेशे के तमे व्यवहारनो भाग अहिया लाव्या नहि नस्तु एक निश्चय पक्षनुज तमे पोषण कर्यु, तेनो उत्तर जे अमे काइ अमारा घरनी रीतनु कर्यु नथी जे परमात्माये भाख्यु ते अमे कह्यु छे ते श्री भगवतीजीने विषे कालेसवीपुत्र अणगारने स्थ विर मुनीये बेना प्रश्नने विषे सामायक ते आत्माने कह्यु छे अने सवर पण आत्मानेज कह्यु छे ते अधिकार वीस्तारथी त्यां जोजो एटले तमने समज पडशे, एवी रीते सवरना सत्तावन बोल कह्या तेमां

केटलाक बोल तो निश्चे आत्म स्वरूपी छे ते तो सदाय आत्माने सेववा लायक छे, अने ए सेवता थका नवु कर्म पेसे नही ए वात निसंदेह छे अने जे जे बोल व्यवहारना छे ते बाल जीवने वखाणवा लायक छे पण ए थकी आवता कर्म रोकाय नही अने आत्मानु कारज पण तेथी थाय नही ए कहेवा मात्र सवर छे अहीयां कोइ कहेशे जे तमे आवी रीते व्यवहारने मूलथी उखेडीने काहाडी नांखोछो, तो तमे एकांत वादी दीसोछो अने भगवते तो एकांत वादीने मिथ्यात्वी कह्या छे, तेनो उत्तर जे अमे एकातवादी छीये नही अमारे व्यवहारपक्ष घणो वल्लभ छे ने मानवाजोग छे, पण जे शुद्ध व्यवहारछे ते तो अमारे आदरवाजजोग छे, अने जे अशुभ व्यवहार अने शुभ व्यवहार तथा कल्प व्यवहार तेने काइ आदरवानी अमने मतलब नथी शामाटे के परमात्माए सवरनी करणी करवी कही छे पण आश्रवनी करणी कही होय तो देखाडो, एटले शुभाशुभ व्यवहार छे ते तो आश्रव छे, अने कल्प व्यवहार छे ते तो सर्व सर्वना पक्षना ओलखाण करवाने वास्ते बांध्या छे, ते मत्यक्ष छए दर्शनना नोखा नोखा छे, तथा जिनमा पण श्वेतांबर दिगबरना जुदा जुदा छे, श्वेतांबरने विषे पण गच्छ गच्छना नोखा नोखा छे, ते व्यवहारथकी तो कांइ फल मालम पडतु नथी, फोगट काय क्लेश छे, जेम ससारने विषे नातनातना नोखा व्यवहार बांधेला छे, जे मुसलमानने विषे मरे त्यारे रुवे कुटे नहि, तेमज अग्रेज लोकने विषे पण रोवु कुटवु नथी, तथा हिंदुलोकने विषे रुवे कुटे तथा तेना शोग पाले छे, ते देशदेशने विषे नोखी रीत छे, मारवाडने विषे हिंदु लोको रुवे छे, पण [illegible] नथी, तेमज पूर्व उत्तरमां जाणवु, तथा दक्षिण [illegible] छे पण कोइ कुटतु नथी, ने हाथघसे छे, अने [illegible] अने छाती माथा कुटे छे एवा देश

देशना व्यवहार छे, परतु मुवेलां तो पाछा आवता नथी, तथा ज वार पण कोइ देतां नथी, तो जे नथी रोतो तेनी पण एज रीत छे अने रुवे कुटे छे तेनी पण एज रीत छे, माटे ए कल्प व्यवहारनी एवी रीतो जाणवी जो ए मुवेला पाछां आवे तो एने कल्प व्य हारना कष्टनु फल मले सर्व मति कल्पना कल्पव्यवहार दिसे छे एवु परमात्मानु वचन नथी के एवा फोगटीया व्यवहार करवा पर त्मानु वचन तो ए छे के अप्रमादिभावे विचरवु, अने कल्प व्यव रनी क्रिया प्रमाद गुण ठाणामां छे प्रमाद तो तजवा कह्या छे, ज्यां आत्मस्वरूपनी रमणता छे त्यां धर्म कह्यु छे एटले वस् स्वभावनु नाम धर्म छे, पण काइ क्रियानु नाम धर्म नथी तथा या तो नव तत्वने विषे आश्रवमां गणावी छे, तथा ठाणांग पचीस क्रिया आश्रव कही छे तेमज समवायांग प्रमुखने विषे कह्यु छे, तथा सुगडांगजीने विषे तेर क्रिया छे ते पण वमां कही छे, एम जेटली जेटली क्रिया पे तजवीज कही छे पण आदरवानुं क्यांई खाडो, तथा जसवीजयजी उपाध्याये क्रियाने छे, तथा सर्व सूत्रनी टीकाने विषे तथा प्रकरण विषे क्रियाने कलाप कहीने बोलावी छे माटे जे सत्य छे ते भगवति प्रमुख सूत्र तथा सुमति अने पयोग माहे लगावो अने सुगुरुना पासा आवे, तो आहिंयां कहेशो के बीजा गु बहुश्रुत सुमति ग्रंथने विषे एवु कह्यु छे के, जे घणु समजे अने घणा शिष्य घणो परिवार वधारे पर्षदा मेळवीने उपदेश दे अने । ससार रखडसे अने

माटे जेने आत्मा उपयोग नहि तेनु भण्यु पण कांइ लेखामा नहि ते माटे आत्मज्ञानी बहु श्रुत होय तेनां पासां सेवो एटले समज्या मां आवशे तथा आनदघनजी पण एम कही गया छे के आत्मज्ञानी होय तेने साधु कहीये, बीजाने तो द्रव्य लिंगी जाणवा इत्यादिक घणा शास्त्र तथा घणा पंडितना वचन जोशो तो तमने समज पडशे एम परीक्षा करीने आत्मारूप सवर तत्वने आदरवो पुद्गलीक भावरूप आश्रव छे तेने त्याग करवो तेना आत्मानु कारज थशे एटले सवरतत्व कह्यो

हवे निर्जरा तत्व कहीये छीये एटले निर्जरा कहेता जे आत्माथकी कर्मने खेरववां तेना बे भेद छे एक बाह्य एक अभ्यतर ते बाह्यथकी कर्मने खेरववानी भजना छे, अने अभ्यतरथकी कर्म निश्चेज खरे हवे ते बाह्य अभ्यतर तपनां नाम लखावीये छिये अणसणतप १, उणोदरीतप २ वृत्ती सक्षेप ३ रसत्याग ४ कायक्लेश ५ सलीनता ६ ए छ बाह्य तप कहीये हवे अभ्यतरतप कहीये छीये प्रायश्चीत १, विनय २, वेयावच्च ३, सज्जाय ४, ध्यान ५, काउस्सग्ग ६ ए छ अभ्यतर तप कहीये. हवे प्रथम अणसणतप कहीये छीये ते अणसणतप बे प्रकारना छे, एक थोडाकालनो अने बीजो जावजीवनो ॥ थोडाकालनो छे तेना अनेक भेद छे, उपवास छठ अठम यावत् छमासीतप, तेने विषे केटलाकना नाम कहीये छिये रत्नावली तप तेनी विगत प्रथम एक उपवास करे पछी पारणु, पछी बे उपवास, पछी पारणु, पछी त्रण उपवास, पछी आठ छठ, पछी एक उपवासथी मांडीने सोल उपवास सुधी चढे,पछी चोत्रीस छठ करे, पाछा सोल उपवासथी एक उपवास सुधी उतरे, पाछा आठ छठ करे, पछी अठमथी एक उपवास सुधी उतरे एटले एक

वरस त्रण मास बावीस दिवसे एक प्रवाडी

पुरी थाय. एवी चार मवाडी करवी ते बीजी प्रवाडीये त्यां विगय ना वावरे, त्रीजी मवाडीये पात्रने लेप लागे एवी वस्तु ना वावरे, चोथी मवाडीये आंबिल करे, एवी रीते ए रत्नावलीतप पांच वरस एक मासने अठ्ठावीस दिवसे पुरो थाय, ते एक मवाडीये अठ्यासी पारणां आवे एम चार मवाडीये थइने त्रणसेंने बावन पारणां आवे तेनो यत्र न १ जुओ

हवे कनकावली तप कहीये छीये. ते पुरवे जे रत्नावली तप तेज प्रमाणे करवानो फक्त फरक एटलो के जे आठ आठ छट्ठ कह्या छे ते अठ्ठम करवा अने चोत्रीस छठ्ठ कह्या ते अठ्ठम करवा तेनी एक मवाडीये वरस एक मास ५ पाच अने दिवस १२ वार, चार मवाडीये थइने वरस ५ पांच. मास ९ नव दीन अराढ तेनो यत्र न २ जुओ

हवे लघुसिंह क्रीडीततप कहिये छीये प्रथम एक अपवास, पारणु करीने वे अपवास, पछी एक अपवास, पछी त्रण अपवास, पछी वे अपवास, पछी चार, पछी त्रण, पछी पांच, पछी चार पछी छ, पछी पांच, पछी सात, पछी छ, पछी आठ, पछी सात, पछी नव, पछी आठ, पछी नव, पछी सात, पछी आठ, पछी छ पछी सात, पछी पांच, पछी छ, पछी चार, पछी पाच, पछी त्रण पछी चार, पछी वे, पछी त्रण, पछी एक, पछी वे, पछी एक तेनो यत्र न ३ जुओ

हवे वृद्धसिंह क्रीडीत तप कहीये छीये. प्रथम एक उपवास पछी वे उपवास पछी एक पछी त्रण पछी वे पछी चार पछी त्रण पछी पांच पछी चार पछी छ पछी पांच पछी सात पछी छ पछी आठ पछी सात पछी नव पछी आठ पछी दस पछी नव पछी अगीयार पछी दस पछी बार पछी अगीयार पछी तर पछी चार ५८८ पछी तेर पछी पदर पछी चउद पछी सोल पछी पदर

१

रत्नावली तपोदीन ३८४ पारणा दी ८८
एव मास १५ दीन २२ एक परपाडीना पार

३

४
वृषसिंह क्रिडीत तपोदीन ४९७ पायणाना दीन ६१ दोढ परस
अने अराड दिवस एक परवाडीना चार परवाडीये थइने
७ वरस मास वे दीवस १२ थार
५
मुक्तावली तपदीन ३०१ पारणा दीन ६१ सरवमलीने
वरस १ दीवस २वे चार परवाडी थईने वरस चार दीन ८
६
कनीक तपदीन २७२ पायणा ३२ सरवमली

पछी सोल पछी चऊद पछी पदर पछी तेर पछी चऊद पछी बार पछी तेर पछी अगीयार पछी बार पछी दस पछी अगीयार पछी नव पछी दस पछी आठ पछी नव पछी सात पछी आठ पछी छ पछी सात पछी पांच पछी छ पछी चार पछी पाच पछी त्रण पछी चार पछी बे पछी त्रण पछी एक पछी बे पछी एक तेनो जत्र न ४ जुओ.

हवे मुक्तावली तप कहीये छीये प्रथम एक उपवास पछी बे उपवास पछी एक पछी त्रण पछी एक पछी चार पछी एक पछी पांच एम अनुक्रमे सोल सुधी चडवा पाछा एक पछी सोल पछी एक पछी पदर एम अनुक्रमे एक सुधी उतरवा. तेनो जत्र न ५ जुओ

ए कनकावली आदेदेइने मुक्तावली सुधी चारे प्रवाडीनां पारणांनी रीत रत्नावली प्रमाणे जाणवी

हवे गुणरत्नाकर सवत्सर तप कहीये छीये प्रथम मासे एक एक उपवासनु पारणुं करवु बीजे मासे बबे उपवासनु पारणु करवु त्रीजे मासे त्रण त्रण उपवासनु पारणु करवु. एम यावत् सोलमे मासे सोल सोल उपवासनु पारणु करवु अने ते विषे आतापना प्रमुख लेवी ते अधिकार भगवतीजीना बीजा सतकथी जाणजो.

हवे कोटीक तप कहीये छीये प्रथम एक उपवास करवो पछी बे करवा एम यावत् सोल सुधी चडवु अने सोलथी पाछु एक सुधी उतरवु एम एनी पण चार प्रवाडी करवी पारणानी रीत पुरवनी पेरे जाणवी तेनो जत्र न ६ जुओ.

हवे खुडपडीमा तप कहीये छीये प्रथम एक उपवास करवो पछी बे पछी त्रण पछी चार पछी पांच पछी त्रण पछी चार पछी पांच पछी एक पछी बे पछी पांच पछी एक बे त्रण चार पछी बे त्रण चार पाच एक पछी चार पांच एक बे त्रण.

१	२	३	४	५
३	४	५	१	२
५	१	२	३	४
२	३	४	५	१
	५	१	२	३

एनी एक मवाडीये तपदीन ७९ पारणा दीन २१ चार परवाडी थइने वरस एक ने मास एक दीन १० ए तप पुरो थाय पारणां पुरव वत.

हवे महा भद्र पडीमा कहींये छीये. ते प्रथम पाच उपवास करवा पछी छ पछी सात पछी आठ पछी नव पछी सात आठ नव पांच छ पछी नव पछी पाच एम अनुक्रमे उपवास करवा तेनो जन्त्र.

५	६	७	८	९
७	८	९	५	६
९	५	६	७	८
६	७	८	९	५
८	९	५	६	७

एम महा भद्र पडीमाना तपोदीन १७५ पारणा दीन २९ सरव मलीने मास छ अने दीन वीस एक मवाडीये जाणवा चार मवाडीये थइने वरस बे मास बे दीन २० थाय एटले ए तप पुरण थाय. पारणानी रीत पुरववत

१	२	३	४	५	६	७
४	५	६	७	१	२	३
७	१	२	३	४	५	६
३	४	५	६	७	१	२
६	७	१	२	३	४	५
२	३	४	५	६	७	१
५	६	७	१	२	३	४

हवे अति भद्र पडीमा कहींये छीये प्रथम एक उपवास करवो पछी बे पछी त्रण पछी चार पछी पाच पछी छ पछी सात पछी चार पछी पांच पछी छ पछी सात पछी एक बे त्रण पछी सात पछी एक बे त्रण चार पाच छ पछी त्रण एम अनुक्रमे उपवास करवा अति भद्र पडीमा तपोदीन १९६ पारणां दीन ४९ सरव मलीने आठ महीना ने पांच दिवस एक मवाडीना जाणवा. चार मवाडीयो थइने वरस बे मास आठ दीन २० वीसे ए तप पुरो थाय पारणां पुरववत

हवे अतिशुद्ध पडीमा कहींये छीये प्रथम एक उपवास करवो पछी बे पछी त्रण पछी चार पछी पाच पछी छ पछी सात पछी आठ पछी नव पछी पाच पछी छ पछी सात आठ नव एक बे त्रण

चार पछी नव पछी एक पछी वे त्रण चार पाच छ सात आठ पछी चार पाच छ सात आठ नव एक वे त्रण. एम अनु- क्रमे उपवास करवा साथे- ना जत्रमा वताव्या प्रमाणे अतिशुध पडीमा तपदीन ४०५ पारणा दीन ८१ सर्वे

१	२	३	४	५	६	७	८	९
५	६	७	८	९	१	२	३	४
९	१	२	३	४	५	६	७	८
४	५	६	७	८	९	१	२	३
८	९	१	२	३	४	५	६	७
३	४	५	६	७	८	९	१	२
७	८	९	१	२	३	४	५	६
२	३	४	५	६	७	८	९	१
६	७	८	९	१	२	३	४	५

मलीने वरस एक मास चार दीन ६ एक प्रवाडी थाय चार प्रवाडीये मलीने वरस पांच मास चार दीन चोवीस ए तप पुरण थाय पारणां पूर्वे कह्या प्रमाणे.

हवे महाशुध भद्र पडीमा कहीये छीये प्रथम एक उपवास पछी वे उपवास पछी त्रण पछी चार पछी पाच पछी छ पछी सात पछी आठ पछी नव पछी दस पछी अगीयार. पछी छ सात आठ नव दस अगीयार एक वे त्रण चार पांच पछी अगीयार पछी एक वे त्रण एम अनुक्रमे उपवास जत्रमा वताव्या प्रमाणे करवा अति महा शुध पडीमाना तप दीन ७२६ पारणा दीन १२१ सरव मलीने वरस वे मास चार दीन ७ प्रथम प्रवाडी थाय. चार प्रवाडी थइने वरस नव

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
६	७	८	९	१०	११	१	२	३	४	५
११	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
५	६	७	८	९	१०	११	१	२	३	४
१०	११	१	२	३	४	५	६	७	८	९
४	५	६	७	८	९	१०	११	१	२	३
९	१०	११	१	२	३	४	५	६	७	८
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१	२
८	९	१०	११	१	२	३	४	५	६	७
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१
७	८	९	१०	११	१	२	३	४	५	६

मास ४ चार ने दीवस २८ए तप पुरण थाय. पारणा पुरव प्रमाणे

अथ कर्म घाती तप कहींये छीये. प्रथम छठ आठ करवा पारणे बेसणु करवु एम आठे छठ सलग करवा आंतरा रहीत ग रणु नमो नाणस्स गणवु, नोकार वाली २० वीस गणवी.

बार वर्षनो सलेषणा तप कहीये छीये ते प्रथम चार वर्ष सुधी विगयनो त्याग करवो बीजा चार वर्षने विषे उपवास आद देइने विचित्र प्रकारनो अठम सुधी तप करवो ते वार पछी एक वर्ष एकांतरे उपवास करवो, अने पारणे आंबिल करवु, ते पछी मास ६ अठम अठमनो तप करवो ते वार पछी मास ६ अठम उपरनो विकट भक्त तप करवो ते वार पछी वर्ष एक आंबिलनो तप करवो. ते वार पछी वर्ष एक आंबिल आदि देइने मासखमण सुधी श क्ति सारु तप करवो, एवी रीतनो बार वर्षनो सलेखणा तप जाणवो तथा जवमध पडीमा एक मासनो तप तेनी विगत ते जे प्रथम शुक्लपक्षने पडवेथकी माडवो, ते प्रथम तपे एक दांती आहारनी तथा दांती एक पाणीनी, बीजे दिने दाती बवे आहार पाणीनी एम यावत् पुनमने दिने पदर दांती आहार अने पदर दाती पाणी-नी, पाछु कृष्ण पक्षमां पडवेने दिन चउद दाती आहारनी तथा चउद पाणीनी, एम यावत् ओगणत्रीशमे दिवसे एक दांती आहारनी तथा एक पाणीनी, त्रिशमे दिवसे उपवास करवो तेनु नाम जवमध पडिमा कहींये. तथा वजरमध पडिमा एक मासनी होय, ते पण प्रथम शुक्लपक्षनी एकमथी माडवो, ते प्रथम दिवसे दांती पदर आ हारनी तथा दाती पदर पाणीनी, बीजे दीने चउद दांती आहारनी ने चउद दाती पाणीनी, एम यावत् पुनमने दिवसे एक दांती आ हारनी ने एक दांती पाणीनी तथा वदने प्रथमना दिवसे एक दांती आहारनी तथा एक पाणीनी वद २ ने दांती आहारनी ने बे दांती

पाणीनी एम यावत् अमावास्याये पदर दांती आहार अने पदर दांती पाणीनी तेने वजरमध पडिमा कहीये, इत्यादि तप सिद्धांतने विषे बीजा पण कह्या छे, तथा हालमा नवा वरषीत तप घणा थाय छे ए सर्वेने इतर कहेता थोडा कालनो अणसण तप कहीये तथा जावज्जिव अणसण तप तेना बे भेद एक पादोपगमन अणसण, अने एक भत्त पचख्खाण अणसण हवे पादोपगमन अणसणना बे भेद, एक सींह अग्नी प्रमुखनो उपसर्ग थाय तो पण त्यांथी हगे नहि, बीजो एवा उपसर्ग विना जेम वृक्षनी डाल कापेली पडी होय तेम हाले चाले नही. भत्त पचखाण अणसणना बे भेद, एक सींहादिक उपसर्ग उपन्यायका भत्त पचखाण करे, बीजो भात पाणी विना उपसगे पचखे ए बे भेद एटले अणसण तप कह्यो हवे उणोदरी तप कहीये छीये तेना बे भेद एक द्रव्य ऊणोदरी एक भाव उणोदरी, द्रव्य उणोदरीना बे भेद, एक उपगरण उणोदरी बीजी भात पाणीनी उणोदरी, उपगरण उणोदरीना बे भेद एक पातरु काष्ट अथवा माटीनु राखवुं ते पात्र उणोदरी कहीये. हवे भात पाणीनी उणोदरीना अनेक भेद आठ कवल आहारना करे तेने अल्प आहारी कहीये, कवल केहेतां कुकडाना इडा प्रमाण कोलीओ होय, बार कवळ जे आहार करे तेने अडधा उणोदरी कहीये, तथा चोवीस कोळीया आहार करे तेने चोथा भागनी उणोदरी कहीये, एम यावत् एकत्रीस कवलनो आहार करे तेने पण उणोदरी कहीये शा माटे के बत्रीस कवलनु पुरुषने आहारनु प्रमाण, तेथी एकत्रीस वालो उणोदरीमा छे तेथी स्त्रीने अठावीस कवलनु परिमाण छे तेने सत्तावीस सुधी उणोदरी कहीये तेथी यावत् आठ कवलथी ते एकत्रीस कवल सुधी उणोदरीनो तप कहीये अने बत्रीस कवलपुरा ले तेने प्रमाणोपेत आहार कहीये, अथवा तेमांथी

मास ४ चार ने दीवस २८ ए तप पुरण थाय. पारणा पुरव प्रमाणे

अथ कर्म घाती तप लखीये छीये. प्रथम छठ आठ करवा पारणे वेसणु करवु एम आठे छठ सलग करवा आंतरा रहीत ग रणु नमो नाणस्स गणवु, नोकार वाली २० वीस गणवी.

बार वर्षनो सळेषणा तप कहीये छीये ते प्रथम चार वर्ष सुधी विगयनो त्याग करवो बीजा चार वर्षने विषे उपवास आदे देइने विचित्र प्रकारनो अट्ठम सुधी तप करवो ते वार पछी एक वर्ष एकांतरे उपवास करवो, अने पारणे आंबिल करवु, ते पछी मास ६ अट्ठम अठमनो तप करवो ते वार पछी मास ६ अट्ठम उपरनो विकट भक्त तप करवो ते वार पछी वर्ष एक आंबिलनो तप करवो. ते वार पछी वर्ष एक आंबिल आदि देइने मासखमण सुधी श क्ति सारु तप करवो, एवी रीतनो बार वर्षनो सलेखणा तप जा- णवो तथा जवमध पडीमा एक मासनो तप तेनी विगत ते जे प्रथम शुक्लपक्षने पडवेथकी मांडवो, ते प्रथम तपे एक दांती आहारनी तथा दाती एक पाणीनी, बीजे दिने दाती बे आहार पाणीनी एम यावत् पुनमने दिने पदर दांती आहार अने पदर दाती पाणी- नी, पाछु कृष्ण पक्षमां पडवेने दिन चउद दाती आहारनी तथा चउद पाणीनी, एम यावत् ओगणत्रीशमे दिवसे एक दांनी आहारनी तथा एक पाणीनी, त्रिशमे दिवसे उपवास करवो तेनु नाम जवमध पडिमा कहीये. तथा वज्रमध पडिमा एक मासनी होय, ते पण प्रथम शुक्लपक्षनी एकमथी माडवो, ते प्रथम दिवसे दांती पदर आ- हारनी तथा दाती पदर पाणीनी, बीजे दीने चउद दांती आहारनी ने चउद दाती पाणीनी, एम यावत् पुनमने दिवसे एक दांती आ हारनी ने एक दांती पाणीनी तथा वदने प्रथमना दिवसे एक दांती आहारनी तथा एक पाणीनी वद २ बे दांती आहारनी ने बे दांती

पाणीनी एम यावत् अमावास्याये पदर दाती आहार अने पदर दाती पाणीनी तेने वजरमध पडिमा कहीये, इत्यादि तप सिद्धांतने विषे बीजा पण कह्या छे, तथा हालमा नवा नवा वर्धीत तप घणा थाय छे ए सर्वेने इतर कहेता थोडा कालनो अणसण तप कहीये तथा जावज्जिव अणसण तप तेना बे भेद एक पादोपगमन अणसण, अने एक भत्त पचखाण अणसण हवे पादोपगमन अणसणना बे भेद, एक सींह अग्नी प्रमुखनो उपसर्ग थाय तो पण त्यांथी डगे नहि, बीजो एवा उपसर्ग विना जेम वृक्षनी डाल कापेली पडी होय तेम हाले चाले नही. भत्त पचखाण अणसणना बे भेद, एक सींहादिक उपसर्ग उपन्याथका भत्त पचखाण करे, बीजो भात पाणी विना उपसगे पचखे ए बे भेद एटले अणसण तप कह्यो हवे उणोदरी तप कहीये छीये तेना बे भेद एक द्रव्य ऊणोदरी एक भाव उणोदरी, द्रव्य उणोदरीना बे भेद, एक उपगरण उणोदरी बीजी भात पाणीनी उणोदरी, उपगरण उणोदरीना बे भेद एक पातरु काष्ट अथवा माटीनु राखवु ते पात्र उणोदरी कहीये. हवे भात पाणीनी उणोदरीना अनेक भेद आठ कवल आहारना करे तेने अल्प आहारी कहीये, कवल केहेतां कुकडाना इडा प्रमाण कोलीओ होय, बार कवल जे आहार करे तेने अडधा उणोदरी कहीये, तथा चोवीस कोलीया आहार करे तेने चोथा भागनी उणोदरी कहीये, एम यावत् एकत्रीस कवलनो आहार करे तेने पण उणोदरी कहीये शा माटे के बत्रीस कवलनु पुरुषने आहारनु प्रमाण, तेथी एकत्रीस वालो उणोदरीमा छे तेथी स्त्रीने अठावीस कवलनु परिमाण छे तेने सत्तावीस सुधी उणोदरी कहीये तेथी यावत् आठ कवलथी ते एकत्रीस कवल सुधी उणोदरीनो तप कहीये अने बत्रीस कवलपुरा ले तेने [illegible]त अहार कहीये, अथवा तेमांथी

कांइ एक शीख अथवा एक ग्रास उणो छे तेने पण प्रमाणोपेत कहीये, पण एक शीखे उणो रहे त्यांसुधी ते साधु पेटभरो ना कहीये एटले भात पाणीनी उणोदरी कही तथा द्रव्य उणोदरी कही

हवे भाव उणोदरी कहीये छीये, तेना अनेक भेद छे अल्प क्रोध, अल्पमान, अल्पमाया, अल्पलोभ, अल्पज्ञान, अल्पबोलवु, अल्पकलह इत्यादिक ए भाव उणोदरी कहीये एटले उणोदरी तप कह्यो, हवे त्रीजो व्रत्ति संक्षेप तप कहीये छीये जे गोचरीना अनेक भेद छे द्रव्य थकी अभिग्रह करे, क्षेत्रथकी, कालथकी, भावथकी, अभिग्र ह करे. एटले द्रव्य थकी जे फलाणो द्रव्य मलशे तो लेइशु, तथा क्षेत्र थकी जे आ गाममां अथवा फलाणा गाममां अथवा फलाणी पोलमां अथवा फलाणा मेहेलामा मलशे तो लेइशु, कालथकी अ भिग्रह फलाणी वेलाये मलशे तोज लेइशु भावथकी अभिग्रह जे स्त्री अथवा पुरुष वा कुवारीका प्रमुख आवी रीते आपशे तो ले- इशु, अथवा भाजन माहेथी उपाडेलु हशे तेज लेइशु, अथवा भाज नमांथी बीजा भाजनमां घालेलु हशे तोज लेइशु, अथवा आपणे काजे उपाडीने बीजा भाजनमा घाल्यु हशे तो लेइशु अथवा अनेरे भाजने घालेली वस्तु आपणे काजे उपाडेली हशे ते लेइशु, अथवा अनेराने पीरसेलु हशे ते आपशे तो लेइशु, अथवा वस्त्रने विषे ढो वलां ढोकलां खाखरा प्रमुख मोकला करेला हशे अने तेमांथी लेइ भाजनमा घालता हशे ते आपशे तो लेइशु, अथवा कोइने त्याथी लावेलु ते आपशे तो लेइशु, अथवा कोइना भाणामां पीरस्यु छे तेने वधारे पडयु ते आपशे तो लेइशु, अथवा ते पाछु लेइने बीजा ठा मने विषे घाल्यु छे ते आपशे तो लेइशु, अथवा निंदाने स्तुति भेळी थाय तेवु जे रसवति अने पाणी खारु एवो जोग मलशे तो

लेइश, उशरीयु केहेतां एने पीरस्यु ते लेइशुं, अथवा निंदनीक आ-
हार लेइशु, अथवा लोकने वखाणवा जेवो भीपकारी मोदक प्रमुख
आहार ते मलशे तो लेइशु, अथवा कटुक आहार परतु छे गुण-
कारी ते मलशे तो लेइशु इत्यादिक आहारनो तरेह तरेहनो
अभिग्रह करे तथा हवे दातारनो अभिग्रह कहीये छीये. खरडे
हाथे देतो लेइशु, अथवा अण खरडे हाथे देशे तो लेइशु, अथवा
जे द्रव्ये हाथ खरडयो छे ते द्रव्य आपशे तो लेइशु, अथवा वस्त्रा-
दिक अनेक प्रकारना अहीया अभिग्रह केहेवा, अथवा कोइथी क्षुधा
वेदनी न खमाती होय तो शीत उष्ण जेवो मलशे एवो लेइशु, अ
थवा गोचरी ए मौनपणे विचरशु, अथवा पोतानी द्रष्टी ए दीठो,
आहार दातार आपशे तो लेइशु, अथवा अणदीठो आपशे तो ले-
इशुं अथवा दातारे जे आहारनु पूछयु तेज आहार आपशे तो ले
इशु, अथवा भीक्षाए जेवो मलशे तेवो लेइशु, अथवा घणु अन स्त-
वना करी आपशे तो लेइशु, अथवा अज्ञात घरनी भीक्षा लेइशु,
अथवा ग्रहस्थए मों आगल लावीने मुक्यु तेज लेइशु, अथवा
मान सहित जे आहार ग्रहण करवा जोग ते आहार मलशे तो लेइशु,
अथवा शुद्ध निर्दोष मलशे तो लेइशु, अथवा दांतीनी सख्याये आहार
लेइशु, इत्यादिक वृति सखेप तपना भेद जाणवा एटले वृत्ति सखेप
तप कह्यो हवे रसत्याओ चोथो तप तेना अनेक भेद छे. एटले घी
प्रमुख क्षरतेथके एवी विगयनो त्याग करे, अरस केहेतां अडद चण्या
वाल इत्यादीकनो अहार लेइशु, अथवा आंबेल करीशु अथवा ओ-
सापण मांहेलाशीत नीकले तेनेज वावरीशु, अथवा हींग प्रमुखे
वघारेलु हशे तो ते आहार नही करीये, अथवा जूनु धान खाण
प्रमुख तेनो आहार करीशुं अथवा अत आहार केहेतां उग्वलार य
लीजली हशे ते लेइशु, अथवा पत आहार केहेता टाढो प्रमुख आ-

हार लइश अथवा लुखो आहार लेइश, ते सर्वे रसनो त्याग तेने रसत्यागो तप कह्यो हवे कायक्लेशतप कहीये छीये. तना अनेक भेद छे काउस्सग्ग करीने उभु रेहेवु, अथवा काउस्सग्ग करीने उभा रहीने हालवु नही, अथवा उकड आसने बेसवु अथवा चार पडिमा प्रमुख साधुनी वेहेवी, अथवा वीरासने बेसवु अथवा पलाठी वा लीने बेसवु, अथवा वक्रग्रीवालनी पेरे बेसवु, अथवा दाडानी पेरे सुवु, अथवा ताहाड ताप वेनी आतापना लेवी, अथवा वस्त्र उप गरण न राखवु, अथवा शरीरे खाज न खणवी, मुखनु थुक परठवु नही, गले उतारी जवु शरीरनु जे सुश्रुषा रोम येशनख प्रमुख न समारवा, अथवा शणगार न करवो, ए कायक्लेश तप कह्यो. हवे प्रती सलीनता तप कहीये छीये तेना चार भेद छे, इंद्री प्रती सलीनता १, कषाय प्रती सलीनता २, जोग प्रती सलीनता ३, वीवक्त प्रती सलीनता ४, हवे इंद्री प्रतीसलीनताना पाच भेद, श्रोत इंद्री कहेतां कानना वीषय ने विपे प्रवर्तनु तेने रुधवु एटले रुडा माठा शब्द कानने विपे आवी पड्या ते उपर रागद्वेश न करवो, तेने श्रोत इंद्री सलीनता कहीये अथवा चक्षु इंद्री सलीनता केहेता जे रूपरुडां माठां देख वां तेने विपे चक्षुनु प्रवर्तवु रुधवु, एटले नेत्रनो विषय जे पच वरणना रूपने विपे छे, ते रूपने विपे रागद्वेश ना करवो हवे घ्राण इंद्री सलीनता कहीये छीये, एटले नासीका तेने गधने वी पे प्रवर्तवु ते थकी रुधवु एटले सुरभी गध दुरभी गध नासी काने आवी प्राप्त थाय तेनो द्वेष न करवो. हवे रस इंद्री सलीन ता कहीये छीये एटले जीभनो स्वभाव ते रसने ग्रहण करवानो छे, तेने विपे प्रवर्तवु तेने रुधवु एटले पांच प्रकारना रसनो ग्रहण करता जीभ छे ते जे जे रस आवीने प्राप्त थाय ते शुभ अथवा

अशुभ होय तोपण द्वेष राग न करवो हवे फरस इंद्री संलीनता कहीये छीये, ए शरीरने फरसने विषे प्रवर्त्तवानो स्वभाव छे तेने रुधवा ते आठ प्रकारना फरस छे तेने विषे ते शरीरनो विषय छे, ते फरस आठ प्रकारना रुडा अथवा माठा आवी प्राप्त थाय तेने विषे रागद्वेष ना करवो एटले इंद्री सलीनता तप कह्यो हवे कसाय पडी सलीनता तप कहीये छीये, तेना चार प्रकार, क्रोध जे रीसना उदये करी उपजयु तेने रुधवु, अथवा क्रोध आवीने प्राप्त थयो छे तेने निष्फळ करवो, सामाना वचनादीक होय ते सहीजवां, अथवा मान जे उदय आवताने रुधवु, अथवा जे उदय आवी प्राप्त थयो एवो जे अभिमान तेने निष्फल करवो तथा माया केहेतां कपट तेने उदय आवताने रुधवुं, अथवा आवी प्राप्त थाय तेने निष्फळ करवु तथा लोभ केहेतां इच्छावछा रूप ते उदे आवताने रुधवु, अथवा लोभनो उदे आवी प्राप्त थाय तेने निष्फळ करवु एटले कषाय प्रतिसलीनता तप कह्यो, हवे जोग प्रतिसंलीनता तप कहीये छीये, तेना त्रण भेद छे एक मननो जे वेपार जे पर शुज वो, तेने बहु प्रकारे करीने पण सवरवो, तथा बीजो वचन सलीनता केहेता जे अनेक प्रकारना वचन पर शुभरा तेने सवरवु, तथा त्रीजो कायजोग कहेतां जे कायानो वेपार आश्रवकरी रोकवो हवे मननो जे वेपार तेनु सवरवु एटले माठु जे मन तेने रुधवु, भला मननी उदारणा करवी तेने मन प्रतीसलीनता कहिये. तथा वचन जोगना वेपारनु रुधवु, एटले माठां जे वचन तेनु रुधवु, भलाम वचन तेनी उदारणा करवी, एटले वचनजोगनी प्रतीसलीनता कहिये हवे जे कायजोग एटले कायानो वेपार सवरवो एटले समाधि सहित वर्त्तवु एटले हाथ अने पग काचबानी पेठे गोठवी राखे, इंद्रीयो पांचे गोपवी राखवी, शरीरना अंगोपांग तेने कायजोग

प्रतीमल्लीनता कहिये एटले जोग मलीनता कह्यो, हवे विवक्त स-
लीनता कहिये छिये एटले उपाश्रये स्त्री पशु नपुंशक प्रमुख न
होय ते उपाश्रे रहेवुं तथा पाट बाजोठ पाटला प्रमुख ते पण स्त्री-
यादि न होय ने शेववुं, भोगववु, वली उत्तम वनवाडी तथा उद्यान
अथवा मोटा वृक्षनी हेठे तथा देवकुलने विषे तथा घणा जण बेसता
उठता होय तेवी सभाने विषे तथा पाणी भरता होय तथा पीता
होय त्यां तथा घणा करीयाणां छे वेकर थतो होय त्यां स्त्री मनुषनी
पण होय तथा गाय भेंस नपुंसक ए थकी रहीत एवी जे
वस्ती होय एवा उपाश्राने विषे फासु एटले अचित नि
र्दोप न्या पाट पाटला बाजोठ तथा अठेगण सुकवानु पाटीयु
तथा संथारो डाभ प्रमुख घासनो अथवा उद्दननो इत्यादि-
क वस्ती पासे मागी लेइने विचरे, तेने प्रतीसलीनता
कहिये एटले ए छए बाह्य तप कह्या एटले ए बाह्य त
प थकी कर्मनो नाश थाय नहि कोइ कहेशे नाश न थाय त्यारे
शास्त्रवाले शा वास्ते कह्या तेनो उत्तर जे शास्त्रवाले कह्या तेने व्य-
वहार चलववो अने पोताना दर्शननी नोखी ओलखाण कराववी
प्रथमता एज कारण, बीजु एके एवा तपथकी शासननी शोभा घणी
वधे सासन सारु लागे त्रिजु एके ते धणीनी बाहाज थकी इंद्रीयो
बीजा विकारमा न पेसे इत्यादिक कारण जाणवा परंतु एने विशे
काइ आत्म उपयोग ए वो शब्दतो छे ज नहि अने चारीत्र नाम
आत्मानु छे तो जे वस्तु चारीत्र छे तो ते वस्तुतो एमा छे नहि
आतो एक क्रियारूप छे तो क्रियाने विशेतो कोइनु मन स्थीर र-
हे ने कोइनु ना रहे जो स्थीर रहेतो ए प्रमादगुण ठाणानी क्रिया
छे काइ अप्रमादी भावतो एमा छे नहि अने अप्रमादी भावने
विशेतो क्रिया होयज नहि ते विचारी जुवो हवे जे एवी क्रिया

करे ते थकी कांइ मुक्तितो मले नहि केमके मुक्तिनु प्रथम कारण भेदज्ञान छे ते चोथागुण ठाणाथी मांडीने आठमा गुणठाणासुधी चाले तथा नवमु दसमु गुणठाणु छे त्या भेदाभेद ज्ञान छे ने बारमे गुण ठाणे अभेदज्ञान छे एटलां गुणठाणा कहेतां आठमागुण ठाणाथी बारमा गुणठाणासुधी वचननु उचारण पण छे नहि तथा मन द्रव्य गुण पर्याय आत्म उपयोगना भेगुज रहे ते विना जो बीजी जगाये जायतो ते गुणठाणा रहे नहि पाछो छठे सातमे गुणठाणे जाय जावत मिथ्यात्वमां पण जाय तथा अवधीज्ञानी मनपर्यवज्ञानी कोइ साधु होय ते साधु पण अवधी मनपर्यवज्ञाननो उपयोग देता ए गुण ठाणा पामे नहि ते गुणठाणा श्रुतज्ञान अवलंबी छे ते बारमे गुणठाणे केवलज्ञान पामे ते तो वहारनी क्रिया तथा वहारना तपमा कांइ छे नहि ते वारे कोइ कहेशेके आज कांइ ते वस्तु छे नहि माटे वहाज क्रियाने तप तेज प्रधान छे तेने कहियेके वहाज क्रियाने वहाज तप प्रधान छे ते ठीक छे पण तमे आत्मधर्मना द्वेशी माटे तमने हजु समकित गुणठाणु पण आव्यु नथी माटे तमे खुशी पडे तेम करो पण ए केवु छे के जेम लाकडाना पुतलाने वर बनावीने जान लेइने जाय तेने कोइ कन्या परणावे नहि अने ए जानैया लाज खोइने घेर आवे तेम तमे पण आत्मज्ञान हिण वहाज क्रियाना आडबरी माटे अनतो ससार रखडशो अने तमारा उपदेशना साभलनावाला ते पण अनतो ससार रखडशे ते वारे ते बोल्या जे तमे बहू कठोर वचन बोलोछो अने अमेतो बहू पंडितना वचन कह्या छे ते उपर चालीये छीये माटे अमे शामाटे रखडीये तेनो उत्तर जे तमे पंडितोना कहेण उपरथी चालोछो ते कांइ पंडित आत्मज्ञानीना एवा वचन ना होय शा माटे के समकित विना आश्रवमां नाखवा छे ने आश्रवनो वधारो करवो ए वचन पंडितना

कहेवाय नहि पंडित होय तेतो आत्मानु स्वरुप ग्रहीने सवरभाव नीमरुपणा करे तेने पंडित कहिये ते अधिकार घणा शास्त्रमा छे ने शास्त्रना नाम अमे पुर्वे लखेला छे ते थकी जाणजो त्यारे ते बोरशा जे ते शास्त्रना बांधनार पडीत खरा ने बीजा शास्त्रना बांधनारा पडीत ते शु खोटा तेनो उत्तर जे तें कयु ते पडीत खोटा तो ए प्रत्यक्ष खोटाज छे शा माटे के आचारदीनकर ग्रथने विशे एवु कयु छे के ग्रहस्थना छोकराने परणाववाने साधु जाय एवा वचनना केहनाराने पडीत केम कहीये, प्रत्यक्ष तेमणे पोतानी ने पोताना परीवारनी आजीवीका बांधी छे तथा जे तपना उज मणां करवाना ग्रथ बांध्या, तो तेने पुछीये के पुर्वे कह्या ते तप सुत्रमां छे तेना तो उजमणां काइ छे नही अने तमे जे नवा तप उत्पन्न कर्यां ते तप सुत्रमा तो छे नही ने तेना उजमणा तमे बांध्या ते तमारी आजीवीका चलाववा सारु बांध्या के शा वास्ते बांध्या तथा श्रावकने उपधाननु कहो छो अने तेना एवा प्रकरण पण ब तावो छो जे श्रावकनो नवकार पण उपधान वह्या वगर खप लागे नही ते तमे कया सुत्रमांथी लावीने देखाडो छो? जे उपाशकदशां गने विशे आणदजी आदि दस श्रावकनो अधिकार छे, तेणे तुरत धर्म सांभळी समकीत मुळ बारव्रत उचर्या ने अगियार पडीमा श्रावकनी वही पण उपधान वह्या तो दीसतां नथी एम जे जे सु त्रमा श्रावकनो अधिकार होय त्यां जो जो, तथा तमे कहोछो के साधुने जोग वह्या विना सुत्र वचाय नहि तो भगवतीजिने विशे खधक तापस तुरत दिक्षा लेइने द्वादश अगी भण्या इत्यादिक जे टका सुत्रमा श्रावकना अधिकार छे ते सर्वे दिक्षाओ लेइने कोइ अगीयार अग भण्या कोइ द्वादश अगी भण्या तथा अनुतर उववाइने विशे धना काकदीए नव महीना चारीत्र पाळ्यु ते म ये मास ए

कतो संथारानो गयो आठ मास चारीत्र रह्यु तेमा अगीयार अग भण्या तो तेणे जोग कये दहाडे वह्या एक भगवतीजिना जोगमा छ महीना जोइये तो माडलीया तथा आचारी तथा दश अगना जोग वहेता एने केटला वरस जोइये ते विचारीने जवाब देजो एटले ए ग्रथना वाधनाराये पोतानो आजिवीका बाधी छे पण काइ धर्म मार्ग बांध्यो नथी तथा श्राध विधी प्रमुख ग्रथोने विशे वडीनीत लघु नीत दातण नाहावा खावा प्रमुखना आचार वाध्या तेने ते शु धर्म कहिये के तेने ते शु पाप कहिये एवा ग्रथना वाधनाराने कहो पडित शी रीने कहिये ने तेने पडित कहे तेने पण अज्ञानी कहिये

शिष्यवाक्य—स्वामि सुत्रने विशे पण तमे पुर्वे कह्या ते तप कहेला छे ते धर्ममा खराके नहि

गुरवाक्य—हे भद्र ए तो त्याज बहाज तप कह्या छे बहाज कहेता बहारथी कायाने तपावे तेने वहाज तप कहिये अभ्यतर तप ते कर्मने बाले तेने कहिये, माटे बहाज छे ए व्यवहार छे माटे त्याज धर्ममा गवेख्या नथी

शिष्यवाक्य—धर्ममां गवेख्या नथी तो इहां केहेवानी जरुर शी हती

गुरुवाक्य—भगवाने तो साते नय बताव्या छे परतु धर्म तो त्रण नयमाज बताव्यो छे तथा सुत्रकारे जे तप बाहाजनु मान वधार्यु छे ते सत्रकारना वचनमा तो घणी वातोनी शकाज छे, प्रथम ... श्रीजी उपाध्याये नवाणु बोलतो अणमलता काहाडीज ... । सिद्धांतना मालीक जीनभद्रगणी क्षमा श्रमण तथा सिधसेन दिवाकरने जे चरचाओ

चरचामा पण जिनभद्र गणी खमाश्रमणना उत्तरमां कशु ठेकाणु दीसतु नथी, ते शिवाय पण घणा बोल सिद्धांतना अणमळता कल्पीत भाशन थाय छे परतु आपणे सिद्धातनो आधार छे, तेथी ते आधार उपर चालवानु छे, वादी उत्तर -तमने सिद्धातकल्पीत भासन थयां तो तमे शावास्ते खोट्ट जाणीने मानो छो तेनो उत्तर सर्वे सूत्रतो काइ खोटा भासन थता नथी अने जे जे बोल खोटा भासन थाय छे ते अमे सद्दहता नथी अमारे काइ ताहारी पेठे हठ वाद छे नही जे अमारा घरडा कही गया ते खरु एवु गधा पुछतो तमने सोप्यु छे

शिष्यवाक्य—स्वामी बाह्यज तपतो व्यवहारमां गयो एमा तो काइ आत्मानु कारज थवानु छे नही माटे अम उपर कृपा करीने अभ्यतर तप ओलखावो तेम अमे करीये जेम अमारा आत्मानु कारज सिद्ध थाय

गुरुवाक्य.—अभ्यतर तपना छ भेद छे ते कहीये छीये प्राय श्चीत १ वीनय २ वेयावच ३ सजाय ४ ध्यान ५ काउसग ६ ए मध्ये प्रथम प्रायश्चितना दस भेद छे ते कहीये छीये जे पोताने लाग्यु जे पाप ते गुरु पासे आवीने आलोववु केहेता केहेवु तेथकी शुद्ध थाय तथा पडिकमवु तथा मिच्छामि दूकड देवु तथा आलोववु ने मीछामी दूकडदेवु, बे ए करवा तथा अशुद्ध भावनु टालनु तेणे शुद्ध थाय अथवा तपनु देवु तेथी शुद्ध थाय तथा चारीत्रनी पर्यायनु छेदवु तेथी शुद्ध थाय तथा फरी थकी चारीत्र देवु तेथी शुद्ध थाय जे थकी अतीचार लागे तेथकी वेगळा राखे ए दस प्रकारे गुरु पासे प्रायश्चित ले गुरु जेवु पाप देखे तेवी आलोयण आपे पण द्रव्य क्षेत्र काळभाव जोइने आपे एटले आलोयण आपवाना मुखत्यार गुरु छे माटे गुरुनी नजर पहोचे तेवी आलोयण आपे एटले प्रायश्चित

तप कह्यो हवे बीजो वीनयतप कहीये छीये तेना सातभेद, ज्ञाननो वीनय १ दरसननो विनय २ चारीत्रनो वीनय ३ मननो वीनय ४ वचननो वीनय ५ कायानोविनय ६ लोकाविनय ७ ते मध्ये ज्ञाननो विनय पाच प्रकारनो छे. मती ज्ञाननो विनय करवो ते मती ज्ञानना गुण वरणव करवा १, श्रुतज्ञाननो विनय करवो ते श्रुतज्ञानना गुणग्राम करवा २, अवधीज्ञान जे मरजादा प्रमाणे रुपी द्रव्यनु देखवु तेना गुणग्राम करवा ३, मनपरजवज्ञान जे अढीद्वीपसंज्ञी पंचइंद्रीना मनना भावजाणे तेनो विनय करवो एटले तेना गुणग्राम करवा ४, केवलज्ञान जे रुपी अरुपी लोकालोक सर्वना भाव जाणे देखे ते सर्वनो विनय करवो ते,तेना गुणग्राम करवा, एटले ज्ञाननो विनय कह्यो. हवे दरसननो विनय कहीये छीये एटले दरसन केहेता समकीत तेना बे भेद एक सुश्रुपा केहेता जे गुरुनी सेवा भक्ती करवी, ने बीजो भेद जे आसातना टालवी. हवे जे गुरुनी सेवा भक्ती करवी तेना अनेक भेद कह्या छे ते कहीये छीये, गुरु आवे थके सर्व ठामने विषे उभु थवु, सर्वथा बेसी रेहेवु नही, गुरु ज्या बेसवानी अथवा सुवानी मरजी करे त्यां तुरत आसन लेइने जवु, अने आसन नाखी आपवु गुरने आसन आपवु गुरने सन्मान देवु, एटले स्तवना करवी, गुरुने वस्त्रादीकनी नीमत्रणा करवी गुरुने द्वादसवांदणे वादवा गुरु पासे हाथ जोडीने आगळ उभु रेहेवु, गुरु आवता होय तो सामु जवु, आवीने रह्या होय तेनी शेवा भक्ती करवी, गुरु विहार करता होय तो पहोंचाडवा जवु, आहार प्रमुखने विषे तेडवा जवु, एटले ए सुश्रुपा विनय कह्यो, हवे आसातना विनय कहीये छीये तेना ४५ भेद

अरीहत परमात्मानी आशातना टालवी अरीहतनु प्ररुप्युं आशातना टालवी एटले धर्म ते वस्तु स्वभाविक स्या:

द्वार सहीत तेने धर्म अरीहनतु भाखेलु कहीये तथा आचारजनी आशातना टालवी ते आचारज छत्रीस गुणे करी सहीत पचद्रीनी वेगाथा थकी जाणजो उपाध्यायनी आशातना टालवी ते पचीस गुणे करी बिराजमान तेने उपाध्याय कहीये थीवरनी आशातना टालवी ते थीवर त्रण प्रकारना, श्रुतथीवर बहुश्रुतनी आशातना टालवी वीसवरस उपरात चारित्रनी पर्याय थइ होय तेने कहिये, तथा साठ वरस उपरात साधु होय तेने वयथीवर कहिये हवे कुलनी आशातना टालवी एटले चद्रादिककुल सिद्धातमा चालेला छे तेनी आशातना टालवी गण केहेता गछनी आशातना टालवी ते गछ श्रीसीद्धातमा कह्या छे तेनी, सघनी आशातना टालवी सघ केहेता जे साधु समुदाय क्रिया पक्षी क्रियानो रागी करनारो तेनी आशातना टालवी सजोगी एटले सरखी समाचारीना साधु होय तेनी आशातना टालवी मतीग्यान श्रुतग्यान अवधिग्यान मनपरजव ग्यान अने केवलग्यान ए पाच ग्याननी आशातना टालवी ए पदर भेदनी भक्ति बहुमान करवा एव त्रीसभेद अने ए पदरे गुणना गुणनी वरणवता करीने बाहेर दिपावबु एटले ए पीस्तालीस भेद थया ए आशातना टालवारुप वीनय तथा दरशन वीनय कह्यो.

हवे चारित्र विनय कहीये छीये तेना पाच प्रकार सामायक चारित्र शुद्ध उपयोग आदरवु १ छेदो उपस्थापन रुडी रीते पालवु २ परिहार विशुद्ध चारित्र रुडी रीते पालवु ते विनय ३ सुक्ष्म सपराय चारित्र पालवु ४ यथाख्यायक चारित्र पालवु ५ ए पाचेनु स्वरुप पुर्वसवर द्वारमा कह्यु छे एटले चारित्र विनय कह्यो हवे मनविनय लखिये छिये तेना बे भेद एक प्रशस्त मनविनय १ अने एक अप्रशस्त मनविनय २ हवे अप्रशस्त मन केहेता मनना अभिप्राय जे माठा कायिकादि क्रियाना विचार

उठे ते पोताने पण दुखदाइ ने परने पण दुखदाइ एवु माठु मन प्रवर्त तेने अप्रशस्त मनविनय कहिये तेथकी उपराठु जे स्वगुणपर्यायनी रमणता पोताना स्वरुपनु याचु आत्माने उधरवानो विचार तेने प्रशस्त मनविनय कहिये एटले मनविनय कह्यो हवे वचन विनय कहिये छिये ते वचनना पण बे भेद एक अप्रशस्त वचन अने बीजु प्रशस्त वचन अप्रशस्त वचन केहता जे वचन माठा नीकले एकेंद्रियादिक जीवने उपद्रव थाय पोताने कायिकादिक क्रिया लागे सामाने अने पोताने बेउने उपद्रवनुं ज कारण थयु आश्रव आवे तेवु वचन जे बोलवु तेने अप्रशस्त वचन विनय कहिये हवे प्रशस्त वचन विनय कहीये छीये प्रशस्त केहता भलु जे वचन बोलवु, जे कोइ जीवने बाधा पीडा न थाय पोताने पण नवा कर्म न आवे जुना कर्मनु निर्जरवु थाय परने तथा पोताने सुखदाइ एवु जे अध्यात्म स्वरूप तथा द्रव्य गुण पर्यायनी चरचा तेने प्रशस्त वचन विनय कहिये एटले वचन विनय कह्यो, हवे कायविनय कहीये छीये तेना बे प्रकार एक अप्रशस्त कायविनय अने बीजो प्रशस्त कायविनय हवे अप्रशस्तकाय विनय केहता विनाउपयोगे काया ने प्रवर्तावी तेना सात भेद छे उपयोगविना जे जवु अथवा आववु करे अथवा उभु रेहेवु अथवा बेसवु अथवा सुइ रेहेवु अथवा खाड प्रमुख कुदीने जवु तथा पाच इंद्रीनु प्रवर्त्तावबु तेने अप्रशस्तकाय विनय कहीये हवे प्रशस्तकाय विनय एटले पूर्वे अप्रशस्त कह्या ते थकी उपराठा भला जे आणा सहित उपयोगते सहित प्रवर्त्तवु तेने प्रशस्तकाय विनय कहीये एटले ए कायविनय कह्यो. हवे लोकविनय कहीये छीये एटले लोकसबधी उपचार तेने विनय कहिये तेना सात भेद छे ते कहीये छीये. गुरुना समीपने विषे सदाय प्रवर्त्तवु १ अथवा पारका गुरुना अभिप्राये वर्त्तवु तेज्ञानादिक लेवाने अर्थे २, भात पाणी-

आणी देवु ३, एनी एवी बुद्धि थाय जे हु एने भणावु त्यार पछी विनय करवो ४, आर्त्तपने तेना आर्त्तनी चिंता करवी. ५ देश कालनु जाण थवु ६ सर्व अर्थ प्रयोजननें विषे सावधान रेहेवु ते थकी उपरांठु ना थवु ७ तेने लोक उपचार विनय कहिये, एटले ए विनय तप कह्यो

हवे वैयावच तप कहीये छीये तेना दस प्रकार छे आचार्यजी एटले पंचाचारने पालनार तेनी वैयावच करवी १, उपाध्यायजी द्वादस अंगीना जाण तेनी वैयावच करवी २, साधुनी वैयावच करवी ३, नव दिक्षित शीष्यनी वैयावच करवी ४, रोगीनी वैयावच करवी ५, तपसीनी वैयावच करवी ६, थीवरनी वैयावच करवी ७, साधर्मीक पोताना सरखी समाचारीना साधु होय तेनी वैयावच करवी ८ कुलनी जे चंद्रादीक तेनी वैयावच करवी ९, गण एटले गच्छनी वैयावच करवी १०, एम्ले वैयावच तप कह्यो, ३ हवे सज्झाय तप चोथो कहीये छीये, तेना पाच भेद छे, गुर्वादिक पासे वाचना एटले भणवु १, प्रश्ननी शंका उपजे ते पुछीने निश्चय करवो २, पूर्वे भण्या होय ते संभारी बालवु ३, शास्त्र शब्दना अर्थ एक एकनी अपेक्षाये विचारी जोवा ४, अने धर्मकथा केहेतां धर्मनी चर्चा वार्ता करवी ५, एटले ए सज्झाय तप कह्यो ४ हवे ध्यानतप कहीये छीये, तेना चार भेद आर्त्तध्यान १ रौद्रध्यान २, धर्मध्यान ३, शुक्लध्यान ४ हवे आर्त्त ध्यानना चार पाया, आर्त्त केहेता मननी जे चिंता तेने आर्त्तध्यान कहीये, मनने न गमे तेवा शब्द, रूप, रस, गंध, फरसादिक जे जे पदार्थ मल्या तेनो एवो विचार करे जे आ क्यारे अहींआ थकी टले, तेना विजोगनु जे चिंतववु तेने अनिष्ट संजोग नामे पायो कहीये १, हवे इष्ट विजोग नामे बीजो पायो एटले भला शब्द रूप

रस, गंध, फरस, पुत्र, कलत्र सगा सबधी पोताना मनने गमे तेवा मळेला छे तेनो विचार जे एनो विजोग न थाय अथवा नथी मल्या तेने मलवानो विचार, इत्यादिक जे विचार तेने बीजो पायो कहीये २, हवे त्रीजो रोग आर्त्तपायो, रोगादिक उपने तेनी चिंता करे जे क्यारे मटशे, क्यारे जशे, अथवा नवो रोग न थाय तेनो विचार करवो ए त्रीजो पायो ३, हवे चोथो पायो, आगामी कालनी चिंता जे काल आपणे अमुक करीशु अथवा आवती साल अमुक करीशु, अथवा आ साल आपणे ठीक हतु, हवे आवती साले शु थशे इत्यादिक चिंतववु तेने आगामी कालनी चिंता कहीये एटले आर्त्तध्यानना चार पाया कह्या हवे ते आर्त्तध्यानना चार लक्षण कहीये छीये, कडणीया केहेता मोटे शब्दे करी रुदन विलाप करे १, सोयणीया केहेता सोचना दिनपणु होय २ तप णीया केहेता आखमाथी आंसु झरे ३, वलवणीया केहेता मुख थकी एवो शब्द करे के हे देव! हे प्रभु हवे केम थशे ए चारे आर्त्तध्यानना लक्षण कह्या हवे रौद्र ध्यान कहीये छीये रौद्र केहेता महा आकरा दुष्ट परिणाम तेना चार पाया हिंसानुबंधी एटले जीवहिंसा चिंतववी, मन थकी आरंभ समारंभ, फोजनगर गाम लुटवा, भागवा मेहेल मंदिर करावबा, लींपवा, थेपवा ए सर्वने हिंसानुबधी रौद्र ध्यान कहीये १, बीजो पायो मृषानुबधी रौद्रध्यान एटले मनमा एवा विचार करे जे फलाणाने आवी रीते समजावीशु, अमुकने आम कहीने समजावीशु इत्यादिक मनथकी मृषा बोलवानो विचार करे तेने मृषानु बंधी रौद्रध्यान कहीये २, हवे चोरानु बंधी रौद्रध्यान मनथकी चोरी करवानो विचार करवो, अथवा कोइ पासे [illegible] नो विचार करवो, अथवा चोरने सहुर [illegible] मे, ए सर्वे चौरानु बंधी रौद्रध्यान कहीये ३,

चोथो पायो परिग्रह रक्षानु रधी रौद्रध्यान, जे परिग्रह मेळववानो विचार तथा मळेलो परिग्रह तेने रखोपु करवानो विचार ते माटे शीरस्दी प्रमुख राखवी, अथवा परिग्रहना क्षयकारी पुरुषोने हणवा, वदीखाने नांखवा नखाववा इत्यादिक जे मनथी विचारे तेने परिग्रह रक्षानुबंधी रौद्र ध्यान कहीये ४, ए रौद्रध्यान कह्युं हवे रौद्र ध्यानना चार लक्षण कहीये छीये उष्णदोसबधी केहेतां मावे हिंसा, मृष, अदत्त, मैथुन परिग्रहने विषे प्रवर्त्तवु १, नेपद्दोपाय केहेतां जे हिंसा प्रमुखने विषे बहु प्रवर्त्तवु २, अणदोसे केहेतां अज्ञानथकी हिंसादिकने विषे प्रवर्त्तवु ने धर्म मानवु ३, आमरणांत दोष केहेतां जे मरणांत लगे कोइ पापनो पश्चात्ताप न करे एटले ए रौद्रध्यानना चार लक्षण कह्या

हवे धर्मध्यान कहीये छीये एटले धर्म केहेतां जे वस्तु धर्मनु पामवु, आत्माथकी कर्मनु निर्जरवु तेने धर्म कहीये तेना चार भेद छे. आज्ञाविचय धर्मध्यान केहेतां जे परमात्मानी श्री आज्ञा छे ते विचारवु, परमात्मानी एवी आज्ञा छे के ज्यां जीवनी हिंसा त्यां धर्म छे नहीं, जे अज्ञानी दया पाळे ते पण कांइ धर्मथी छे नही, धर्म तो ज्ञानने विषे रह्यो छे, ज्ञान ते आत्माने विषे रह्यु, त्यारे आत्मानो जे स्वभाव तेज धर्म इत्यादिक परमात्मानी आज्ञानु स्वरूप विचारवु ते पहेलो पायो हवे बीजो पायो अपायवीचय, अपाय केहेता आत्मा तेनो जे विचार जे आत्मा केवो छे के जेवो फटकरत्ननिर्मल छे तेवो आत्मा निर्मल छे, ने जे आ कर्मरूप मेळ छे ते पुद्गल छे ते हे चेतन तु नहि, तु तो एक स्वरूपी छे, अनेक जे ते तो पुद्गल छे, तु तो हे चेतन अव्याबाध छे, एटले तने कशी बाधा पीडा छे नहि, बाधा पीडा जे छे ते पुद्गलने छे, ते तु नही तु अनंत ज्ञानमय छे, जे अज्ञान छे ते पुद्गल छे, तु अनंत दर्शनमय छे, अदरशन छे

ते पुद्गल छे, तु अनत चारित्रमय छे, अचारित्र ते पुद्गल छे, ते तु अनत वीर्यमय छे, अशक्तिवान ते पुद्गल छे, तुं अरागी छे ने रा ग ते जड छे तु अद्वेशी छे द्वेश ते पुद्गल छे, तु अक्रिय छे, तुं अमानी छे, तु अमायी, अलोभी, अवेदी, अछेदी, अभेदी, अकचनी, अवर्णी छे, तु अरस, अगध, अफरस, तु अप्राणी छ तु अजोनी, अजर, अमर छे इत्यादिक आत्माना स्वरूपना अनत गुण छे, अने सामो प्रतिपक्षी जे जड तेना अनता जे दोश ते विचारवा, तेने अ पाय विचय धर्मध्यान कहीये हवे विपाक वीचय धर्मध्यान कहेता जे विचित्र प्रकारना शुभाशुभ कर्मना जे उदय भोगववा तेनु जे स्वरूप विचारवु एटले आठ कर्मनी एकसो अठावन प्रकृति तेनो बध उदय उदीरणाने सत्ता तेना स्वरूपनो जे विचार, तथा एकसो चोवीस प्रकृति पुन्य पापनी तेनो विचार ते सर्वे पुद्गलना भाग जाणीने छांडवानो विचार तेथकी आत्माने छोडावग्वा ते विचार ते सर्वे विपाकविचय धर्मध्यान कहीये, हवे चोथु स्वस्थानविचय धर्मध्यान केहेतां चौद राजलोक तथा उर्ध्वअधो तिर्छालोकनो विचार ते सर्वे स्थानके हे चेतन तु जन्म मरण करी चुक्यो पण का- ट तारा भवनो अत आव्यो नही माटे तु तारा स्वरूपनी ओळ- खाण करके तारा जन्म मरण मटे इत्यादिक जे विचार तेने स्व- स्थान वीचय धर्मध्यान कहीये हवे ते धर्मध्यानना चार लक्षण क- हीये छीये एक तो भगवतनी आज्ञानी रुची होय १, विना उपदेशे पो- ताना स्वभाव थकीज रुची प्रगट थाय ने समक्तित पामे २ गुरु उपदेश थकी रुची प्रगटे ३. अने शास्त्रना अर्थ विचारवानी रुची. ४ ए चार लक्षण कह्या हवे चार धर्मध्यानना आलवन कहीये छीये गुरु समीपे वाचना लेवी १ गुरु पासे पाछु गणीवाल्वु २ गुरु पासे शब्द अर्थनु मेळववु ३ गुरु पासे धर्म कथानु कहेवु ४.

ए चार धर्मध्यानना आलंबन जाणवां हवे धर्मध्यान निर्णय कर वारूप विचारणा तेना चार भेद कहीये छीये प्राणाति पातादिक आश्रवद्वारनु उपजनु तेना जे उपाय विचारीने दूर करवा १ आ ससारने विषे जे शुभाशुभ कारण मेलववा तेनो विचार करी ते पण दूर करवा २ अनता ससारनी जे समता जे श्रेणी तेना अ नतपणानु चींतवनु ३ वस्तुना परिणाम क्षण क्षण परावर्त्तन थाय छे एटले पर्यायनु पलटावु समे समे छेज तेनु स्वरूप विचारवुं ४ एटले धर्म ध्याननी चार अनुपेक्षा कही ते धर्मध्यान कह्यो.

हवे शुक्लध्यान कहीये छीये शुक्ल कहेतां निर्मल सुद्ध आत्मानु जे ध्यान तेने शुक्लध्यान कहीये तेना पाया चार, प्रथक्त्व वितर्क १, एकत्व वितर्क २, सुक्ष्मक्रिया प्रतिपाती ३, उच्छीन क्रिया नींवृत्ति ४ हवे प्रथक्त्व वितर्क कहेता जे प्रथक् प्रथक् जुदा जुदा द्रव्य गुण पर्यायना वितर्क कहेता विचारवु ते पहेलो पायो छे ते सक्षेप मात्र द्रव्य गुण पर्यायनो विचार कहीये छीये हवे द्रव्य ते कोने कहीये ? जेनु रूप त्रण कालमा बदलाय नही एटले भूत, भ विष्य ने वर्तमान ए त्रण काल कहीये अने गुण पर्यायनु परावर्त्तन पणु थाय उत्पाद, व्यय, ध्रुव ए त्रण लक्षणे करीने सहीत होय तेने द्रव्य कहीये अने उत्पाद तथा व्यय ए पर्यायने विषे होय अने ध्रुवता पणु ते द्रव्यने होय अने गुण पर्याय ते द्रव्यने विषे लाधे एटले द्रव्य छे ते पर्यायनी गोडे कोइ काले पलटे नही तेने द्रव्य कहीये ते स्वभाविक द्रव्य जेम जीवने विषे ज्ञानादिक जे गुण तथा अव्या बाधादिक पर्याय रह्या छे तथा पुद्गलने विषे वर्णादिक जे पर्याय तथा मलवा वीखरवादिक गुण रह्या छे जेम मृतीका द्रव्यने विषे जे आधारा आधेय प्रमुख गुण तथा रक्तादिक पर्याय रह्या छे तेम पट द्रव्यने विषे ततु पर्याय कहीये एटले पटना अवयवनी अपे

क्षाये करीने पर्याय कहेवाय इहा कोइ केहेशे के तमे अपेक्षाये द्रव्य पर्याय कहोछो, पण कांइ स्वभाविकपणे नही तेने कहीये जे पुद्गल स्कंध मांहे द्रव्य पर्याय ते अपेक्षायेज थाय शा माटे जे पुद्गलना स्कंधनु जे मल्वु त्यारे एक स्कंध द्रव्य थाय अने पाछा ते वली वेराइ पण जाय, ने स्वभाविक द्रव्य होय ते वेराय नहीं अने द्रव्य एकना बे थाय नही माटे इहा अपेक्षीत द्रव्य कहेवाय कदापी कोइ कहेशे के त्यारे परमाणु द्रव्य शा माटे नथी कहेता ? तेनो उत्तर. परमाणुने द्रव्य कहीये तो तेने विषे प्रदेश वीजा नथी ए पोतेज प्रदेश अने पोतेज द्रव्य थाय, तथा बीजु कारण ए जे द्रव्यथी द्रव्य मले नही अने परमाणु तो बीजा द्रयमां मली जाय, माटे सुमतीतत्वार्थ प्रमुखने विषे तो एवु कह्यु छे के द्रव्य द्रव्यनु मळवु होय नही, अने इहा तो अनता द्रव्यनु मळवुं थाय अने अनत द्रव्य मलीने एक पिंड जे वारे थाय, तेवारे आत्मा पण अनंता मलीने एक पिंड थवो जोइये तो एतो महा मोटु दूपण आवे केमके अनता आत्मानो एक आत्मा थाय ते वारे वेदांतवादीनो पक्ष सारीत थाय

शिष्यवाक्य—अनत जीवनो पिंड एकनीगोद छे के नहि ?

गुरुवाक्य —अनता जीवनी एकनीगोद ते खर, पण एके का जीवने चवे काया तो पोतपोतानी नोखी छे, माटे कांइ एक पिंड थयो नथी एतो जेम एक कोठीमां बाजरी भरीये, ते बाजरीना दाणा घणा छे पण सर्व जूदा जूदा छे, तेम अहियां कोठीरूप उदारीक निगोदपिंड छे अने दाणारूप जीव छे, अने पुद्गल द्रव्यने जे मलवु तेने कांइ भाजन बीजु नथी, भाजन पोतेज छे ने द्रव्य पोते छे माटे ते बनी ना आवे अने जे पुद्गलनी अपेक्षाये द्रव्य पर्याय कह्या तेमां काइ दूपण नथी शा माटे जे विशेष वस्तुनो अ-

ए चार धर्मध्यानना आलंबन जाणवा हवे धर्मध्यान निर्णय कर वारूप विचारणा तेना चार भेद कहीये छीय प्राणाति पातादिक आश्रवद्वारनु उपजवु तेना जे उपाय विचारीने दूर करवा १ आ संसारने विषे जे शुभाशुभ कारण मेलववा तेनो विचार करी ते पण दूर करवा २ अनंता संसारनी जे शमता जे श्रेणी तेना अ नंतपणानु चींतववु ३ वस्तुना परिणाम क्षण क्षण परावर्त्तन थाय छे एटले पर्यायनु पलटावु समे समे जेम तेनु स्वरूप विचारवुं ४ एटले धर्म ध्याननी चार अनुपेक्षा कही ते धर्मध्यान कह्यो.

हवे शुक्लध्यान कहीये छीये. शुक्ल कहेतां निर्मल शुद्ध आत्मानु जे ध्यान तेने शुक्लध्यान कहीये. तेना पाया चार, प्रथक्त्व वितर्क १, एकत्व वितर्क २, सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाती ३, उच्छीन क्रिया नीवृत्ति ४ हवे प्रथक्त्व वितर्क कहेता जे प्रथक् प्रथक् जुदा जुदा द्रव्य गुण पर्यायना वितर्क कहेता विचारवु ते पहेलो पायो छे ते संक्षेप मात्र द्रव्य गुण पर्यायनो विचार कहीये छीये हवे द्रव्य ते कोने कहीये ? जेनु रूप त्रण कालमा बदलाय नही एटले भूत, भ विष्य ने वर्तमान ए त्रण काल कहीये अने गुण पर्यायनु परावर्त्तन पणु थाय उत्पाद, व्यय, ध्रुव ए त्रण लक्षणे करीने सहीत होय तेने द्रव्य कहीये अने उत्पाद तथा व्यय ए पर्यायने विषे होय अने ध्रुवता पणु ते द्रव्यने होय अने गुण पर्याय ते द्रव्यने विषे लाधे एटले द्रव्य छे ते पर्यायनी गोडे कोइ काले पलटे नही तेने द्रव्य कहीये ते स्वभाविक द्रव्य जेम जीवने विषे ज्ञानादिक जे गुण तथा अव्या बाधादिक पर्याय रह्या छे तथा पुद्गलने विषे वर्णादिक जे पर्याय तथा मलवा वीखरवादिक गुण रह्या छे जेम मृतीका द्रव्यने, विषे जे आधारा आधेय प्रमुख गुण तथा रक्तादिक पर्याय रह्या छे तेम पट द्रव्यने विषे तंतु पर्याय कहीये एटले पटना अवयवनी अपे-

अनुभवीये छीये, ते सामान्य उपयोग जोतां मृतिकादि सामान्य भासे छे अने विशेष उपयोगे घटादि विशेष भासे छे. एटले सामान्यमां ते द्रव्यरूप जाणवु, अने विशेष ते गुण पर्यायरूप जाणवु. हवे सामान्यने द्रव्य कह्यो, ते सामान्य बे प्रकारनो छे ते देखाडीये छीय उर्ध्वता सामान्य अने तिर्यग् सामान्य ते मध्ये उर्ध्वता सामान्य ते द्रव्यनी शक्ति कहीये; तथा पेहेला अथवा पछी जे गुणनु विशेपनु जे करवुं, ते सर्व मांहे एकरूप शक्ति रहे. जेम कचनते कुंडलादिक सर्व घाटने विशे पोते रहे एटले पोतानी शक्ति सरखी राखे एटले कचनना अनेक घाट निपजे वली ते घाट भागीने बीजा घाट बने एटले जेम ते घाटनु फरवु थाय छे. तेम कइ कचननुं फरवु थाय नहीं, ते कचनना पिंडनु कुंडलतापणानु कारण केटलु के पर्याय माहे सहचारीपणे रहे, अने जो ए कुंडलादिक पर्यायने विषे जो अनुगत कुंडलादि द्रव्यपणु न मानीये तेवारे सर्वे विशेपरूप थाय अने विशेपरूप थता क्षणेकवादी बोधनो मत आवे, अथवा सर्व द्रव्य माहे एकज द्रव्य आवे, ते माटे कुंडलादि द्रव्य तेमां सामान्यपणे सुवर्णादी द्रव्य अनुभववामा आवे छे, ते माटे उर्ध्वता सामान्य मानवा, एटले कुंडलादी द्रव्य थोडा पर्यायने व्यापी छे अने कचनादी द्रव्य घणा पर्यायने व्यापी छे ए नर नरकादी द्रव्यनु पण विशेषपणे समजवु ए सर्वे नैगम नयनो मत छे, अने शुद्ध संग्रह नयने मते तो एकज द्रव्य आवे, ते वार अद्वैतवादीनो मत आवे, ज्यारे भिन्न द्रव्यमां भिन्न प्रदेशी कहीये, अने विशेपमा द्रव्यनी शक्ति एकरूप एकाकार छे, तेने तिर्यग् सामान्य कहीये, ते देखाडीये छीये, जेम ते कुंडल द्रव्य पोतानु कुंडलता द्रव्यपणु राखे छे, हवे अहीया कोइ एवु कहेशेके कुंडलादीकनु भिन्न व्यक्तपणा करी, ते कुंडलादी एक सामान्यमा छे, तेम सुवर्ण पिं-

हार्दीक्तु कुशलता ते पण सामान्य, तो तिर्यग् सामान्यने उर्ध्वता सामान्यमां शो फरक छे ? तेने कहीये जे कांइ सर्व थकी भेद होय नहीं, देश थकी भेद होय एटला माटे ज्यां देश भेद जोयामां आवे, अने द्रव्य पर्यायनी एकाकार मतित उपजे, तेने तिर्यग् सामान्य कहीये अने ज्यां काल भेद जोयामां आवे, आवता कालनी मतित उपजे तेने उर्ध्वता सामान्य कहीये अहीयां कोइ मतवाला दिगबरादिक एवु बोले छे जे खट द्रव्यनी माहेली वेरे एक काल द्रव्यना पर्याय केहेवा ते उर्ध्वता परचीये छीये. अने काल विना पांच द्रव्यने पोतपोताना अवयवनी सघाते मली रह्या तेने तिर्यग् परचीये छे ए तेने मते तिर्यग् परचीयेनो आधार कुडलादिक त्रिजग सामान्य थाय, ते वारे परमाणु रुप अपरचीये पर्यायनो आधार भिन्न द्रव्य जोइये परतु त्रिजग परचीयेनो विचार बहु खुलासेथी दिगबरानुसारी देव आगमनामा ग्रथने विषे छे हवे उर्द्धता सामान्य शक्तिना बे भेद देखाडीये छीये सर्वे द्रव्य पोतपोताना गुणपर्यायनी शक्ति मात्र जोइये, तेने ओघशक्ति कहिये अने जे कारज नीपजवाने तुरत थाय तेवु देखीये, ते कारजनी अपेक्षा लेइने जोता तेने समुचीत शक्ति कहीये एटले समुचीत वेहेतां व्यवहार जोग छे, इहा द्रष्टांत देखाडीये छीये पत्थरने विषे धातु रहेली एवी जे कांकरियो तेने विषे कचन कहीये ते कहेवाय नहीं शामाटे के ए वात लोकनी रुचीमा आवे नहीं. शामाटे के लोक कहेशे के पत्थरमा कचन क्यांथकी आव्यु, पण जो द्रष्टी देइने ये तो ए पत्थर माहेनु तो कांकरीमां पण कचन ओघशक्ति कहिये अने जे कांकरीमां कंचन मा आवे, कांकरी उकले ने तरत शक्ति कहीये. तथा बीजे द्रष्टांते

र शक्ति छे, ए घास गाय प्रमुख चरे छे तेथी दूर देखे ते दूधमा घीनी शक्ति आवी, ते घासना प्रभावथकी, एम अनुमानथी दृष्टांत देइने जोइये तो, समज्यामां आवे पण ते कहेवाय नही शामाटे के लोकने रुची ना आवे अने दूधमा जे घी कहीये ते सर्वे लोकनी रुचीमां आवे, ते समुचीत शक्ति कहीये एटले नीकट जे कारज आवे थके तेना कारणने समुचीत शक्ति कहीये अने परपरा कारण कहेतां घणु दूर कारण रह्यु माटे तेने ओघशक्ति कहीये, ते बेनु अन्य कारणता अने प्रयोजनता ए बे बीजा नाम पण छे ते जाणवु ए आत्मद्रव्य माटे ए बे शक्ति खोलावीये छीये जेम जे भव्यप्राणी जीवने पूर्व अनता पुदुगल परावर्त्तनवीत्या ते दाहाडे पण ओघपणे सामान्य धर्मनी शक्ति हती अने जो पूर्वे नहोती तो छेले पुदूगल परावर्ते शक्ति क्यांथी आवे ? छती पर्यायविना समर्थपर्याय थाय नही, माटे ए पुर्वनी अवस्था तेने ओघशक्ति कहीये अने छेला पुदूगल परावर्त्ते धर्मनी समुचीत शक्ति कहीये एटले आगळना जे पुदूगल परावर्त्तन विषे जीवने बाल अवस्था कहेवाय छे, अने छेलु पुदूगल परावर्तन बाकी रह्यु त्यांथी ते मोक्ष जाय त्यां सुधी जोवन अवस्था कहीये, ए विचार हरीभद्र सुरीकृत जोगनी वीशी विषे कह्यो छे एम एक एक कारजने विषे ओघ समुचीतरूप अनेक शक्ति एक द्रव्यनी पामीये, ते सर्वे व्यवहारनये करीने छे एटले व्यवहारनये कारण कारजभेद नाना प्रकारना मनाय छे पण निश्चय नयथी तो द्रव्यनां कारज कारण अनेक, परतु शक्ति स्वभाव जोतां एकरूपज हृदयमां भासन थाय छे अने जो एम ना होय तो स्वभावनो भेद पडे, स्वभावनो भेद पड्यो त्यारे द्रव्यनो भेद पडे, देशकालादिकनी अपेक्षाये करीने एकानेक कारण स्वभाव तां कांइ दोश नथी केमके कालतरनी अपेक्षाये छे एटले जे-

कारण माटे स्वभावनु अंतरभुत पणु छेज तेणे करीने कांइ तेनु नीफलपणु नहोय त्यां शुद्ध निश्चयनयने मते तो कारणकारज नी थ्या छे एटले कारजकारण कल्पना छे कल्पनाये करीने रहीत जे द्रव्य तेने कहीये ते शुद्ध थीरतारूप छे तेणे द्रव्य जाणवो एम ए शक्तिरूप द्रव्य केहेता सत्तानी शक्तिग्रहण करीने कह्यो

हवे व्यक्तिरूप कहीये एटले व्यक्ति कहेतां जे प्रगटपणे जे गुण पर्याय थया, ते मत्ये देखाडीये छीये ते गुण पर्याय व्यक्तिपणे बहु भेदे एटले अनेक प्रकारना छे, पोन पोतानी जाति स्वभाव स्वभाविक कर्म भावी कल्पना कृत आप आपणा वस्तु स्वभावमा वर्ते छे, वली कोइक शास्त्रवाला तथा दिगंबर वाला ते शक्तिरूप गुण माने छे, केमके ए एवु कहे छे के द्रव्य पर्यायनु कारण ते द्रव्यज छे, तेम गुण पर्यायनु कारण गुण छे ते द्रव्य पर्याय द्रव्य अन्यथा भाव जेम नर नरकादि गति अथवा जेम द्विप्रदेश त्रण प्र देशी आदिक जे खंध तेनो गुण पर्याय गुणनो अन्यथा भाव छे अथवा जेम मती श्रुतादि विशेष अथवा भावस्त स्याद्वाद विशेष केवल नान छे, एम द्रव्य गुणनी जाति शास्वती छे अने पर्यायथी अशास्वती छे, एम एमना कहेवामा आवे ए वात ते कांइ शासनमां बराबर आवती नथी, ए पण एक कल्पना पोतानी छे, अथवा तेवा शास्त्रोनी छे तथापि जुगती एम छे नहि, शा माटे के सुमति ग्रथने विषे गुणपर्यायने जुदो कह्यो नथी ते मत्यक्ष ए ग्रथमां जोयामा आवे छे, उक्तंच सुमती ग्रंथे–परीगमण पज्जाओ अणेगकरणे गुण-ती तुल्ला तह विणगुती भणइ: पजवण अदेशणा जह्मा १

जेम कर्म भावीपणानु पर्यायनु लक्षण छे, तेम अनेक रीते करयु ते पण सर्व पर्यायना लक्षण छे पण द्रव्य तो एकज छे अने ज्ञानदर्शनादिक जे भेद करे छे ते पर्यायज छे

शामाटे के परमात्मानी देशनाने विषे तो द्रव्यपर्यायनी देशना छे पण द्रव्य गुणनी देशना नथी ए गाथानो एज अर्थ छे त्यारे कोइ तर्क करशे के गुण छे ते पर्यायथी जुदा नथी एवुं ज्यारे तमे कहेशो तो द्रव्य गुण पर्याय ए त्रण नाम शावास्ते कहोछो तेनो उत्तर जे एनो विवक्षा छे ते तो भेदनयनी कल्पना तेथकी कहेवाय छे परंतु घी ने घीनी धारा ए कांइ नोखी नथी, बोलवामां घी ने घीनी धारा बोलाय खरं पण एकज तेमज स्वभावीने कर्मभावी कहीने गुणपर्याय भिन्न भिन्न समजाववामा आवे परंतु मूल स्वभावे तो एकज छे अने ए भेद सर्वे उपचरित छे ते माटे तेन शक्ति तेम कहीये परमार्थ जोता जूदापणु दिसतु नथी, शामाटे के उपचरित स्त्री काइ हावभाव करे नहि तेम उपचरीते गुणशक्ति पण न धरे, तेमाटे जे गुणपर्यायथी भिन्न माने छे तेने दूषण देखाडीये छीये के जो द्रव्य पर्यायथकी गुण एवो पदार्थ जूदो होत तो त्रीजो नय पण कही जोइये पण सूत्रने विषे तो बेज नय कही छे द्रव्यार्थ अने पर्यायार्थ जो गुणपदार्थ नोग्वा होत तो गुणार्थनय जरुर केहेता ते उक्तच सुमती ग्रथे.

॥ दोउणणयाभगवयादव्वट्ठीयपजवठीयाणीययो ॥
जइपुणगुणोवीहूणो गुणठीयणओविजुजंतो ॥ १ ॥
जचपुणभगवयातेसुतेसुसुतेसुगोयमाइण ॥
पजवशणाणीययावागरीयातेणपजाया ॥ २ ॥

रूपादीकने गुण कहीये ते सूत्रे कइ कह्यु नथी, शास्त्रमां तो एवा शब्द छे के वनपज्जवा गधपज्जवा, रसपज्जवा खास पज्जवा इत्यादिक पर्याय शब्द बोला या छे अने जे एकगणो काळो यावत् काळो इत्यादिक ने ठाम ठाम शब्द छे ते तो गणित

शास्त्रना छे एटले ए पर्यायनी सामान्य विशेषनी गणतरी आश्री छे पण ते वचन काइ गुणास्तीकने अवीलखे वांची नथी.

उक्तंचसुमतीग्रंथमध्ये. ॥ २ ॥

गुणसदमतरेणावितणुपजववीशेपशंखाण ॥
सीझइणवर संख्याण सथद्धमोणयगुणोर्ता ॥
जनइजपतीअत्थीसमये एगगुणोदशगुणोअनतगुणो॥
रुवाइपरीणामाभणइतमहाविशेषो ॥ २ ॥
जहदशगुदशगुणमीय एगंमीदशतणशमतवेव ॥
अहीयमीविगुणसदेतहेवयेयपीदट्वं ॥ ३ ॥

एम गुण पर्यायथी परमार्थ द्रष्टी भिन्न नथी तो ते द्रव्यनी पेरे शक्तीरुप गुण केम केहेवाय पर्यायना दळने गुणनी शक्तिरुप कहोछो, तेने विषे मोहोड दूषण आवे छे तेने दूषण देखाडीये छीये, के जो गुण पर्यायनु दल कहीये तो उपादानकारण पण तेज थाय, त्यारे द्रव्य शाने कहीशु ने द्रव्यनु काम ज्यारे गुणे कर्यु त्यारे द्रव्यनु कारण शु रह्यु अने गुण ने पर्याय ए बे पदार्थ ज्यारे कहीशु त्यारे त्रीजो पदार्थ न ठर्यो ते वारे कहेशो के अमे कहीये छीये के द्रव्य पर्यायने गुण पर्यायनु कारज भिन्न छे ते माटे द्रव्य गुणरूप कारण जुदुं कल्पीये तेनो उत्तरके ए वात कांइ संभवती नथी शामाटे के कारज माटे कारण शब्दनो प्रवेश छे, तेणे ए कारण भेदे कारजनो पण भेद थाय अने कारजभेद थयो ते वारे तो प्रवेश पण थाय तेने कारण भेद थाय ए अन्योअन्याश्रीयनामे दूषण उपजे ते माटे गुण पर्याय जे कहीये, ते गुण परिणमवानो हेतु भेद कल्पनारूप तेथीज केवळ समजे, पण परमार्थे नहीं, अने जे द्रव्य

गुण पर्याय ए त्रण नाम जे कहीये ते पण भेद उपचारनये करी ने समजवा एवी रीते द्रव्य एक गुणपर्याय अनेक छे परतु मांहोमांहे परस्पर भेद वीचारवो एमज आधाराधेय प्रमुख भावे केहेता स्वभाव तेहीज मनमा वीचारवो

हवे तेहिज स्वरूप विवरीने देखाडीये छीये, घटादिक जे द्रव्य ते आधाररूप दिसे छे, जे माटे ए घटरूपादिक ते थकी ज णाय छे एटले गुण पर्यायरूपे रसादिक आधेयपणे द्रव्य उपर रह्या छे एम आधाराधेय भाव एवी रीते द्रव्यथी गुण पर्यायने भेद छे तथा रूपादिक गुणपर्यायने एक इद्रिगोचर कहेता विषय छे, एटले जेम रूप चक्षु इद्रिज जाणे अने रस जीभ इद्रि जाणे इत्यादि अने घटादि द्रव्य छे ते बे इद्रिगोचर छे एटले चक्षु इद्रियकी दिठामां आवे अने स्पर्श इद्रियकी पण जणाय एटले एने विषे ए बे इद्रिनो विषय छे, तथा नैयायिक मतना अ नुसारथी विचारीने जोइये तो त्रीजी इद्रिनो पण विषय छे एटले घ्राण इद्रिये करीने पण द्रव्य प्रत्यक्ष छे गन्धवति पृथ्वि इतिवचनात् इत्यादिक विचारता ज्ञानने विषे भ्रांतपणु थाय ते माटे एक अनेक इद्रि ग्राह्यपणे द्रव्यथकी गुण पर्यायने भेद जाणवो, गुण पर्यायने मांहोमांहे भेद ते स्वभाविक पण कहीये, कर्मभावि पण कहीये, ए बे कल्पनायकी जाणवा तथा सज्ञा कहेता नाम तेथकी पण भेद द्रव्य नाम, गुण नाम, पर्याय नाम, ए सख्या गणनादिक भेद तो द्रव्य जोइये तो छ छे, अने गुण अनेक छे पर्याय पण अनेक छे, एम भेद ज्ञाननु विचारवु, एटले द्रव्यथकी गुण पर्याय नोखा करवा कोइ ठेकाणे पर्याय द्रव्यमा समाववा कोइ ठेकाणे पर्याय गुणमां सम[illegible] कोइ ठेकाणे गुणपर्याय ए बे द्रव्यमा समाववा, एवी रीते [illegible] तेने शुक्ल ध्याननो पेहेलो पायो कहीये,

पण एटलो वीशेष छे के आ द्रव्यना विचारने विषे अन्य मतनी अपेक्षाओ तथा अन्य शास्त्रनी अपेक्षाओ लोधी छे ते त्यां ध्यानमां न होय ध्यानने विषे तो स्वआत्म द्रव्य गुण पर्यायनोज विचार होय एटले प्रथम पायो शुक्ल ध्याननो कह्यो

हवे बीजो पायो एकत्व वितर्क कहीये छीये, एकत्व केहेता जे गुण पर्याय सहित द्रव्य, एने एकत्व कहीये, तेनो जे विचार तेने वितर्क कहीये, हवे पूर्व जे भेद प्रथक् प्रथक् करीने विचार्यु हतु ते तो व्यवहार नयनो पक्ष, अने ते दसमा गुणठाणा सुधी होय अने आ जे पाया ते तो शुद्ध निश्चयनयनु स्वरूप छे, अने बारमे गुणठाणे लाधे, ए पायाथकी घाति कर्मनो क्षय करीने केवल ज्ञान पामे ए सर्व आ पायाने विषे छे, ज्ञान दरशन चारित्र सहित आत्मा एक छे, ते अहीया ज्ञानादिक गुण पर्याय आत्माथकी जुदो विवरवो होय नही, अहीया तो फक्त एकत्व स्वरूपनो विचार छे, अहीयां संक्षेपथकी अभेद ज्ञान कहीये छीये हवे जे अभेद पक्षने अनुसरीने जे द्रव्यादिकनो गुण पर्यायनो जो एकांत भेदज भाखीये तो बीजा द्रव्यनी पेरे स्वद्रव्यने विषे पण गुणगुणी भावनो उच्छेद थइ जाय, जेमके जीव द्रव्यना गुण ज्ञान दरशन चारित्र इत्यादिक छे, तथा पुद्गल द्रव्यना मलण वीखरणादिक गुण, ते पोतपोताना गूण पोतपोताना द्रव्यने ग्रहीने रहे छे, अने जे वारे भेद मानीये ते वारे पोताना द्रव्यनो नियम रहे नहि, जेम जीव द्रव्यना गुण पुद्गल द्रव्यथी जुदा छे तेम ते पोताना द्रव्यथकी पण जुदा पडी जाय ते वारे एवो नियम न रह्यो के जे ज्ञानादिक गुण तेनो गुणी जीव द्रव्य अने मलण वीखरण गुणनो गुणी पुद्गल द्रव्य एवो व्यवहार न रहे माटे द्रव्य गुण पर्याय अभेदपणेज समजवे वळी ते अभेदपणा उपर युक्ति करीने देखाडीये छीये

के द्रव्यने विषे गुण पर्यायनो अभेदज संबंध छे, ने जो द्रव्यने विषे गुण पर्यायनो समवाय न मानीये तो संबंध भिन्न कल्पिये, ते वारे अन्य अवस्था दूषण थाय, जे माटे गुणगुणीथी अलगो समवाय संबंध कह्यो, तो ते उपर दृष्टांत कहीये छीये पटने पटनु उजलतापणु ते बंने जूदु छे नहि, पटतो द्रव्य छे अने उजलतापणु ते गुण पर्यायादिक छे, माटे एकत्वज छे, अने कदापि गुण पर्यायनो समवाय द्रव्यमा नहि मानो तो ते गुण पर्यायने कोइ बीजो समवाय पण जोइये. तो ते उजलता पट द्रव्यने नथी वळगी तो एनो समवाय कोण द्रव्य साथे छे, ते तो काइ बीजा द्रव्य साथे दीसतु नथी, माटे गुण पर्याय ते पोताना द्रव्यमां छे, ते काइ जुदा नथी अने कदापि अन्य द्रव्यना साथे समवाय मेलववा जइये तो, वळी अन्य अन्यने मेलवाय एम करता कइ एक ठेकाणे स्थिर रेसे नही अने जो समवायनु स्वरूप संबंध अभिन्नपणे माने तो गुण गुणनु स्वरूप संबंध अभिन्न मानता शु बगडे छे जे फोकट नवो संबंध उभो करवो ? नवी कल्पना करवी एमा शु हाथमा आवे छे ? तथा जो अभेद नही मानो तो तमने मोटु बाधक आवशे, ते पूर्वे सोनु हतु तेज कुंडल थयु छे तथा जे पूर्वे मृतीका हती तेज कोठला प्रमुख आकार थयाणो छे, अथवा जे घट प्रथम रक्त वर्ण हतो तेज श्याम थयो एवु सर्व लोकने अनुभव शुद्ध व्यवहार न घटे, जो अभेद स्वभाव द्रव्यादिक त्रणेने न होय तो बीजु बाधक पण देखाडीये छीये के स्कंध कहीये तथा अवयवने देश कहीये एम अवयवनो जो भेद मानीये तो बमणो भार खधमा थवो जोइये, शामाटे के एक खधनो भार बीजो अवयवनो भार, एम बमणो भार भेद मानता थवो जोइये जेमके एक लाडु ते शेरनो छे, ते लाडु ते द्रव्य छे अने एनो ... [illegible] हरवादीक गुण तथा श्वेतादिक पर्याय

एम ज्यारे लाडु थकी गुण पर्याय जूदा मानीये, त्यारे शेर भार तो लाडुनो हनो तथा गुणनो पण शेर भार जोइये, तथा पर्यायनो पण शेर भार जोइये तेवारे शेरनो लाडु ते त्रण शेर जोइये, ते तो वात सभवे नही त्यारे ए गुण पर्याय ते द्रव्य छे, एम समजु पण जूदु न समजु, अथवा नवा नैयायिक एम कहे छे के अवयवना भार थकी अवयवीनो भार अत्यत ओछो छे तेने मते द्वीप्रदेशादीक खध माहे कइ ए उत्कृष्टो भार न थवो जोइये, पण ते मिथ्या छे, शा माटे जे द्वीप्रदेशी खध एकला परमाणुनी अपेक्षाये अवयवी छे, अने परमाणु ते अवयव छे त्यारे परमाणु करतां द्वीप्रदेशीमा ओछो भार जोइये, ने एक परमाणु प्रदेश करता द्वीप्रदेशी खध बमणो छे, ते ओछो केम थवानो ? अथवा एक परमाणु माहे उत्कृष्ट भारपणु मानीये तो रूपादीक विशेषपणे परिणमवा जोइये तो द्वीप्रदेशी माहे केम न मान्या जोइये, ए माटे अभेद नयना बध मानीये तो प्रदेशनो भार छे तेज खधना भारपणे परिणमे, जेम ततुरूप पटरूपपणे परिणमे, जेम एक शेर ततुनो पटपणे ते पट पण एक शेरनो थाय ते वारे गुरुपणानो दोष न लागे त्या कोइ कहेशे के तमे एकज द्रव्य एकत्वपणे मानो छो, अने भेद मानता नथी तो कोइ मेहेलात प्रमुख आवास छे तेने विषे काष्ट पत्थर लोहु माटी चुनो इत्यादिकनापर्याय मळीने एक भुवन (घर) थाय छे, तेने एक द्रव्य कहो छो, एक घर इत्यादीक लोक व्यवहार माटे एक द्रव्य काइ मनाय नही शामाटे के एक द्रव्य गुणपर्यायनो अभेद होयतो कहीये पण अहीया तो द्रव्य घणा छे माटे एक द्रव्य न मनाय पाषाण काष्ट इत्यादीक द्रव्य नोखा नोखा छे माटे न मनाय जे एकज द्रव्य होय तेना गुणपर्याय ते अभेदमा गणाय जे घटने घटनो जलधारण गुण रक्तत्वादीक प

र्यायपते अभेद छे ते काइ घटथकी जूदा नथी, तेमज आत्मद्रव्य तेज आत्मगुण तेज आत्मपर्याय एवो व्यवहार अनादि सिद्ध छे, जेजीव द्रव्य अजीव द्रव्य इत्यादिक जे व्यवस्था सहित जे व्यवहार थाय छे ते गुणपर्यायना अभेदथी नीपजे, ज्ञानादिक गुणपर्यायथी अभिन्न द्रव्य ते जीव धर्म, मलग विखरणादिक गुणपर्यायथी अभिन्न ते अजीव द्रव्य, नहि तो द्रव्य सामान्यथी विशेष सज्ञा थाय, तेमाटे सामान्य कांइ रहे नहि, अने द्रव्य गुण एवो शब्द पण रहे नहि, अने जे द्रव्य गुणपर्याय ए त्रण नाम छे, ए त्रणे नाम स्वजाती छे अने एकत्वपणे परिणमे छे ते माटे ए त्रणे ने एकज प्रकारे कहीये तेम आत्मगुण पर्याय ने एम जाणवु अने जो द्रव्य गुणपर्याय ने अभेदता पणु नथी तो कारण कारजने पण अभेदता पणु ना होय त्यारे मृतिकादि कारणथी घटादिक कारण केम नीपजे कारज माटे कारजनी शक्ति होय तोज कारज नीपजे तेविना सर्वथा कारज नीपजे नहि, कारण माहे अछती वस्तुनी परिणती नीपजे जेम ससाने सिंघ ना थाय शामाटे के ससाने विषे सिंघपणानी शक्ति रही नथी अथवा बीजे दृष्टांते एज घटवेलुकानो का न बनावे पण वेलुकामा घटपणानी शक्ति नथी ए शक्ति तो मृतिकामाज छे माटे सत्तामा जे शक्ति होय तेज गुणपर्यायमां व्यक्ति पणे प्रगट थाय, वास्ते जे कारज माटे कारणनी सत्ता मानीये त्यारे अभेद पणु सहेजज आवे अहिया कोइ कहेशे जे कारज उपन्या पहेला जो सत्ताये कारज कारणने विषे रह्यु छे तो प्रथमज कारज केम नथी देखातु? तेनो उत्तर कारज नथी उपन्यु त्यां सुधी कारण मांहे कारजनी शक्ति द्रव्यरूपे तिरोभावनी छे तेणे करीने कारज जणातु नथी पण सामग्री मले त्यारे गुणपर्यायनी व्यक्तिथी आविरभाव थाय छे तेणे करी कारज दिसे [illegible] तिरोभाव तथा आवीरभाव ए बे दरशना दरश

न जणावनारुं? कारमनापर्याय विशेष जाणता, तेणे करी आवीर भावने सत्य असत्य विकल्प दुषण न होय, शामाटे के अनुभवने अनुसारे पर्याय विकल्प छे, अहिया नैयायिक मतवाला एवु कहे छे के अतिकाल विषे जे घटादिक अछता छे तेनु जेम ज्ञान होय ते पण अछतु छे तेम घटादिक कारन अछतान मृतिकादि दलथकी सामग्री मले नीपजशे ए अछतानु ज्ञान होय तो अछतानी उत्पत्ति केम न होय एटले घटनु कारण दंडादिक अमे कहीये छीये त्या लाघवपणु छे, तमारे मते घगमी व्यक्तिनु दंडादिक कारण कहेवु त्यां गौरव होय बीजु अभी व्यक्तीनु कारण चक्षु प्रमुख छे पण दंडादिक नथी, ते माटे भेद पक्षन द्रव्य घटनी व्यक्तनु कारण दंडाभाव पण जे घट चक्षुभावे गौरव नथी, एम जे बोलता दोष लागे, अछतानी उत्पत्ति एवु कहेवु ते पण मिथ्या वार्ता छे, अने भूतकालने विषे पण घटादिक पदार्थ अछता नथी पर्यायथी नथी, पण द्रव्यार्थथी नित्यज छे अने निशट घट पण मृतिकारुप छे, ते तो सर्वथा असत्य मार्ग छे ते नभकुसुमवत थाय, जे एवु बोले छे के सर्वथा अछता पदार्थनु सर्व ज्ञान माहे भासन छे, एवु कहे छे तेने मोटो दोष आवे छे, ते देखाडिये छिये, के जो मानने स्वभावेज अछतो अर्थ अतीत घट प्रमुखनो भासे एवु मानीये तो सर्व संसार ज्ञानना कारज छे एटले बहार आकार अनादि अविद्या वासनाए अछता भासे छे, जेम स्वप्न माहे अछता पदार्थ भासे छे, एम बाह्य आकार रहीत शुद्ध ज्ञान ते बोधनेज होय, एटले जे पूर्वे कह्या एवां वचन जे बोलवाथकी ए योगाचार नामे नीचो बोध तेनो पक्ष थाय, ते माटे अछतानु ज्ञान न होय, तो कोइ कहेशे के तमने केम जाणवामां आव्यु के अतीतकाले घट हतो ? तेनो उत्तर जे अतीत घट हमणां पण जाणीये छीये शा

माटे जे द्रव्यथी छता अतीत घटने विषे वर्त्तमान गया कालरुप पर्यायथी हमणां पण अतीत घट जाणवो जाय छे, अथवा नैगम नयने मते अतीत कालने विषे वर्त्तमानतानो आरोप करीये छिये, ते सर्वथा अछती वस्तुनु ज्ञान न थाय, एटले धर्म जे अतीत गया कालने विषे जे अछतेकाले घट नहि तो अभावकाले भासे छे, अ थवा धर्म अतीत घट अछतेकाले भासे छे, एम तुजने चित्त मांहे शु भासे छे ? ते सर्वे अतीत अनागत वर्त्तमानकाले निर्भयपणे भासे छे, ए द्रष्टांत जोता तो ससाभिंघ पण जाण्यु जाय एम नथी, आ माटे के अछता अर्थनो बोध न होय, निश्चय ए कारण कार-जनो अभेद छेज ते द्रष्टाने वीरीने द्रव्यगुण पर्यायनो पण अभेद छे ज्ञानादिक गुण पर्याये करीने आत्मा पण अभेद छे एवी रीते ए-कत्व भाव थाय, परतु समासे वात आवी तेथी नेये नयना स्वामी देखाडीयें छीये. एटले भेद नयनो स्वामी ते नैयायिक छे अने अ-भेद नयनो स्वामी ते सांख्य छे, अने जिन मतवाला भेद तथा अभेद बेहु नयना स्वामी छे, एटले एके नयना पक्षपाती नथी, स्याद्वाद पक्षना अधिकारी छे, उक्तंच —

अन्योअन्य पक्ष प्रतिपक्ष भावात व्यथा परम सरिणः प्रवादः नयानशेषान विशेषमीथ न पक्षपाती समयस्तथाने १ यएवदोपा किल नित्यवादे विना-सीवादे विशमस्तएव परस्पर सीपुकटकेपु जयत्य घृ-र्प्यं जिनसासनते २ ॥

माटे जिन स्याद्वाद पक्षी छे हवे पत्रो जे एकत्व भाव ते शुभ ध्याननो ... बारमे गुणठाणे होय एटले एकत्ववीतर्क

बीजो पायो कह्यो, तथा सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाती त्रीजो पायो तथा उच्छीन क्रियावृत्ति चोथो पायो ए केवल पाम्या पछी मोक्ष जवाना अवसरना छे एटले ए ध्यान तप कह्यो ५

हवे कायोत्सर्ग छट्टो तप कहिये छीये एटले काया प्रमुख वो सरावबु तेने कायोत्सर्ग कहीये, एटले उपाधीनु वोसरावबु, तथा कषायनु वोसरावबु, तथा दुर्ध्याननु वोसरावबु, तथा कायानु वोसरावबु अने आत्मस्वरूपने विषे रमबु तेने कायोत्सर्ग तप कहीये ए छ प्रकारे अभ्यंतर कहेतां आत्मानी मांहिली कोरे रह्यां जे कर्म तेने बालवाने समर्थ तेने अभ्यतर तप कहिये एटले लोक एने तपस्वीना जाणे पण समजु होय ते तो एने तपस्वी जाणे अने कर्मथी छोडाववा समर्थ एज तप छे, माटे तप तो एने कहीये, एट ले निर्जरानु स्वरूप कह्यु ८

हवे मोक्षतत्व कहीये छीये एटले मोक्ष कहेतां जे कर्मथकी जीवने मुकाववु

शिष्यवाक्य—स्वामी तमे जे निर्जरा कही ते कर्मथकी निर्ज रवु ते मुकाववुज कह्यु हतु. अने अहीं वली मोक्षतत्व जुदो कहोछो तेमां शु भिन्नपणु छे

गुरुवाक्य—हे भद्र निर्जरा ते देश थकी कर्मनु छांडवु छे, अने सर्व थकी कर्मनु मुकाववु तेने मुक्ति कहीये, अने निर्जरा तो निगोदिया जीवने पण छे, अने मुक्ति तो गर्भज पचंद्री मनुष्य चा रीत्रीयाने चौदमे गुण ठाणे छे

शिष्यवाक्य—स्वामी तमे निर्जराना चार भेद कह्या तेमां क- या भेदने विषे निगोदीयाने निर्जरा छे जे तमो बतावो छो

गुरुवाक्य—निर्जराना बे भेद छे एक सकाम निर्जरा बीजी

अकाम निर्जरा ते अकाम निर्जरानो भेद निगोदीयाथी मांडीने मनुष्य सुधी छे एटले अकाम कहेता जेने ज्ञानदर्शन चारीत्रनी ओळखाण नथी पण छेदन भेदनादिक दुःख सहीने जे कर्मनु छुटवु तेने अकाम निर्जरा कहीये जेम मनुष्य तथा तिर्यच पचेंद्री घणा कठोर कर्म करीनेनर्के जाय, त्या नर्कना छेदनभेदन खमीने कर्म निर्जरे तथा मनुष्य तिर्यच समकित विनाना जीव तप क्रिया कष्टमसुख सहीने शुभ कर्म बाधीने देवतामा जाय ते देवना सवधीया सुख भोगवीने कर्म छुटे, ते बन्नेने अकाम निर्जरा कहीये, तथा जे जीव समकितादि गुण पाम्यो अने ज्ञानदर्शन चारीत्रना बलथकी कर्मनिर्जरे तेने सकाम निर्जरा कहीये ते विचार श्री भगवतीजीने विषे बालमरण तथा पडित मरणना अधिकार थकी समजमो हवे जे सर्व कर्मथकी रहीत थाय तेने मुक्ति कहीये, एटले जीवना असख्यात प्रदेश छे ते अकेके प्रदेशे अनन्ता कर्म वलग्या छे तेथकी छुटे तेने मुक्ति कहीये

शिष्यवाक्य—स्वामी जीवतो एक द्रव्य अखड छे, तो प्रदेशे प्रदेशे मांही भेदीने पेसी गया के शीरीते ए कर्म वलग्या छे

गुरुवाक्य—हे भद्रजीव छे ते अखड छे, ते जीवथकी जीवना प्रदेश नोखा न पडे, परतु ए प्रदेशना आकारनु फरवु छे, तेथी प्रदेश अकेकानो श्रेण पण वधाय तथा लोकाकाशने पुरवो होय त्यारे जेटला आकाश प्रदेश लोकाकाशना छे तेटले प्रदेशे आत्मानो अकेक प्रदेश वहेंची अपाय, माटे ए प्रदेश आत्माना एवी रीते भिन्न भिन्न थाय, पण द्रव्यथकी जुदो न पडे. हवे ए जे कर्म वलग्यां छे, चेतनने ते खीरनीररूपे वलगी रह्या छे तथा जेम कंचन प्रमुख धातुने अग्निमा घालेथी अग्निने धातु एकमेक थइ रहे छे तेम आत्मा साथे कर्म वलगी रह्यां छे ते कर्म सर्व छुटे तेने मुक्ति कहीये ते सिद्धना [illegible] छे

शिष्यवाक्य—स्वामी मुक्तिना अधिकारने विषे सिद्धनु शु काम छे

गुरुवाक्य—मुक्ति कहीये अथवा सिद्ध कहीये ए बन्ने एकज नाम छे अने मुक्ति कहेवानु कारण केटलु छे के आहिंया कर्मथकी मुकावु तेनु नाम मुक्ति तो जे कर्मथकी मुकाणो एज जीव सिद्ध आहिया कांइ बीजो अर्थ छेज नहि.

शिष्यवाक्य—स्वामी सिद्ध तो लोकने अंते होय.

गुरुवाक्य—सिद्ध तो कर्मथकी मुकाणो एज सिद्ध, पण तेने रहेवानु थानक लोकने अंते छे, पण त्यां कांइ बधाओने सिद्ध समजवा नहि त्यां तो सिद्ध जीव पण छे, अने समारी जीव पण छे, माटे अहीं कर्मथकी मुकाणो तेने सिद्ध कहीये, हवे तेना पदर भेद ते देखाडीये छीये. तिर्थंकर सिद्ध १, तिर्थंकर विनाना सिद्ध २, तिर्थसिद्ध ३, अतीर्थसिद्ध ४, ग्रहस्थलिंगेसिद्ध, ५ अन्यलिंगेसिद्ध ६, स्वलिंगेसिद्ध ७, स्त्रीलिंगेसिद्ध ८, नपुंशकलिंगेसिद्ध ९, पुरुषलिंगेसिद्ध १०, प्रत्येकबुद्धसिद्ध ११, स्वयबुद्धसिद्ध १२, बुद्धबोधीसिद्ध १३, एक सिद्ध १४, अनेकसिद्ध १५, हवे तीर्थंकर सिद्ध ते महावीर स्वामी प्रमुख जे तीर्थंकर मोक्षे गया तेने तीर्थंकर सिद्ध कहीये १, तीर्थंकर विनाना सिद्ध एटले जे गौतमादि गणधर सिध्या तेने आजिन सिद्ध कहीये. २, तीर्थ सिद्ध एटले जे भगवाननु तीर्थ प्रवर्त्यां पछी एटले जे रिखवदेव स्वामीये प्रथम तीर्थ प्रवर्त्ताव्यु, त्यार पछी जे मोक्षे गया तेने तीर्थसिद्ध कहीये एटले तीर्थ कहेतां जे साधु साधवी श्रावकश्रावीका ए च्यार प्रकारनु तीर्थ कहीये, ए साधु प्रमुखने जगम तीर्थ अने भगवाने एमनेज तीर्थ कह्यां छे, ते तीर्थ थाप्या पहेलां जे मोक्षे गया तेने अतीर्थ

सिद्ध कहीये ते मरुदेवा माता प्रमुख ए चोथो भेद ४, ग्रहस्थलिंगे केहेता समारपणामां रह्याथको कर्म खपावी मोक्ष जाय तेने ग्रहस्थ-लिंगे सिद्ध कहीये

शिष्यवाक्य—स्वामी चारित्र विना तो मुक्तिनी ना पाडोछो तो ग्रहस्थपणामां केम मोक्षे गया

गुरुवाक्य—चारित्र विना मुक्ति होय नहि पण चारित्रना बे प्रकार छे एक निश्चय बीजो व्यवहार जे व्यवहार चारित्र छे ते ससारनो त्याग करवो तथा पचमहाव्रत उचरवां इत्यादिक सर्वे ए व्यवहार चारित्र छे तेने विषे कांइ मुक्ति छे नहि, ते तो अभवी पण आदरे छे अने मुक्ति तो निश्चय चारित्रमां छे, ते निश्चय चारित्र ते आत्म रमणने विषे रह्यु छे, ते ज्ञान ध्यानथी करीने हेठलना गुणठाणाने छांडतो जाय अने उपरना गुणठाणाने आदरतो जाय एम अनुक्रमे चउदमे गुणठाणे थइने मोक्षे पण जाय ए सर्वे आत्मानी रमणता ज्ञान ध्यानरूप उपयोग तेमां छे, ए काइ वहारना व्यवहार चारित्रमां मुक्ति नथी, माटे ग्रहस्थने भाव चारित्र आवे तो मोक्षे जाय.

शिष्यवाक्य—कोइ ग्रहस्थ मोक्षे गया के ए केहेणीज छे

गुरुवाक्य—मोक्षे गया छे, केहेणी खोटी होय नही प्रत्यक्ष मरुदेवा ग्रहस्था वासेज मोक्षे गयां छे, एमणे क्यां साधुपणु लीधु छे, एटले ग्रहस्थ लींगे सिद्ध ५, अन्य लींगे सिद्ध एटले जैनशासनना लींग धारण विना अन्य दर्शनीना भेखवाला मोक्षे जाय तने अन्य लींगे सिद्ध कहीये.

शिष्यवाक्य—स्वामी जैनशासन विना बीजाने तो मुक्ति छे नही, अन्य दर्शनने विषे परीव्राजकनी पांचमा देव लोक सुधीनी

गति छे अने आजीवीका मतीने बारमा देवलोक सुधीनी गती छे, बीजा सर्वनी तेथी नीची गती छे अने बारमा देवलोक उपर तो एक जैन दर्शनवालानीज गति छे, अने नये तो अई(अ य द र्शननी मुक्ति कहोछो तेनु केम ?

गुरुवाक्य —हे भद्र तें जे प्रश्न कर्यु ते ठीक पण तारी नजर बराबर पहोंची नही, शा माटे के तेना तेज धर्ममा रच्या पच्चा रहे तेनी एटला सुधी गती छे अने जेने अतरमां जैन भाव आवे तनी काइ ए गति नथी

शिष्यवाक्य'—स्वामी जो जैनभाव आवे तो ए छकायनो कुटो केम करे अने छकायनी हिंसा तो गइज नथी तो साधपणु क्यां थकी आव्यु

गुरुवाक्यः—छकायनो कुटो व्यवहार थकी न मटयो ते देखी ने तु स्वरुप हिंसाने पाप माने छे, ते कांइ ज्ञानी गुरुष खातरमा गणता नथी, शा माटे के मुक्तिनु कारण ते तो ज्ञान तथा स्वभावने विषे छे, अने स्वरूप दया जे छे ते तो अज्ञानने विषे तथा परभा-वने विषे छे

शिष्यवाक्यः—जो परभावने विषे तथा अज्ञानने विषे छे तो महाव्रत उचरवानु शु कारण छे.

गुरुवाक्य —जे जीव समकीत पामीने सातमे गुण ठाणे गया अने व्यवहार चारित्र ले तेने ए गुण कर्ता छे, शा द्रष्टांते के जेम कोइ पुरुष जमवा बेठो, अने सर्व जातनी रसोइ भाणामां आवी छे, अने ते रसोइ जमतानी वखतमां जो अथाणु आवे तो ते केवल वजना भावे पण रसोइ भाणामां पीरसी नथी अने अथाणु एकलु भाणामा आवे तेथी कांइ भुख भागे नहीं माटे

सेमजुने पण जीवदया प्रमुख रुडी रीते पालवी ए जीवदया ज्ञानने बहु गुण कर्ता छे, जेम कोइवर परणवाने जाय अने पोशाक सारो नहोय तो लोकमा कशोभा पामे तथा पोताना मनथी पण बहु खोटु लागे, अने पोशाक प्रमुख सामग्री सारी होय तो पोताना मनथी पण सारु लागे अने लोकमां पण सारु दीसे यद्यपी कन्या तो वरने वरवानी छे, कइ पोशाकने वरवानी नथी तेम अहीयां पण जीवदया छे ते पोशाक तथा अथाणारूप समजवु माटे समजुने ए गुण कर्ता छे, अने अन्य लींगवाला जे मोक्षे जाय, ते कंइ जैन दर्शनना शास्त्रना भोमीया नथी, ते तो एक ज्ञानना परीबलथकी आत्मस्वरूपनी रमणता करीने कर्मखपावे छ, जो एम ना होय तो अनार्य लोक अनार्यना मुळकमां रह्या थका अनना मोक्षे गया छे, ते शाथकी मोक्षे गया त्या कांइ जैननो उपदेश छे नही परतु एक ज्ञानना परीबलथकी आत्मस्वरूपनी ओळखाण थइ तेथी स्वरूप रमणी थइने कर्मखपाविने मोक्षे जाय ते आगे अनता गया हमणां जाय छे अने आगे आनता जशे, ए वातमां शका राखवी नही स्वलींग तथा अन्यलींगने विषे मुक्ति तथा धर्म पेढु नथी, धर्म तथा मुक्ति तो एक आत्मस्वरूपमां छे, एटले अन्यलींग एटले साधु वेशे सिद्ध थया ते ७, पुरुषलींगे सिद्ध ते पुरुषलींगे सिध्या ते गौतमादीक प्रमुख ८, स्त्रीलींगे सिद्ध ते चदन बाला प्रमुख९, नपुशकलींगे सिद्ध ते जाते नपुशक धर्म न पामे कृत्रीम नपुशक सिद्ध १०, बुद्धबोधी सिद्ध केहेतां जे गुरुना उपदेशथकी मतिबोध पामीने जे सिध्या ते ११ प्रत्येक बुद्ध केहेतां जे प्रतीकारण एटले काइ कारण देखीने प्रतीबोध पाम्या जेम करकडु रीखवने जराकुल जाणीने प्रतीबोध पाम्या तथा नमिराजा एक चूडी थकी मतीबोध पाम्या, इत्यादिक [illegible] पाम्या तेने प्रत्येक बुद्ध कहीये १२, हवे स्वयबुद्धि

केहना जे स्वयमेव पोतानी मेळे प्रतिबोध पामी चारीत्र लेइ मोक्षे गया तेने स्वयबुद्धि सिद्ध कहीये.

शिष्यवाक्य—स्वामी प्रत्येक बुद्धमाने स्वयबुद्धमां शा फेर छे?

गुरुवाक्य—प्रत्येकबुद्ध परकारणवडे प्रतीबोध पामे छे अने स्वयबुद्ध तेने पर पोतानो नियम नथी, शामाटे के मृगा पुत्र साधुने देखीने जाती स्मरण पामी प्रतिबोध पाम्या तेमज भृगु मोहित तथा भृगु मोहितना पुत्र आदे देइने छ जीव ते मध्ये बेने जाती स्मरण, चार एक एकना कारणथी, तथा अनाथी मुनी रोग आकुल थकी, तथा कपील केवली भिक्षाना कारण थी इत्यादिक स्वयबुद्धनो कइ एक प्रकारनो नियम नथी, तथा पि प्रत्येक बुद्ध अने स्वयबुद्ध एनो अन्यभाव एक सरखो छे परंतु शास्त्रकारे भेद जूदो लख्यो छे, ते श्री पन्नवणा सूत्रनी टिका ने विषे एवुं कह्यु छे के स्वयबुद्ध पोताने ज्ञान जाणपणु होय तो पोतेपोतानी मेळे विचरे, कोइना भेगो न विचरे कदापि पोता ने जाणपणु ओछु होय तो कोइ साधुना संघाडामां भेगो रही ने क्रिया आचार शीखे, पछी पोतानी खुशी होय तो भेगो विचरे वा जूदो विचरे, अहियां कदापी कोइ कहेशे के स्वयबुद्धने पोतापोतानी परिवार न होय, ते कहेवावाळा अज्ञानी छे, शा माटे के कपील केवलीये पांचसे चोरोने दिक्षा आपी छे, इत्यादिक [illegible] तो पोतापोतानो परिवार कह्या छे, तथा भगवतीजीने [illegible] स्वयंबुद्धना साधु तथा साधवी तथा श्रावक [illegible] पाठ घणा सूत्रमां छे पण जेने अज्ञानरूपी [illegible] होय ते घणो ना देखे, तेमां कांइ शास्त्रनो [illegible] बुद्धनो अधिकार कह्यो १३
[illegible] स्वामी [illegible] १४, [illegible] सिद्धने रीते

प्रमुख १५, एम पंदरे भेदे कर्मथकी मुकाइने सिद्धि पदने वरया तेने मुक्तितत्व कहीये, एटले ए नव तत्व सक्षेपथी देखाडयां, ते नव तत्वनु सार तत्व एक छे ते सर्वे मांहे आत्म तत्व एज सार छे, अने वीजो जे अजीव तत्व ते छोडवा जोग छे एम ए वे तत्वनु स्वरूप ओलखीने हेय ज्ञेय उपादेय ए त्रण स्वरूप मांहे हेय ते छांडवा जोग वस्तुने छाडवी, ज्ञेय कहेता जाणवा जोग वस्तुने जाणवी, उपादेय कहेतां आदरवा जोग वस्तुने आदरवी, एटले जीवा जीव पदार्थ जाणवा अने ते जाणीने अजीव पदार्थनो त्याग करवो, अने जीव पदार्थ आत्म स्वरूप तेनु आदरवु, एवी रीते तत्वनो सार जाणी रागद्वेष विपय कखाय त्यागीने पोताना स्वरूपने विपे थिर भावे रमणता करवी एटले सर्व धर्मनु तथा सर्व शास्त्रनु सार ए जे छे

॥ दुहा ॥

ए ग्रथ पुरण भयो, पुरण भयो आणद ॥
गुणनीधी गुण आगलो, प्रगटयो चिदानंद ॥ १ ॥
चिदघन आनंदनो, भाख्यो एह विचार ॥
तत्व वे तेमां भाखीया, जडचेतन ए धार ॥ २ ॥
तेना तत्व नव कह्या, विवरीने विचार ॥
तत्व एक तेमां कह्यो, अद्वेत भाव उदार ॥ ३ ॥
रत्नागर सम एह छे, भरीयो गहेर गंभीर ॥
वहु वस्तु वहु पदतणो, वहोरी भरीयो निर ॥ ४ ॥
कल्पवृक्ष स ज [illegible] पुरणद्वार ॥

सर्व ग्रंथ सीरताजए, उत्तम एह विचार ॥ ५ ॥
एह ग्रथ जे वांचशे, भणशे जे महाभाग ॥
आत्मा निर्मल तेहनां, अनुभव साथे जाग ॥ ६ ॥
अनुभव एहमां दाखीयो, आत्म केरो सार ॥
वक्ता पुरुप ते पिये, अथवा श्रोतासार ॥ ७ ॥
अनुभव जग चिंतामणी, अनुभव वर्छितपुर ॥
अनुभवथी कर्म सवी टले, थाये ते शुरवीर ॥ ८ ॥
गुण अनंत अनुभवतणा, कहेतां नावे पार ॥
एहथी शिवसपति मले, एहीज सुख दातार ॥ ९ ॥
समकित पण अनुभव विपे, चारित्र पण एह ॥
अनुभवथी केवल लहे, एमां नहि सदेह ॥ १० ॥
एम अनता गुण कह्या, अनुभव ज्ञानना सार ॥
ज्ञाता लेजो परखीने, एह ग्रथने धार ॥ ११ ॥
अनुभववींण जे जे कथा, ग्रथ प्रकरण होय ॥
ते ते सहु निष्फल कह्यां, हसविण काया जोय ॥१२॥
तजे कुबुद्धि एहथी, भजे सुबुद्धि सार ॥
पढता एह ग्रथने, भेद ज्ञान मनोहार ॥ १३ ॥
तेम अभेद ज्ञान छे, नय निश्चय व्यवहार ॥
आत्मज्ञानी सुख लहे, पामे भवनो पार ॥ १४ ॥
कल्प व्यवहार उछेदीयो, उछेद्यो परभाव ॥

वादविवाद एमां नही, नही परगुण गाव ॥ १५ ॥
गायो गुण एक आतमा, भाव अध्यात्म साथ ॥
तेम द्रव्याणु जोग सही, जेह छे नीज आथ ॥१६॥
सत्तास्वरूप वर्णन कह्यो, शक्ति व्यक्ति तेम जाण ॥
इत्यादि बहु भेदथी, गुण पर्याय चित्त आण ॥ १७॥
सुलभ बोधी जीव हशे, ते सद्दहशे एह ॥
अल्पकाले ते शीव लहे, तेमां नही संदेह ॥ १८ ॥
बाहेर ज्ञानी बापडा, ते अज्ञानी कहेवाय ॥
तेने रुची नवी होवे, देखतां मती मुझाय ॥ १९ ॥
अन्ननी रुची नवी होवे, जीर्युंज्वरके जोर ॥
त्युं कर्मके उदे, ग्रथ न रुचे भोर ॥ २० ॥
जावे जब ज्वर तेहने, अन्नपर रुची थाय ॥
त्युं मीथ्यात उदे मटे, ग्रथ ए चित्त सुहाय ॥ २१ ॥
समकीत स्वरूपने पामवा, पामवानीज स्वभाव ॥
तो ए ग्रथने आदरो, जेम दूरमती दूर जाय ॥२२॥
पक्षी जे ए ग्रथना, ताको स्थीर विश्राम ॥
वेगे ते नर पामशे, शिव रमणीनो ठाम ॥ २३ ॥
उपरांठा ए ग्रंथथी, रह्या जे नर तेह ॥
ते ससारमां भटकशे, बहुल ससारी एह ॥ २४ ॥
काम कुभ कल्पवेल जे, तेम पारस पाषाण ॥

वखीत पूरण अनेक छे, एक भवके जाण ॥ २५ ॥
अते परभव दुख दीये, धनथी सुगति न होय ॥
दूखदाइ ससारमा, धन कह्यु छे सोय ॥ २६ ॥
इहा ग्रथथी सपजे, आ भव परभव सुख ॥
अधिपति तीन लोकको, सेहेजे थाये मुख ॥ २७ ॥
ग्रथ एह गुण ज्ञान छे, करे घट उद्योत ॥
स्वपर वस्तु प्रकाशनो, जेनी अनती ज्योत ॥ २८ ॥
ते कारण भव्य प्राणिया, करजो ज्ञान अभ्यास ॥
ए ग्रथ आधार जो, तेथी सुख नीराश ॥ २९ ॥
श्रोता वक्ता सुख लहे, प्रगटे आतमरूप ॥
सेहेजे शिव रमणी वरे, ते मुदे भवकुप ॥ ३० ॥
ए ग्रथ अविचल रहो, जेम रह्या छे शिव ॥
सूरगीरिपर तेम रहो, नभपेरे सदीव ॥ ३१ ॥
ए ग्रथ विस्तरो सही, भूलोकमां एह ॥
मुग्ध मुख एहीज ग्रथने, निरयात होजो तेह ॥३२॥
संवत ओगणी ओगणीसमे, श्रावण दूजो मास ॥
कृष्णपक्ष सप्तमी सही, पूरण थइ आश ॥ ३३ ॥
भृगुवारे भाखीयो, साथे सघ उमेद ॥
गेड्या दिल ते सर्वना, टल्यो सर्वनो खेद ॥ ३४ ॥
हुकम मोटे मने रच्यो ग्रथ विशाल ॥

ताप मटायो तनको, प्रगटयो अनुभव लाल ॥ ३५ ॥
अमृतरस पीयो भलो, ज्ञान सुधारस आज ॥
दुख दोहग दुर गयो, सर्यो आतमकाज ॥ ३६ ॥
धन्य दाहाडो ते आजनो, मफल घडी ते आज ॥
वंछीत काज पुरु थयु, पाम्यो अनुभवराज ॥ ३७ ॥
बहू शास्त्रनी शाखथी, बहू ग्रथना भाव ॥
मुनी हुकम ए भाखीयो, पाम्यो आतमलाव ॥ ३८ ॥